॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

विनयपिटके

पाचित्तियपाळि

५. पाचित्तियकण्डं

१. मुसावादवग्गो

१. मुसावादसिक्खापदं

इमे खो पनायस्मन्तो द्वेनवुति पाचित्तिया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन हत्थको सक्यपुत्तो वादक्खित्तो होति। सो तित्थियेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानाति, पटिजानित्वा अवजानाति, अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति, सम्पजानमुसा भासति, सङ्केतं कत्वा विसंवादेति। तित्थिया उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम हत्थको सक्यपुत्तो अम्हेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानिस्सति, पटिजानित्वा अवजानिस्सति, अञ्ञेनञ्ञं पटिचरिस्सति, सम्पजानमुसा भासिस्सति, सङ्केतं कत्वा विसंवादेस्सती''ति!

अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं तित्थियानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू येन हत्थको सक्यपुत्तो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा हत्थकं सक्यपुत्तं एतदवोचुं – ''सच्चं किर त्वं, आवुसो हत्थक, तित्थियेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानासि, पटिजानित्वा अवजानासि, अञ्ञेनञ्ञं पटिचरसि, सम्पजानमुसा भाससि, सङ्केतं कत्वा विसंवादेसी''ति? ''एते खो, आवुसो, तित्थिया नाम येन केनचि जेतब्बा; नेव तेसं जयो दातब्बो''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम हत्थको सक्यपुत्तो तित्थियेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानिस्सति, पटिजानित्वा अवजानिस्सति, अञ्ञेनञ्ञं पटिचरिस्सति, सम्पजानमुसा भासिस्सति, सङ्केतं कत्वा विसंवादेस्सती''ति!

अथ खो ते भिक्खू हत्थकं सक्यपुत्तं अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा हत्थकं सक्यपुत्तं पटिपुच्छि – ''सच्चं किर त्वं, हत्थक, तित्थियेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानासि, पटिजानित्वा अवजानासि, अञ्ञेनञ्ञं पटिचरसि, सम्पजानमुसा भाससि, सङ्केतं कत्वा विसंवादेसी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, तित्थियेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानिस्ससि, पटिजानित्वा अवजानिस्ससि, अञ्ञेनञ्ञं पटिचरिस्ससि, सम्पजानमुसा भासिस्ससि, सङ्केतं कत्वा विसंवादेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन,

भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२. ''**सम्पजानमुसावादे पाचित्तिय**''न्ति।

३. सम्पजानमुसावादो नाम विसंवादनपुरेक्खारस्स वाचा, गिरा, ब्यप्पथो, वचीभेदो, वाचसिका विञ्ञत्ति, अट्ठ अनरियवोहारा – अदिट्ठं दिट्ठं मेति, अस्सुतं सुतं मेति, अमुतं मुतं मेति, अविञ्ञातं विञ्ञातं मेति, दिट्ठं अदिट्ठं मेति, सुतं अस्सुतं मेति, मुतं अमुतं मेति, विञ्ञातं अविञ्ञातं मेति।

अदिट्ठं नाम न चक्खुना दिट्ठं। **अस्सुतं** नाम न सोतेन सुतं। **अमुतं** नाम न घानेन घायितं, न जिव्हाय सायितं, न कायेन फुट्ठं। **अविञ्ञातं** नाम न मनसा विञ्ञातं। **दिट्ठं** नाम चक्खुना दिट्ठं। **सुतं** नाम सोतेन सुतं। **मुतं** नाम घानेन घायितं, जिव्हाय सायितं, कायेन फुट्ठं। **विञ्ञातं** नाम मनसा विञ्ञातं।

४. तीहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणित''न्ति।

चतूहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणित''न्ति, विनिधाय दिट्ठिं।

पञ्चहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणित''न्ति, विनिधाय दिट्ठिं, विनिधाय खन्तिं।

छहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणित''न्ति, विनिधाय दिट्ठिं, विनिधाय खन्तिं, विनिधाय रुचिं।

सत्तहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स'' – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणित''न्ति, विनिधाय दिट्ठिं, विनिधाय खन्तिं, विनिधाय रुचिं, विनिधाय भावं।

५. तीहाकारेहि ''अस्सुतं सुतं मे''ति...पे०... अमुतं मुतं मेति...पे०... अविञ्ञातं विञ्ञातं मेति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणित''न्ति।

चतूहाकारेहि...पे०... पञ्चहाकारेहि...पे०... छहाकारेहि...पे०... सत्तहाकारेहि ''अविञ्ञातं विञ्ञातं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ''मुसा भणिस्स''न्ति, भणन्तस्स होति ''मुसा भणामी''ति, भणितस्स होति ''मुसा मया भणितन्ति, विनिधाय दिट्ठिं, विनिधाय खन्तिं, विनिधाय रुचिं, विनिधाय भावं।

६. तीहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठञ्च मे सुतञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठञ्च मे मुतञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि ''अदिट्ठं दिट्ठञ्च मे विञ्ञातञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स ...पे०... तीहाकारेहि अदिट्ठं ''दिट्ठञ्च मे सुतञ्च मुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अदिट्ठं ''दिट्ठञ्च मे सुतञ्च विञ्ञातञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अदिट्ठं ''दिट्ठञ्च मे सुतञ्च मुतञ्च विञ्ञातञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

तीहाकारेहि अस्सुतं ''सुतञ्च मे मुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अस्सुतं ''सुतञ्च मे विञ्ञातञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अस्सुतं ''सुतञ्च मे दिट्ठञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि अस्सुतं ''सुतञ्च मे मुतञ्च विञ्ञातञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अस्सुतं ''सुतञ्च मे मुतञ्च दिट्ठञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अस्सुतं ''सुतञ्च मे मुतञ्च विञ्ञातञ्च दिट्ठञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

तीहाकारेहि अमुतं ''मुतञ्च मे विञ्ञातञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अमुतं ''मुतञ्च मे दिट्ठञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अमुतं ''मुतञ्च मे सुतञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि अमुतं ''मुतञ्च मे विञ्ञातञ्च दिट्ठञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अमुतं ''मुतञ्च मे विञ्ञातञ्च सुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अमुतं ''मुतञ्च मे विञ्ञातञ्च दिट्ठञ्च सुतञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

तीहाकारेहि अविञ्ञातं ''विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अविञ्ञातं ''विञ्ञातञ्च मे सुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अविञ्ञातं ''विञ्ञातञ्च मे मुतञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि अविञ्ञातं ''विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च सुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अविञ्ञातं ''विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च मुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि अविञ्ञातं ''विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च सुतञ्च मुतञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

७. तीहाकारेहि दिट्ठं ''अदिट्ठं मे''ति...पे०... सुतं ''अस्सुतं मे''ति...पे०... मुतं ''अमुतं मे''ति...पे०... विञ्ञातं ''अविञ्ञातं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

८. तीहाकारेहि दिट्ठं ''सुतं मे''ति...पे०... तीहाकारेहि दिट्ठं ''मुतं मे''ति...पे०... तीहाकारेहि दिट्ठं ''विञ्ञातं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि दिट्ठं ''सुतञ्च मे मुतञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि दिट्ठं ''सुतञ्च मे विञ्ञातञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि दिट्ठं ''सुतञ्च मे मुतञ्च विञ्ञातञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

तीहाकारेहि सुतं ''मुतं मे''ति...पे०... तीहाकारेहि सुतं ''विञ्ञातं मे''ति...पे०... तीहाकारेहि सुतं ''दिट्ठं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि सुतं ''मुतञ्च मे विञ्ञातञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि सुतं ''मुतञ्च मे दिट्ठञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि सुतं ''मुतञ्च मे विञ्ञातञ्च दिट्ठञ्चा''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

तीहाकारेहि मुतं ''विञ्ञातं मे''ति...पे०... तीहाकारेहि मुतं ''दिट्ठं मे''ति...पे०... तीहाकारेहि मुतं ''सुतं मे''ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि मुतं ''विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्चा''ति...पे०... तीहाकारेहि

मुतं ‘‘विञ्ञातञ्च मे सुतञ्चा’’ति...पे०... तीहाकारेहि मुतं ‘‘विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च सुतञ्चा’’ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

तीहाकारेहि विञ्ञातं ‘‘दिट्ठं मे’’ति...पे०... तीहाकारेहि विञ्ञातं ‘‘सुतं मे’’ति ...पे०... तीहाकारेहि विञ्ञातं ‘‘मुतं मे’’ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०... तीहाकारेहि विञ्ञातं ‘‘दिट्ठञ्च मे सुतञ्चा’’ति...पे०... तीहाकारेहि विञ्ञातं ‘‘दिट्ठञ्च मे मुतञ्चा’’ति...पे०... तीहाकारेहि विञ्ञातं ‘‘दिट्ठञ्च मे सुतञ्च मुतञ्चा’’ति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

९. तीहाकारेहि दिट्ठे वेमतिको दिट्ठं नोकप्पेति, दिट्ठं नस्सरति, दिट्ठं पमुट्ठो होति...पे०... सुते वेमतिको सुतं नोकप्पेति, सुतं नस्सरति, सुतं पमुट्ठो होति...पे०... मुते वेमतिको मुतं नोकप्पेति, मुतं नस्सरति, मुतं पमुट्ठो होति...पे०... विञ्ञाते वेमतिको विञ्ञातं नोकप्पेति, विञ्ञातं नस्सरति, विञ्ञातं पमुट्ठो होति... विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्चाति...पे०... विञ्ञातं पमुट्ठो होति विञ्ञातञ्च मे सुतञ्चाति...पे०... विञ्ञातं पमुट्ठो होति; विञ्ञातञ्च मे मुतञ्चाति...पे०... विञ्ञातं पमुट्ठो होति; विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च सुतञ्चाति...पे०... विञ्ञातं पमुट्ठो होति; विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च मुतञ्चाति...पे०... विञ्ञातं पमुट्ठो होति; विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च सुतञ्च मुतञ्चाति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०. चतूहाकारेहि...पे०... पञ्चहाकारेहि...पे०... छहाकारेहि...पे०... सत्तहाकारेहि...पे०... विञ्ञातं पमुट्ठो होति, विञ्ञातञ्च मे दिट्ठञ्च सुतञ्च मुतञ्चाति सम्पजानमुसा भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स – पुब्बेवस्स होति ‘‘मुसा भणिस्स’’न्ति, भणन्तस्स होति ‘‘मुसा भणामी’’ति, भणितस्स होति ‘‘मुसा मया भणित’’न्ति, विनिधाय दिट्ठिं, विनिधाय खन्तिं, विनिधाय रुचिं, विनिधाय भावं।

११. अनापत्ति दवा भणति, रवा भणति [दवाय भणति, रवाय भणति (स्या०)]। ‘‘**दवा भणति** नाम सहसा भणति। **रवा भणति** नाम ‘अञ्ञं भणिस्सामी’ति अञ्ञं भणति’’। उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

मुसावादसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. ओमसवादसिक्खापदं

१२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पेसलेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डन्ता [भण्डेन्ता (इतिपि)] पेसले भिक्खू ओमसन्ति – जातियापि, नामेनपि, गोत्तेनपि, कम्मेनपि, सिप्पेनपि, आबाधेनपि, लिङ्गेनपि, किलेसेनपि, आपत्तियापि; हीनेनपि अक्कोसेन खुंसेन्ति वम्भेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू पेसलेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डन्ता पेसले भिक्खू ओमसिस्सन्ति – जातियापि, नामेनपि, गोत्तेनपि, कम्मेनपि, सिप्पेनपि, आबाधेनपि, लिङ्गेनपि, किलेसेनपि, आपत्तियापि; हीनेनपि अक्कोसेन खुंसेस्सन्ति वम्भेस्सन्ती’’ति!

अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, पेसलेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डन्ता पेसले भिक्खू ओमसथ – जातियापि...पे०... हीनेनपि अक्कोसेन खुंसेथ वम्भेथाति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, पेसलेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डन्ता पेसले भिक्खू ओमसिस्सथ – जातियापि...पे०... हीनेनपि अक्कोसेन खुंसेस्सथ वम्भेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा,

अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... विगरहित्वा...पे॰... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि –

१३. ''भूतपुब्बं, भिक्खवे, तक्कसिलायं [तक्कसीलायं (क॰)] अञ्ञतरस्स ब्राह्मणस्स नन्दिविसालो नाम बलीबद्दो [बलिवद्दो (सी॰), बलिबद्दो (स्या॰)] अहोसि। अथ खो, भिक्खवे, नन्दिविसालो बलीबद्दो तं ब्राह्मणं एतदवोच – ''गच्छ त्वं, ब्राह्मण, सेट्ठिना सद्धिं सहस्सेन अब्भुतं करोहि – मय्हं बलीबद्दो सकटसतं अतिबद्धं पवट्टेस्सती''ति। अथ खो, भिक्खवे, सो ब्राह्मणो सेट्ठिना सद्धिं सहस्सेन अब्भुतं अकासि – मय्हं बलीबद्दो सकटसतं अतिबद्धं पवट्टेस्सतीति। अथ खो, भिक्खवे, सो ब्राह्मणो सकटसतं अतिबन्धित्वा नन्दिविसालं बलीबद्दं युञ्जित्वा एतदवोच – ''गच्छ, कूट [अञ्छ कूट (सी॰ स्या॰)], वहस्सु, कूटा'ति। अथ खो, भिक्खवे, नन्दिविसालो बलीबद्दो तत्थेव अट्ठासि। अथ खो, भिक्खवे, सो ब्राह्मणो सहस्सेन पराजितो पज्झायि। अथ खो, भिक्खवे, नन्दिविसालो बलीबद्दो तं ब्राह्मणं एतदवोच – ''किस्स त्वं, ब्राह्मण, पज्झायसी''ति? 'तथा हि पनाहं, भो, तया सहस्सेन पराजितो''ति। 'किस्स पन मं त्वं, ब्राह्मण, अकूटं कूटवादेन पापेसि? गच्छ त्वं, ब्राह्मण, सेट्ठिना सद्धिं द्वीहि सहस्सेहि अब्भुतं करोहि – ''मय्हं बलीबद्दो सकटसतं अतिबद्धं पवट्टेस्सती''ति। ''मा च मं अकूटं कूटवादेन पापेसी''ति। अथ खो, भिक्खवे, सो ब्राह्मणो सेट्ठिना सद्धिं द्वीहि सहस्सेहि अब्भुतं अकासि – ''मय्हं बलीबद्दो सकटसतं अतिबद्धं पवट्टेस्सती''ति। अथ खो, भिक्खवे, सो ब्राह्मणो सकटसतं अतिबन्धित्वा नन्दिविसालं बलीबद्दं युञ्जित्वा एतदवोच – ''अच्छ, भद्र, वहस्सु, भद्रा''ति। अथ खो, भिक्खवे, नन्दिविसालो बलीबद्दो सकटसतं अतिबद्धं पवट्टेसि।

[जा॰ १.१.२८ नन्दिविसालजातकेपि, तत्थ पन मनुञ्ञसद्दो दिस्सति] ''मनापमेव भासेय्य, ना, मनापं कुदाचनं।
मनापं भासमानस्स, गरुं भारं उदब्बहि।
धनञ्च नं अलाभेसि, तेन च, त्तमनो अहूति॥

''तदापि मे, भिक्खवे, अमनापा खुंसना वम्भना। किमङ्गं पन एतरहि मनापा भविस्सति खुंसना वम्भना? नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰...। ''एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१४. **''ओमसवादे पाचित्तिय''**न्ति।

१५. **ओमसवादो** नाम दसहि आकारेहि ओमसति – जातियापि, नामेनपि, गोत्तेनपि, कम्मेनपि, सिप्पेनपि, आबाधेनपि, लिङ्गेनपि, किलेसेनपि, आपत्तियापि, अक्कोसेनपि।

जाति नाम द्वे जातियो – हीना च जाति उक्कट्ठा च जाति। **हीना** नाम जाति – चण्डालजाति, वेनजाति, नेसादजाति, रथकारजाति, पुक्कुसजाति। एसा हीना नाम जाति। **उक्कट्ठा** नाम जाति – खत्तियजाति, ब्राह्मणजाति। एसा उक्कट्ठा नाम जाति।

नामं नाम द्वे नामानि – हीनञ्च नामं उक्कट्ठञ्च नामं। **हीनं** नाम नामं – अवकण्णकं, जवकण्णकं, धनिट्ठकं, सविट्ठकं, कुलवड्ढकं, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु ओञ्ञातं अवञ्ञातं हीळितं परिभूतं अचित्तीकतं, एतं हीनं नाम नामं। **उक्कट्ठं** नाम नामं – बुद्धप्पटिसंयुत्तं, धम्मप्पटिसंयुत्तं, सङ्घप्पटिसंयुत्तं, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु अनोञ्ञातं अनवञ्ञातं अहीळितं अपरिभूतं चित्तीकतं, एतं उक्कट्ठं नाम नामं।

गोत्तं नाम द्वे गोत्तानि – हीनञ्च गोत्तं उक्कट्ठञ्च गोत्तं। **हीनं** नाम गोत्तं – कोसियगोत्तं, भारद्वाजगोत्तं, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु ओञ्ञातं अवञ्ञातं हीळितं परिभूतं अचित्तीकतं, एतं हीनं नाम गोत्तं। **उक्कट्ठं** नाम गोत्तं – गोतमगोत्तं, मोग्गल्लानगोत्तं, कच्चानगोत्तं, वासिट्ठगोत्तं, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु अनोञ्ञातं अनवञ्ञातं अहीळितं अपरिभूतं चित्तीकतं, एतं उक्कट्ठं नाम गोत्तं।

कम्मं नाम द्वे कम्मानि – हीनञ्च कम्मं उक्कट्ठञ्च कम्मं। **हीनं** नाम कम्मं – कोट्ठककम्मं, पुप्फछड्डककम्मं, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु ओञ्ञातं अवञ्ञातं हीळितं परिभूतं अचित्तीकतं, एतं हीनं नाम कम्मं। **उक्कट्ठं** नाम कम्मं – कसि, वणिज्जा, गोरक्खा, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु अनोञ्ञातं अनवञ्ञातं अहीळितं अपरिभूतं चित्तीकतं। एतं उक्कट्ठं नाम कम्मं।

सिप्पं नाम द्वे सिप्पानि – हीनञ्च सिप्पं उक्कट्ठञ्च सिप्पं। **हीनं** नाम सिप्पं – नळकारसिप्पं, कुम्भकारसिप्पं, पेसकारसिप्पं, चम्मकारसिप्पं, नहापितसिप्पं, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु ओञ्ञातं अवञ्ञातं हीळितं परिभूतं अचित्तीकतं। एतं हीनं नाम सिप्पं। **उक्कट्ठं** नाम सिप्पं – मुद्दा, गणना, लेखा, तेसु तेसु वा पन जनपदेसु अनोञ्ञातं अनवञ्ञातं अहीळितं अपरिभूतं चित्तीकतं, एतं उक्कट्ठं नाम सिप्पं।

सब्बेपि **आबाधा** हीना, अपिच मधुमेहो आबाधो उक्कट्ठो।

लिङ्गं नाम द्वे लिङ्गानि – हीनञ्च लिङ्गं उक्कट्ठञ्च लिङ्गं। **हीनं** नाम लिङ्गं – अतिदीघं, अतिरस्सं, अतिकण्हं, अच्चोदातं, एतं हीनं नाम लिङ्गं। **उक्कट्ठं** नाम लिङ्गं – नातिदीघं, नातिरस्सं, नातिकण्हं, नाच्चोदातं। एतं उक्कट्ठं नाम लिङ्गं।

सब्बेपि **किलेसा** हीना।

सब्बापि **आपत्तियो** हीना। अपिच, सोतापत्तिसमापत्ति उक्कट्ठा।

अक्कोसो नाम द्वे अक्कोसा – हीनो च अक्कोसो उक्कट्ठो च अक्कोसो। **हीनो** नाम अक्कोसो – ओट्ठोसि, मेण्डोसि, गोणोसि, गद्रभोसि, तिरच्छानगतोसि, नेरयिकोसि; नत्थि तुय्हं सुगति, दुग्गति येव तुय्हं पाटिकङ्खाति, यकारेन वा भकारेन वा, काटकोटचिकाय वा, एसो हीनो नाम अक्कोसो। **उक्कट्ठो** नाम अक्कोसो – पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि, धम्मकथिकोसि, नत्थि तुय्हं दुग्गति, सुगतियेव तुय्हं पाटिकङ्खाति, एसो उक्कट्ठो नाम अक्कोसो।

१६. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, चण्डालं वेनं नेसादं रथकारं पुक्कुसं – ''चण्डालोसि, वेनोसि, नेसादोसि, रथकारोसि, पुक्कुसोसी''ति भणति [वदेतीति उद्देसो। भणतीति वित्थारो (वजिरबुद्धि)], आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, खत्तियं ब्राह्मणं – ''चण्डालोसि, वेनोसि, नेसादोसि, रथकारोसि, पुक्कुसोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, चण्डालं वेनं नेसादं रथकारं

पुक्कुसं – ''खत्तियोसि, ब्राह्मणोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, खत्तियं ब्राह्मणं – ''खत्तियोसि, ब्राह्मणोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

१७. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, अवकण्णकं जवकण्णकं धनिट्ठकं सविट्ठकं कुलवड्ढकं – ''अवकण्णकोसि, जवकण्णकोसि, धनिट्ठकोसि, सविट्ठकोसि, कुलवड्ढकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, बुद्धरक्खितं धम्मरक्खितं सङ्घरक्खितं – ''अवकण्णकोसि, जवकण्णकोसि, धनिट्ठकोसि, सविट्ठकोसि, कुलवड्ढकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, अवकण्णकं जवकण्णकं धनिट्ठकं सविट्ठकं कुलवड्ढकं – ''बुद्धरक्खितोसि, धम्मरक्खितोसि, सङ्घरक्खितोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उकट्ठं वदेति, बुद्धरक्खितं धम्मरक्खितं सङ्घरक्खितं – ''बुद्धरक्खितोसि, धम्मरक्खितोसि, सङ्घरक्खितोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

१८. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, कोसियं भारद्वाजं – ''कोसियोसि, भारद्वाजोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, गोतमं मोग्गल्लानं कच्चानं वासिट्ठं – ''कोसियोसि, भारद्वाजोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, कोसियं भारद्वाजं – ''गोतमोसि, मोग्गल्लानोसि, कच्चानोसि, वासिट्ठोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, गोतमं मोग्गल्लानं कच्चानं वासिट्ठं – ''गोतमोसि, मोग्गल्लानोसि, कच्चानोसि, वासिट्ठोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

१९. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, कोट्ठकं पुप्फछड्डकं – ''कोट्ठकोसि, पुप्फछड्डकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, कस्सकं वाणिजं गोरक्खं – ''कोट्ठकोसि, पुप्फछड्डकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, कोट्ठकं पुप्फछड्डकं – ''कस्सकोसि, वाणिजोसि, गोरक्खोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, कस्सकं वाणिजं गोरक्खं – ''कस्सकोसि, वाणिजोसि, गोरक्खोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२०. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, नळकारं कुम्भकारं पेसकारं चम्मकारं नहापितं – ''नळकारोसि, कुम्भकारोसि, पेसकारोसि, चम्मकारोसि, नहापितोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, मुद्दिकं गणकं लेखकं – ''नळकारोसि, कुम्भकारोसि, पेसकारोसि, चम्मकारोसि, नहापितोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, नळकारं कुम्भकारं पेसकारं चम्मकारं नहापितं – ''मुद्दिकोसि, गणकोसि, लेखकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, मुद्दिकं गणकं लेखकं – ''मुद्दिकोसि, गणकोसि, लेखकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२१. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, कुट्ठिकं गण्डिकं किलासिकं सोसिकं अपमारिकं – ''कुट्ठिकोसि, गण्डिकोसि, किलासिकोसि, सोसिकोसि, अपमारिकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, मधुमेहिकं – ''कुट्ठिकोसि, गण्डिकोसि, किलासिकोसि, सोसिकोसि, अपमारिकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, कुट्ठिकं गण्डिकं किलासिकं सोसिकं अपमारिकं – ''मधुमेहिकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, मधुमेहिकं – ''मधुमेहिकोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२२. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, अतिदीघं अतिरस्सं अतिकण्हं अच्चोदातं – ''अतिदीघोसि, अतिरस्सोसि, अतिकण्होसि, अच्चोदातोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, नातिदीघं नातिरस्सं नातिकण्हं नाच्चोदातं – ''अतिदीघोसि, अतिरस्सोसि, अतिकण्होसि, अच्चोदातोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय

पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, अतिदीघं अतिरस्सं अतिकण्हं अच्चोदातं – ''नातिदीघोसि, नातिरस्सोसि, नातिकण्होसि, नाच्चोदातोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, नातिदीघं नातिरस्सं नातिकण्हं नाच्चोदातं – ''नातिदीघोसि, नातिरस्सोसि, नातिकण्होसि, नाच्चोदातोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२३. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, रागपरियुट्ठितं दोसपरियुट्ठितं मोहपरियुट्ठितं – ''रागपरियुट्ठितोसि, दोसपरियुट्ठितोसि, मोहपरियुट्ठितोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, वीतरागं वीतदोसं वीतमोहं – ''रागपरियुट्ठितोसि, दोसपरियुट्ठितोसि, मोहपरियुट्ठितोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, रागपरियुट्ठितं दोसपरियुट्ठितं मोहपरियुट्ठितं – ''वीतरागोसि, वीतदोसोसि, वीतमोहोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, वीतरागं वीतदोसं वीतमोहं – ''वीतरागोसि, वीतदोसोसि, वीतमोहोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२४. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, पाराजिकं अज्झापन्नं सङ्घादिसेसं अज्झापन्नं थुल्लच्चयं अज्झापन्नं पाचित्तियं अज्झापन्नं पाटिदेसनीयं अज्झापन्नं दुक्कटं अज्झापन्नं दुब्भासितं अज्झापन्नं – ''पाराजिकं अज्झापन्नोसि, सङ्घादिसेसं अज्झापन्नोसि, थुल्लच्चयं अज्झापन्नोसि, पाचित्तियं अज्झापन्नोसि, पाटिदेसनीयं अज्झापन्नोसि, दुक्कटं अज्झापन्नोसि, दुब्भासितं अज्झापन्नोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, सोतापन्नं – ''पाराजिकं अज्झापन्नोसि…पे॰… दुब्भासितं अज्झापन्नोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, पाराजिकं अज्झापन्नं…पे॰… दुब्भासितं अज्झापन्नं – ''सोतापन्नोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, सोतापन्नं – ''सोतापन्नोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२५. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति, ओट्ठं मेण्डं गोणं गद्रभं तिरच्छानगतं नेरयिकं – ''ओट्ठोसि, मेण्डोसि, गोणोसि, गद्रभोसि, तिरच्छानगतोसि, नेरयिकोसि, नत्थि तुय्हं सुगति, दुग्गति येव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन उक्कट्ठं वदेति, पण्डितं ब्यत्तं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं – ''ओट्ठोसि, मेण्डोसि, गोणोसि, गद्रभोसि, तिरच्छानगतोसि, नेरयिकोसि; नत्थि तुय्हं सुगति, दुग्गति येव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन हीनं वदेति, ओट्ठं मेण्डं गोणं गद्रभं तिरच्छानगतं नेरयिकं – ''पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि, धम्मकथिकोसि, नत्थि तुय्हं दुग्गति, सुगति येव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, पण्डितं ब्यत्तं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं – ''पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि, धम्मकथिकोसि, नत्थि तुय्हं दुग्गति, सुगति येव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

२६. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे खत्तिया, ब्राह्मणा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

२७. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे अवकण्णका जवकण्णका धनिट्ठका सविट्ठका कुलवड्ढका''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे बुद्धरक्खिता धम्मरक्खिता सङ्घरक्खिता''ति भणति ...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे कोसिया भारद्वाजा''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे गोतमा मोग्गल्लाना कच्चाना वासिट्ठा''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे कोट्ठका पुप्फछड्डका''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे कस्सका वाणिजा गोरक्खा''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे नळकारा कुम्भकारा पेसकारा चम्मकारा नहापिता''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे मुद्दिका गणका लेखका''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे कुट्ठिका गण्डिका किलासिका सोसिका अपमारिका''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे मधुमेहिका''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे अतिदीघा अतिरस्सा अतिकण्हा अच्चोदाता''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे नातिदीघा नातिरस्सा नातिकण्हा नाच्चोदाता''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे रागपरियुट्ठिता दोसपरियुट्ठिता मोहपरियुट्ठिता''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे वीतरागा वीतदोसा वीतमोहा''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे पाराजिकं अज्झापन्ना...पे॰... दुब्भासितं अज्झापन्ना''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे सोतापन्ना''ति भणति...पे॰...। ''सन्ति इधेकच्चे ओट्ठा मेण्डा गोणा गद्रभा तिरच्छानगता नेरयिका, नत्थि तेसं सुगति, दुग्गतियेव तेसं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

२८. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे पण्डिता ब्यत्ता,

मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थि तेसं दुग्गति, सुगतियेव तेसं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

२९. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''ये नून चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स...पे०...।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''ये नून पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

३०. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''न मयं चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति...पे०...। ''न मयं पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थम्हाकं दुग्गति, सुगतियेव अम्हाकं पाटिकङ्खा''ति भणति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

३१. उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो हीनेन हीनं वदेति,...पे०... हीनेन उक्कट्ठं वदेति...पे०... उक्कट्ठेन हीनं वदेति...पे०... उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, पण्डितं ब्यत्तं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं – ''पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि, धम्मकथिकोसि, नत्थि तुय्हं दुग्गति, सुगतियेव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति...पे०...। ''सन्ति इधेकच्चे पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थि तेसं दुग्गति, सुगतियेव तेसं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''ये नून चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति...पे०...। ''ये नून पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं खुंसेतुकामो वम्भेतुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति, ''न मयं चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति...पे०...। ''न मयं पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थम्हाकं दुग्गति, सुगतियेव अम्हाकं पाटिकङ्खा''ति भणति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

३२. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता हीनेन हीनं वदेति, चण्डालं वेनं नेसादं रथकारं पुक्कुसं – ''चण्डालोसि, वेनोसि, नेसादोसि, रथकारोसि, पुक्कुसोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता हीनेन उक्कट्ठं वदेति, खत्तियं ब्राह्मणं – ''चण्डालोसि, वेनोसि, नेसादोसि, रथकारोसि, पुक्कुसोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता उक्कट्ठेन हीनं वदेति, चण्डालं

वेनं नेसादं रथकारं पुक्कुसं – ''खत्तियोसि, ब्राह्मणोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, खत्तियं ब्राह्मणं – ''खत्तियोसि, ब्राह्मणोसी''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता हीनेन हीनं वदेति…पे०… हीनेन उक्कट्ठं वदेति…पे०… उक्कट्ठेन हीनं वदेति…पे०… उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, पण्डितं ब्यत्तं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं – ''पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि, धम्मकथिकोसि, नत्थि तुय्हं दुग्गति, सुगति येव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

३३. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति…पे०…। ''सन्ति इधेकच्चे पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थि तेसं दुग्गति, सुगति येव तेसं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता एवं वदेति, ''ये नून चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति…पे०…। ''ये नून पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता एवं वदेति, ''न मयं चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति…पे०…। ''न मयं पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थम्हाकं दुग्गति, सुगतियेव अम्हाकं पाटिकङ्खा''ति भणति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

३४. उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता हीनेन हीनं वदेति…पे०… हीनेन उक्कट्ठं वदेति…पे०… उक्कट्ठेन हीनं वदेति…पे०… उक्कट्ठेन उक्कट्ठं वदेति, पण्डितं ब्यत्तं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं – ''पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि धम्मकथिकोसि, नत्थि तुय्हं दुग्गति; सुगति येव तुय्हं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता एवं वदेति, ''सन्ति इधेकच्चे चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति…पे०…। ''सन्ति इधेकच्चे पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थि तेसं दुग्गति, सुगति येव तेसं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता एवं वदेति, ''ये नून चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति…पे०…। ''ये नून पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नं न खुंसेतुकामो न वम्भेतुकामो न मङ्कुकत्तुकामो, दवकम्यता एवं वदेति, ''न मयं चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा''ति भणति…पे०…। ''न मयं पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थम्हाकं दुग्गति, सुगति येव अम्हाकं पाटिकङ्खा''ति भणति, आपत्ति वाचाय, वाचाय दुब्भासितस्स।

३५. अनापत्ति अत्थपुरेक्खारस्स, धम्मपुरेक्खारस्स, अनुसासनिपुरेक्खारस्स, उम्मत्तकस्स, खित्तचित्तस्स, वेदनाट्टस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ओमसवादसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. पेसुञ्ञसिक्खापदं

३६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं पेसुञ्ञं उपसंहरन्ति; इमस्स सुत्वा अमुस्स अक्खायन्ति, इमस्स भेदाय; अमुस्स सुत्वा इमस्स अक्खायन्ति, अमुस्स भेदाय। तेन अनुप्पन्नानि चेव भण्डनानि उप्पज्जन्ति, उप्पन्नानि च भण्डनानि भिय्योभावाय वेपुल्लाय संवत्तन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं पेसुञ्ञं उपसंहरिस्सन्ति, इमस्स सुत्वा अमुस्स अक्खायिस्सन्ति, इमस्स भेदाय; अमुस्स सुत्वा इमस्स अक्खायिस्सन्ति, अमुस्स भेदाय! तेन अनुप्पन्नानि चेव भण्डनानि उप्पज्जन्ति, उप्पन्नानि च भण्डनानि भिय्योभावाय वेपुल्लाय संवत्तन्ती''ति। अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं पेसुञ्ञं उपसंहरथ, इमस्स सुत्वा अमुस्स अक्खायथ, इमस्स भेदाय, अमुस्स सुत्वा इमस्स अक्खायथ, अमुस्स भेदाय? तेन अनुप्पन्नानि चेव भण्डनानि उप्पज्जन्ति, उप्पन्नानि च भण्डनानि भिय्योभावाय वेपुल्लाय संवत्तन्ती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं पेसुञ्ञं उपसंहरिस्सथ! इमस्स सुत्वा अमुस्स अक्खायिस्सथ, इमस्स भेदाय! अमुस्स सुत्वा इमस्स अक्खायिस्सथ, अमुस्स भेदाय! तेन अनुप्पन्नानि चेव भण्डनानि उप्पज्जन्ति, उप्पन्नानि च भण्डनानि भिय्योभावाय वेपुल्लाय संवत्तन्ति। नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय। पसन्नानं वा भिय्योभावाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३७. ''**भिक्खुपेसुञ्ञे पाचित्तिय**''न्ति।

३८. **पेसुञ्ञं** नाम द्वीहाकारेहि पेसुञ्ञं होति – पियकम्यस्स वा भेदाधिप्पायस्स वा। दसहाकारेहि पेसुञ्ञं उपसंहरति – जातितोपि, नामतोपि, गोत्ततोपि, कम्मतोपि, सिप्पतोपि, आबाधतोपि, लिङ्गतोपि, किलेसतोपि, आपत्तितोपि, अक्कोसतोपि।

जाति नाम द्वे जातियो – हीना च जाति उक्कट्ठा च जाति। **हीना** नाम जाति – चण्डालजाति वेनजाति नेसादजाति रथकारजाति पुक्कुसजाति। एसा हीना नाम जाति। **उक्कट्ठा** नाम जाति – खत्तियजाति ब्राह्मणजाति। एसा उक्कट्ठा नाम जाति…पे०…।

अक्कोसो नाम द्वे अक्कोसा – हीनो च अक्कोसो उक्कट्ठो च अक्कोसो। **हीनो** नाम अक्कोसो – ओट्ठोसि, मेण्डोसि, गोणोसि, गद्रभोसि, तिरच्छानगतोसि, नेरयिकोसि; नत्थि तुय्हं सुगति; दुग्गति येव तुय्हं पाटिकङ्खाति, यकारेन वा भकारेन वा काटकोटचिकाय वा। एसो हीनो नाम अक्कोसो। **उक्कट्ठो** नाम अक्कोसो – पण्डितोसि, ब्यत्तोसि, मेधावीसि, बहुस्सुतोसि, धम्मकथिकोसि; नत्थि तुय्हं दुग्गति; सुगति येव तुय्हं पाटिकङ्खाति। एसो उक्कट्ठो नाम अक्कोसो।

३९. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'चण्डालो वेनो नेसादो रथकारो पुक्कुसो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'खत्तियो ब्राह्मणो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'अवकण्णको जवकण्णको धनिट्ठको सविट्ठको कुलवड्ढको'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'बुद्धरक्खितो धम्मरक्खितो सङ्घरक्खितो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'कोसियो भारद्वाजो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'गोतमो मोग्गल्लानो कच्चानो वासिट्ठो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'कोट्ठको पुप्फछड्डको'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'कस्सको वाणिजो गोरक्खो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'नळकारो कुम्भकारो पेसकारो चम्मकारो नहापितो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'मुद्दिको गणको लेखको'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

४०. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'कुट्ठिको गण्डिको किलासिको सोसिको अपमारिको'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'मधुमेहिको'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'अतिदीघो अतिरस्सो अतिकण्हो अच्चोदातो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'नातिदीघो नातिरस्सो नातिकण्हो नाच्चोदातो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'रागपरियुट्ठितो दोसपरियुट्ठितो मोहपरियुट्ठितो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'वीतरागो वीतदोसो वीतमोहो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'पाराजिकं अज्झापन्नो, सङ्घादिसेसं अज्झापन्नो, थुल्लच्चयं अज्झापन्नो, पाचित्तियं अज्झापन्नो, पाटिदेसनीयं अज्झापन्नो, दुक्कटं अज्झापन्नो, दुब्भासितं अज्झापन्नो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'सोतापन्नो'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'ओट्ठो मेण्डो गोणो गद्रभो तिरच्छानगतो नेरयिको, नत्थि तस्स सुगति, दुग्गतियेव तस्स पाटिकङ्खा'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो तं 'पण्डितो ब्यत्तो मेधावी बहुस्सुतो धम्मकथिको, नत्थि तस्स दुग्गति, सुगति येव तस्स पाटिकङ्खा'ति भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

४१. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो 'सन्ति इधेकच्चे चण्डाला वेना नेसादा रथकारा, पुक्कुसा'ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो 'सन्ति इधेकच्चे खत्तिया ब्राह्मणा'ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती'ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स...पे०...।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो 'सन्ति इधेकच्चे पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थि तेसं दुग्गति, सुगति येव तेसं पाटिकङ्खा'ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो 'ये नून चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा'ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती''ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ''इत्थन्नामो 'ये नून पण्डिता ब्यत्ता मेधावी

बहुस्सुता धम्मकथिका’ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती’’ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ‘‘इत्थन्नामो ‘न मयं चण्डाला वेना नेसादा रथकारा पुक्कुसा’ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती’’ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति – ‘‘इत्थन्नामो ‘न मयं पण्डिता ब्यत्ता मेधावी बहुस्सुता धम्मकथिका, नत्थम्हाकं दुग्गति, सुगति येव अम्हाकं पाटिकङ्खा’ति भणति, न सो अञ्ञं भणति, तञ्ञेव भणती’’ति। आपत्ति वाचाय, वाचाय दुक्कटस्स।

४२. उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति; आपत्ति वाचाय, वाचाय पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नो उपसम्पन्नस्स सुत्वा अनुपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नस्स सुत्वा उपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उपसम्पन्नो अनुपसम्पन्नस्स सुत्वा अनुपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

४३. अनापत्ति नपियकम्यस्स, नभेदाधिप्पायस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पेसुञ्ञसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. पदसोधम्मसिक्खापदं

४४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उपासके पदसो धम्मं वाचेन्ति। उपासका भिक्खूसु अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिका विहरन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू उपासके पदसो धम्मं वाचेस्सन्ति! उपासका भिक्खूसु अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिका विहरन्ती’’ति। अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… ‘‘सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, उपासके पदसो धम्मं वाचेथ; उपासका भिक्खूसु अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिका विहरन्ती’’ति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, उपासके पदसो धम्मं वाचेस्सथ! उपासका भिक्खूसु अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिका विहरन्ति! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय पसन्नानं वा भिय्योभावाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४५. **‘‘यो पन भिक्खु अनुपसम्पन्नं पदसो धम्मं वाचेय्य पाचित्तिय**’’न्ति।

४६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अनुपसम्पन्नो नाम भिक्खुञ्च भिक्खुनिञ्च ठपेत्वा अवसेसो अनुपसम्पन्नो नाम।

पदसो नाम पदं, अनुपदं, अन्वक्खरं, अनुब्यञ्जनं।

पदं नाम एकतो पट्ठपेत्वा एकतो ओसापेन्ति। **अनुपदं** नाम पाटेक्कं पट्ठपेत्वा एकतो ओसापेन्ति। **अन्वक्खरं** नाम ''रूपं अनिच्च''न्ति वुच्चमानो, ''रु''न्ति ओपातेति। **अनुब्यञ्जनं** नाम ''रूपं अनिच्च''न्ति वुच्चमानो, ''वेदना अनिच्चा''ति सद्दं निच्छारेति।

यञ्च पदं, यञ्च अनुपदं, यञ्च अन्वक्खरं, यञ्च अनुब्यञ्जनं – सब्बमेतं पदसो [पदसो धम्मो (इतिपि)] नाम।

धम्मो नाम बुद्धभासितो, सावकभासितो, इसिभासितो, देवताभासितो, अत्थूपसञ्हितो, धम्मूपसञ्हितो।

वाचेय्याति पदेन वाचेति, पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स। अक्खराय वाचेति, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचित्तियस्स।

४७. अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी पदसो धम्मं वाचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको पदसो धम्मं वाचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी पदसो धम्मं वाचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, अनापत्ति।

४८. अनापत्ति एकतो उद्दिसापेन्तो, एकतो सज्झायं करोन्तो, येभुय्येन पगुणं गन्थं भणन्तं ओपातेति, ओसारेन्तं ओपातेति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पदसोधम्मसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. सहसेय्यसिक्खापदं

४९. तेन समयेन बुद्धो भगवा आळवियं विहरति अग्गाळवे चेतिये। तेन खो पन समयेन उपासका आरामं आगच्छन्ति धम्मस्सवनाय। धम्मे भासिते थेरा भिक्खू यथाविहारं गच्छन्ति। नवका भिक्खू तत्थेव उपट्ठानसालायं उपासकेहि सद्धिं मुट्ठस्सती, असम्पजाना, नग्गा, विकूजमाना, काकच्छमाना सेय्यं कप्पेन्ति। उपासका उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता मुट्ठस्सती असम्पजाना नग्गा विकूजमाना काकच्छमाना सेय्यं कप्पेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं उपासकानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खू अनुपसम्पन्नेन सहसेय्यं कप्पेस्सन्ती''ति! अथ खो ते भिक्खू ते नवके भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… ''सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू अनुपसम्पन्नेन सहसेय्यं कप्पेन्ती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा अनुपसम्पन्नेन सहसेय्यं कप्पेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु अनुपसम्पन्नेन सहसेय्यं कप्पेय्य पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५०. अथ खो भगवा आळवियं यथाभिरन्तं विहरित्वा येन कोसम्बी तेन चारिकं पक्कामि। अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन कोसम्बी तदवसरि। तत्र सुदं भगवा कोसम्बियं विहरति बदरिकारामे। भिक्खू आयस्मन्तं राहुलं एतदवोचुं – "भगवता, आवुसो राहुल, सिक्खापदं पञ्ञत्तं – 'न अनुपसम्पन्नेन सहसेय्या कप्पेतब्बा'ति। सेय्यं, आवुसो राहुल, जानाही"ति। अथ खो आयस्मा राहुलो सेय्यं अलभमानो वच्चकुटिया सेय्यं कप्पेसि। अथ खो भगवा रत्तिया पच्चूससमयं पच्चुट्ठाय येन वच्चकुटि तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा उक्कासि। आयस्मापि राहुलो उक्कासि। "को एत्था"ति? "अहं, भगवा, राहुलो"ति। "किस्स त्वं, राहुल, इध निसिन्नोसी"ति? अथ खो आयस्मा राहुलो भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – "अनुजानामि, भिक्खवे, अनुपसम्पन्नेन दिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेतुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५१. "**यो पन भिक्खु अनुपसम्पन्नेन उत्तरिदिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेय्य, पाचित्तिय**"न्ति।

५२. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अनुपसम्पन्नो नाम भिक्खुं ठपेत्वा अवसेसो अनुपसम्पन्नो नाम।

उत्तरिदिरत्ततिरत्तन्ति अतिरेकदिरत्ततिरत्तं।

सहाति एकतो।

सेय्या नाम सब्बच्छन्ना, सब्बपरिच्छन्ना, येभुय्येनच्छन्ना, येभुय्येन परिच्छन्ना।

सेय्यं कप्पेय्याति चतुत्थे दिवसे अत्थङ्गते सूरिये, अनुपसम्पन्ने निपन्ने, भिक्खु निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु निपन्ने, अनुपसम्पन्नो निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उट्ठहित्वा पुनप्पुनं निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

५३. अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी उत्तरिदिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको उत्तरिदिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी उत्तरिदिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उपड्ढच्छन्ने उपड्ढपरिच्छन्ने, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, अनापत्ति।

५४. अनापत्ति द्वेतिस्सो रत्तियो वसति, ऊनकद्वेतिस्सो रत्तियो वसति, द्वे रत्तियो वसित्वा ततियाय रत्तिया पुरारुणा निक्खमित्वा पुन वसति, सब्बच्छन्ने, सब्बअपरिच्छन्ने, सब्बपरिच्छन्ने सब्बअच्छन्ने [वसति, सब्बअच्छन्ने सब्बअपरिच्छन्ने, (सी०)], येभुय्येन अच्छन्ने, येभुय्येन अपरिच्छन्ने, अनुपसम्पन्ने निपन्ने भिक्खु निसीदति, भिक्खु निपन्ने अनुपसम्पन्नो निसीदति, उभो वा निसीदन्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सहसेय्यसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. दुतियसहसेय्यसिक्खापदं

५५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा अनुरुद्धो कोसलेसु जनपदे [एत्थ अम्बट्ठसुत्तादिटीका ओलोकेतब्बा] सावत्थिं गच्छन्तो सायं अञ्ञतरं गामं उपगच्छि। तेन खो पन समयेन तस्मिं गामे अञ्ञतरिस्सा इत्थिया आवसथागारं पञ्ञत्तं होति। अथ खो आयस्मा अनुरुद्धो येन सा इत्थी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं इत्थिं एतदवोच – ''सचे ते, भगिनि, अगरु, वसेय्याम एकरत्तं आवसथागारे''ति। ''वसेय्याथ, भन्ते''ति। अञ्ञेपि अद्धिका येन सा इत्थी तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा तं इत्थिं एतदवोचुं – ''सचे ते, अय्ये, अगरु वसेय्याम एकरत्तं आवसथागारे''ति। ''एसो खो अय्यो समणो पठमं उपगतो; सचे सो अनुजानाति, वसेय्याथा''ति। अथ खो ते अद्धिका येनायस्मा अनुरुद्धो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अनुरुद्धं एतदवोचुं – ''सचे ते, भन्ते, अगरु, वसेय्याम एकरत्तं आवसथागारे''ति। ''वसेय्याथ, आवुसो''ति। अथ खो सा इत्थी आयस्मन्ते अनुरुद्धे सह दस्सनेन पटिबद्धचित्ता अहोसि। अथ खो सा इत्थी येनायस्मा अनुरुद्धो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अनुरुद्धं एतदवोच – ''अय्यो, भन्ते, इमेहि मनुस्सेहि आकिण्णो न फासु विहरिस्सति। साधाहं, भन्ते, अय्यस्स मञ्चकं अब्भन्तरं पञ्ञपेय्य''न्ति। अधिवासेसि खो आयस्मा अनुरुद्धो तुण्हीभावेन। अथ खो सा इत्थी आयस्मतो अनुरुद्धस्स मञ्चकं अब्भन्तरं पञ्ञपेत्वा अलङ्कतप्पटियत्ता गन्धगन्धिनी येनायस्मा अनुरुद्धो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं अनुरुद्धं एतदवोच – ''अय्यो, भन्ते, अभिरूपो दस्सनीयो पासादिको, अहं चम्हि अभिरूपा दस्सनीया पासादिका। साधाहं, भन्ते, अय्यस्स पजापति भवेय्य''न्ति। एवं वुत्ते आयस्मा अनुरुद्धो तुण्ही अहोसि। दुतियम्पि खो…पे०… ततियम्पि खो सा इत्थी आयस्मन्तं अनुरुद्धं एतदवोच – ''अय्यो, भन्ते, अभिरूपो दस्सनीयो पासादिको, अहञ्चम्हि अभिरूपा दस्सनीया पासादिका। साधु, भन्ते, अय्यो मञ्चेव पटिच्छतु [सम्पटिच्छतु (स्या०)] सब्बञ्च सापतेय्य''न्ति। ततियम्पि खो आयस्मा अनुरुद्धो तुण्ही अहोसि। अथ खो सा इत्थी साटकं निक्खिपित्वा आयस्मतो अनुरुद्धस्स पुरतो चङ्कमतिपि तिट्ठतिपि निसीदतिपि सेय्यम्पि कप्पेति। अथ खो आयस्मा अनुरुद्धो इन्द्रियानि ओक्खिपित्वा तं इत्थिं नेव ओलोकेसि नपि आलपि। अथ खो सा इत्थी – ''अच्छरियं वत भो, अब्भुतं वत भो! बहू मे मनुस्सा सतेनपि सहस्सेनपि पहिणन्ति। अयं पन समणो – मया सामं याचियमानो – न इच्छति मञ्चेव पटिच्छितुं सब्बञ्च सापतेय्य''न्ति साटकं निवासेत्वा आयस्मतो अनुरुद्धस्स पादेसु सिरसा निपतित्वा आयस्मन्तं अनुरुद्धं एतदवोच – ''अच्चयो मं, भन्ते, अच्चगमा यथाबालं यथामूळ्हं यथाअकुसलं याहं एवमकासिं। तस्सा मे, भन्ते, अय्यो अच्चयं अच्चयतो पटिग्गण्हातु आयतिं संवराया''ति। ''तग्घ त्वं, भगिनि, अच्चयो अच्चगमा यथाबालं यथामूळ्हं यथाअकुसलं या त्वं एवमकासि। यतो च खो त्वं, भगिनि, अच्चयं अच्चयतो दिस्वा यथाधम्मं पटिकरोसि, तं ते मयं पटिग्गण्हाम। वुद्धि हेसा, भगिनि, अरियस्स विनये यो अच्चयं अच्चयतो दिस्वा यथाधम्मं पटिकरोति आयतिञ्च संवरं आपज्जती''ति।

अथ खो सा इत्थी तस्सा रत्तिया अच्चयेन आयस्मन्तं अनुरुद्धं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेत्वा सम्पवारेत्वा, आयस्मन्तं अनुरुद्धं भुत्ताविं ओनीतपत्तपाणिं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो तं इत्थिं आयस्मा अनुरुद्धो धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो सा इत्थी – आयस्मता अनुरुद्धेन धम्मिया कथाय सन्दस्सिता समादपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता – आयस्मन्तं अनुरुद्धं एतदवोच – ''अभिक्कन्तं, भन्ते, अभिक्कन्तं, भन्ते! सेय्यथापि, भन्ते, निक्कुज्जितं वा उक्कुज्जेय्य, पटिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूळ्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य – चक्खुमन्तो रूपानि दक्खन्तीति, एवमेवं अय्येन अनुरुद्धेन अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो। एसाहं, भन्ते, तं भगवन्तं सरणं गच्छामि धम्मञ्च भिक्खुसङ्घञ्च। उपासिकं मं अय्यो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गत''न्ति।

अथ खो आयस्मा अनुरुद्धो सावत्थियं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा अनुरुद्धो मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेस्सती''ति! अथ खो ते भिक्खू आयस्मन्तं अनुरुद्धं अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… ''सच्चं किर त्वं, अनुरुद्ध, मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेसी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम त्वं, अनुरुद्ध, मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेस्ससि! नेतं, अनुरुद्ध, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५६. **''यो पन भिक्खु मातुगामेन सहसेय्यं कप्पेय्य पाचित्तिय''**न्ति।

५७. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

मातुगामो नाम मनुस्सित्थी, न यक्खी [यक्खिनी (क०)], न पेती, न तिरच्छानगता; अन्तमसो तदहुजातापि दारिका, पगेव महत्तरी।

सहाति एकतो।

सेय्या नाम सब्बच्छन्ना, सब्बपरिच्छन्ना, येभुय्येनच्छन्ना, येभुय्येन परिच्छन्ना।

सेय्यं कप्पेय्याति अत्थङ्गते सूरिये, मातुगामे निपन्ने भिक्खु निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु निपन्ने मातुगामो निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उट्ठहित्वा पुनप्पुनं निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

५८. मातुगामे मातुगामसञ्ञी सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे वेमतिको सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे अमातुगामसञ्ञी सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उपड्ढच्छन्ने उपड्ढपरिच्छन्ने, आपत्ति दुक्कटस्स। यक्खिया वा पेतिया वा पण्डकेन वा तिरच्छानगतित्थिया वा सहसेय्यं कप्पेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे मातुगामसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे अमातुगामसञ्ञी, अनापत्ति।

५९. अनापत्ति सब्बच्छन्ने सब्बअपरिच्छन्ने, सब्बपरिच्छन्ने सब्बअच्छन्ने [अनापत्ति सब्बअच्छन्ने सब्बअपरिच्छन्ने, (सी०)], येभुय्येन अच्छन्ने, येभुय्येन अपरिच्छन्ने, मातुगामे निपन्ने भिक्खु निसीदति, भिक्खु निपन्ने मातुगामो निसीदति, उभो वा निसीदन्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसहसेय्यसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. धम्मदेसनासिक्खापदं

६०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी सावत्थियं कुलूपको होति, बहुकानि कुलानि उपसङ्कमति। अथ खो आयस्मा उदायी पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन अञ्ञतरं कुलं तेनुपसङ्कमि। तेन खो पन समयेन घरणी निवेसनद्वारे निसिन्ना होति, घरसुण्हा

आवसथद्वारे निसिन्ना होति। अथ खो आयस्मा उदायी येन घरणी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा घरणिया उपकण्णके धम्मं देसेसि। अथ खो घरसुण्हाय एतदहोसि – ''कि नु खो सो समणो सस्सुया जारो उदाहु ओभासती''ति?

अथ खो आयस्मा उदायी घरणिया उपकण्णके धम्मं देसेत्वा येन घरसुण्हा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा घरसुण्हाय उपकण्णके धम्मं देसेसि। अथ खो घरणिया एतदहोसि – ''किं नु खो सो समणो घरसुण्हाय जारो उदाहु ओभासती''ति? अथ खो आयस्मा उदायी घरसुण्हाय उपकण्णके धम्मं देसेत्वा पक्कामि। अथ खो घरणी घरसुण्हं एतदवोच – ''हे जे, किं ते एसो समणो अवोचा''ति? ''धम्मं मे, अय्ये, देसेसि''। ''अय्याय पन किं अवोचा''ति? ''मय्हम्पि धम्मं देसेसी''ति। ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्यो उदायी मातुगामस्स उपकण्णके धम्मं देसेस्सति! ननु नाम विस्सट्ठेन विवटेन धम्मो देसेतब्बो''ति?

अस्सोसुं खो भिक्खू तासं इत्थीनं उज्झायन्तीनं खिय्यन्तीनं विपाचेन्तीनं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उदायी मातुगामस्स धम्मं देसेस्सती''ति! अथ खो ते भिक्खू आयस्मन्तं उदायिं अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... ''सच्चं किर त्वं, उदायि, मातुगामस्स धम्मं देसेसी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, मातुगामस्स धम्मं देसेस्ससि। नेतं मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खु मातुगामस्स धम्मं देसेय्य पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६१. तेन खो पन समयेन उपासिका भिक्खू पस्सित्वा एतदवोचुं – ''इङ्घाय्या धम्मं देसेथा''ति। ''न, भगिनी, कप्पति मातुगामस्स धम्मं देसेतु''न्ति। ''इङ्घाय्या छप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेथ, सक्का एत्तकेनपि धम्मो अञ्ञातु''न्ति। ''न, भगिनी, कप्पति मातुगामस्स धम्मं देसेतु''न्ति। कुक्कुच्चायन्ता न देसेसुं। उपासिका उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या अम्हेहि याचियमाना धम्मं न देसेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तासं उपासिकानं उज्झायन्तीनं खिय्यन्तीनं विपाचेन्तीनं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, मातुगामस्स छप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेतुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खू मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६२. तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू – ''भगवता अनुञ्ञातं मातुगामस्स छप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेतु''न्ति ते अविञ्ञुं पुरिसविग्गहं उपनिसीदापेत्वा मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू अविञ्ञुं पुरिसविग्गहं उपनिसीदापेत्वा मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेस्सन्ती''ति!

अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... ''सच्चं किर

तुम्हे, भिक्खवे, अविञ्ञुं पुरिसविग्गहं उपनिसीदापेत्वा मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, अविञ्ञुं पुरिसविग्गहं उपनिसीदापेत्वा मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

६३. ''यो पन भिक्खु मातुगामस्स उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेय्य, अञ्ञत्र विञ्ञुना पुरिसविग्गहेन, पाचित्तिय''न्ति।

६४. यो पनाति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

मातुगामो नाम मनुस्सित्थी; न यक्खी न पेती न तिरच्छानगता; विञ्ञू, पटिबला सुभासितदुब्भासितं दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आजानितुं।

उत्तरिछप्पञ्चवाचाहीति अतिरेकछप्पञ्चवाचाहि।

धम्मो नाम बुद्धभासितो, सावकभासितो, इसिभासितो, देवताभासितो, अत्थूपसञ्हितो, धम्मूपसञ्हितो।

देसेय्याति पदेन देसेति, पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स। अक्खराय देसेति, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र विञ्ञुना पुरिसविग्गहेनाति ठपेत्वा विञ्ञुं पुरिसविग्गहं। विञ्ञू नाम पुरिसविग्गहो, पटिबलो होति सुभासितदुब्भासितं दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आजानितुं।

६५. मातुगामे मातुगामसञ्ञी उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेति, अञ्ञत्र विञ्ञुना पुरिसविग्गहेन, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे वेमतिको उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेति, अञ्ञत्र विञ्ञुना पुरिसविग्गहेन, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे अमातुगामसञ्ञी उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेति, अञ्ञत्र विञ्ञुना पुरिसविग्गहेन, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यक्खिया वा पेतिया वा पण्डकस्स वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहित्थिया वा उत्तरिछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेति, अञ्ञत्र विञ्ञुना पुरिसविग्गहेन, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे मातुगामसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे अमातुगामसञ्ञी, अनापत्ति।

६६. अनापत्ति विञ्ञुना पुरिसविग्गहेन, छप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेति, ऊनकछप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेति, उट्ठहित्वा पुन निसीदित्वा देसेति, मातुगामो उट्ठहित्वा पुन निसीदति तस्मिं देसेति, अञ्ञस्स मातुगामस्स देसेति, पञ्हं पुच्छति, पञ्हं पुट्ठो कथेति, अञ्ञस्सत्थाय भणन्तं मातुगामो सुणाति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

धम्मदेसनासिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. भूतारोचनसिक्खापदं

६७. [पारा० १९३] तेन समयेन बुद्धो भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन सम्बहुला सन्दिट्ठा सम्भत्ता भिक्खू वग्गुमुदाय नदिया तीरे वस्सं उपगच्छिंसु। तेन खो पन समयेन वज्जी दुब्भिक्खा होति – द्वीहितिका सेतट्ठिका सलाकावुत्ता, न सुकरा उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं। अथ खो तेसं भिक्खूनं एतदहोसि – ''एतरहि खो वज्जी दुब्भिक्खा – द्वीहितिका सेतट्ठिका सलाकावुत्ता, न सुकरा उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं। केन नु खो मयं उपायेन समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसेय्याम, न च पिण्डकेन किलमेय्यामा''ति? एकच्चे एवमाहंसु – ''हन्द मयं, आवुसो, गिहीनं कम्मन्तं अधिट्ठेम। एवं ते अम्हाकं दातुं मञ्ञिस्सन्ति। एवं मयं समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसिस्साम, न च पिण्डकेन किलमिस्सामा''ति। एकच्चे एवमाहंसु – ''अलं, आवुसो, किं गिहीनं कम्मन्तं अधिट्ठितेन? हन्द मयं, आवुसो, गिहीनं दूतेय्यं हराम। एवं ते अम्हाकं दातुं मञ्ञिस्सन्ति। एवं मयं समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसिस्साम, न च पिण्डकेन किलमिस्सामा''ति। एकच्चे एवमाहंसु – ''अलं, आवुसो; किं गिहीनं कम्मन्तं अधिट्ठितेन! किं गिहीनं दूतेय्यं हटेन! हन्द मयं, आवुसो, गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णं भासिस्साम – 'असुको भिक्खु पठमस्स झानस्स लाभी, असुको भिक्खु दुतियस्स झानस्स लाभी, असुको भिक्खु ततियस्स झानस्स लाभी, असुको भिक्खु चतुत्थस्स झानस्स लाभी, असुको भिक्खु सोतापन्नो, असुको भिक्खु सकदागामी, असुको भिक्खु अनागामी, असुको भिक्खु अरहा, असुको भिक्खु तेविज्जो, असुको भिक्खु छळभिञ्ञोति। एवं ते अम्हाकं दातुं मञ्ञिस्सन्ति। एवं मयं समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसिस्साम, न च पिण्डकेन किलमिस्सामा''ति। एसो येव खो, आवुसो, सेय्यो, यो अम्हाकं गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णो भासितो''ति।

अथ खो ते भिक्खू गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णं भासिंसु – ''असुको भिक्खु पठमस्स झानस्स लाभी...पे०... असुको भिक्खु छळभिञ्ञो''ति। अथ खो ते मनुस्सा – ''लाभा वत नो, सुलद्धं वत नो, येसं नो एवरूपा भिक्खू वस्सं उपगता, न वत नो इतो पुब्बे एवरूपा भिक्खू वस्सं उपगता, यथयिमे भिक्खू सीलवन्तो कल्याणधम्मा''ति। ते न तादिसानि भोजनानि अत्तना भुञ्जन्ति, मातापितूनं देन्ति पुत्तदारस्स देन्ति दासकम्मकरपोरिसस्स देन्ति मित्तामच्चानं देन्ति ञातिसालोहितानं देन्ति यादिसानि भिक्खूनं देन्ति। न तादिसानि खादनीयानि सायनीयानि पानानि अत्तना खादन्ति सायन्ति पिवन्ति [अत्तना पिवन्ति (स्या० क०)] मातापितूनं देन्ति पुत्तदारस्स देन्ति दासकम्मकरपोरिसस्स देन्ति मित्तामच्चानं देन्ति ञातिसालोहितानं देन्ति, यादिसानि भिक्खूनं देन्ति। अथ खो ते भिक्खू वण्णवा अहेसुं पीणिन्द्रिया पसन्नमुखवण्णा विप्पसन्नछविवण्णा।

६८. आचिण्णं खो पनेतं वस्संवुट्ठानं भिक्खूनं भगवन्तं दस्सनाय उपसङ्कमितुं। अथ खो ते भिक्खू वस्संवुट्ठा तेमासच्चयेन सेनासनं संसामेत्वा पत्तचीवरमादाय येन वेसाली तेन पक्कमिंसु। अनुपुब्बेन येन वेसाली महावनं कूटागारसाला येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। तेन खो पन समयेन दिसासु वस्संवुट्ठा भिक्खू किसा होन्ति लूखा दुब्बण्णा उप्पण्डुप्पण्डुकजाता धमनिसन्थतगत्ता। वग्गुमुदातीरिया पन भिक्खू वण्णवा होन्ति पीणिन्द्रिया पसन्नमुखवण्णा विप्पसन्नछविवण्णा। आचिण्णं खो पनेतं बुद्धानं भगवन्तानं आगन्तुकेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसम्मोदितुं। अथ खो भगवा वग्गुमुदातीरिये भिक्खू एतदवोच – ''कच्चि, भिक्खवे, खमनीयं, कच्चि यापनीयं, कच्चि समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसित्थ, न च पिण्डकेन किलमित्था''ति? ''खमनीयं भगवा, यापनीयं भगवा। समग्गा च मयं, भन्ते, सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसिम्हा, न च पिण्डकेन किलमिम्हा''ति। जानन्तापि तथागता पुच्छन्ति, जानन्तापि न पुच्छन्ति। कालं विदित्वा पुच्छन्ति, कालं विदित्वा न पुच्छन्ति। अत्थसञ्हितं तथागता पुच्छन्ति, नो अनत्थसञ्हितं। अनत्थसञ्हिते सेतुघातो तथागतानं। द्वीहाकारेहि बुद्धा

भगवन्तो भिक्खू पटिपुच्छन्ति – धम्मं वा देसेस्साम, सावकानं वा सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामाति।

अथ खो भगवा वग्गुमुदातीरिये भिक्खू एतदवोच – "यथा कथं पन तुम्हे, भिक्खवे, समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना फासुकं वस्सं वसित्थ, न च पिण्डकेन किलमित्था"ति? अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। "कच्चि पन वो, भिक्खवे, भूत"न्ति? "भूतं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, भिक्खवे, उदरस्स कारणा गिहीनं अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मस्स वण्णं भासिस्सथ! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय... पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

६९. **"यो पन भिक्खु अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं आरोचेय्य भूतस्मिं, पाचित्तिय**"न्ति।

७०. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अनुपसम्पन्नो नाम भिक्खुञ्च भिक्खुनिञ्च ठपेत्वा, अवसेसो अनुपसम्पन्नो नाम।

[पारा० १९८] **उत्तरिमनुस्सधम्मो** नाम झानं, विमोक्खो, समाधि, समापत्ति, ञाणदस्सनं, मग्गभावना, फलसच्छिकिरिया, किलेसप्पहानं, विनीवरणता चित्तस्स, सुञ्ञागारे अभिरति।

[पारा० १९९] **झान**न्ति पठमं झानं, दुतियं झानं, ततियं झानं, चतुत्थं झानं।

[पारा० १९९] **विमोक्खो**ति सुञ्ञतो विमोक्खो, अनिमित्तो विमोक्खो, अप्पणिहितो विमोक्खो।

[पारा० १९९] **समाधी**ति सुञ्ञतो समाधि, अनिमित्तो समाधि, अप्पणिहितो समाधि।

[पारा० १९९] **समापत्ती**ति सुञ्ञता समापत्ति, अनिमित्ता समापत्ति, अप्पणिहिता समापत्ति।

[पारा० १९९] **ञाणदस्सन**न्ति तिस्सो विज्जा।

[पारा० १९९] **मग्गभावना**ति चत्तारो सतिपट्ठाना, चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो।

[पारा० १९९] **फलसच्छिकिरिया**ति सोतापत्तिफलस्स सच्छिकिरिया, सकदागामिफलस्स सच्छिकिरिया, अनागामिफलस्स सच्छिकिरिया, अरहत्तस्स [अरहत्तफलस्स (स्या०)] सच्छिकिरिया।

[पारा० १९९] **किलेसप्पहान**न्ति रागस्स पहानं, दोसस्स पहानं, मोहस्स पहानं।

[पारा० १९९] **विनीवरणता चित्तस्सा**ति रागा चित्तं विनीवरणता, दोसा चित्तं विनीवरणता, मोहा चित्तं विनीवरणता।

[पारा० १९९] **सुञ्ञागारे अभिरती**ति पठमेन झानेन सुञ्ञागारे अभिरति, दुतियेन झानेन सुञ्ञागारे अभिरति, ततियेन झानेन सुञ्ञागारे अभिरति, चतुत्थेन झानेन सुञ्ञागारे अभिरति।

७१. **आरोचेय्या**ति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमं झानं समापज्जि''न्ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमं झानं समापज्जामी''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमं झानं समापन्नो''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमस्स झानस्स लाभिम्ही''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमस्स झानस्स वसिम्ही''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमं झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियं झानं... ततियं झानं... चतुत्थं झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; चतुत्थस्स झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; चतुत्थं झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''सुञ्ञतं विमोक्खं... अनिमित्तं विमोक्खं... अप्पणिहितं विमोक्खं... सुञ्ञतं समाधिं... अनिमित्तं समाधिं... अप्पणिहितं समाधिं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; अप्पणिहितस्स समाधिस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; अप्पणिहितो समाधि सच्छिकतो मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''सुञ्ञतं समापत्तिं... अनिमित्तं समापत्तिं... अप्पणिहितं समापत्तिं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; अप्पणिहिताय समापत्तिया लाभिम्हि, वसिम्हि; अप्पणिहिता समापत्ति सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''तिस्सो विज्जा समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; तिस्सन्नं विज्जानं लाभिम्हि, वसिम्हि; तिस्सो विज्जा सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''चत्तारो सतिपट्ठाने... चत्तारो सम्मप्पधाने... चत्तारो इद्धिपादे समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; चतुन्नं इद्धिपादानं लाभिम्हि, वसिम्हि; चत्तारो इद्धिपादा सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पञ्चिन्द्रियानि... पञ्च बलानि समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पञ्चन्नं बलानं लाभिम्हि, वसिम्हि; पञ्च बलानि सच्छिकतानि मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''सत्त बोज्झङ्गे समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; सत्तन्नं बोज्झङ्गानं लाभिम्हि, वसिम्हि; सत्त बोज्झङ्गा सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; अरियस्स अट्ठङ्गिकस्स मग्गस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो सच्छिकतो मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''सोतापत्तिफलं... सकदागामिफलं... अनागामिफलं... अरहत्तं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; अरहत्तस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; अरहत्तं [अरहत्तफलं (स्या॰)] सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''रागो मे चत्तो... दोसो मे चत्तो... मोहो मे चत्तो, वन्तो, मुत्तो, पहीनो, पटिनिस्सट्ठो, उक्खेटितो, समुक्खेटितो''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''रागा मे चित्तं विनीवरणं... दोसा मे चित्त विनीवरणं... मोहा मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''सुञ्ञागारे पठमं झानं... दुतियं झानं... ततियं झानं... चतुत्थं झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; सुञ्ञागारे चतुत्थस्स झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

७२. आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं दुतियञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स दुतियस्स च झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं दुतियञ्च झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं ततियञ्च झानं... पठमञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स चतुत्थस्स च झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं सुञ्ञतञ्च विमोक्खं... अनिमित्तञ्च विमोक्खं... अप्पणिहितञ्च विमोक्खं... सुञ्ञतञ्च समाधिं... अनिमित्तञ्च समाधिं... अप्पणिहितञ्च समाधिं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स अप्पणिहितस्स च समाधिस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं अप्पणिहितो च समाधि सच्छिकतो मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं सुञ्ञतञ्च समापत्तिं... अनिमित्तञ्च समापत्तिं... अप्पणिहितञ्च समापत्तिं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स अप्पणिहिताय च समापत्तिया लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं अप्पणिहिता च समापत्ति सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं तिस्सो च विज्जा समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स तिस्सन्नञ्च विज्जानं लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं तिस्सो च विज्जा सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं चत्तारो च सतिपट्ठाने...पे॰... चत्तारो च सम्मप्पधाने... चत्तारो च इद्धिपादे समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स चतुन्नञ्च इद्धिपादानं लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं चत्तारो च इद्धिपादा सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं, पञ्च च इन्द्रियानि... पञ्च च बलानि समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स पञ्चन्नञ्च बलानं लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं पञ्च च बलानि सच्छिकतानि मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं सत्त च बोज्झङ्गे समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स सत्तन्नञ्च बोज्झङ्गानं लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं सत्त च बोज्झङ्गा सच्छिकता मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं अरियञ्च अट्ठङ्गिकं मग्गं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स अरियस्स च अट्ठङ्गिकस्स मग्गस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं अरियो च अट्ठङ्गिको मग्गो सच्छिकतो मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं सोतापत्तिफलञ्च... सकदागामिफलञ्च... अनागामिफलञ्च... अरहत्तञ्च [अरहत्तफलञ्च (स्या०)] समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; पठमस्स च झानस्स अरहत्तस्स [अरहत्तफलस्स (स्या०)] च लाभिम्हि, वसिम्हि; पठमञ्च झानं अरहत्तञ्च सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो... रागो च मे चत्तो... दोसो च मे चत्तो... मोहो च मे चत्तो, वन्तो, मुत्तो, पहीनो, पटिनिस्सट्ठो, उक्खेटितो, समुक्खेटितो''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो... रागा च मे चित्तं विनीवरणं... दोसा च मे चित्तं विनीवरणं... मोहा च मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

७३. **आरोचेय्या**ति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियञ्च झानं ततियञ्च झानं... दुतियञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; दुतियस्स च झानस्स चतुत्थस्स च झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; दुतियञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियञ्च झानं सुञ्ञतञ्च विमोक्खं...पे०... मोहा च मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियञ्च झानं पठमञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; दुतियस्स च झानस्स पठमस्स च झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; दुतियञ्च झानं पठमञ्च झानं सच्छिकतं मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे०...।

मूलं संखित्तं।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''मोहा च मे चित्तं विनीवरणं, पठमञ्च झानं समापज्जिं, समापज्जामि, समापन्नो; मोहा च मे चित्तं विनीवरणं, पठमस्स च झानस्स लाभिम्हि, वसिम्हि; मोहा च मे चित्तं विनीवरणं, पठमञ्च झानं सच्छिकतं

मया''ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे॰... ।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''मोहा च मे चित्तं विनीवरणं, दोसा च मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स...पे॰... ।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं दुतियञ्च झानं ततियञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं सुञ्ञतञ्च विमोक्खं अनिमित्तञ्च विमोक्खं अप्पणिहितञ्च विमोक्खं सुञ्ञतञ्च समाधिं अनिमित्तञ्च समाधिं अप्पणिहितञ्च समाधिं सुञ्ञतञ्च समापत्तिं अनिमित्तञ्च समापत्तिं अप्पणिहितञ्च समापत्तिं तिस्सो च विज्जा चत्तारो च सतिपट्ठाने चत्तारो च सम्मप्पधाने चत्तारो च इद्धिपादे पञ्च च इन्द्रियानि पञ्च च बलानि सत्त च बोज्झङ्गे अरियञ्च अट्ठङ्गिकं मग्गं सोतापत्तिफलञ्च सकदागामिफलञ्च अनागामिफलञ्च अरहत्तञ्च [अरहत्तफलञ्च (स्या॰)] समापज्जिं...पे॰... रागो च मे चत्तो, दोसो च मे चत्तो, मोहो च मे चत्तो, वन्तो, मुत्तो, पहीनो, पटिनिस्सट्ठो, उक्खेटितो समुक्खेटितो, रागा च मे चित्तं विनीवरणं, दोसा च मे चित्तं विनीवरणं, मोहा च मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

७४. **आरोचेय्या**ति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमं झानं समापज्जि''न्ति वत्तुकामो ''दुतियं झानं समापज्जि''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमं झानं समापज्जि''न्ति वत्तुकामो ''ततियं झानं...पे॰... चतुत्थं झानं, सुञ्ञतं विमोक्खं, अनिमित्तं विमोक्खं, अप्पणिहितं विमोक्खं, सुञ्ञतं समाधिं, अनिमित्तं समाधिं, अप्पणिहितं समाधिं, सुञ्ञतं समापत्तिं, अनिमित्तं समापत्तिं, अप्पणिहितं समापत्तिं, तिस्सो विज्जा, चत्तारो सतिपट्ठाने, चत्तारो सम्मप्पधाने, चत्तारो इद्धिपादे, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गे, अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं, सोतापत्तिफलं, सकदागामिफलं, अनागामिफलं, अरहत्तं [अरहत्तफलं (स्या॰)] समापज्जिं...पे॰... रागो मे चत्तो, दोसो मे चत्तो, मोहो मे चत्तो, वन्तो, मुत्तो, पहीनो; पटिनिस्सट्ठो, उक्खेटितो, समुक्खेटितो; रागा मे चित्तं विनीवरणं, दोसा मे चित्तं विनीवरणं, मोहा मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियं झानं समापज्जि''न्ति वत्तुकामो...पे॰... ''मोहा मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स...पे॰... ।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियं झानं समापज्जि''न्ति वत्तुकामो – ''पठमं झानं समापज्जि''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स...पे॰... ।

मूलं संखित्तं।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''मोहा मे चित्तं विनीवरण''न्ति वत्तुकामो – ''पठमं झानं समापज्जि''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स...पे॰... ।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''मोहा मे चित्तं विनीवरण''न्ति वत्तुकामो – ''दोसा मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स...पे॰... ।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''पठमञ्च झानं दुतियञ्च झानं ततियञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं ...पे०... दोसा च मे चित्तं विनीवरण''न्ति वत्तुकामो – ''मोहा मे चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''दुतियञ्च झानं ततियञ्च झानं चतुत्थञ्च झानं...पे०... मोहा च मे चित्तं विनीवरण''न्ति वत्तुकामो – ''पठमं झानं समापज्जि''न्ति भणन्तस्स पटिविजानन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स, न पटिविजानन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स...पे०...।

७५. आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते विहारे वसि सो भिक्खु पठमं झानं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो भिक्खु पठमस्स झानस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना पठमं झानं सच्छिकत''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते विहारे वसि सो भिक्खु दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं चतुत्थं झानं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो भिक्खु चतुत्थस्स झानस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना चतुत्थं झानं सच्छिकत''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते विहारे वसि सो भिक्खु सुञ्ञतं विमोक्खं...पे०... अनिमित्तं विमोक्खं अप्पणिहितं विमोक्खं सुञ्ञतं समाधिं अनिमित्तं समाधिं अप्पणिहितं समाधिं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो भिक्खु अप्पणिहितस्स समाधिस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना अप्पणिहितो समाधि सच्छिकतो''ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते विहारे वसि सो भिक्खु सुञ्ञतं समापत्तिं...पे०... अनिमित्तं समापत्तिं अप्पणिहितं समापत्तिं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; अप्पणिहिताय समापत्तिया लाभी, वसी; तेन भिक्खुना अप्पणिहिता समापत्ति सच्छिकता''ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते विहारे वसि सो भिक्खु तिस्सो विज्जा ...पे०... चत्तारो सतिपट्ठाने, चत्तारो सम्मप्पधाने, चत्तारो इद्धिपादे, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोझङ्गे, अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं, सोतापत्तिफलं, सकदागामिफलं, अनागामिफलं, अरहत्तं [अरहत्तफलं (स्या०)] समापज्जि...पे०... समापज्जति, समापन्नो...पे०... तस्स भिक्खुनो रागो चत्तो, दोसो चत्तो, मोहो चत्तो, वन्तो, मुत्तो, पहीनो, पटिनिस्सट्ठो, उक्खेटितो, समुक्खेटितो; तस्स भिक्खुनो रागा चित्तं विनीवरणं, दोसा चित्तं विनीवरणं, मोहा चित्तं विनीवरण''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते विहारे वसि सो भिक्खु सुञ्ञागारे पठमं झानं...पे०... दुतियं झानं ततियं झानं चतुत्थं झानं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थस्स झानस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं सच्छिकत''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यो ते चीवरं परिभुञ्जि, यो ते पिण्डपातं परिभुञ्जि, यो ते सेनासनं परिभुञ्जि, यो ते गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं परिभुञ्जि सो भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो

भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थस्स झानस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं सच्छिकत''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

७६. **आरोचेय्या**ति अनुपसम्पन्नस्स – ''येन ते विहारो परिभुत्तो...पे०... येन ते चीवरं परिभुत्तं, येन ते पिण्डपातो परिभुत्तो, येन ते सेनासनं परिभुत्तं, येन ते गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारो परिभुत्तो सो भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थस्स झानस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं सच्छिकत''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

आरोचेय्याति अनुपसम्पन्नस्स – ''यं त्वं आगम्म विहारं अदासि...पे०... चीवरं अदासि, पिण्डपातं अदासि, सेनासनं अदासि, गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं अदासि सो भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं समापज्जि, समापज्जति, समापन्नो; सो भिक्खु सुञ्ञागारे चतुत्थस्स झानस्स लाभी, वसी; तेन भिक्खुना सुञ्ञागारे चतुत्थं झानं सच्छिकत''न्ति भणन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स।

७७. अनापत्ति उपसम्पन्नस्स, भूतं आरोचेति, आदिकम्मिकस्साति।

भूतारोचनसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. दुट्ठुल्लारोचनसिक्खापदं

७८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो छब्बग्गियेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डनकतो होति। सो सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा सङ्घं तस्सा आपत्तिया परिवासं याचि। तस्स सङ्घो तस्सा आपत्तिया परिवासं अदासि। तेन खो पन समयेन सावत्थियं अञ्ञतरस्स पूगस्स सङ्घभत्तं होति। सो परिवसन्तो भत्तग्गे आसनपरियन्ते निसीदि। छब्बग्गिया भिक्खू ते उपासके एतदवोचुं – ''एसो, आवुसो, आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो तुम्हाकं सम्भावितो कुलूपको; येनेव हत्थेन सद्धादेय्यं भुञ्जति तेनेव हत्थेन उपक्कमित्वा असुचिं मोचेसि। सो सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा सङ्घं तस्सा आपत्तिया परिवासं याचि। तस्स सङ्घो तस्सा आपत्तिया परिवासं अदासि। सो परिवसन्तो आसनपरियन्ते निसिन्नो''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुस्स दुट्ठुल्लं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेस्सन्ती''ति...पे०... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुस्स दुट्ठुल्लं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुस्स दुट्ठुल्लं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

७९. **''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स दुट्ठुल्लं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेय्य, अञ्ञत्र भिक्खुसम्मुतिया [भिक्खुसम्मतिया (स्या०)], पाचित्तिय**''न्ति।

८०. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

दुट्ठुल्ला नाम आपत्ति – चत्तारि च पाराजिकानि, तेरस च सङ्घादिसेसा।

अनुपसम्पन्नो नाम भिक्खुञ्च भिक्खुनिञ्च ठपेत्वा अवसेसो अनुपसम्पन्नो नाम।

आरोचेय्याति आरोचेय्य इत्थिया वा पुरिसस्स वा गहट्ठस्स वा पब्बजितस्स वा।

अञ्ञत्र भिक्खुसम्मुतियाति ठपेत्वा भिक्खुसम्मुतिं।

अत्थि भिक्खुसम्मुति आपत्तिपरियन्ता, न कुलपरियन्ता। अत्थि भिक्खुसम्मुति कुलपरियन्ता, न आपत्तिपरियन्ता, अत्थि भिक्खुसम्मुति आपत्तिपरियन्ता च कुलपरियन्ता च, अत्थि भिक्खुसम्मुति नेव आपत्तिपरियन्ता न कुलपरियन्ता।

आपत्तिपरियन्ता नाम आपत्तियो परिग्गहितायो होन्ति – ''एत्तकाहि आपत्तीहि आरोचेतब्बो''ति।

कुलपरियन्ता नाम कुलानि परिग्गहितानि होन्ति – ''एत्तकेसु कुलेसु आरोचेतब्बो''ति। **आपत्तिपरियन्ता च कुलपरियन्ता च** नाम आपत्तियो च परिग्गहितायो होन्ति, कुलानि च परिग्गहितानि होन्ति – ''एत्तकाहि आपत्तीहि एत्तकेसु कुलेसु आरोचेतब्बो''ति। **नेव आपत्तिपरियन्ता न कुलपरियन्ता** नाम आपत्तियो च अपरिग्गहितायो होन्ति, कुलानि च अपरिग्गहितानि होन्ति – ''एत्तकाहि आपत्तीहि एत्तकेसु कुलेसु आरोचेतब्बो''ति।

८१. आपत्तिपरियन्ते या आपत्तियो परिग्गहितायो होन्ति, ता आपत्तियो ठपेत्वा अञ्ञाहि आपत्तीहि आरोचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

कुलपरियन्ते यानि कुलानि परिग्गहितानि होन्ति, तानि कुलानि ठपेत्वा अञ्ञेसु कुलेसु आरोचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आपत्तिपरियन्ते च कुलपरियन्ते च या आपत्तियो परिग्गहितायो होन्ति, ता आपत्तियो ठपेत्वा यानि कुलानि परिग्गहितानि होन्ति, तानि कुलानि ठपेत्वा अञ्ञाहि आपत्तीहि अञ्ञेसु कुलेसु आरोचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

नेव आपत्तिपरियन्ते न कुलपरियन्ते, अनापत्ति।

८२. दुट्ठुल्लाय आपत्तिया दुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी अनुपसम्पन्नस्स आरोचेति, अञ्ञत्र भिक्खुसम्मुतिया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

दुट्ठुल्लाय आपत्तिया वेमतिको अनुपसम्पन्नस्स आरोचेति, अञ्ञत्र भिक्खुसम्मुतिया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

दुट्ठुल्लाय आपत्तिया अदुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी अनुपसम्पन्नस्स आरोचेति, अञ्ञत्र भिक्खुसम्मुतिया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अदुट्ठुल्लं आपत्तिं आरोचेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनुपसम्पन्नस्स दुट्ठुल्लं वा अदुट्ठुल्लं वा अज्झाचारं आरोचेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अदुट्ठुल्लाय आपत्तिया दुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

अदुट्ठुल्लाय आपत्तिया वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स।

अदुट्ठुल्लाय आपत्तिया अदुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

८३. अनापत्ति वत्थुं आरोचेति नो आपत्तिं, आपत्तिं आरोचेति नो वत्थुं, भिक्खुसम्मुतिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुट्ठुल्लारोचनसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. पथवीखणनसिक्खापदं

८४. तेन समयेन बुद्धो भगवा आळवियं विहरति अग्गाळवे चेतिये। तेन खो पन समयेन आळवका [आळविका (स्या०)] भिक्खू नवकम्मं करोन्ता पथविं खणन्तिपि खणापेन्तिपि। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया पथविं खणिस्सन्तिपि खणापेस्सन्तिपि! एकिन्द्रियं समणा सक्यपुत्तिया जीवं विहेठेन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आळवका भिक्खू पथविं खणिस्सन्तिपि खणापेस्सन्तिपी''ति...पे०... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, पथविं खणथपि खणापेथपी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, पथविं खणिस्सथपि खणापेस्सथपि! जीवसञ्ञिनो हि, मोघपुरिसा, मनुस्सा पथविया। नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

८५. **''यो पन भिक्खु पथविं खणेय्य वा खणापेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

८६. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

पथवी नाम द्वे पथवियो – जाता च पथवी अजाता च पथवी।

जाता नाम पथवी – सुद्धपंसु सुद्धमत्तिका अप्पपासाणा अप्पसक्खरा अप्पकठला अप्पमरुम्बा अप्पवालिका, येभुय्येनपंसुका, येभुय्येनमत्तिका। अदड्ढापि वुच्चति जाता पथवी। योपि पंसुपुञ्जो वा मत्तिकापुञ्जो वा अतिरेकचातुमासं ओवट्ठो, अयम्पि वुच्चति जाता पथवी।

अजाता नाम पथवी – सुद्धपासाणा सुद्धसक्खरा सुद्धकठला सुद्धमरुम्बा सुद्धवालिका अप्पपंसुका अप्पमत्तिका, येभुय्येनपासाणा, येभुय्येनसक्खरा, येभुय्येनकठला, येभुय्येनमरुम्बा, येभुय्येनवालिका। दड्ढापि वुच्चति अजाता पथवी। योपि पंसुपुञ्जो वा मत्तिकापुञ्जो वा ओमकचातुमासं ओवट्ठो, अयम्पि वुच्चति अजाता पथवी।

खणेय्याति सयं खणति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

खणापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सकिं आणत्तो बहुकम्पि खणति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८७. पथविया पथविसञ्ञी खणति वा खणापेति वा, भिन्दति वा भेदापेति वा, दहति वा दहापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पथविया वेमतिको खणति वा खणापेति वा, भिन्दति वा भेदापेति वा, दहति वा दहापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स।

पथविया अपथविसञ्ञी खणति वा खणापेति वा, भिन्दति वा भेदापेति वा, दहति वा दहापेति वा, अनापत्ति।

अपथविया पथविसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अपथविया वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अपथविया अपथविसञ्ञी, अनापत्ति।

८८. अनापत्ति – ''इमं जान, इमं देहि, इमं आहर, इमिना अत्थो, इमं कप्पियं करोही''ति भणति, असञ्चिच्च, असतिया, अजानन्तस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पथवीखणनसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

मुसावादवग्गो पठमो।

तस्सुद्दानं –

मुसा ओमसपेसुञ्ञं, पदसेय्याय वे दुवे।
अञ्ञत्र विञ्ञुना भूता, दुट्ठुल्लापत्ति खणनाति॥

२. भूतगामवग्गो

१. भूतगामसिक्खापदं

८९. तेन समयेन बुद्धो भगवा आळवियं विहरति अग्गाळवे चेतिये। तेन खो पन समयेन आळवका भिक्खू नवकम्मं करोन्ता रुक्खं छिन्दन्तिपि छेदापेन्तिपि। अञ्ञतरोपि आळवको भिक्खु रुक्खं छिन्दति। तस्मिं रुक्खे अधिवत्था देवता तं भिक्खुं एतदवोच – ''मा, भन्ते, अत्तनो भवनं कत्तुकामो मय्हं भवनं छिन्दी''ति। सो भिक्खु अनादियन्तो छिन्दि येव, तस्सा च देवताय दारकस्स बाहुं आकोटेसि। अथ खो तस्सा देवताय एतदहोसि – ''यंन्नूनाहं इमं भिक्खुं इधेव जीविता वोरोपेय्य''न्ति। अथ खो तस्सा देवताय एतदहोसि – ''न खो मेतं पतिरूपं याहं इमं भिक्खुं इधेव जीविता वोरोपेय्यं। यन्नूनाहं भगवतो एतमत्थं आरोचेय्य''न्ति। अथ खो सा देवता येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। ''साधु साधु देवते! साधु खो त्वं, देवते, तं भिक्खुं जीविता न वोरोपेसि। सचज्ज त्वं, देवते, तं भिक्खुं जीविता वोरोपेय्यासि, बहुञ्च त्वं, देवते, अपुञ्ञं पसवेय्यासि। गच्छ त्वं, देवते, अमुकस्मिं ओकासे रुक्खो विवित्तो तस्मिं उपगच्छा''ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया रुक्खं छिन्दिस्सन्तिपि छेदापेस्सन्तिपि एकिन्द्रियं समणा सक्यपुत्तिया जीवं विहेठेस्सन्ती''ति!

अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आळवका भिक्खू रुक्खं छिन्दिस्सन्तिपि छेदापेस्सन्तिपी''ति...पे०... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, रुक्खं छिन्दथापि छेदापेथापी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, रुक्खं छिन्दिस्सथापि, छेदापेस्सथापि! जीवसञ्ञिनो हि, मोघपुरिसा, मनुस्सा रुक्खस्मिं, नेतं मोघपुरिसा अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

९०. ''**भूतगामपातब्यताय पाचित्तियं**''न्ति।

९१. **भूतगामो** नाम पञ्च बीजजातानि – मूलबीजं, खन्धबीजं, फळुबीजं, अग्गबीजं, बीजबीजमेव [बीजबीजञ्चेव (इतिपि)] पञ्चमं।

मूलबीजं नाम – हलिद्दि, सिङ्गिवेरं, वचा, वचत्तं, अतिविसा, कटुकरोहिणी, उसीरं, भद्दमूत्तकं, यानि वा पनञ्ञानिपि अत्थि मूले जायन्ति, मूले सञ्जायन्ति, एतं मूलबीजं नाम।

खन्धबीजं नाम – अस्सत्थो, निग्रोधो, पिलक्खो, उदुम्बरो, कच्छको, कपित्थनो, यानि वा पनञ्ञानिपि अत्थि खन्धे जायन्ति, खन्धे सञ्जायन्ति, एतं खन्धबीजं नाम।

फळुबीजं नाम – उच्छु, वेळु, नळो, यानि वा पनञ्ञानिपि अत्थि पब्बे जायन्ति, पब्बे सञ्जायन्ति, एतं फळुबीजं नाम।

अग्गबीजं नाम – अज्जुकं, फणिज्जकं, हिरिवेरं, यानि वा पनञ्ञानिपि अत्थि अग्गे जायन्ति, अग्गे सञ्जायन्ति, एतं अग्गबीजं नाम।

बीजबीजं नाम – पुब्बण्णं, अपरण्णं, यानि वा पनञ्ञानिपि अत्थि बीजे जायन्ति, बीजे सञ्जायन्ति, एतं बीजबीजं नाम।

९२. बीजे बीजसञ्ञी छिन्दति वा छेदापेति वा, भिन्दति वा भेदापेति वा, पचति वा पचापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। बीजे वेमतिको छिन्दति वा छेदापेति वा, भिन्दति वा भेदापेति वा, पचति वा पचापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। बीजे अबीजसञ्ञी छिन्दति वा छेदापेति वा, भिन्दति वा भेदापेति वा, पचति वा पचापेति वा, अनापत्ति। अबीजे बीजसञ्ञी आपत्ति दुक्कटस्स। अबीजे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अबीजे अबीजसञ्ञी, अनापत्ति।

९३. अनापत्ति – ''इमं जान, इमं देहि, इमं आहर, इमिना अत्थो, इमं कप्पियं करोही''ति भणति, असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

भूतगामसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. अञ्ञवादकसिक्खापदं

९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा छन्नो अनाचारं

आचरित्वा सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति – ''को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथा''ति? ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा छन्नो सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरिस्सति – को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथा''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, छन्न, सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरसि – को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरिस्ससि – को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथाति! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो अञ्ञवादकं रोपेतु। एवञ्च पन, भिक्खवे, रोपेतब्बं। ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

९५. ''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। अयं छन्नो भिक्खु सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो अञ्ञवादकं रोपेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। अयं छन्नो भिक्खु सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति। सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो अञ्ञवादकं रोपेति। यस्सायस्मतो खमति छन्नस्स भिक्खुनो अञ्ञवादकस्स रोपना, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

''रोपितं सङ्घेन छन्नस्स भिक्खुनो अञ्ञवादकं। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा आयस्मन्तं छन्नं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''अञ्ञवादके पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

९६. तेन खो पन समयेन आयस्मा छन्नो सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो ''अञ्ञेनञ्ञं पटिचरन्तो – ''आपत्तिं आपज्जिस्सामी''ति तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा छन्नो सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, छन्न, सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो विहेसकं रोपेतु। एवञ्च पन, भिक्खवे, रोपेतब्बं। ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

९७. ''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। अयं छन्नो भिक्खु सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो विहेसकं रोपेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। अयं छन्नो भिक्खु सङ्घमज्झे आपत्तिया अनुयुञ्जीयमानो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति। सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो विहेसकं रोपेति। यस्सायस्मातो खमति छन्नस्स भिक्खुनो विहेसकस्स रोपना, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

''रोपितं सङ्घेन छन्नस्स भिक्खुनो विहेसकं। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा आयस्मन्तं छन्नं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

९८. ''अञ्ञवादके विहेसके पाचित्तिय''न्ति।

९९. अञ्ञवादको नाम सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति – ''को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथा''ति। एसो अञ्ञवादको नाम।

विहेसको नाम सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति। एसो विहेसको नाम।

१००. आरोपिते अञ्ञवादके सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति – ''को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथा''ति, आपत्ति दुक्कटस्स। आरोपिते विहेसके सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति, आपत्ति दुक्कटस्स। रोपिते अञ्ञवादके सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति – ''को आपन्नो, किं आपन्नो, किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भणथा''ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। रोपिते विहेसके सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०१. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी अञ्ञवादके विहेसके, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको अञ्ञवादके विहेसके, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी अञ्ञवादके विहेसके, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

१०२. अनापत्ति अजानन्तो पुच्छति, गिलानो वा न कथेति; ''सङ्घस्स भण्डनं वा कलहो वा विग्गहो वा विवादो वा भविस्सती''ति न कथेति; ''सङ्घभेदो वा सङ्घराजि वा भविस्सती''ति न कथेति; ''अधम्मेन वा वग्गेन वा नकम्मारहस्स वा कम्मं करिस्सती''ति न कथेति; उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अञ्ञवादकसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. उज्झापनकसिक्खापदं

१०३. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन आयस्मा दब्बो मल्लपुत्तो सङ्घस्स सेनासनञ्च पञ्ञपेति भत्तानि च उद्दिसति। तेन खो पन समयेन मेत्तियभूमजका [मेत्तियभूम्मजका (सी॰ स्या॰)] भिक्खू नवका चेव होन्ति अप्पपुञ्ञा च। यानि सङ्घस्स लामकानि सेनासनानि तानि तेसं पापुणन्ति लामकानि च भत्तानि। ते आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं भिक्खू उज्झापेन्ति – ''छन्दाय दब्बो मल्लपुत्तो सेनासनं पञ्ञपेति, छन्दाय च भत्तानि उद्दिसती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं भिक्खू उज्झापेस्सन्ती''ति...पे॰... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, दब्बं मल्लपुत्तं भिक्खू उज्झापेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, दब्बं मल्लपुत्तं भिक्खू उज्झापेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**उज्झापनके पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१०४. तेन खो पन समयेन मेत्तियभूमजका भिक्खू – ''भगवता उज्झापनकं पटिक्खित्त''न्ति, ''एत्तावता भिक्खू सोस्सन्ती''ति [विहेसिस्सन्तीति (इतिपि)] भिक्खूनं सामन्ता आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं खिय्यन्ति – ''छन्दाय दब्बो मल्लपुत्तो सेनासनं पञ्ञपेति, छन्दाय च भत्तानि उद्दिसती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम मेत्तियभूमजका भिक्खू आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं खिय्यिस्सन्ती''ति...पे॰... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, दब्बं मल्लपुत्तं खिय्यथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, दब्बं मल्लपुत्तं खिय्यिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१०५. ''**उज्झापनके खिय्यनके पाचित्तिय**''न्ति।

१०६. उज्झापनकं नाम उपसम्पन्नं सङ्घेन सम्मतं सेनासनपञ्ञापकं वा भत्तुद्देसकं वा यागुभाजकं वा फलभाजकं वा खज्जभाजकं वा अप्पमत्तकविस्सज्जकं वा अवण्णं कत्तुकामो, अयसं कत्तुकामो, मङ्कुकत्तुकामो, उपसम्पन्नं उज्झापेति वा खिय्यति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी उज्झापनके खिय्यनके आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको उज्झापनके खिय्यनके आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी उज्झापनके खिय्यनके आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नं उज्झापेति वा खिय्यति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्नं सङ्घेन असम्मतं सेनासनपञ्ञापकं वा भत्तुद्देसकं वा यागुभाजकं वा फलभाजकं वा खज्जभाजकं वा अप्पमत्तकविस्सज्जकं वा अवण्णं कत्तुकामो, अयसं कत्तुकामो, मङ्कुकत्तुकामो, उपसम्पन्नं वा अनुपसम्पन्नं वा उज्झापेति वा खिय्यति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं सङ्घेन सम्मतं वा असम्मतं वा सेनासनपञ्ञापकं वा भत्तुद्देसकं वा यागुभाजकं वा फलभाजकं वा खज्जभाजकं वा अप्पमत्तकविस्सज्जकं वा अवण्णं कत्तुकामो, अयसं कत्तुकामो, मङ्कुकत्तुकामो, उपसम्पन्नं वा अनुपसम्पन्नं वा उज्झापेति वा खिय्यति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी आपत्ति दुक्कटस्स।

१०७. अनापत्ति पकतिया छन्दा दोसा मोहा भया करोन्तं उज्झापेति वा खिय्यति वा, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उज्झापनकसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. पठमसेनासनसिक्खापदं

१०८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खू हेमन्तिके काले अज्झोकासे सेनासनं पञ्ञपेत्वा कायं ओतापेन्ता काले आरोचिते तं पक्कमन्ता नेव उद्धरिंसु न उद्धरापेसुं, अनापुच्छा पक्कमिंसु। सेनासनं ओवट्ठं होति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथं हि नाम भिक्खू अज्झोकासे सेनासनं पञ्ञपेत्वा तं पक्कमन्ता नेव उद्धरिस्सन्ति न उद्धरापेस्सन्ति, अनापुच्छा पक्कमिस्सन्ति, सेनासनं ओवट्ठ''न्ति! अथ खो ते भिक्खू ते अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं... पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू अज्झोकासे...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१०९. **''यो पन भिक्खु सङ्घिकं मञ्चं वा पीठं वा भिसिं वा कोच्छं वा अज्झोकासे सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

११०. तेन खो पन समयेन भिक्खू अज्झोकासे वसित्वा कालस्सेव सेनासनं अभिहरन्ति। अद्दसा खो भगवा ते भिक्खू कालस्सेव सेनासनं अभिहरन्ते। दिस्वान एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, अट्ठ मासे अवस्सिकसङ्केते [वसितुं अवस्सिकसंकेते (इतिपि)] मण्डपे वा रुक्खमूले वा यत्थ काका वा कुलला वा न ऊहदन्ति तत्थ सेनासनं निक्खिपितु''न्ति।

१११. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सङ्घिकं नाम सङ्घस्स दिन्नं होति परिच्चत्तं।

मञ्चो नाम चत्तारो मञ्चा – मसारको, बुन्दिकाबद्धो, कुळीरपादको, आहच्चपादको।

पीठं नाम चत्तारि पीठानि – मसारकं, बुन्दिकाबद्धं, कुळीरपादकं, आहच्चपादकं।

भिसि नाम पञ्च भिसियो – उण्णभिसि, चोळभिति, वाकभिसि, तिणभिसि, पण्णभिसि।

कोच्छं नाम – वाकमयं वा उसीरमयं वा मुञ्जमयं वा पब्बजमयं [बब्बजमयं (सी०)] वा अन्तो संवेठेत्वा बद्धं होति।

सन्थरित्वाति सयं सन्थरित्वा।

सन्थरापेत्वाति अञ्ञं सन्थरापेत्वा। अनुपसम्पन्नं सन्थरापेति, तस्स पलिबोधो। उपसम्पन्नं सन्थरापेति,

सन्थारकस्स [सन्थतस्स (इतिपि)] पलिबोधो।

तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्याति न सयं उद्धरेय्य।

न उद्धरापेय्याति न अञ्ञं उद्धरापेय्य।

अनापुच्छं वा गच्छेय्याति भिक्खुं वा सामणेरं वा आरामिकं वा अनापुच्छा मज्झिमस्स पुरिसस्स लेड्डुपातं अतिक्कमन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

११२. सङ्घिके सङ्घिकसञ्ञी अज्झोकासे सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके वेमतिको…पे०… सङ्घिके पुग्गलिकसञ्ञी अज्झोकासे सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स।

चिमिलिकं वा उत्तरत्थरणं वा भूमत्थरणं वा तट्टिकं वा चम्मखण्डं वा पादपुञ्छनिं वा फलकपीठं वा अज्झोकासे सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके सङ्घिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके पुग्गलिकसञ्ञी अञ्ञस्स पुग्गलिके, आपत्ति दुक्कटस्स। अत्तनो पुग्गलिके अनापत्ति।

११३. अनापत्ति उद्धरित्वा गच्छति, उद्धरापेत्वा गच्छति, आपुच्छं गच्छति, ओतापेन्तो गच्छति, केनचि पलिबुद्धं होति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पठमसेनासनसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. दुतियसेनासनसिक्खापदं

११४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सत्तरसवग्गिया भिक्खू सहायका होन्ति। ते वसन्तापि एकतोव वसन्ति, पक्कमन्तापि एकतोव पक्कमन्ति। ते अञ्ञतरस्मिं सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा तं पक्कमन्ता नेव उद्धरिंसु न उद्धरापेसुं, अनापुच्छा पक्कमिंसु। सेनासनं उपचिकाहि खायितं होति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम सत्तरसवग्गिया भिक्खू सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा तं पक्कमन्ता नेव उद्धरिस्सन्ति न उद्धरापेस्सन्ति, अनापुच्छा पक्कमिस्सन्ति, सेनासनं उपचिकाहि खायित''न्ति! अथ खो ते भिक्खू सत्तरसवग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… ''सच्चं किर, भिक्खवे, सत्तरसवग्गिया भिक्खू सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा तं पक्कमन्ता नेव उद्धरिंसु न उद्धरापेसुं, अनापुच्छा पक्कमिंसु, सेनासनं उपचिकाहि खायित''न्ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा तं पक्कमन्ता नेव उद्धरिस्सन्ति न उद्धरापेस्सन्ति, अनापुच्छा पक्कमिस्सन्ति, सेनासनं उपचिकाहि खायितं! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

११५. **''यो पन भिक्खु सङ्घिके विहारे सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न**

उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

११६. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सङ्घिको नाम विहारो सङ्घस्स दिन्नो होति परिच्चत्तो।

सेय्यं नाम भिसि, चिमिलिका उत्तरत्थरणं, भूमत्थरणं, तट्टिका, चम्मखण्डो, निसीदनं, पच्चत्थरणं, तिणसन्थारो, पण्णसन्थारो।

सन्थरित्वाति सयं सन्थरित्वा।

सन्थरापेत्वाति अञ्ञं सन्थरापेत्वा।

तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्याति न सयं उद्धरेय्य।

न उद्धरापेय्याति न अञ्ञं उद्धरापेय्य।

अनापुच्छं वा गच्छेय्याति भिक्खुं वा सामणेरं वा आरामिकं वा अनापुच्छा परिक्खित्तस्स आरामस्स परिक्खेपं अतिक्कमन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स। अपरिक्खित्तस्स आरामस्स उपचारं अतिक्कमन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके सङ्घिकसञ्ञी सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके वेमतिको सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके पुग्गलिकसञ्ञी सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स।

११७. विहारस्स उपचारे वा उपट्ठानसालायं वा मण्डपे वा रुक्खमूले वा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स। मञ्चं वा पीठं वा विहारे वा विहारस्सूपचारे वा उपट्ठानसालायं वा मण्डपे वा रुक्खमूले वा सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा तं पक्कमन्तो नेव उद्धरेय्य न उद्धरापेय्य, अनापुच्छं वा गच्छेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स।

पुग्गलिके सङ्घिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके पुग्गलिकसञ्ञी अञ्ञस्स पुग्गलिके आपत्ति दुक्कटस्स। अत्तनो पुग्गलिके अनापत्ति।

११८. अनापत्ति उद्धरित्वा गच्छति, उद्धरापेत्वा गच्छति, आपुच्छं गच्छति, केनचि पलिबुद्धं होति, सापेक्खो गन्त्वा तत्थ ठितो आपुच्छति, केनचि पलिबुद्धो होति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसेनासनसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. अनुपखज्जसिक्खापदं

११९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू वरसेय्यायो पलिबुन्धेन्ति, थेरा भिक्खू वुट्ठापेन्ति [एत्थ ते इति कम्मपदं ऊनं विय दिस्सति]। अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – ''केन नु खो मयं उपायेन इधेव वस्सं वसेय्यामा''ति? अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू थेरे भिक्खू अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेन्ति – यस्स सम्बाधो भविस्सति सो पक्कमिस्सतीति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू थेरे भिक्खू अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेस्सन्ती''ति! अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं …पे०… ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, थेरे भिक्खू अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, थेरे भिक्खू अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१२०. ''यो पन भिक्खु सङ्घिके विहारे जानं पुब्बुपगतं भिक्खुं अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेय्य – यस्स सम्बाधो भविस्सति सो पक्कमिस्सती''ति, एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं, पाचित्तिय''न्ति।

१२१. यो पनाति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं २.०२५१ अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सङ्घिको नाम विहारो सङ्घस्स दिन्नो होति परिच्चत्तो।

जानाति नाम वुड्ढोति जानाति, गिलानोति जानाति, सङ्घेन दिन्नोति जानाति।

अनुपखज्जाति अनुपविसित्वा।

सेय्यं कप्पेय्याति मञ्चस्स वा पीठस्स वा पविसन्तस्स वा निक्खमन्तस्स वा उपचारे सेय्यं सन्थरति वा सन्थरापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञन्ति न अञ्ञो कोचि पच्चयो होति अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेतुं।

१२२. सङ्घिके सङ्घिकसञ्ञी अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके वेमतिको अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके पुग्गलिकसञ्ञी अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

मञ्चस्स वा पीठस्स वा पविसन्तस्स वा निक्खमन्तस्स वा उपचारं ठपेत्वा सेय्यं सन्थरति वा सन्थरापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। विहारस्स उपचारे वा उपट्ठानसालायं वा मण्डपे वा रुक्खमूले वा अज्झोकासे वा सेय्यं सन्थरति वा सन्थरापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अभिनिसीदति वा अभिनिप्पज्जति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके सङ्घिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके पुग्गलिकसञ्ञी अञ्ञस्स पुग्गलिके आपत्ति दुक्कटस्स। अत्तनो पुग्गलिके अनापत्ति।

१२३. अनापत्ति गिलानो पविसति, सीतेन वा उण्हेन वा पीळितो पविसति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अनुपखज्जसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. निक्कड्ढनसिक्खापदं

१२४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सत्तरसवग्गिया भिक्खू अञ्ञतरं पच्चन्तिमं महाविहारं पटिसङ्खरोन्ति – ''इध मयं वस्सं वसिस्सामा''ति। अद्दसंसु खो छब्बग्गिया भिक्खू सत्तरसवग्गिये भिक्खू विहारं पटिसङ्खरोन्ते। दिस्वान एवमाहंसु – ''इमे, आवुसो, सत्तरसवग्गिया भिक्खू विहारं पटिसङ्खरोन्ति। हन्द ने वुट्ठापेस्सामा''ति! एकच्चे एवमाहंसु – ''आगमेथावुसो, याव पटिसङ्खरोन्ति; पटिसङ्खते वुट्ठापेस्सामा''ति।

अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू सत्तरसवग्गिये भिक्खू एतदवोचुं – ''उट्ठेथावुसो, अम्हाकं विहारो पापुणाती''ति। ''ननु, आवुसो, पटिकच्चेव [पटिगच्चेव (सी॰)] आचिक्खितब्बं, मयञ्चञ्ञं पटिसङ्खरेय्यामा''ति। ''ननु, आवुसो, सङ्घिको विहारो''ति? ''आमावुसो, सङ्घिको विहारो''ति। ''उट्ठेथावुसो, अम्हाकं विहारो पापुणाती''ति। ''महल्लको, आवुसो, विहारो। तुम्हेपि वसथ, मयम्पि वसिस्सामा''ति। ''उट्ठेथावुसो, अम्हाकं विहारो पापुणाती''ति कुपिता अनत्तमना गीवायं गहेत्वा निक्कड्ढन्ति। ते निक्कड्ढीयमाना रोदन्ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, रोदथा''ति? ''इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना अम्हे सङ्घिका विहारा निक्कड्ढन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना भिक्खू सङ्घिका विहारा निक्कड्ढिस्सन्ती''ति! अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, कुपिता अनत्तमना भिक्खू सङ्घिका विहारा निक्कड्ढथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, कुपिता अनत्तमना भिक्खू सङ्घिका विहारा निक्कड्ढिस्सथ? नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१२५. **''यो पन भिक्खु भिक्खुं कुपितो अनत्तमनो सङ्घिका विहारा निक्कड्ढेय्य वा निक्कड्ढापेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

१२६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुन्ति अञ्ञं भिक्खुं।

कुपितो अनत्तमनोति अनभिरद्धो आहतचित्तो खिलजातो।

सङ्घिको नाम विहारो सङ्घस्स दिन्नो होति परिच्चत्तो।

निक्कड्ढेय्याति गब्भे गहेत्वा पमुखं निक्कड्ढति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पमुखे गहेत्वा बहि निक्कड्ढति, आपत्ति पाचित्तियस्स। एकेन पयोगेन बहुकेपि द्वारे अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

निक्कड्ढापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स [दुक्कटस्स (कत्थचि)]। सकिं आणत्तो बहुकेपि द्वारे अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२७. सङ्घिके सङ्घिकसञ्ञी कुपितो अनत्तमनो निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके वेमतिको कुपितो अनत्तमनो निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके पुग्गलिकसञ्ञी कुपितो अनत्तमनो निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। विहारस्स उपचारा वा उपट्ठानसालाय वा मण्डपा वा रुक्खमूला वा अज्झोकासा वा निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं विहारा वा विहारस्स उपचारा वा उपट्ठानसालाय वा मण्डपा वा रुक्खमूला वा अज्झोकासा वा निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स।

पुग्गलिके सङ्घिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके पुग्गलिकसञ्ञी अञ्ञस्स पुग्गलिके आपत्ति दुक्कटस्स। अत्तनो पुग्गलिके अनापत्ति।

१२८. अनापत्ति अलज्जिं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, उम्मत्तकं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, भण्डनकारकं कलहकारकं विवादकारकं भस्सकारकं सङ्घे अधिकरणकारकं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, अन्तेवासिकं वा सद्धिविहारिकं वा न सम्मा वत्तन्तं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्स परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

निक्कड्ढनसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. वेहासकुटिसिक्खापदं

१२९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन द्वे भिक्खू सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया विहरन्ति?। एको हेट्ठा विहरति [विहरन्ति, एको हेट्ठा (?)], एको उपरि। उपरिमो भिक्खु आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदि। मञ्चपादो निप्पतित्वा [पतित्वा (स्या०)] हेट्ठिमस्स भिक्खुनो मत्थके अवत्थासि। सो भिक्खु विस्सरमकासि। भिक्खू उपधावित्वा तं भिक्खुं एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, आवुसो, विस्सरमकासी''ति? अथ खो सो भिक्खु भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदिस्सती''ति! अथ खो ते भिक्खू तं भिक्खुं अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... ''सच्चं किर त्वं, भिक्खु, सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदसी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१३०. ''यो पन भिक्खु सङ्घिके विहारे उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं वा पीठं वा अभिनिसीदेय्य वा अभिनिपज्जेय्य वा, पाचित्तिय''न्ति।

१३१. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सङ्घिको नाम विहारो सङ्घस्स दिन्नो होति परिच्चत्तो।

वेहासकुटि नाम मज्झिमस्स पुरिसस्स असीसघट्टा।

आहच्चपादको नाम **मञ्चो** अङ्गे विज्झित्वा ठितो होति। **आहच्चपादकं** नाम **पीठं** अङ्गे विज्झित्वा ठितं होति।

अभिनिसीदेय्याति तस्मिं अभिनिसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अभिनिपज्जेय्याति तस्मिं अभिनिपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१३२. सङ्घिके सङ्घिकसञ्ञी उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं वा पीठं वा अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। सङ्घिके वेमतिको…पे॰… सङ्घिके पुग्गलिकसञ्ञी उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं वा पीठं वा अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पुग्गलिके सङ्घिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलिके पुग्गलिकसञ्ञी अञ्ञस्स पुग्गलिके, आपत्ति दुक्कटस्स। अत्तनो पुग्गलिके, अनापत्ति।

१३३. अनापत्ति – अवेहासकुटिया सीसघट्टाय हेट्ठा अपरिभोगं होति, पदरसञ्चितं होति, पटाणि दिन्ना होति, तस्मिं ठितो गण्हति वा लग्गेति वा, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

वेहासकुटिसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. महल्लकविहारसिक्खापदं

१३४. तेन समयेन बुद्धो भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। तेन खो पन समयेन आयस्मतो छन्नस्स उपट्ठाको महामत्तो आयस्मतो छन्नस्स विहारं कारापेति। अथ खो आयस्मा छन्नो कतपरियोसितं विहारं पुनप्पुनं छादापेति, पुनप्पुनं लेपापेति। अतिभारितो विहारो परिपति। अथ खो आयस्मा छन्नो तिणञ्च कट्ठञ्च संकड्ढन्तो अञ्ञतरस्स ब्राह्मणस्स यवखेत्तं दूसेसि। अथ खो सो ब्राह्मणो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता अम्हाकं यवखेत्तं दूसेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तस्स ब्राह्मणस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा… पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा छन्नो कतपरियोसितं विहारं पुनप्पुनं छादापेस्सति, पुनप्पुनं लेपापेस्सति, अतिभारितो विहारो परिपती''ति! अथ खो ते भिक्खू आयस्मन्तं छन्नं अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… ''सच्चं किर त्वं, छन्न, कतपरियोसितं विहारं पुनप्पुनं छादापेसि, पुनप्पुनं लेपापेसि, अतिभारितो विहारो परिपती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, कतपरियोसितं विहारं पुनप्पुनं छादापेस्ससि, पुनप्पुनं लेपापेस्ससि, अतिभारितो विहारो परिपति! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१३५. **''महल्लकं पन भिक्खुना विहारं कारयमानेन यावद्वारकोसा अग्गळट्ठपनाय आलोकसन्धिपरिकम्माय**

द्वत्तिच्छदनस्स परियाय अप्पहरिते ठितेन अधिट्ठातब्बं। ततो चे उत्तरिं अप्पहरितेपि ठितो अधिट्ठहेय्य पाचित्तिय''न्ति।

१३६. **महल्लको** नाम विहारो सस्सामिको वुच्चति।

विहारो नाम उल्लित्तो वा होति अवलित्तो वा उल्लित्तावलित्तो वा।

कारयमानेनाति करोन्तो वा कारापेन्तो वा।

याव द्वारकोसाति पिट्ठसङ्घाटस्स [पीठसंघाटस्स (इतिपि), पिट्ठिसङ्घाटस्स (स्या०)] समन्ता हत्थपासा।

अग्गळट्ठपनायाति द्वारट्ठपनाय।

आलोकसन्धिपरिकम्मायाति वातपानपरिकम्माय सेतवण्णं काळवण्णं गेरुकपरिकम्मं मालाकम्मं लताकम्मं मकरदन्तकं पञ्चपटिकं।

द्वत्तिच्छदनस्स परियायं अप्पहरिते ठितेन अधिट्ठातब्बन्ति – हरितं नाम पुब्बण्णं अपरण्णं। सचे हरिते ठितो अधिट्ठाति, आपत्ति दुक्कटस्स। मग्गेन छादेन्तस्स द्वे मग्गे अधिट्ठहित्वा ततियं मग्गं आणापेत्वा पक्कमितब्बं। परियायेन छादेन्तस्स द्वे परियाये अधिट्ठहित्वा ततियं परियायं आणापेत्वा पक्कमितब्बं।

१३७. **ततो चे उत्तरि अप्पहरितेपि ठितो अधिट्ठहेय्या**ति इट्ठकाय २.०२६२ छादेन्तस्स इट्ठकिट्ठकाय आपत्ति पाचित्तियस्स। सिलाय छादेन्तस्स सिलाय सिलाय आपत्ति पाचित्तियस्स। सुधाय छादेन्तस्स पिण्डे पिण्डे आपत्ति पाचित्तियस्स। तिणेन छादेन्तस्स करळे करळे आपत्ति पाचित्तियस्स। पण्णेन छादेन्तस्स पण्णे पण्णे आपत्ति पाचित्तियस्स।

अतिरेकद्वत्तिपरियाये अतिरेकसञ्ञी अधिट्ठाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकद्वत्तिपरियाये वेमतिको अधिट्ठाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकद्वत्तिपरियाये ऊनकसञ्ञी अधिट्ठाति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ऊनकद्वत्तिपरियाये अतिरेकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकद्वत्तिपरियाये वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकद्वत्तिपरियाये ऊनकसञ्ञी, अनापत्ति।

१३८. अनापत्ति द्वत्तिपरियाये, ऊनकद्वत्तिपरियाये, लेणे, गुहाय, तिणकुटिकाय, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, वासागारं ठपेत्वा सब्बत्थ अनापत्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

महल्लकविहारसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. सप्पाणकसिक्खापदं

१३९. तेन समयेन बुद्धो भगवा आळवियं विहरति अग्गाळवे चेतिये। तेन खो पन समयेन आळवका भिक्खू नवकम्मं करोन्ता जानं सप्पाणकं उदकं तिणम्पि मत्तिकम्पि सिञ्चन्तिपि सिञ्चापेन्तिपि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते

उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आळवका भिक्खू जानं सप्पाणकं उदकं तिणम्पि मत्तिकम्पि सिञ्चिस्सन्तिपि सिञ्चापेस्सन्तिपी''ति! अथ खो ते भिक्खू आळवके भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, जानं सप्पाणकं उदकं तिणम्पि मत्तिकम्पि सिञ्चथपि सिञ्चापेथपी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, जानं सप्पाणकं उदकं तिणम्पि मत्तिकम्पि सिञ्चिस्सथपि सिञ्चापेस्सथपि! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१४०. **''यो पन भिक्खु जानं सप्पाणकं उदकं तिणं वा मत्तिकं वा सिञ्चेय्य वा सिञ्चापेय्य वा, पाचित्तिय**''न्ति।

१४१. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम [जानं नाम (स्या॰)] सामं वा जानाति अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति।

सिञ्चेय्याति सयं सिञ्चति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सिञ्चापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स [आपत्ति दुक्कटस्स (कत्थचि)]। सकिं आणत्तो बहुकम्पि सिञ्चति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१४२. सप्पाणके सप्पाणकसञ्ञी तिणं वा मत्तिकं वा सिञ्चति वा सिञ्चापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। सप्पाणके वेमतिको तिणं वा मत्तिकं वा सिञ्चति वा सिञ्चापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। सप्पाणके अप्पाणकसञ्ञी तिणं वा मत्तिकं वा सिञ्चति वा सिञ्चापेति वा, अनापत्ति। अप्पाणके सप्पाणकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पाणके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पाणके अप्पाणकसञ्ञी, अनापत्ति।

१४३. अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सप्पाणकसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

भूतगामवग्गो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

भूतं अञ्ञाय उज्झायं, पक्कमन्तेन ते दुवे।
पुब्बे निक्कड्ढनाहच्च, द्वारं सप्पाणकेन चाति॥

३. ओवादवग्गो

१. ओवादसिक्खापदं

१४४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ता लाभिनो होन्ति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – ''एतरहि खो, आवुसो, थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ता लाभिनो होन्ति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। हन्दावुसो, मयम्पि भिक्खुनियो ओवदामा''ति। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – ''अम्हेपि, भगिनियो, उपसङ्कमथ; मयम्पि ओवदिस्सामा''ति।

अथ खो ता भिक्खुनियो येन छब्बग्गिया भिक्खू तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा छब्बग्गिये भिक्खू अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीनं परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेसुं – ''गच्छथ, भगिनियो''ति। अथ खो ता भिक्खुनियो येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु। एकमन्तं ठिता खो ता भिक्खुनियो भगवा एतदवोच – ''कच्चि, भिक्खुनियो, ओवादो इद्धो अहोसी''ति? ''कुतो, भन्ते, ओवादो इद्धो भविस्सति! अय्या छब्बग्गिया परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेसु''न्ति। अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो ता भिक्खुनियो भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सिता समादपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कमिंसु।

अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा छब्बग्गिये भिक्खू पटिपुच्छि – ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुनीनं परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुनीनं परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… विगरहित्वा…पे०… धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, भिक्खुनोवादकं सम्मन्नितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, सम्मन्नितब्बो। पठमं भिक्खु याचितब्बो। याचित्वा ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

१४५. ''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नति। यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो भिक्खुनोवादकस्स सम्मुति, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि…पे०… ततियम्पि एतमत्थं वदामि – सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नति। यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो भिक्खुनोवादकस्स सम्मुति, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

''सम्मतो सङ्घेन इत्थन्नामो भिक्खु भिक्खुनोवादको। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१४६. "यो पन भिक्खु असम्मतो भिक्खुनियो ओवदेय्य पाचित्तिय"न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१४७. तेन खो पन समयेन थेरा भिक्खू सम्मता भिक्खुनियो ओवदन्ता तथेव लाभिनो होन्ति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – "एतरहि खो, आवुसो, थेरा भिक्खू सम्मता भिक्खुनियो ओवदन्ता तथेव लाभिनो होन्ति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। हन्दावुसो, मयम्पि निस्सीमं गन्त्वा अञ्ञमञ्ञं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नित्वा भिक्खुनियो ओवदामा"ति। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू निस्सीमं गन्त्वा अञ्ञमञ्ञं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नित्वा भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – "मयम्पि, भगिनियो, सम्मता। अम्हेपि उपसङ्कमथ। मयम्पि ओवदिस्सामा"ति।

अथ खो ता भिक्खुनियो येन छब्बग्गिया भिक्खू तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा छब्बग्गिये भिक्खू अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीनं परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेसुं – "गच्छथ भगिनियो"ति। अथ खो ता भिक्खुनियो येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु। एकमन्तं ठिता खो ता भिक्खुनियो भगवा एतदवोच – "कच्चि, भिक्खुनियो, ओवादो इद्धो अहोसी"ति? "कुतो, भन्ते, ओवादो इद्धो भविस्सति! अय्या छब्बग्गिया परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेसु"न्ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि...पे॰... अथ खो ता भिक्खुनियो भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सिता समादपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कमिंसु। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा छब्बग्गिये भिक्खू पटिपुच्छि – "सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुनीनं परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेथा"ति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुनीनं परित्तञ्ञेव धम्मिं कथं कत्वा दिवसं तिरच्छानकथाय वीतिनामेत्वा उय्योजेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... विगरहित्वा...पे॰... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – "अनुजानामि, भिक्खवे, अट्ठहङ्गेहि समन्नागतं भिक्खुं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नितुं। सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसा अनुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; उभयानि खो पनस्स पातिमोक्खानि वित्थारेन स्वागतानि होन्ति सुविभत्तानि सुप्पवत्तीनि सुविनिच्छितानि सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो; कल्याणवाचो होति कल्याणवाक्करणो; येभुय्येन भिक्खुनीनं पियो होति मनापो; पटिबलो होति भिक्खुनियो ओवदितुं; न खो पनेतं [पन तं (?)] भगवन्तं उद्दिस्स पब्बजिताय कासायवत्थवसनाय गरुधम्मं अज्झापन्नपुब्बो होति; वीसतिवस्सो वा होति अतिरेकवीसतिवस्सो वा – अनुजानामि, भिक्खवे, इमेहि अट्ठहङ्गेहि समन्नागतं भिक्खुं भिक्खुनोवादकं सम्मन्नितु"न्ति।

१४८. यो पनाति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

असम्मतो नाम ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन असम्मतो।

भिक्खुनियो नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

ओवदेय्याति अट्ठहि गरुधम्मेहि ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञेन धम्मेन ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। एकतोउपसम्पन्नं ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

१४९. तेन सम्मतेन भिक्खुना परिवेणं सम्मज्जित्वा पानीयं परिभोजनीयं उपट्ठापेत्वा आसनं पञ्ञपेत्वा दुतियं गहेत्वा निसीदितब्बं। भिक्खुनीहि तत्थ गन्त्वा तं भिक्खुं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदितब्बं। तेन भिक्खुना पुच्छितब्बा – ''समग्गात्थ, भगिनियो''ति? सचे ''समग्गाम्हाय्या''ति भणन्ति, ''वत्तन्ति, भगिनियो, अट्ठ गरुधम्मा''ति? सचे ''वत्तन्ताय्या''ति भणन्ति, ''एसो, भगिनियो, ओवादो''ति निय्यादेतब्बो [निय्यातेतब्बो (इतिपि)]। सचे ''न वत्तन्ताय्या''ति भणन्ति, ओसारेतब्बा। ''वस्ससतूपसम्पन्नाय भिक्खुनिया तदहुपसम्पन्नस्स भिक्खुनो अभिवादनं पच्चुट्ठानं अञ्जलिकम्मं सामीचिकम्मं कातब्बं; अयम्पि धम्मो सक्कत्वा गरुकत्वा मानेत्वा पूजेत्वा यावजीवं अनतिक्कमनीयो। न भिक्खुनिया अभिक्खुके आवासे वस्सं वसितब्बं; अयम्पि धम्मो सक्कत्वा गरुकत्वा मानेत्वा पूजेत्वा यावजीवं अनतिक्कमनीयो। अन्वद्धमासं भिक्खुनिया भिक्खुसङ्घतो द्वे धम्मा पच्चासीसितब्बा [पच्चासिंसितब्बा (इतिपि)] उपोसथपुच्छकञ्च ओवादुपसङ्कमनञ्च, अयम्पि धम्मो...पे०... वस्सं वुट्ठाय भिक्खुनिया उभतोसङ्घे तीहि ठानेहि पवारेतब्बं दिट्ठेन वा सुतेन वा परिसङ्काय वा; अयम्पि धम्मो...पे०... गरुधम्मं अज्झापन्नाय भिक्खुनिया उभतोसङ्घे पक्खमानत्तं चरितब्बं; अयम्पि धम्मो... पे०... द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय उभतोसङ्घे उपसम्पदा परियेसितब्बा; अयम्पि धम्मो...पे०... न भिक्खुनिया केन चि परियायेन भिक्खु अक्कोसितब्बो परिभासितब्बो; अयम्पि धम्मो...पे०... अज्जतग्गे ओवटो भिक्खुनीनं भिक्खूसु वचनपथो, अनोवटो भिक्खूनं भिक्खुनीसु वचनपथो; अयम्पि धम्मो सक्कत्वा गरुकत्वा मानेत्वा पूजेत्वा यावजीवं अनतिक्कमनीयो''ति।

सचे ''समग्गाम्हाय्या''ति भणन्तं अञ्ञं धम्मं भणति, आपत्ति दुक्कटस्स। सचे ''वग्गाम्हाय्या''ति भणन्तं अट्ठ गरुधम्मे भणति, आपत्ति दुक्कटस्स। ओवादं अनिय्यादेत्वा अञ्ञं धम्मं भणति, आपत्ति दुक्कटस्स।

१५०. अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनीसङ्घं वेमतिको ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे वेमतिको वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वेमतिको ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको वग्गं भिक्खुनिसङ्घं समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वेमतिको ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वेमतिको ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे वेमतिको समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति...पे०... वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति...पे०... वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१५१. धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

धम्मकम्मे वेमतिको वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति...पे०... वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी वग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति...पे०... वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति...पे०... वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

धम्मकम्मे वेमतिको समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति...पे०... वेमतिको ओवदति...पे०... समग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वग्गसञ्ञी ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं वेमतिको ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी समग्गं भिक्खुनिसङ्घं समग्गसञ्ञी ओवदति, अनापत्ति।

१५२. अनापत्ति उद्देसं देन्तो, परिपुच्छं देन्तो, ''ओसारेहि अय्या''ति वुच्चमानो, ओसारेति, पञ्हं पुच्छति, पञ्हं पुट्ठो कथेति, अञ्ञस्सत्थाय भणन्तं भिक्खुनियो सुणन्ति, सिक्खमानाय, सामणेरिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ओवादसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. अत्थङ्गतसिक्खापदं

१५३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ति परियायेन। तेन खो पन समयेन आयस्मतो चूळपन्थकस्स परियायो होति भिक्खुनियो ओवदितुं। भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''न दानि अज्ज ओवादो इद्धो भविस्सति, तञ्ञेव दानि उदानं अय्यो चूळपन्थको

पुनप्पुनं भणिस्सती''ति। अथ खो ता भिक्खुनियो येनायस्मा चूळपन्थको तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं चूळपन्थकं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। एकमन्तं निसिन्ना खो ता भिक्खुनियो आयस्मा चूळपन्थको एतदवोच – ''समग्गात्थ, भगिनियो''ति? ''समग्गाम्हाय्या''ति। ''वत्तन्ति, भगिनियो, अट्ठ गरुधम्मा''ति? ''वत्तन्ताय्या''ति। ''एसो, भगिनियो, ओवादो''ति निय्यादेत्वा इमं उदानं पुनप्पुनं अभासि –

[उदा॰ ३७] ''अधिचेतसो अप्पमज्जतो, मुनिनो मोनपथेसु सिक्खतो।
सोका न भवन्ति तादिनो, उपसन्तस्स सदा सतीमतो''ति॥

भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''ननु अवोचुम्हा – न दानि अज्ज ओवादो इद्धो भविस्सति, तञ्ञेव दानि उदानं अय्यो चूळपन्थको पुनप्पुनं भणिस्सती''ति! अस्सोसि खो आयस्मा चूळपन्थको तासं भिक्खुनीनं इमं कथासल्लापं। अथ खो आयस्मा चूळपन्थको वेहासं अब्भुग्गन्त्वा आकासे अन्तलिक्खे चङ्कमतिपि तिट्ठतिपि निसीदतिपि सेय्यम्पि कप्पेति धूमायतिपि पज्जलतिपि अन्तरधायतिपि, तञ्चेव [तञ्ञेव (इतिपि)] उदानं भणति अञ्ञञ्च बहुं बुद्धवचनं। भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''अच्छरियं वत भो, अब्भुतं वत भो, न वत नो इतो पुब्बे ओवादो एवं इद्धो भूतपुब्बो यथा अय्यस्स चूळपन्थकस्सा''ति। अथ खो आयस्मा चूळपन्थको ता भिक्खुनियो याव समन्धकारा ओवदित्वा उय्योजेसि – गच्छथ भगिनियोति।

अथ खो ता भिक्खुनियो नगरद्वारे थकिते बहिनगरे वसित्वा कालस्सेव नगरं पविसन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''अब्रह्मचारिनियो इमा भिक्खुनियो; आरामे भिक्खूहि सद्धिं वसित्वा इदानि नगरं पविसन्ती''ति। अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा चूळपन्थको अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदिस्सती''ति...पे॰... ''सच्चं किर त्वं, चूळपन्थक, अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदसी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, चूळपन्थक, अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदिस्ससि! नेतं, चूळपन्थक, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१५४. ''सम्मतोपि चे भिक्खु अत्थङ्गते सूरिये भिक्खुनियो ओवदेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

१५५. सम्मतो नाम ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन सम्मतो।

अत्थङ्गते सूरियेति ओग्गते सूरिये।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

ओवदेय्याति अट्ठहि वा गरुधम्मेहि अञ्ञेन वा धम्मेन ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१५६. अत्थङ्गते अत्थङ्गतसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्थङ्गते वेमतिको ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्थङ्गते अनत्थङ्गतसञ्ञी ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकतोउपसम्पन्नाय ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनत्थङ्गते अत्थङ्गतसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनत्थङ्गते

वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनत्थङ्गते अनत्थङ्गतसञ्ञी, अनापत्ति।

१५७. अनापत्ति उद्देसं देन्तो, परिपुच्छं देन्तो, ''ओसारेहि अय्या''ति वुच्चमानो, ओसारेति, पञ्हं पुच्छति, पञ्हं पुट्ठो कथेति, अञ्ञस्सत्थाय भणन्तं भिक्खुनियो सुणन्ति, सिक्खमानाय सामणेरिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अत्थङ्गतसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. भिक्खुनुपस्सयसिक्खापदं

१५८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सक्केसु विहरति कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवदन्ति। भिक्खुनियो छब्बग्गिया भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''एथाय्ये, ओवादं गमिस्सामा''ति। ''यम्पि [यं हि (क०)] मयं, अय्ये, गच्छेय्याम ओवादस्स कारणा, अय्या छब्बग्गिया इधेव आगन्त्वा अम्हे ओवदन्ती''ति। भिक्खुनियो उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदिस्सन्ती''ति [छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवादं न गच्छिस्सन्तीति (सी०)]! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदिस्सन्ती''ति…पे०… ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१५९. तेन खो पन समयेन महापजापति गोतमी गिलाना होति। थेरा भिक्खू येन महापजापति गोतमी तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा महापजापतिं गोतमिं एतदवोचुं – ''कच्चि ते, गोतमि, खमनीयं कच्चि यापनीय''न्ति? ''न मे, अय्या, खमनीयं न यापनीयं''। ''इङ्घय्या, धम्मं देसेथा''ति। ''न, भगिनि, कप्पति भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो धम्मं देसेतु''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न देसेसुं। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन महापजापति गोतमी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। निसज्ज खो भगवा महापजापतिं गोतमिं एतदवोच – ''कच्चि ते, गोतमि, खमनीयं कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मे, भन्ते, थेरा भिक्खू आगन्त्वा धम्मं देसेन्ति। तेन मे फासु होति। इदानि पन – ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति, कुक्कुच्चायन्ता न देसेन्ति। तेन मे न फासु होती''ति। अथ खो भगवा महापजापतिं गोतमिं धम्मिया कथाय सन्दस्सेत्वा समादपेत्वा समुत्तेजेत्वा सम्पहंसेत्वा उट्ठायासना पक्कामि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा गिलानं भिक्खुनिं ओवदितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१६०. **''यो पन भिक्खु भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा भिक्खुनियो ओवदेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलाना होति भिक्खुनी – अयं तत्थ समयो''**ति।

१६१. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुनुपस्सयो नाम यत्थ भिक्खुनियो एकरत्तम्पि वसन्ति।

उपसङ्कमित्वाति तत्थ गन्त्वा।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

ओवदेय्याति अट्ठहि गरुधम्मेहि ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र समयाति ठपेत्वा समयं।

गिलाना नाम भिक्खुनी न सक्कोति ओवादाय वा संवासाय वा गन्तुं।

१६२. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञी भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा अञ्ञत्र समया ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिको भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा अञ्ञत्र समया ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञी भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा अञ्ञत्र समया ओवदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञेन धम्मेन ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। एकतोउपसम्पन्नाय ओवदति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञी, अनापत्ति।

१६३. अनापत्ति समये, उद्देसं देन्तो, परिपुच्छं देन्तो, ''ओसारेहि अय्या''ति वुच्चमानो ओसारेति, पञ्हं पुच्छति, पञ्हं पुट्ठो कथेति, अञ्ञस्सत्थाय भणन्तं भिक्खुनियो सुणन्ति, सिक्खमानाय सामणेरिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

भिक्खुनुपस्सयसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. आमिससिक्खापदं

१६४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ता लाभिनो होन्ति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। छब्बग्गिया भिक्खू एवं वदन्ति – ''न बहुकता थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदितुं; आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू एवं वक्खन्ति – 'न बहुकता थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदितुं; आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती'''ति…पे०… ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, एवं वदेथ – 'न बहुकता थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदितुं; आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती'''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, एवं वक्खथ – न बहुकता थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदितुं; आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्तीति! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१६५. **"यो पन भिक्खु एवं वदेय्य – 'आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवन्दती'ति, पाचित्तिय"**न्ति।

१६६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

आमिसहेतूति चीवरहेतु पिण्डपातहेतु सेनासनहेतु गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारहेतु सक्कारहेतु गरुकारहेतु माननहेतु वन्दनहेतु पूजनहेतु।

एवं वदेय्याति उपसम्पन्नं सङ्घेन सम्मतं भिक्खुनोवादकं अवण्णं कत्तुकामो अयसं कत्तुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति – "चीवरहेतु पिण्डपातहेतु सेनासनहेतु गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारहेतु सक्कारहेतु गरुकारहेतु माननहेतु वन्दनहेतु पूजनहेतु ओवदती"ति भणति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१६७. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी एवं वदेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको एवं वदेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी एवं वदेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उपसम्पन्नं सङ्घेन असम्मतं भिक्खुनोवादकं अवण्णं कत्तुकामो अयसं कत्तुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति – "चीवरहेतु…पे०… पूजनहेतु ओवदती"ति भणति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं सङ्घेन सम्मतं वा असम्मतं वा भिक्खुनोवादकं अवण्णं कत्तुकामो अयसं कत्तुकामो मङ्कुकत्तुकामो एवं वदेति – "चीवरहेतु पिण्डपातहेतु सेनासनहेतु गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारहेतु सक्कारहेतु गरुकारहेतु माननहेतु वन्दनहेतु पूजनहेतु ओवदती"ति भणति, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

१६८. अनापत्ति पकतिया चीवरहेतु पिण्डपातहेतु सेनासनहेतु गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारहेतु सक्कारहेतु गरुकारहेतु माननहेतु वन्दनहेतु पूजनहेतु ओवदन्तं भणति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

आमिससिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. चीवरदानसिक्खापदं

१६९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु सावत्थियं अञ्ञतरिस्सा विसिखाय पिण्डाय चरति। अञ्ञतरापि भिक्खुनी तस्सा विसिखाय पिण्डाय चरति। अथ खो सो भिक्खु तं भिक्खुनिं एतदवोच – "गच्छ, भगिनि, अमुकस्मिं ओकासे भिक्खा दिय्यती"ति। सापि खो एवमाह – "गच्छाय्य, अमुकस्मिं ओकासे भिक्खा दिय्यती"ति। ते अभिण्हदस्सनेन सन्दिट्ठा अहेसुं। तेन खो पन समयेन सङ्घस्स चीवरं भाजीयति। अथ खो सा भिक्खुनी ओवादं गन्त्वा येन सो भिक्खु तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं भिक्खुं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितं खो तं भिक्खुनिं सो भिक्खु एतदवोच – "अयं मे, भगिनि, चीवरपटिवीसो [पटिविंसो (सी०), पटिविसो (इतिपि)]; सादियिस्ससी"ति? "आमाय्य, दुब्बलचीवराम्ही"ति।

अथ खो सो भिक्खु तस्सा भिक्खुनिया चीवरं अदासि। सोपि खो भिक्खु दुब्बलचीवरो होति। भिक्खू तं भिक्खुं एतदवोचुं – "करोहि दानि ते, आवुसो, चीवर"न्ति। अथ खो सो भिक्खु भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू

अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खु भिक्खुनिया चीवरं दस्सती’’ति…पे॰… ‘‘सच्चं किर त्वं, भिक्खु, भिक्खुनिया चीवरं अदासी’’ति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। ‘‘ञातिका ते, भिक्खु, अञ्ञातिका’’ति? ‘‘अञ्ञातिका, भगवा’’ति। ‘‘अञ्ञातको, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय न जानाति पतिरूपं वा अप्पतिरूपं वा सन्तं वा असन्तं वा। कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं दस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

‘‘**यो पन भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं ददेय्य, पाचित्तिय**’’न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१७०. तेन खो पन समयेन भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता भिक्खुनीनं पारिवत्तकं [पारिवट्टकं (इतिपि)] चीवरं न देन्ति। भिक्खुनियो उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम अय्या अम्हाकं पारिवत्तकं चीवरं न दस्सन्ती’’ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तासं भिक्खुनीनं उज्झायन्तीनं खिय्यन्तीनं विपाचेन्तीनं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ‘‘अनुजानामि, भिक्खवे, पञ्चन्नं पारिवत्तकं दातुं। भिक्खुस्स, भिक्खुनिया, सिक्खमानाय, सामणेरस्स, सामणेरिया – अनुजानामि, भिक्खवे, इमेसं पञ्चन्नं पारिवत्तकं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१७१. ‘‘**यो पन भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं ददेय्य, अञ्ञत्र पारिवत्तका, पाचित्तिय**’’न्ति।

१७२. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अञ्ञातिका नाम मातितो वा पितितो वा याव सत्तमा पितामहयुगा असम्बद्धा।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं विकप्पनुपगं पच्छिमं [विकप्पनुपगपच्छिमं (सी॰)]।

अञ्ञत्र पारिवत्तकाति ठपेत्वा पारिवत्तकं देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१७३. अञ्ञातिकाय अञ्ञातिकसञ्ञी चीवरं देति, अञ्ञत्र पारिवत्तका, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञातिकाय वेमतिको चीवरं देति, अञ्ञत्र पारिवत्तका, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञातिकाय ञातिकसञ्ञी चीवरं देति, अञ्ञत्र पारिवत्तका, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकतो उपसम्पन्नाय चीवरं देति, अञ्ञत्र पारिवत्तका, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय अञ्ञातिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय ञातिकसञ्ञी, अनापत्ति।

१७४. अनापत्ति ञातिकाय, पारिवत्तकं परित्तेन वा विपुलं, विपुलेन वा परित्तं, भिक्खुनी विस्सासं गण्हाति, तावकालिकं गण्हाति, चीवरं ठपेत्वा अञ्ञं परिक्खारं देति, सिक्खमानाय, सामणेरिया, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

चीवरदानसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. चीवरसिब्बनसिक्खापदं

१७५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी पट्टो [पट्ठो (सी॰ स्या॰)] होति चीवरकम्मं कातुं। अञ्ञतरा भिक्खुनी येनायस्मा उदायी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं उदायिं एतदवोच – ''साधु मे, भन्ते, अय्यो चीवरं सिब्बतू''ति। अथ खो आयस्मा उदायी तस्सा भिक्खुनिया चीवरं सिब्बित्वा सुरत्तं सुपरिकम्मकतं कत्वा मज्झे पटिभानचित्तं वुट्ठापेत्वा संहरित्वा निक्खिपि। अथ खो सा भिक्खुनी येनायस्मा उदायी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं उदायिं एतदवोच – ''कहं तं, भन्ते, चीवर''न्ति? ''हन्द, भगिनि, इमं चीवरं यथासंहटं हरित्वा निक्खिपित्वा यदा भिक्खुनिसङ्घो ओवादं आगच्छति तदा इमं चीवरं पारुपित्वा भिक्खुनिसङ्घस्स पिट्ठितो पिट्ठितो आगच्छा''ति। अथ खो सा भिक्खुनी तं चीवरं यथासंहटं हरित्वा निक्खिपित्वा यदा भिक्खुनिसङ्घो ओवादं आगच्छति तदा तं चीवरं पारुपित्वा भिक्खुनिसङ्घस्स पिट्ठितो पिट्ठितो आगच्छति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''याव छिन्निका इमा भिक्खुनियो धुत्तिका अहिरिकायो, यत्र हि नाम चीवरे पटिभानचित्तं वुट्ठापेस्सन्ती''ति!

भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''कस्सिदं कम्म''न्ति? ''अय्यस्स उदायिस्सा''ति। ''येपि ते छिन्नका धुत्तका अहिरिका तेसम्पि एवरूपं न सोभेय्य, किं पन अय्यस्स उदायिस्सा''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उदायी भिक्खुनिया चीवरं सिब्बिस्सती''ति…पे॰… सच्चं किर त्वं, उदायि, भिक्खुनिया चीवरं सिब्बसी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। ''ञातिका ते, उदायि, अञ्ञातिका''ति? ''अञ्ञातिका, भगवा''ति। ''अञ्ञातको, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय न जानाति पतिरूपं वा अप्पतिरूपं वा पासादिकं वा अपासादिकं वा। कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं सिब्बिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१७६. **''यो पन भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया चीवरं सिब्बेय्य वा सिब्बापेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

१७७. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अञ्ञातिका नाम मातितो वा पितितो वा याव सत्तमा पितामहयुगा असम्बद्धा।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं।

सिब्बेय्याति सयं सिब्बति आरापथे आरापथे आपत्ति पाचित्तियस्स।

सिब्बापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सकिं आणत्तो बहुकम्पि सिब्बति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१७८. अञ्ञातिकाय अञ्ञातिकसञ्ञी चीवरं सिब्बति वा सिब्बापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञातिकाय वेमतिको चीवरं सिब्बति वा सिब्बापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञातिकाय ञातिकसञ्ञी चीवरं सिब्बति वा सिब्बापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकतोउपसम्पन्नाय चीवरं सिब्बति वा सिब्बापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय अञ्ञातिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय ञातिकसञ्ञी, अनापत्ति।

१७९. अनापत्ति ञातिकाय, चीवरं ठपेत्वा अञ्ञं परिक्खारं सिब्बति वा सिब्बापेति वा, सिक्खमानाय, सामणेरिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चीवरसिब्बनसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. संविधानसिक्खापदं

१८०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''यथेव मयं सपजापतिका आहिण्डाम, एवमेविमे समणा सक्यपुत्तिया भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय आहिण्डन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिस्सन्ती''ति... पे०... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ।

''यो पन भिक्खु भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जेय्य, अन्तमसो गामन्तरम्पि, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१८१. तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू च भिक्खुनियो च साकेता सावत्थिं अद्धानमग्गप्पटिपन्ना होन्ति। अथ खो ता भिक्खुनियो ते भिक्खू एतदवोचुं – ''मयम्पि अय्येहि सद्धिं गमिस्सामा''ति। ''न, भगिनी, कप्पति भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जितुं। तुम्हे वा पठमं गच्छथ मयं वा गमिस्सामा''ति। ''अय्या, भन्ते, अग्गपुरिसा। अय्याव पठमं गच्छन्तू''ति। अथ खो तासं भिक्खुनीनं पच्छा गच्छन्तीनं अन्तरामग्गे चोरा अच्छिन्दिंसु च दूसेसुञ्च। अथ खो ता भिक्खुनियो सावत्थिं गन्त्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, सत्थगमनीये मग्गे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१८२. **''यो पन भिक्खु भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जेय्य, अन्तमसो गामन्तरम्पि,**

अञ्‍ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो । सत्थगमनीयो होति मग्गो सासङ्कसम्मतो सप्पटिभयो – अयं तत्थ समयो’’ति।

१८३. यो पनाति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्‍ना।

सद्धिन्ति एकतो।

संविधायाति – ‘‘गच्छाम, भगिनि, गच्छामाय्य; गच्छामाय्य, गच्छाम, भगिनि; अज्‍ज वा हिय्यो वा परे वा गच्छामा’’ति संविदहति, आपत्ति दुक्‍कटस्स।

अन्तमसो गामन्तरम्पीति कुक्‍कुटसम्पाते गामे, गामन्तरे गामन्तरे आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्‍ञे, अद्धयोजने अद्धयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्‍ञत्र समयाति ठपेत्वा समयं।

सत्थगमनीयो नाम मग्गो न सक्‍का होति विना सत्थेन गन्तुं।

सासङ्कं नाम तस्मिं मग्गे [यस्मिं मग्गे (?)] चोरानं निविट्ठोकासो दिस्सति, भुत्तोकासो दिस्सति, ठितोकासो दिस्सति, निसिन्‍नोकासो दिस्सति, निपन्‍नोकासो दिस्सति।

सप्पटिभयं नाम तस्मिं मग्गे चोरेहि मनुस्सा हता दिस्सन्ति, विलुत्ता दिस्सन्ति, आकोटिता दिस्सन्ति, सप्पटिभयं गन्त्वा अप्पटिभयं दस्सेत्वा उय्योजेतब्बा – ‘‘गच्छथ भगिनियो’’ति।

१८४. संविदहिते संविदहितसञ्‍ञी एकद्धानमग्गं पटिपज्‍जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, अञ्‍ञत्र समया, आपत्ति पाचित्तियस्स। संविदहिते वेमतिको एकद्धानमग्गं पटिपज्‍जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, अञ्‍ञत्र समया, आपत्ति पाचित्तियस्स। संविदहिते, असंविदहितसञ्‍ञी एकद्धानमग्गं पटिपज्‍जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, अञ्‍ञत्र समया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खु संविदहति भिक्खुनी न संविदहति, आपत्ति दुक्‍कटस्स। असंविदहिते संविदहितसञ्‍ञी, आपत्ति दुक्‍कटस्स। असंविदहिते वेमतिको, आपत्ति दुक्‍कटस्स। असंविदहिते असंविदहितसञ्‍ञी, अनापत्ति।

१८५. अनापत्ति समये, असंविदहित्वा गच्छति, भिक्खुनी संविदहति, भिक्खु न संविदहति, विसङ्केतेन गच्छन्ति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

संविधानसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. नावाभिरुहनसिक्खापदं

१८६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकं नावं [एकनावं (स्या०)] अभिरुहन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''यथेव मयं सपजापतिका नावाय [एकनावाय (स्या०)] कीळाम, एवमेविमे समणा सक्यपुत्तिया भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय नावाय कीळन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहिस्सन्ती''ति...पे०... ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुनीहि सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकं नावं [एकनावं (स्या०)] **अभिरुहेय्य, उद्धंगामिनिं वा अधोगामिनिं वा, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१८७. तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू च भिक्खुनियो च साकेता सावत्थिं अद्धानमग्गप्पटिपन्ना होन्ति। अन्तरामग्गे नदी तरितब्बा [उत्तरितब्बा (स्या०)] होति। अथ खो ता भिक्खुनियो ते भिक्खू एतदवोचुं – ''मयम्पि अय्येहि सद्धिं उत्तरिस्सामा''ति। ''न, भगिनी, कप्पति भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहितुं; तुम्हे वा पठमं उत्तरथ मयं वा उत्तरिस्सामा''ति। ''अय्या, भन्ते, अग्गपुरिसा। अय्याव पठमं उत्तरन्तू''ति। अथ खो तासं भिक्खुनीनं पच्छा उत्तरन्तीनं चोरा अच्छिन्दिंसु च दूसेसुञ्च। अथ खो ता भिक्खुनियो सावत्थिं गन्त्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, तिरियं तरणाय भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१८८. ''यो पन भिक्खु भिक्खुनिया सद्धिं संविधाय एकं नावं अभिरुहेय्य उद्धंगामिनिं वा अधोगामिनिं वा, अञ्ञत्र तिरियं तरणाय, पाचित्तिय''न्ति।

१८९. यो पनाति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

सद्धिन्ति एकतो।

संविधायाति ''अभिरुहाम, भगिनि, अभिरुहामाय्य; अभिरुहामाय्य, अभिरुहाम, भगिनि; अज्ज वा हिय्यो वा परे वा अभिरुहामा''ति संविदहति आपत्ति दुक्कटस्स।

भिक्खुनिया अभिरुळ्हे भिक्खु अभिरुहति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खुम्हि अभिरुळ्हे भिक्खुनी अभिरुहति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा अभिरुहन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उद्धंगामिनिन्ति उज्जवनिकाय।

अधोगामिनिन्ति ओजवनिकाय।

अञ्ञत्र तिरियं तरणायाति ठपेत्वा तिरियं तरणं।

कुक्कुटसम्पाते गामे, गामन्तरे गामन्तरे आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्ञे, अड्ढयोजने अड्ढयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

१९०. संविदहिते संविदहितसञ्ञी एकं नावं अभिरुहति उद्धंगामिनिं वा अधोगामिनिं वा, अञ्ञत्र तिरियं तरणाय, आपत्ति पाचित्तियस्स। संविदहिते वेमतिको एकं नावं अभिरुहति उद्धंगामिनिं वा अधोगामिनिं वा, अञ्ञत्र तिरियं तरणाय, आपत्ति पाचित्तियस्स। संविदहिते असंविदहितसञ्ञी एकं नावं अभिरुहति उद्धंगामिनिं वा अधोगामिनिं वा, अञ्ञत्र तिरियं तरणाय, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खु संविदहति, भिक्खुनी न संविदहति, आपत्ति दुक्कटस्स। असंविदहिते संविदहितसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। असंविदहिते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। असंविदहिते, असंविदहितसञ्ञी, अनापत्ति।

१९१. अनापत्ति तिरियं तरणाय, असंविदहित्वा अभिरुहन्ति, भिक्खुनी संविदहति, भिक्खु न संविदहति, विसङ्केतेन अभिरुहन्ति, आपदासु उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिस्साति।

नावाभिरुहनसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. परिपाचितसिक्खापदं

१९२. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञतरस्स कुलस्स कुलूपिका होति निच्चभत्तिका। तेन च गहपतिना थेरा भिक्खू निमन्तिता होन्ति। अथ खो थुल्लनन्दा भिक्खुनी पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन तं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं गहपतिं एतदवोच – ''किमिदं, गहपति, पहूतं खादनीयं भोजनीयं पटियत्त''न्ति? ''थेरा मया, अय्ये, निमन्तिता''ति। ''के पन ते, गहपति, थेरा''ति? ''अय्यो सारिपुत्तो अय्यो महामोग्गल्लानो अय्यो महाकच्चानो अय्यो महाकोट्ठिको अय्यो महाकप्पिनो अय्यो महाचुन्दो अय्यो अनुरुद्धो अय्यो रेवतो अय्यो उपालि अय्यो आनन्दो अय्यो राहुलो''ति। ''किं पन त्वं, गहपति, महानागे तिट्ठमाने चेटके निमन्तेसी''ति?

''के पन ते, अय्ये, महानागा''ति? ''अय्यो देवदत्तो अय्यो कोकालिको अय्यो कटमोदकतिस्सको [कटमोरकतिस्सको (सी॰) कतमोरकतिस्सको (स्या॰)] अय्यो खण्डदेविया पुत्तो अय्यो समुद्ददत्तो''ति। अयं चरहि थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया अन्तरा कथा विप्पकता, अथ ते थेरा भिक्खू पविसिंसु। ''सच्चं महानागा खो तया, गहपति, निमन्तिता''ति। ''इदानेव खो त्वं, अय्ये, चेटके अकासि; इदानि महानागे''ति। घरतो च निक्कड्ढि, निच्चभत्तञ्च पच्छिन्दि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम देवदत्तो जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जिस्सती''ति…पे॰… ''सच्चं किर त्वं, देवदत्त, जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जसी''ति? ''सच्चं,

भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जिस्ससि। नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१९३. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु राजगहा पब्बजितो ञातिकुलं अगमासि। मनुस्सा – ''चिरस्सम्पि भदन्तो आगतो''ति सक्कच्चं भत्तं अकंसु। तस्स कुलस्स कुलूपिका भिक्खुनी ते मनुस्से एतदवोच – ''देथय्यस्स, आवुसो, भत्त''न्ति। अथ खो सो भिक्खु – ''भगवता पटिक्खित्तं जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जितु''न्ति कुक्कुच्चायन्तो न पटिग्गहेसि। नासक्खि पिण्डाय चरितुं, छिन्नभत्तो अहोसि। अथ खो सो भिक्खु आरामं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, पुब्बे गिहिसमारम्भे जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१९४. ''यो पन भिक्खु जानं भिक्खुनिपरिपाचितं पिण्डपातं भुञ्जेय्य, अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भा, पाचित्तिय''न्ति।

१९५. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति सा वा आरोचेति।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

परिपाचेति नाम पुब्बे अदातुकामानं अकत्तुकामानं – ''अय्यो भाणको, अय्यो बहुस्सुतो, अय्यो सुत्तन्तिको, अय्यो विनयधरो, अय्यो धम्मकथिको, देथ अय्यस्स, करोथ अय्यस्सा''ति एसा परिपाचेति नाम।

पिण्डपातो नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरं भोजनं।

अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भाति ठपेत्वा गिहिसमारम्भं।

गिहिसमारम्भो नाम ञातका वा होन्ति पवारिता वा पकतिपटियत्तं वा।

अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भा भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१९६. परिपाचिते परिपाचितसञ्ञी भुञ्जति, अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भा, आपत्ति पाचित्तियस्स। परिपाचिते वेमतिको भुञ्जति, अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भा, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपाचिते अपरिपाचितसञ्ञी भुञ्जति, अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भा, अनापत्ति। एकतोउपसम्पन्नाय परिपाचितं भुञ्जति, अञ्ञत्र पुब्बे गिहिसमारम्भा, आपत्ति दुक्कटस्स।

अपरिपाचिते परिपाचितसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अपरिपाचित्ते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अपरिपाचिते अपरिपाचितसञ्ञी, अनापत्ति।

१९७. अनापत्ति पुब्बे गिहिसमारम्भे, सिक्खमाना परिपाचेति, सामणेरी परिपाचेति, पञ्च भोजनानि ठपेत्वा सब्बत्थ अनापत्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

परिपाचितसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. रहोनिसज्जसिक्खापदं

१९८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मतो उदायिस्स पुराणदुतियिका भिक्खुनीसु पब्बजिता होति। सा आयस्मतो उदायिस्स सन्तिके अभिक्खणं आगच्छति, आयस्मापि उदायी तस्सा भिक्खुनिया सन्तिके अभिक्खणं गच्छति। तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी तस्सा भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उदायी भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, उदायि, भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

१९९. ''**यो पन भिक्खु भिक्खुनिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

२००. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

सद्धिन्ति एकतो।

एको एकायाति भिक्खु चेव होति भिक्खुनी च।

[पाचि० २८६, २९१; पारा० ४४५,४५४] **रहो** नाम चक्खुस्स रहो सोतस्स रहो। चक्खुस्स रहो नाम न सक्का होति अक्खिं वा निखणीयमाने भमुकं वा उक्खिपीयमाने सीसं वा उक्खिपीयमाने पस्सितुं। सोतस्स रहो नाम न सक्का होति पकतिकथा सोतुं।

निसज्जं कप्पेय्याति भिक्खुनिया निसिन्नाय भिक्खु उपनिसिन्नो वा होति उपनिपन्नो वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खु निसिन्ने भिक्खुनी उपनिसिन्ना वा होति उपनिपन्ना वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निसिन्ना होन्ति उभो वा निपन्ना, आपत्ति पाचित्तियस्स।

२०१. रहो रहोसञ्ञी एको एकाय निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। रहो वेमतिको एको एकाय निसज्जं

कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। रहो अरहोसञ्ञी एको एकाय निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अरहो रहोसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अरहो वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अरहो अरहोसञ्ञी, अनापत्ति।

२०२. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू दुतियो होति, तिट्ठति न निसीदति, अरहोपेक्खो, अञ्ञविहितो निसीदति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

रहोनिसज्जसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

ओवादवग्गो ततियो।

तस्सुद्दानं –

असम्मतअत्थङ्गतू, परस्सयामिसदानेन।
सिब्बति अद्धानं नावं भुञ्जेय्य, एको एकाय ते दसाति॥

४. भोजनवग्गो

१. आवसथपिण्डसिक्खापदं

२०३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सावत्थिया अविदूरे अञ्ञतरस्स पूगस्स आवसथपिण्डो पञ्ञत्तो होति। छब्बग्गिया भिक्खू पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय सावत्थिं पिण्डाय पविसित्वा पिण्डं अलभमाना आवसथं अगमंसु। मनुस्सा – ''चिरस्सम्पि भदन्ता आगता''ति ते सक्कच्चं परिविसिंसु। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू दुतियम्पि दिवसं...पे०... ततियम्पि दिवसं पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय सावत्थिं पिण्डाय पविसित्वा पिण्डं अलभमाना आवसथं गन्त्वा भुञ्जिंसु। अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – ''किं मयं करिस्साम आरामं गन्त्वा! हिय्योपि इधेव आगन्तब्बं भविस्सती''ति, तत्थेव अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जन्ति। तित्थिया अपसक्कन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जिस्सन्ति! नयिमेसञ्ञेव आवसथपिण्डो पञ्ञत्तो; सब्बेसञ्ञेव आवसथपिण्डो पञ्ञत्तो''ति।

अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जिस्सन्तीति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''एको आवसथपिण्डो भुञ्जितब्बो। ततो चे उत्तरिं भुञ्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२०४. तेन खो पन समयेन आयस्मा सारिपुत्तो कोसलेसु जनपदे सावत्थिं गच्छन्तो येन अञ्ञतरो आवसथो तेनुपसङ्कमि। मनुस्सा – ''चिरस्सम्पि थेरो आगतो''ति सक्कच्चं परिविसिंसु। अथ खो आयस्मतो सारिपुत्तस्स भुत्ताविस्स खरो आबाधो उप्पज्जि, नासक्खि तम्हा आवसथा पक्कमितुं। अथ खो ते मनुस्सा दुतियम्पि दिवसं आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोचुं – ''भुञ्जथ, भन्ते''ति। अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो – ''भगवता पटिक्खित्तं अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जितु''न्ति कुक्कुच्चायन्तो न पटिग्गहेसि; छिन्नभत्तो अहोसि। अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो सावत्थिं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२०५. **''अगिलानेन भिक्खुना एको आवसथपिण्डो भुञ्जितब्बो। ततो चे उत्तरि भुञ्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

२०६. **अगिलानो** नाम सक्कोति तम्हा आवसथा पक्कमितुं।

गिलानो नाम न सक्कोति तम्हा आवसथा पक्कमितुं।

आवसथपिण्डो नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरं भोजनं – सालाय वा मण्डपे वा रुक्खमूले वा अज्झोकासे वा अनोदिस्स यावदत्थो पञ्ञत्तो होति। अगिलानेन भिक्खुना सकिं भुञ्जितब्बो। ततो चे उत्तरि 'भुञ्जिस्सामी'ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२०७. अगिलानो अगिलानसञ्ञी ततुत्तरि आवसथपिण्डं भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलानो वेमतिको ततुत्तरि आवसथपिण्डं भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलानो गिलानसञ्ञी ततुत्तरिं आवसथपिण्डं भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गिलानो अगिलानसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो वेमतिको आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो गिलानसञ्ञी, अनापत्ति।

२०८. अनापत्ति गिलानस्स, अगिलानो सकिं भुञ्जति, गच्छन्तो, वा आगच्छन्तो वा भुञ्जति, सामिका निमन्तेत्वा भोजेन्ति, ओदिस्स पञ्ञत्तो होति, न यावदत्थो पञ्ञत्तो होति, पञ्च भोजनानि ठपेत्वा सब्बत्थ अनापत्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

आवसथपिण्डसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. गणभोजनसिक्खापदं

२०९. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन देवदत्तो परिहीनलाभसक्कारो सपरिसो कुलेसु विञ्ञापेत्वा विञ्ञापेत्वा भुञ्जति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया कुलेसु विञ्ञापेत्वा विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! कस्स सम्पन्नं न मनापं, कस्स सादुं न रुच्चती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते

उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम देवदत्तो सपरिसो कुलेसु विञ्ञापेत्वा विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, देवदत्त, सपरिसो कुलेसु विञ्ञापेत्वा विञ्ञापेत्वा भुञ्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सपरिसो कुलेसु विञ्ञापेत्वा विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२१०. तेन खो पन समयेन मनुस्सा गिलाने भिक्खू भत्तेन निमन्तेन्ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना गणभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२११. तेन खो पन समयेन मनुस्सा चीवरदानसमये सचीवरभत्तं पटियादेत्वा भिक्खू निमन्तेन्ति – ''भोजेत्वा चीवरेन अच्छादेस्सामा''ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। चीवरं परित्तं उप्पज्जति। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, चीवरदानसमये गणभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२१२. तेन खो पन समयेन मनुस्सा चीवरकारके भिक्खू भत्तेन निमन्तेन्ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, चीवरकारसमये गणभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२१३. तेन खो पन समयेन भिक्खू मनुस्सेहि सद्धिं अद्धानं गच्छन्ति। अथ खो ते भिक्खू ते मनुस्से एतदवोचुं – ''मुहुत्तं, आवुसो, आगमेथ; पिण्डाय चरिस्सामा''ति। ते एवमाहंसु – ''इधेव, भन्ते, भुञ्जथा''ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता

न पटिग्गण्हन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… अनुजानामि, भिक्खवे, अद्धानगमनसमये गणभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो, अद्धानगमनसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२१४. तेन खो पन समयेन भिक्खू मनुस्सेहि सद्धिं नावाय गच्छन्ति। अथ खो ते भिक्खू ते मनुस्से एतदवोचुं – ''मुहुत्तं, आवुसो, तीरं उपनेथ; पिण्डाय चरिस्सामा''ति। ते एवमाहंसु – ''इधेव, भन्ते, भुञ्जथा''ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता न पटिग्गण्हन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… अनुजानामि, भिक्खवे, नावाभिरुहनसमये गणभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो, अद्धानगमनसमयो, नावाभिरुहनसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२१५. तेन ० खो पन समयेन दिसासु वस्संवुट्ठा भिक्खू राजगहं आगच्छन्ति भगवन्तं दस्सनाय। मनुस्सा नानावेरज्जके भिक्खू पस्सित्वा भत्तेन निमन्तेन्ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… अनुजानामि, भिक्खवे, महासमये गणभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''गणभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो, अद्धानगमनसमयो, नावाभिरुहनसमयो, महासमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२१६. तेन खो पन समयेन रञ्ञो मागधस्स सेनियस्स बिम्बिसारस्स ञातिसालोहितो आजीवकेसु पब्बजितो होति। अथ खो सो आजीवको येन राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा राजानं मागधं सेनियं बिम्बिसारं एतदवोच – ''इच्छामहं, महाराज, सब्बपासण्डिकभत्तं कातु''न्ति। ''सचे त्वं, भन्ते, बुद्धप्पमुखं भिक्खुसङ्घं पठमं भोजेय्यासि''। ''एवं करेय्यामी''ति। अथ खो सो आजीवको भिक्खूनं सन्तिके दूतं पाहेसि – ''अधिवासेन्तु मे भिक्खू स्वातनाय भत्त''न्ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता गणभोजन''न्ति। अथ खो सो आजीवको येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि, सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितो खो सो आजीवको भगवन्तं एतदवोच – ''भवम्पि गोतमो पब्बजितो, अहम्पि पब्बजितो; अरहति पब्बजितो पब्बजितस्स पिण्डं पटिग्गहेतुं। अधिवासेतु मे भवं गोतमो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना''ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन। अथ खो सो आजीवको भगवतो अधिवासनं विदित्वा पक्कामि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, समणभत्तसमये गणभोजनं

भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२१७. गणभोजने , अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो, अद्धानगमनसमयो, नावाभिरुहनसमयो, महासमयो, समणभत्तसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

२१८. **गणभोजनं** नाम यत्थ चत्तारो भिक्खू पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरेन भोजनेन निमन्तिता भुञ्जन्ति। एतं गणभोजनं नाम।

अञ्ञत्र समयाति ठपेत्वा समयं।

गिलानसमयो नाम अन्तमसो पादापि फलिता [फालिता (स्या॰ क॰)] होन्ति। ''गिलानसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

चीवरदानसमयो नाम अनत्थते कथिने वस्सानस्स पच्छिमो मासो, अत्थते कथिने पञ्चमासा। ''चीवरदानसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

चीवरकारसमयो नाम चीवरे कयिरमाने। ''चीवरकारसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

अद्धानगमनसमयो नाम ''अद्धयोजनं गच्छिस्सामी''ति भुञ्जितब्बं, गच्छन्तेन भुञ्जितब्बं, गतेन भुञ्जितब्बं।

नावाभिरुहनसमयो नाम ''नावं अभिरुहिस्सामी''ति भुञ्जितब्बं, आरुळ्हेन भुञ्जितब्बं, ओरुळ्हेन भुञ्जितब्बं।

महासमयो नाम यत्थ द्वे तयो भिक्खू पिण्डाय चरित्वा यापेन्ति, चतुत्थे आगते न यापेन्ति। ''महासमयो''ति भुञ्जितब्बं।

समणभत्तसमयो नाम यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो भत्तं करोति। ''समणभत्तसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

''अञ्ञत्र समया भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२१९. गणभोजने गणभोजनसञ्ञी, अञ्ञत्र समया, भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। गणभोजने वेमतिको, अञ्ञत्र समया, भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। गणभोजने नगणभोजनसञ्ञी, अञ्ञत्र समया, भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

नगणभोजने गणभोजनसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। नगणभोजने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। नगणभोजने नगणभोजनसञ्ञी, अनापत्ति।

२२०. अनापत्ति समये, द्वे तयो एकतो भुञ्जन्ति, पिण्डाय चरित्वा एकतो सन्निपतित्वा भुञ्जन्ति, निच्चभत्तं, सलाकभत्तं, पक्खिकं, उपोसथिकं, पाटिपदिकं, पञ्च भोजनानि ठपेत्वा सब्बत्थ अनापत्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

गणभोजनसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. परम्परभोजनसिक्खापदं

२२१. तेन समयेन बुद्धो भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन वेसालियं पणीतानं भत्तानं भत्तपटिपाटि अधिट्ठिता होति। अथ खो अञ्ञतरस्स दलिद्दस्स कम्मकारस्स [कम्मकरस्स (सी॰)] एतदहोसि – "न खो इदं ओरकं भविस्सति यथयिमे मनुस्सा सक्कच्चं भत्तं करोन्ति; यंनूनाहम्पि भत्तं करेय्य"न्ति। अथ खो सो दलिद्दो कम्मकारो येन किरपतिको तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं किरपतिकं एतदवोच – "इच्छामहं, अय्यपुत्त, बुद्धप्पमुखस्स भिक्खुसङ्घस्स भत्तं कातुं। देहि मे वेतन"न्ति। सोपि खो किरपतिको सद्धो होति पसन्नो। अथ खो सो किरपतिको तस्स दलिद्दस्स कम्मकारस्स अब्भातिरेकं [अतिरेकं (स्या॰)] वेतनं अदासि। अथ खो सो दलिद्दो कम्मकारो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सो दलिद्दो कम्मकारो भगवन्तं एतदवोच – "अधिवासेतु मे, भन्ते, भगवा स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना"ति। "महा खो, आवुसो, भिक्खुसङ्घो। जानाही"ति। "होतु [होतु मे (क॰)] भन्ते, महा भिक्खुसङ्घो। बहू मे बदरा पटियत्ता बदरमिस्सेन पेय्या परिपूरिस्सन्ती"ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन।

अथ खो सो दलिद्दो कम्मकारो भगवतो अधिवासनं विदित्वा उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अस्सोसुं खो भिक्खू – "दलिद्देन किर कम्मकारेन स्वातनाय बुद्धप्पमुखो भिक्खुसङ्घो निमन्तितो, बदरमिस्सेन पेय्या परिपूरिस्सन्ती"ति। ते कालस्सेव पिण्डाय चरित्वा भुञ्जिंसु। अस्सोसुं खो मनुस्सा – "दलिद्देन किर कम्मकारेन बुद्धप्पमुखो भिक्खुसङ्घो निमन्तितो"ति। ते दलिद्दस्स कम्मकारस्स पहूतं खादनीयं भोजनीयं अभिहरिंसु। अथ खो सो दलिद्दो कम्मकारो तस्सा रत्तिया अच्चयेन पणीतं खादनीयं भोजनीयं पटियादापेत्वा भगवतो कालं आरोचापेसि – "कालो, भन्ते, निट्ठितं भत्त"न्ति।

अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन तस्स दलिद्दस्स कम्मकारस्स निवेसनं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि सद्धिं भिक्खुसङ्घेन। अथ खो सो दलिद्दो कम्मकारो भत्तग्गे भिक्खू परिविसति। भिक्खू एवमाहंसु – "थोकं, आवुसो, देहि। थोकं, आवुसो, देही"ति। "मा खो तुम्हे, भन्ते, 'अयं दलिद्दो कम्मकारो'ति थोकं थोकं पटिग्गण्हित्थ। पहूतं मे खादनीयं भोजनीयं पटियत्तं।

पटिग्गण्हथ, भन्ते, यावदत्थ"न्ति। "न खो मयं, आवुसो, एतंकारणा थोकं थोकं पटिग्गण्हाम। अपिच, मयं कालस्सेव पिण्डाय चरित्वा भुञ्जिम्हा; तेन मयं थोकं थोकं पटिग्गण्हामा"ति।

अथ खो सो दलिद्दो कम्मकारो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – "कथञ्हि नाम भदन्ता मया निमन्तिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ति! न चाहं पटिबलो यावदत्थं दातु"न्ति? अस्सोसुं खो भिक्खू तस्स दलिद्दस्स कम्मकारस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खू अञ्ञत्र निमन्तिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ती"ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू अञ्ञत्र निमन्तिता अञ्ञत्र भुञ्जन्तीति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा अञ्ञत्र निमन्तिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

“**परम्परभोजने पाचित्तिय**”न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२२२. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु गिलानो होति। अञ्ञतरो भिक्खु पिण्डपातं आदाय येन सो भिक्खु तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं भिक्खुं एतदवोच – “भुञ्जाहि, आवुसो”ति। “अलं, आवुसो, अत्थि मे भत्तपच्चासा”ति। तस्स भिक्खुनो पिण्डपातो उस्सूरे [उस्सूरेन (क॰)] आहरीयित्थ। सो भिक्खु न चित्तरूपं भुञ्जि। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – “अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना परम्परभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

“**परम्परभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो – अयं तत्थ समयो**”ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२२३. तेन खो पन समयेन मनुस्सा चीवरदानसमये सचीवरभत्तं पटियादेत्वा [पटियादापेत्वा (इतिपि)] भिक्खू निमन्तेन्ति – “भोजेत्वा चीवरेन अच्छादेस्सामा”ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – “पटिक्खित्तं भगवता परम्परभोजन”न्ति। चीवरं परित्तं उप्पज्जति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... अनुजानामि, भिक्खवे, चीवरदानसमये परम्परभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

“**परम्परभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो – अयं तत्थ समयो**”ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२२४. तेन खो पन समयेन मनुस्सा चीवरकारके भिक्खू भत्तेन निमन्तेन्ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – “पटिक्खित्तं भगवता परम्परभोजन”न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... अनुजानामि, भिक्खवे, चीवरकारसमये परम्परभोजनं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२२५. “**परम्परभोजने, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। गिलानसमयो, चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो – अयं तत्थ समयो**”ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२२६. अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय आयस्मता आनन्देन पच्छासमणेन येन अञ्ञतरं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो ते मनुस्सा भगवतो च आयस्मतो च आनन्दस्स भोजनं अदंसु। आयस्मा आनन्दो कुक्कुच्चायन्तो न पटिग्गण्हाति। “गण्हाहि [पतिगण्हाहि (सी॰)], आनन्दा”ति। “अलं, भगवा, अत्थि मे भत्तपच्चासा”ति। “तेनहानन्द, विकप्पेत्वा गण्हाही”ति। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – “अनुजानामि, भिक्खवे, विकप्पेत्वा [भत्तपच्चासं विकप्पेत्वा (स्या॰)] परम्परभोजनं

भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, विकप्पेतब्बं – 'मय्हं भत्तपच्चासं इत्थन्नामस्स दम्मी'''ति।

२२७. **परम्परभोजनं** नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरेन भोजनेन निमन्तितो, तं ठपेत्वा अञ्ञं पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरं भोजनं भुञ्जति, एतं परम्परभोजनं नाम।

अञ्ञत्र समयाति ठपेत्वा समयं।

गिलानसमयो नाम न सक्कोति एकासने निसिन्नो यावदत्थं भुञ्जितुं। ''गिलानसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

चीवरदानसमयो नाम अनत्थते कथिने वस्सानस्स पच्छिमो मासो, अत्थते कथिने पञ्च मासा। ''चीवरदानसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

चीवरकारसमयो नाम चीवरे कयिरमाने। ''चीवरकारसमयो''ति भुञ्जितब्बं।

''अञ्ञत्र समया भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२२८. परम्परभोजने परम्परभोजनसञ्ञी, अञ्ञत्र समया, भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परम्परभोजने वेमतिको, अञ्ञत्र समया, भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परम्परभोजने नपरम्परभोजनसञ्ञी, अञ्ञत्र समया, भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

नपरम्परभोजने परम्परभोजनसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। नपरम्परभोजने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। नपरम्परभोजने नपरम्परभोजनसञ्ञी, अनापत्ति।

२२९. अनापत्ति समये, विकप्पेत्वा भुञ्जति, द्वे तयो निमन्तने एकतो भुञ्जति, निमन्तनपटिपाटिया भुञ्जति, सकलेन गामेन निमन्तितो तस्मिं गामे यत्थ कत्थचि भुञ्जति, सकलेन पूगेन निमन्तितो तस्मिं पूगे यत्थ कत्थचि भुञ्जति, निमन्तियमानो भिक्खं गहेस्सामीति भणति, निच्चभत्ते, सलाकभत्ते, पक्खिके, उपोसथिके, पाटिपदिके, पञ्च भोजनानि ठपेत्वा सब्बत्थ अनापत्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

परम्परभोजनसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. काणमातुसिक्खापदं

२३०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन काणमाता उपासिका सद्धा होति पसन्ना। काणा गामके अञ्ञतरस्स पुरिसस्स दिन्ना होति। अथ खो काणा मातुघरं अगमासि केनचिदेव करणीयेन। अथ खो काणाय सामिको काणाय सन्तिके दूतं पाहेसि – ''आगच्छतु काणा, इच्छामि काणाय आगत''न्ति। अथ खो काणमाता उपासिका ''किस्मिं विय रित्तहत्थं गन्तु''न्ति पूवं [पूपं (ण्वादिमोग्गल्लाने)] पचि। पक्के पूवे अञ्ञतरो पिण्डचारिको भिक्खु काणमाताय उपासिकाय निवेसनं पाविसि। अथ खो काणमाता उपासिका तस्स भिक्खुनो पूवं दापेसि। सो निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि पूवं दापेसि। सोपि निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि पूवं दापेसि। यथापटियत्तं पूवं परिक्खयं अगमासि। दुतियम्पि खो काणाय सामिको काणाय सन्तिके

दूतं पाहेसि – ''आगच्छतु काणा, इच्छामि काणाय आगत''न्ति। दुतियम्पि खो काणमाता उपासिका ''किस्मिं विय रित्तहत्तं गन्तु''न्ति पूवं पचि। पक्के पूवे अञ्ञतरो पिण्डचारिको भिक्खु काणमाताय उपासिकाय निवेसनं पाविसि। अथ खो काणमाता उपासिका तस्स भिक्खुनो पूवं दापेसि। सो निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि पूवं दापेसि। सोपि निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि पूवं दापेसि। यथापटियत्तं पूवं परिक्खयं अगमासि। ततियम्पि खो काणाय सामिको काणाय सन्तिके दूतं पाहेसि – ''आगच्छतु काणा, इच्छामि काणाय आगतं। सचे काणा नागच्छिस्सति, अहं अञ्ञं पजापतिं आनेस्सामी''ति। ततियम्पि खो काणमाता उपासिका किस्मिं विय रित्तहत्थं गन्तुन्ति पूवं पचि। पक्के पूवे अञ्ञतरो पिण्डचारिको भिक्खु काणमाताय उपासिकाय निवेसनं पाविसि। अथ खो काणमाता उपासिका तस्स भिक्खुनो पूवं दापेसि। सो निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि पूवं दापेसि। सोपि निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि पूवं दापेसि। यथापटियत्तं पूवं परिक्खयं अगमासि। अथ खो काणाय सामिको अञ्ञं पजापतिं आनेसि।

अस्सोसि खो काणा – ''तेन किर पुरिसेन अञ्ञा पजापति आनीता''ति। सा रोदन्ती अट्ठासि। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन काणमाताय उपासिकाय निवेसनं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो काणमाता उपासिका येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो काणमातरं उपासिकं भगवा एतदवोच – ''किस्सायं काणा रोदती''ति? अथ खो काणमाता उपासिका भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। अथ खो भगवा काणमातरं उपासिकं धम्मिया कथाय सन्दस्सेत्वा समादपेत्वा समुत्तेजेत्वा सम्पहंसेत्वा उट्ठायासना पक्कामि।

२३१. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो सत्थो राजगहा पटियालोकं गन्तुकामो होति। अञ्ञतरो पिण्डचारिको भिक्खु तं सत्थं पिण्डाय पाविसि। अञ्ञतरो उपासको तस्स भिक्खुनो सत्तुं दापेसि। सो निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि सत्तुं दापेसि। सो निक्खमित्वा अञ्ञस्स आचिक्खि। तस्सपि सत्तुं दापेसि। यथापटियत्तं पाथेय्यं परिक्खयं अगमासि। अथ खो सो उपासको ते मनुस्से एतदवोच – ''अज्जण्हो, अय्या, आगमेथ, यथापटियत्तं पाथेय्यं अय्यानं दिन्नं। पाथेय्यं पटियादेस्सामी''ति। ''नाय्यो [नाय्य (स्या॰)] सक्का आगमेतुं, पयातो सत्थो''ति अगमंसु। अथ खो तस्स उपासकस्स पाथेय्यं पटियादेत्वा पच्छा गच्छन्तस्स चोरा अच्छिन्दिंसु। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया न मत्तं जानित्वा पटिग्गहेस्सन्ति! अयं इमेसं दत्वा पच्छा गच्छन्तो चोरेहि अच्छिन्नो''ति। अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय...पे॰... विनयानुग्गहाय। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२३२. ''भिक्खुं पनेव कुलं उपगतं पूवेहि वा मन्थेहि वा अभिहट्ठुं पवारेय्य, आकङ्खमानेन भिक्खुना द्वत्तिपत्तपूरा पटिग्गहेतब्बा ततो चे उत्तरि पटिग्गण्हेय्य पाचित्तियं। द्वत्तिपत्तपूरे पटिग्गहेत्वा ततो नीहरित्वा भिक्खूहि सद्धिं संविभजितब्बं। अयं तत्थ सामीची''ति।

२३३. भिक्खुं पनेव कुलं उपगतन्ति कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं, सुद्दकुलं।

उपगतन्ति तत्थ गतं।

पूवं नाम यंकिञ्चि पहेणकत्थाय पटियत्तं।

मन्थं नाम यंकिञ्चि पाथेय्यत्थाय पटियत्तं।

अभिहट्ठुं पवारेय्याति यावतकं इच्छसि तावतकं गण्हाहीति।

आकङ्खमानेनाति इच्छमानेन।

द्वत्तिपत्तपूरा पटिग्गहेतब्बाति द्वेतयो पत्तपूरा पटिग्गहेतब्बा।

ततो चे उत्तरि पटिगण्हेय्याति ततुत्तरि पटिग्गण्हाति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

द्वत्तिपत्तपूरे पटिग्गहेत्वा ततो निक्खमन्तेन भिक्खुं पस्सित्वा आचिक्खितब्बं – "अमुत्र मया द्वत्तिपत्तपूरा पटिग्गहिता, मा खो तत्थ पटिग्गण्ही"ति। सचे पस्सित्वा न आचिक्खति, आपत्ति दुक्कटस्स। सचे आचिक्खिते पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

ततो नीहरित्वा भिक्खूहि सद्धिं संविभजितब्बन्ति पटिक्कमनं नीहरित्वा संविभजितब्बं।

अयं तत्थ सामीचीति अयं तत्थ अनुधम्मता।

२३४. अतिरेकद्वत्तिपत्तपूरे अतिरेकसञ्ञी पटिग्गण्हाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकद्वत्तिपत्तपूरे वेमतिको पटिग्गण्हाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकद्वत्तिपत्तपूरे ऊनकसञ्ञी पटिग्गण्हाति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ऊनकद्वत्तिपत्तपूरे अतिरेकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकद्वत्तिपत्तपूरे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकद्वत्तिपत्तपूरे ऊनकसञ्ञी, अनापत्ति।

२३५. अनापत्ति द्वत्तिपत्तपूरे पटिग्गण्हाति, ऊनकद्वत्तिपत्तपूरे पटिग्गण्हाति, न पहेणकत्थाय न पाथेय्यत्थाय पटियत्तं देन्ति, पहेणकत्थाय वा पाथेय्यत्थाय वा पटियत्तसेसकं देन्ति, गमने पटिप्पस्सद्धे देन्ति, ञातकानं पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

काणमातुसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. पठमपवारणासिक्खापदं

२३६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो ब्राह्मणो भिक्खू निमन्तेत्वा भोजेसि। भिक्खू भुत्तावी पवारिता ञातिकुलानि गन्त्वा एकच्चे भुञ्जिंसु एकच्चे पिण्डपातं आदाय अगमंसु। अथ खो सो ब्राह्मणो पटिविस्सके [पटिविसके (योजना)] एतदवोच – "भिक्खू मया अय्या सन्तप्पिता। एथ, तुम्हेपि सन्तप्पेस्सामी"ति। ते एवमाहंसु – "किं त्वं, अय्यो [अय्य (स्या०)], अम्हे सन्तप्पेस्ससि? येपि तया निमन्तिता तेपि अम्हाकं घरानि आगन्त्वा एकच्चे भुञ्जिंसु एकच्चे पिण्डपातं आदाय अगमंसू"ति!

अथ खो सो ब्राह्मणो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता अम्हाकं घरे भुञ्जित्वा अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ति! न चाहं पटिबलो यावदत्थं दातु''न्ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तस्स ब्राह्मणस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खू भुत्तावी पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू भुत्तावी पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा भुत्तावी पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु भुत्तावी पवारितो खादनीयं वा भोजनीयं वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२३७. तेन खो पन समयेन भिक्खू गिलानानं भिक्खूनं पणीते पिण्डपाते नीहरन्ति। गिलाना न चित्तरूपं भुञ्जन्ति। तानि भिक्खू छड्डेन्ति। अस्सोसि खो भगवा उच्चासद्दं महासद्दं काकोरवसद्दं। सुत्वान आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – ''किं नु खो सो, आनन्द, उच्चासद्दो महासद्दो काकोरवसद्दो''ति? अथ खो आयस्मा आनन्दो भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। ''भुञ्जेय्युं पनानन्द, भिक्खू गिलानातिरित्त''न्ति। ''न भुञ्जेय्युं, भगवा''ति। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि भिक्खवे, गिलानस्स च अगिलानस्स च अतिरित्तं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, अतिरित्तं कातब्बं – ''अलमेतं सब्ब''न्ति। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२३८. **''यो पन भिक्खु भुत्तावी पवारितो अनतिरित्तं खादनीयं वा भोजनीयं वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

२३९. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भुत्तावी नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरं भोजनं अन्तमसो कुसग्गेनपि भुत्तं होति।

पवारितो नाम असनं पञ्ञायति, भोजनं पञ्ञायति, हत्थपासे ठितो अभिहरति, पटिक्खेपो पञ्ञायति।

अनतिरित्तं नाम अकप्पियकतं होति, अप्पटिग्गहितकतं होति, अनुच्चारितकतं होति, अहत्थपासे कतं होति, अभुत्ताविना कतं होति, भुत्ताविना पवारितेन आसना वुट्ठितेन कतं होति, ''अलमेतं सब्बन्ति अवुत्तं होति, न गिलानातिरित्तं होति'' – एतं अनतिरित्तं नाम।

अतिरित्तं नाम कप्पियकतं होति, पटिग्गहितकतं होति, उच्चारितकतं होति, हत्थपासे कतं होति, भुत्ताविना कतं होति, भुत्ताविना पवारितेन आसना अवुट्ठितेन कतं होति, ''अलमेतं सब्ब''न्ति वुत्तं होति, गिलानातिरित्तं होति – एतं अतिरित्तं नाम।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

"खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी"ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२४०. अनतिरित्ते अनतिरित्तसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनतिरित्ते वेमतिको खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनतिरित्ते अतिरित्तसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। अतिरित्ते अनतिरित्तसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अतिरित्ते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अतिरित्ते अतिरित्तसञ्ञी, अनापत्ति।

२४१. अनापत्ति अतिरित्तं कारापेत्वा भुञ्जति, "अतिरित्तं कारापेत्वा भुञ्जिस्सामी"ति पटिग्गण्हाति, अञ्ञस्सत्थाय हरन्तो गच्छति, गिलानस्स सेसकं भुञ्जति, यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं सति पच्चये परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पठमपवारणासिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. दुतियपवारणासिक्खापदं

२४२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन द्वे भिक्खू कोसलेसु जनपदे सावत्थिं अद्धानमग्गप्पटिपन्ना होन्ति। एको भिक्खु अनाचारं आचरति। दुतियो भिक्खु तं भिक्खुं एतदवोच – "मावुसो, एवरूपमकासि, नेतं कप्पती"ति। सो तस्मिं उपनन्धि। अथ खो ते भिक्खू सावत्थिं अगमंसु। तेन खो पन समयेन सावत्थियं अञ्ञतरस्स पूगस्स सङ्घभत्तं होति। दुतियो भिक्खु भुत्तावी पवारितो होति। उपनद्धो [उपनन्धो (क॰)] भिक्खु ञातिकुलं गन्त्वा पिण्डपातं आदाय येन सो भिक्खु तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं भिक्खुं एतदवोच – "भुञ्जाहि, आवुसो"ति। "अलं, आवुसो, परिपुण्णोम्ही"ति। "सुन्दरो, आवुसो, पिण्डपातो, भुञ्जाही"ति। अथ खो सो भिक्खु तेन भिक्खुना निप्पीळियमानो तं पिण्डपातं भुञ्जि। उपनद्धो भिक्खु तं भिक्खुं एतदवोच – "त्वम्पि [त्वं हि (स्या॰)] नाम, आवुसो, मं वत्तब्बं मञ्ञसि यं त्वं भुत्तावी पवारितो अनतिरित्तं भोजनं भुञ्जसी"ति। "ननु, आवुसो, आचिक्खितब्ब"न्ति। "ननु, आवुसो, पुच्छितब्ब"न्ति।

अथ खो सो भिक्खु भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खु भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन भोजनेन अभिहट्ठुं पवारेस्सती" ति…पे॰… सच्चं किर त्वं, भिक्खु, भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन भोजनेन अभिहट्ठुं पवारेसीति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन भोजनेन अभिहट्ठुं पवारेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन भिक्खवे इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२४३. "यो पन भिक्खु भिक्खुं भुत्ताविं पवारितं अनतिरित्तेन खादनीयेन वा भोजनीयेन वा अभिहट्ठुं पवारेय्य – 'हन्द, भिक्खु, खाद वा भुञ्ज वा'ति, जानं आसादनापेक्खो, भुत्तस्मिं, पाचित्तिय"न्ति।

२४४. यो पनाति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुन्ति अञ्ञं भिक्खुं।

भुत्तावी नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरं भोजनं, अन्तमसो कुसग्गेनपि भुत्तं होति।

पवारितो नाम असनं पञ्ञायति, भोजनं पञ्ञायति, हत्थपासे ठितो अभिहरति, पटिक्खेपो पञ्ञायति।

अनतिरित्तं नाम अकप्पियकतं होति, अप्पटिग्गहितकतं होति, अनुच्चारितकतं होति, अहत्थपासे कतं होति, अभुत्ताविना कतं होति, भुत्ताविना पवारितेन आसना वुट्ठितेन कतं होति, ''अलमेतं सब्ब''न्ति अवुत्तं होति, न गिलानातिरित्तं होति – एतं अनतिरित्तं नाम।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

अभिहट्ठुं पवारेय्याति यावतकं इच्छसि तावतकं गण्हाहीति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

आसादनापेक्खोति ''इमिना इमं चोदेस्सामि सारेस्सामि पटिचोदेस्सामि पटिसारेस्सामि मङ्कुं करिस्सामी''ति अभिहरति, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्स वचनेन ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। भोजनपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

२४५. पवारिते पवारितसञ्ञी अनतिरित्तेन खादनीयेन वा भोजनीयेन वा अभिहट्ठुं पवारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पवारिते वेमतिको अनतिरित्तेन खादनीयेन वा भोजनीयेन वा अभिहट्ठुं पवारेति, आपत्ति दुक्कटस्स। पवारिते अप्पवारितसञ्ञी अनतिरित्तेन खादनीयेन वा भोजनीयेन वा अभिहट्ठुं पवारेति, अनापत्ति। यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय अभिहरति, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्स वचनेन ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पवारिते पवारितसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पवारिते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पवारिते अप्पवारितसञ्ञी, अनापत्ति।

२४६. अनापत्ति अतिरित्तं कारापेत्वा देति, ''अतिरित्तं कारापेत्वा भुञ्जाही''ति देति, अञ्ञस्सत्थाय हरन्तो गच्छाहीति देति, गिलानस्स सेसकं देति, ''यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं सति पच्चये परिभुञ्जा''ति देति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुतियपवारणासिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. विकालभोजनसिक्खापदं

२४७. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन राजगहे गिरग्गसमज्जो होति। सत्तरसवग्गिया भिक्खू गिरग्गसमज्जं दस्सनाय अगमंसु। मनुस्सा सत्तरसवग्गिये भिक्खू पस्सित्वा

नहापेत्वा विलिम्पेत्वा भोजेत्वा खादनीयं अदंसु। सत्तरसवग्गिया भिक्खू खादनीयं आदाय आरामं गन्त्वा छब्बग्गिये भिक्खू एतदवोचुं – ''गण्हाथावुसो, खादनीयं खादथा''ति। ''कुतो तुम्हेहि, आवुसो, खादनीयं लद्ध''न्ति? सत्तरसवग्गिया भिक्खू छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। ''किं पन तुम्हे, आवुसो, विकाले भोजनं भुञ्जथा''ति? ''एवमावुसो''ति। छब्बग्गिया भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम सत्तरसवग्गिया भिक्खू विकाले भोजनं भुञ्जिस्सन्ती''ति! अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम सत्तरसवग्गिया भिक्खू विकाले भोजनं भुञ्जिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, विकाले भोजनं भुञ्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, विकाले भोजनं भुञ्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२४८. **यो पन भिक्खु विकाले खादनीयं वा भोजनीयं वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पाचित्तिय**''न्ति।

२४९. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

विकालो नाम मज्झन्हिके वीतिवत्ते याव अरुणुग्गमना।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२५०. विकाले विकालसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। विकाले वेमतिको खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। विकाले कालसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। काले विकालसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। काले वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। काले कालसञ्ञी, अनापत्ति।

२५१. अनापत्ति यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं सति पच्चये परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

विकालभोजनसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. सन्निधिकारकसिक्खापदं

२५२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मतो आनन्दस्स उपज्झायो आयस्मा बेलट्ठसीसो [बेलट्ठिसीसो (सी०) वेळट्ठसीसो (स्या०)] अरञ्ञे विहरति। सो

पिण्डाय चरित्वा सुक्खकुरं आरामं हरित्वा सुक्खापेत्वा निक्खिपति। यदा आहारेन अत्थो होति, तदा उदकेन तेमेत्वा तेमेत्वा भुञ्जति, चिरेन गामं पिण्डाय पविसति। भिक्खू आयस्मन्तं बेलट्ठसीसं एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, आवुसो, चिरेन गामं पिण्डाय पविससी''ति? अथ खो आयस्मा बेलट्ठसीसो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ''किं पन त्वं, आवुसो, सन्निधिकारकं भोजनं भुञ्जसी''ति? ''एवमावुसो''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा बेलट्ठसीसो सन्निधिकारकं भोजनं भुञ्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, बेलट्ठसीस, सन्निधिकारकं भोजनं भुञ्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, बेलट्ठसीस, सन्निधिकारकं भोजनं भुञ्जिस्ससि! नेतं, बेलट्ठसीस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२५३. **''यो पन भिक्खु सन्निधिकारकं खादनीयं वा भोजनीयं वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

२५४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सन्निधिकारकं नाम अज्ज पटिग्गहितं अपरज्जु खादितं होति।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२५५. सन्निधिकारके सन्निधिकारकसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। सन्निधिकारके वेमतिको खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। सन्निधिकारके असन्निधिकारकसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। असन्निधिकारके सन्निधिकारकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। असन्निधिकारके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। असन्निधिकारके असन्निधिकारकसञ्ञी, अनापत्ति।

२५६. अनापत्ति यावकालिकं यावकाले निदहित्वा भुञ्जति, यामकालिकं यामे निदहित्वा भुञ्जति, सत्ताहकालिकं सत्ताहं निदहित्वा भुञ्जति, यावजीविकं सति पच्चये परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सन्निधिकारकसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. पणीतभोजनसिक्खापदं

२५७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! कस्स सम्पन्नं न मनापं,

कस्स सादुं न रुच्चती''ति!! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ती''ति ...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा ...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यानि खो पन तानि पणीतभोजनानि, सेय्यथिदं – सप्पि नवनीतं तेलं मधु फाणितं मच्छो मंसं खीरं दधि। यो पन भिक्खु एवरूपानि पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२५८. तेन खो पन समयेन भिक्खू गिलाना होन्ति। गिलानपुच्छका भिक्खू गिलाने भिक्खू एतदवोचुं – ''कच्चावुसो खमनीयं, कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मयं, आवुसो, पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जाम, तेन नो फासु होति; इदानि पन ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न विञ्ञापेम, तेन नो न फासु होती''ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२५९. **''यानि खो पन तानि पणीतभोजनानि, सेय्यथिदं – सप्पि नवनीतं तेलं मधु फाणितं मच्छो मंसं खीरं दधि। यो पन भिक्खु एवरूपानि पणीतभोजनानि अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

२६०. **यानि खो पन तानि पणीतभोजनानी**ति **सप्पि** नाम गोसप्पि वा अजिकासप्पि वा महिंससप्पि वा, येसं मंसं कप्पति तेसं सप्पि।

नवनीतं नाम तेसञ्ञेव नवनीतं।

तेलं नाम तिलतेलं सासपतेलं मधुकतेलं एरण्डतेलं वसातेलं।

मधु नाम मक्खिकामधु।

फाणितं नाम उच्छुम्हा निब्बत्तं।

मच्छो नाम उदको [उदकचरो (स्या० क०)] वुच्चति।

मंसं नाम येसं मंसं कप्पति, तेसं मंसं।

खीरं नाम गोखीरं वा अजिकाखीरं वा महिंसखीरं वा, येसं मंसं कप्पति, तेसं खीरं।

दधि नाम तेसञ्ञेव दधि।

यो पनाति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

एवरूपानि पणीतभोजनानीति तथारूपानि पणीतभोजनानि।

अगिलानो नाम यस्स विना पणीतभोजनानि फासु होति।

गिलानो नाम यस्स विना पणीतभोजनानि न फासु होति।

अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेति, पयोगे [पयोगे पयोगे (क०)] दुक्कटं। पटिलाभेन ''भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२६१. अगिलानो अगिलानसञ्ञी पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलानो वेमतिको पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलानो गिलानसञ्ञी पणीतभोजनानि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गिलानो अगिलानसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो गिलानसञ्ञी अनापत्ति।

२६२. अनापत्ति गिलानस्स, गिलानो हुत्वा विञ्ञापेत्वा अगिलानो भुञ्जति, गिलानस्स सेसकं भुञ्जति, ञातकानं पवारितानं अञ्ञस्सत्थाय अत्तनो धनेन, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पणीतभोजनसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. दन्तपोनसिक्खापदं

२६३. तेन समयेन बुद्धो भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु सब्बपंसुकूलिको सुसाने विहरति। सो मनुस्सेहि दिय्यमानं न इच्छति पटिग्गहेतुं, सुसानेपि रुक्खमूलेपि उम्मारेपि अय्यवोसाटितकानि सामं गहेत्वा परिभुञ्जति [भुञ्जति (स्या०)]। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अयं भिक्खु अम्हाकं अय्यवोसाटितकानि सामं गहेत्वा परिभुञ्जिस्सति! थेरोयं भिक्खु वठरो मनुस्समंसं मञ्ञे खादती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरिस्सती''ति…पे०… सच्चं किर त्वं, भिक्खु, अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२६४. तेन खो पन समयेन भिक्खू उदकदन्तपोने [उदकदन्तपोणे (स्या० क०)] कुक्कुच्चायन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… ''अनुजानामि, भिक्खवे, उदकदन्तपोनं सामं गहेत्वा परिभुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२६५. ''यो पन भिक्खु अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरेय्य, अञ्ञत्र उदकदन्तपोना, पाचित्तिय''न्ति।

२६६. यो पनाति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अदिन्नं नाम अप्पटिग्गहितकं वुच्चति।

दिन्नं नाम कायेन वा कायपटिबद्धेन वा निस्सग्गियेन वा देन्ते हत्थपासे ठितो कायेन वा कायपटिबद्धेन वा पटिग्गण्हाति, एतं दिन्नं नाम।

आहारो नाम उदकदन्तपोनं ठपेत्वा यंकिञ्चि अज्झोहरणीयं, एसो आहारो नाम।

अञ्ञत्र उदकदन्तपोनाति ठपेत्वा उदकदन्तपोनं।

''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

२६७. अप्पटिग्गहितके अप्पटिग्गहितकसञ्ञी अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहारेति, अञ्ञत्र उदकदन्तपोना, आपत्ति पाचित्तियस्स। अप्पटिग्गहितके वेमतिको अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहारेति, अञ्ञत्र उदकदन्तपोना, आपत्ति पाचित्तियस्स। अप्पटिग्गहितके पटिग्गहितकसञ्ञी अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहारेति, अञ्ञत्र उदकदन्तपोना, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पटिग्गहितके अप्पटिग्गहितकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पटिग्गहितके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पटिग्गहितके पटिग्गहितकसञ्ञी, अनापत्ति।

२६८. अनापत्ति उदकदन्तपोने, चत्तारि महाविकतानि सति पच्चये असति कप्पियकारके सामं गहेत्वा परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दन्तपोनसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

भोजनवग्गो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

पिण्डो गणं परं पूवं, द्वे च वुत्ता पवारणा।

विकाले सन्निधी खीरं, दन्तपोनेन ते दसाति॥

५. अचेलकवग्गो

१. अचेलकसिक्खापदं

२६९. तेन समयेन बुद्धो भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन सङ्घस्स खादनीयं उस्सन्नं होति। अथ खो आयस्मा आनन्दो भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। ''तेनहानन्द, विघासादानं पूवं देही''ति। ''एवं भन्ते''ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुणित्वा विघासादे पटिपाटिया निसीदापेत्वा एकेकं पूवं देन्तो अञ्ञतरिस्सा परिब्बाजिकाय एकं मञ्ञमानो द्वे पूवे अदासि। सामन्ता परिब्बाजिकायो तं परिब्बाजिकं एतदवोचुं – ''जारो ते एसो समणो''ति। ''न मे सो समणो जारो, एकं मञ्ञमानो द्वे पूवे अदासी''ति। दुतियम्पि खो…पे॰… ततियम्पि खो आयस्मा आनन्दो एकेकं पूवं देन्तो तस्सायेव परिब्बाजिकाय एकं मञ्ञमानो द्वे पूवे अदासि। सामन्ता परिब्बाजिकायो तं परिब्बाजिकं एतदवोचुं – ''जारो ते एसो समणो''ति। ''न मे सो समणो जारो, एकं मञ्ञमानो द्वे पूवे अदासी''ति। ''जारो न जारो''ति भण्डिंसु। अञ्ञतरोपि आजीवको परिवेसनं अगमासि। अञ्ञतरो भिक्खु पहूतेन सप्पिना ओदनं मद्दित्वा तस्स आजीवकस्स महन्तं पिण्डं अदासि। अथ खो सो आजीवको तं पिण्डं आदाय अगमासि। अञ्ञतरो आजीवको तं आजीवकं एतदवोच – ''कुतो तया, आवुसो, पिण्डो लद्धो''ति? ''तस्सावुसो, समणस्स गोतमस्स मुण्डगहपतिकस्स परिवेसनाय लद्धो''ति।

अस्सोसुं खो उपासका तेसं आजीवकानं इमं कथासल्लापं। अथ खो ते उपासका येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। एकमन्तं निसिन्ना खो ते उपासका भगवन्तं एतदवोचुं – ''इमे, भन्ते, तित्थिया अवण्णकामा बुद्धस्स अवण्णकामा धम्मस्स अवण्णकामा सङ्घस्स। साधु, भन्ते, अय्या तित्थियानं सहत्था न ददेय्यु''न्ति। अथ खो भगवा ते उपासके धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो ते उपासका भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सिता समादपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कमिंसु। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय …पे॰… सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२७०. **''यो पन भिक्खु अचेलकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा ददेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

२७१. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अचेलको नाम यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो नग्गो।

परिब्बाजको नाम भिक्खुञ्च सामणेरञ्च ठपेत्वा यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो।

परिब्बाजिका नाम भिक्खुनिञ्च सिक्खमानञ्च सामणेरिञ्च ठपेत्वा या काचि परिब्बाजिकसमापन्ना।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – उदकदन्तपोनं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

ददेय्याति कायेन वा कायपटिबद्धेन वा निस्सग्गियेन वा देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

२७२. तित्थिये तित्थियसञ्ञी सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देति, आपत्ति पाचित्तियस्स। तित्थिये वेमतिको सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देति, आपत्ति पाचित्तियस्स। तित्थिये अतित्थियसञ्ञी सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उदकदन्तपोनं देति, आपत्ति दुक्कटस्स। अतित्थिये तित्थियसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अतित्थिये वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अतित्थिये अतित्थियसञ्ञी, अनापत्ति।

२७३. अनापत्ति दापेति न देति, उपनिक्खिपित्वा देति, बाहिरालेपं देति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अचेलकसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. उय्योजनसिक्खापदं

२७४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भातुनो सद्धिविहारिकं भिक्खुं एतदवोच – ''एहावुसो, गामं पिण्डाय पविसिस्सामा''ति। तस्स अदापेत्वा उय्योजेसि – ''गच्छावुसो, न मे तया सद्धिं कथा वा निसज्जा वा फासु होति, एककस्स मे कथा वा निसज्जा वा फासु होती''ति। अथ खो सो भिक्खु उपकट्ठे काले नासक्खि पिण्डाय चरितुं, पटिक्कमनेपि भत्तविस्सग्गं न सम्भावेसि, छिन्नभत्तो अहोसि। अथ खो सो भिक्खु आरामं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भिक्खुं – 'एहावुसो, गामं पिण्डाय पविसिस्सामा'ति तस्स अदापेत्वा उय्योजेस्सती''ति ...पे०... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, भिक्खुं – ''एहावुसो, गामं पिण्डाय पविसिस्सामा''ति तस्स अदापेत्वा उय्योजेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, भिक्खुं – ''एहावुसो, गामं पिण्डाय पविसिस्सामा''ति तस्स अदापेत्वा उय्योजेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२७५. **''यो पन भिक्खु भिक्खुं – ''एहावुसो, गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसिस्सामा'ति तस्स दापेत्वा वा अदापेत्वा वा उय्योजेय्य – 'गच्छावुसो, न मे तया सद्धिं कथा वा निसज्जा वा फासु होति, एककस्स मे कथा वा निसज्जा वा फासु होती'ति, एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं, पाचित्तिय''**न्ति।

२७६. **यो पना**ति यो, यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुन्ति अञ्ञं भिक्खुं।

एहावुसो, गामं वा निगमं वाति गामोपि निगमोपि नगरम्पि, गामो चेव निगमो च।

तस्स दापेत्वाति यागुं वा भत्तं वा खादनीयं वा भोजनीयं वा दापेत्वा।

अदापेत्वाति न किञ्चि दापेत्वा।

उय्योजेय्याति मातुगामेन सद्धिं हसितुकामो कीळितुकामो रहो निसीदितुकामो अनाचारं आचरितुकामो एवं वदेति – "गच्छावुसो, न मे तया सद्धिं कथा वा निसज्जा वा फासु होति, एककस्स मे कथा वा निसज्जा वा फासु होती"ति उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दस्सनूपचारं वा सवनूपचारं वा विजहन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स। विजहिते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञन्ति न अञ्ञो कोचि पच्चयो होति उय्योजेतुं।

२७७. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी उय्योजेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको उय्योजेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी उय्योजेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

कलिसासनं आरोपेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। कलिसासनं आरोपेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

२७८. अनापत्ति "उभो एकतो न यापेस्सामा"ति उय्योजेति, "महग्घं भण्डं पस्सित्वा लोभधम्मं उप्पादेस्सती"ति उय्योजेति, "मातुगामं पस्सित्वा अनभिरतिं उप्पादेस्सती"ति उय्योजेति, "गिलानस्स वा ओहिय्यकस्स वा विहारपालस्स वा यागुं वा भत्तं वा खादनीयं वा भोजनीयं वा नीहरा"ति उय्योजेति, न अनाचारं आचरितुकामो, सति करणीये उय्योजेति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उय्योजनसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. सभोजनसिक्खापदं

२७९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सहायकस्स घरं गन्त्वा तस्स पजापतिया सद्धिं सयनिघरे [सयनीघरे (स्या०)] निसज्जं कप्पेसि। अथ खो सो पुरिसो येनायस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सो पुरिसो पजापतिं एतदवोच – "ददेहाय्यस्स भिक्ख"न्ति। अथ खो सा इत्थी आयस्मतो उपनन्दस्स सक्यपुत्तस्स भिक्खं अदासि। अथ खो सो पुरिसो आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं एतदवोच – "गच्छथ, भन्ते, यतो अय्यस्स भिक्खा दिन्ना"ति। अथ खो सा इत्थी सल्लक्खेत्वा – "परियुट्ठितो अयं पुरिसो"ति, आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं एतदवोच – "निसीदथ, भन्ते, मा अगमित्था"ति। दुतियम्पि खो सो पुरिसो... पे०... ततियम्पि खो सो पुरिसो आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं एतदवोच – "गच्छथ, भन्ते, यतो अय्यस्स भिक्खा दिन्ना"ति। ततियम्पि खो सा इत्थी आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं एतदवोच – "निसीदथ, भन्ते, मा अगमित्था"ति।

अथ खो सो पुरिसो निक्खमित्वा भिक्खू उज्झापेसि – "अयं, भन्ते, अय्यो उपनन्दो मय्हं पजापतिया सद्धिं सयनिघरे निसिन्नो। सो मया उय्योजीयमानो न इच्छति गन्तुं। बहुकिच्चा मयं बहुकरणीया"ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं

कप्पेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२८०. ''यो पन भिक्खु सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

२८१. यो पनाति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सभोजनं नाम कुलं इत्थी चेव होति पुरिसो च, इत्थी च पुरिसो च उभो अनिक्खन्ता होन्ति, उभो अवीतरागा।

अनुपखज्जाति अनुपविसित्वा।

निसज्जं कप्पेय्याति महल्लके घरे पिट्ठसङ्घाटस्स [पिट्ठिसङ्घाटस्स (स्या०)] हत्थपासं विजहित्वा निसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। खुद्दके घरे पिट्ठिवंसं अतिक्कमित्वा निसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

२८२. सयनिघरे सयनिघरसञ्ञी सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सयनिघरे वेमतिको सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सयनिघरे नसयनिघरसञ्ञी सभोजने कुले अनुपखज्ज निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

नसयनिघरे सयनिघरसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। नसयनिघरे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। नसयनिघरे नसयनिघरसञ्ञी, अनापत्ति।

२८३. अनापत्ति महल्लके घरे पिट्ठसङ्घाटस्स हत्थपासं अविजहित्वा निसीदति, खुद्दके घरे पिट्ठिवंसं अनतिक्कमित्वा निसीदति, भिक्खु दुतियो होति, उभो निक्खन्ता होन्ति, उभो वीतरागा, नसयनिघरे, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सभोजनसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. रहोपटिच्छन्नसिक्खापदं

२८४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सहायकस्स घरं गन्त्वा तस्स पजापतिया सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेसि। अथ खो सो पुरिसो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम अय्यो उपनन्दो मय्हं पजापतिया सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेस्सती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तस्स पुरिसस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेस्सतीति...पे०... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२८५. “**यो पन भिक्खु मातुगामेन सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेय्य, पाचित्तिय**”न्ति।

२८६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

मातुगामो नाम मनुस्सित्थी, न यक्खी न पेती न तिरच्छानगता, अन्तमसो तदहुजातापि दारिका, पगेव महत्तरी।

सद्धिन्ति एकतो।

[पाचि॰ २००,२९१; पारा॰ ४४५,४५४] **रहो** नाम चक्खुस्स रहो सोतस्स रहो। चक्खुस्स रहो नाम न सक्का होति अक्खिं वा निखणीयमाने भमुकं वा उक्खिपीयमाने सीसं वा उक्खिपीयमाने पस्सितुं। सोतस्स रहो नाम न सक्का होति पकतिकथा सोतुं।

[पारा॰ ४४५] **पटिच्छन्नं** नाम आसनं कुट्टेन [कुड्डेन (सी॰ स्या॰)] वा कवाटेन वा किलञ्जेन वा साणिपाकारेन वा रुक्खेन वा थम्भेन वा कोत्थळिया [कोट्ठळिया (सी॰ स्या॰) कोत्थळिकाय (क॰)] वा, येन केनचि पटिच्छन्नं होति।

निसज्जं कप्पेय्याति मातुगामे निसिन्ने भिक्खु उपनिसिन्नो वा होति उपनिपन्नो वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु निसिन्ने मातुगामो उपनिसिन्नो वा होति उपनिपन्नो वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निसिन्ना होन्ति उभो वा निपन्ना, आपत्ति पाचित्तियस्स।

२८७. मातुगामे मातुगामसञ्ञी रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे वेमतिको रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे अमातुगामसञ्ञी रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यक्खिया वा पेतिया वा पण्डकेन वा तिरच्छानगताय वा मनुस्सविग्गहित्थिया वा सद्धिं रहो पटिच्छन्ने आसने निसज्जं कप्पेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे मातुगामसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे अमातुगामसञ्ञी, अनापत्ति।

२८८. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू पुरिसो दुतियो होति, तिट्ठति न निसीदति, अरहोपेक्खो, अञ्ञविहितो निसीदति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

रहोपटिच्छन्नसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. रहोनिसज्जसिक्खापदं

२८९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सहायकस्स घरं गन्त्वा तस्स पजापतिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेसि। अथ खो सो पुरिसो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – “कथञ्हि नाम अय्यो उपनन्दो मय्हं पजापतिया सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेस्सती”ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तस्स पुरिसस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा… पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – “कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो

निसज्जं कप्पेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पासादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२९०. **''यो पन भिक्खु मातुगामेन सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

२९१. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

मातुगामो नाम मनुस्सित्थी, न यक्खी न पेती न तिरच्छानगता, विञ्ञू पटिबला सुभासितदुब्भासितं दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आजानितुं।

सद्धिन्ति एकतो।

एको एकायाति भिक्खु चेव होति मातुगामो च।

[पाचि० २००,२८६; पारा० ४४५,४५४] **रहो** नाम चक्खुस्स रहो, सोतस्स रहो। **चक्खुस्स रहो** नाम न सक्का होति अक्खिं वा निखणीयमाने भमुकं वा उक्खिपीयमाने सीसं वा उक्खिपीयमाने पस्सितुं। **सोतस्स रहो** नाम न सक्का होति पकतिकथा सोतुं।

निसज्जं कप्पेय्याति मातुगामे निसिन्ने भिक्खु उपनिसिन्नो वा होति उपनिपन्नो वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु निसिन्ने मातुगामो उपनिसिन्नो वा होति उपनिपन्नो वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निसिन्ना होन्ति उभो वा निपन्ना, आपत्ति पाचित्तियस्स।

२९२. मातुगामे मातुगामसञ्ञी एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे वेमतिको एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे अमातुगामसञ्ञी एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यक्खिया वा पेतिया वा पण्डकेन वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहित्थिया वा [तिरच्छानगताय वा मनुस्सविग्गहित्थिया वा (क०)] सद्धिं एको एकाय रहो निसज्जं कप्पेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे मातुगामसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे अमातुगामसञ्ञी, अनापत्ति।

२९३. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू पुरिसो दुतियो होति, तिट्ठति न निसीदति, अरहोपेक्खो अञ्ञविहितो निसीदति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

रहोनिसज्जसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. चारित्तसिक्खापदं

२९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन आयस्मतो

उपनन्दस्स सक्यपुत्तस्स उपट्ठाककुलं आयस्मन्तं उपनन्दं सक्यपुत्तं भत्तेन निमन्तेसि। अञ्ञेपि भिक्खू भत्तेन निमन्तेसि। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो पुरेभत्तं, कुलानि पयिरुपासति। अथ खो ते भिक्खू ते मनुस्से एतदवोचुं – ''देथावुसो भत्त''न्ति। ''आगमेथ, भन्ते, यावाय्यो उपनन्दो आगच्छती''ति। दुतियम्पि खो ते भिक्खू...पे०... ततियम्पि खो ते भिक्खू ते मनुस्से एतदवोचुं – ''देथावुसो, भत्तं; पुरे कालो अतिक्कमती''ति। ''यम्पि मयं, भन्ते, भत्तं करिम्हा अय्यस्स उपनन्दस्स कारणा। आगमेथ, भन्ते, यावाय्यो उपनन्दो आगच्छती''ति।

अथ खो आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो पुरेभत्तं कुलानि पयिरुपासित्वा दिवा आगच्छति। भिक्खू न चित्तरूपं भुञ्जिंसु। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय... पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२९५. [महाव० २७७] तेन खो पन समयेन आयस्मतो उपनन्दस्स सक्यपुत्तस्स उपट्ठाककुलं सङ्घस्सत्थाय खादनीयं पाहेसि – ''अय्यस्स उपनन्दस्स दस्सेत्वा सङ्घस्स दातब्ब''न्ति। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो गामं पिण्डाय पविट्ठो होति। अथ खो ते मनुस्सा आरामं गन्त्वा भिक्खू पुच्छिंसु – ''कहं, भन्ते, अय्यो उपनन्दो''ति? ''एसावुसो, आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो गामं पिण्डाय पविट्ठो''ति। ''इदं, भन्ते, खादनीयं अय्यस्स उपनन्दस्स दस्सेत्वा सङ्घस्स दातब्ब''न्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, पटिग्गहेत्वा निक्खिपथ याव उपनन्दो आगच्छती''ति।

अथ खो आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो – ''भगवता पटिक्खित्तं पुरेभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जितु''न्ति पच्छाभत्तं कुलानि पयिरुपासित्वा दिवा पटिक्कमि, खादनीयं उस्सारियित्थ। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो पच्छाभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, पच्छाभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, पच्छाभत्तं कुलेसु चारित्तं आपज्जिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन भिक्खवे इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२९६. तेन खो पन समयेन भिक्खू चीवरदानसमये कुक्कुच्चायन्ता कुलानि न पयिरुपासन्ति। चीवरं परित्तं उप्पज्जति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, चीवरदानसमये कुलानि पयिरुपासितुं। एवञ्च पन,

भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। चीवरदानसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२९७. तेन खो पन समयेन भिक्खू चीवरकम्मं करोन्ति, अत्थो च होति सूचियापि सुत्तेनपि सत्थकेनपि। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता कुलानि न पयिरुपासन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, चीवरकारसमये कुलानि पयिरुपासितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु निमन्तितो सभत्तो समानो पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

२९८. तेन खो पन समयेन भिक्खू गिलाना होन्ति, अत्थो च होति भेसज्जेहि। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता कुलानि न पयिरुपासन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, सन्तं भिक्खुं आपुच्छा कुलानि पयिरुपासितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

२९९. **''यो पन भिक्खु निमन्तितो सभत्तो समानो सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। चीवरदानसमयो, चीवरकारसमयो – अयं तत्थ समयो''**ति।

३००. यो पनाति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

निमन्तितो नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरेन भोजनेन निमन्तितो।

सभत्तो नाम येन निमन्तितो तेन सभत्तो।

सन्तं नाम भिक्खुं सक्का होति आपुच्छा पविसितुं।

असन्तं नाम भिक्खुं न सक्का होति आपुच्छा पविसितुं।

पुरेभत्तं नाम येन निमन्तितो तं अभुत्तावी।

पच्छाभत्तं नाम येन निमन्तितो तं अन्तमसो कुसग्गेनपि [अरुणुग्गमनेपि (सी०)] भुत्तं होति।

कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं, सुद्दकुलं।

कुलेसु चारित्तं आपज्जेय्याति अञ्ञस्स घरूपचारं ओक्कमन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स। पठमं पादं उम्मारं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र समयाति ठपेत्वा समयं।

चीवरदानसमयो नाम अनत्थते कथिने वस्सानस्स पच्छिमो मासो, अत्थते कथिने पञ्च मासा।

चीवरकारसमयो नाम चीवरे कयिरमाने।

३०१. निमन्तिते निमन्तितसञ्ञी सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जति, अञ्ञत्र समया, आपत्ति पाचित्तियस्स। निमन्तिते वेमतिको सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जति, अञ्ञत्र समया, आपत्ति पाचित्तियस्स। निमन्तिते अनिमन्तितसञ्ञी सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पुरेभत्तं वा पच्छाभत्तं वा कुलेसु चारित्तं आपज्जति, अञ्ञत्र समया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनिमन्तिते निमन्तितसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनिमन्तिते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनिमन्तिते अनिमन्तितसञ्ञी, अनापत्ति।

३०२. अनापत्ति समये, सन्तं भिक्खुं आपुच्छा पविसति, असन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पविसति, अञ्ञस्स घरेन मग्गो होति, घरूपचारेन मग्गो होति, अन्तरारामं गच्छति, भिक्खुनुपस्सयं गच्छति, तित्थियसेय्यं गच्छति, पटिक्कमनं गच्छति, भत्तियघरं गच्छति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चारित्तसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. महानामसिक्खापदं

३०३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सक्केसु विहरति कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे। तेन खो पन समयेन महानामस्स सक्कस्स भेसज्जं उस्सन्नं होति। अथ खो महानामो सक्को येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो महानामो सक्को भगवन्तं एतदवोच – ''इच्छामहं, भन्ते, सङ्घं चतुमासं [चतुम्मासं (सी॰) चातुमासं (स्या॰)] भेसज्जेन पवारेतु''न्ति। ''साधु साधु, महानाम! तेन हि त्वं, महानाम, सङ्घं चतुमासं भेसज्जेन पवारेही''ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... अनुजानामि, भिक्खवे, चतुमासं भेसज्जप्पच्चयपवारणं सादितुन्ति।

३०४. तेन खो पन समयेन भिक्खू महानामं सक्कं परित्तं भेसज्जं विञ्ञापेन्ति। तथेव महानामस्स सक्कस्स भेसज्जं उस्सन्नं होति। दुतियम्पि खो महानामो सक्को येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो महानामो सक्को भगवन्तं एतदवोच – ''इच्छामहं, भन्ते, सङ्घं अपरम्पि चतुमासं भेसज्जेन पवारेतु''न्ति। ''साधु साधु, महानाम! तेन हि त्वं, महानाम, सङ्घं अपरम्पि चतुमासं भेसज्जेन पवारेही''ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... अनुजानामि, भिक्खवे, पुन पवारणम्पि सादितुन्ति।

३०५. तेन खो पन समयेन भिक्खू महानामं सक्कं परित्तंयेव भेसज्जं विञ्ञापेन्ति। तथेव महानामस्स सक्कस्स भेसज्जं उस्सन्नं होति। ततियम्पि खो महानामो सक्को येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो महानामो सक्को भगवन्तं एतदवोच – ''इच्छामहं, भन्ते, सङ्घं यावजीवं भेसज्जेन पवारेतु''न्ति। ''साधु साधु, महानाम! तेन हि त्वं, महानाम, सङ्घं यावजीवं भेसज्जेन पवारेही''ति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, निच्चपवारणम्पि सादितुन्ति।

तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू दुन्निवत्था होन्ति दुप्पारुता अनाकप्पसम्पन्ना। महानामो सक्को वत्ता होति – ''किस्स तुम्हे, भन्ते, दुन्निवत्था दुप्पारुता अनाकप्पसम्पन्ना? ननु नाम पब्बजितेन सुनिवत्थेन भवितब्बं सुपारुतेन आकप्पसम्पन्नेना''ति? छब्बग्गिया भिक्खू महानामे सक्के उपनन्धिंसु। अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – ''केन नु खो मयं उपायेन महानामं सक्कं मङ्कु करेय्यामा''ति? अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – ''महानामेन खो, आवुसो, सक्केन सङ्घो भेसज्जेन पवारितो। हन्द मयं, आवुसो, महानामं सक्कं सप्पिं विञ्ञापेमा''ति। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू येन महानामो सक्को तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा महानामं सक्कं एतदवोचुं – ''दोणेन, आवुसो, सप्पिना अत्थो''ति। ''अज्जण्हो, भन्ते, आगमेथ। मनुस्सा वजं गता सप्पिं आहरितुं। कालं आहरिस्सथा''ति [काले हरिस्सथाति (स्या०)]।

दुतियम्पि खो...पे०... ततियम्पि खो छब्बग्गिया भिक्खू महानामं सक्कं एतदवोचुं – ''दोणेन, आवुसो, सप्पिना अत्थो''ति। ''अज्जण्हो, भन्ते, आगमेथ। मनुस्सा वजं गता सप्पिं आहरितुं। कालं आहरिस्सथा''ति। ''किं पन तया, आवुसो, अदातुकामेन पवारितेन, यं त्वं पवारेत्वा न देसी''ति! अथ खो महानामो सक्को उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता – 'अज्जण्हो, भन्ते, आगमेथा'ति वुच्चमाना नागमेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू महानामस्स सक्कस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू महानामेन सक्केन – 'अज्जण्हो, भन्ते, आगमेथा'ति वुच्चमाना नागमेस्सन्ती''ति... पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, महानामेन सक्केन – ''अज्जण्हो, भन्ते, आगमेथा''ति वुच्चमाना नागमेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, महानामेन सक्केन – ''अज्जण्हो, भन्ते आगमेथा''ति वुच्चमाना नागमेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३०६. **''अगिलानेन भिक्खुना चतुमासप्पच्चयपवारणा सादितब्बा, अञ्ञत्र पुनपवारणाय, अञ्ञत्र निच्चपवारणाय; ततो चे उत्तरि सादियेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३०७. **अगिलानेन भिक्खुना चतुमासप्पच्चयपवारणा सादितब्बा**ति गिलानप्पच्चयपवारणा सादितब्बा।

पुनपवारणापि सादितब्बाति यदा गिलानो भविस्सामि तदा विञ्ञापेस्सामीति।

निच्चपवारणापि सादितब्बाति यदा गिलानो भविस्सामि तदा विञ्ञापेस्सामीति।

ततो चे उत्तरि सादियेय्याति अत्थि पवारणा भेसज्जपरियन्ता न रत्तिपरियन्ता, अत्थि पवारणा रत्तिपरियन्ता न भेसज्जपरियन्ता, अत्थि पवारणा भेसज्जपरियन्ता च रत्तिपरियन्ता च, अत्थि पवारणा नेव भेसज्जपरियन्ता न

रत्तिपरियन्ता।

भेसज्जपरियन्ता नाम भेसज्जानि परिग्गहितानि होन्ति – ''एत्तकेहि भेसज्जेहि पवारेमी''ति। **रत्तिपरियन्ता** नाम रत्तियो परिग्गहितायो होन्ति – ''एत्तकासु रत्तीसु पवारेमी''ति। **भेसज्जपरियन्ता च रत्तिपरियन्ता च** नाम भेसज्जानि च परिग्गहितानि होन्ति रत्तियो च परिग्गहितायो होन्ति – ''एत्तकेहि भेसज्जेहि एत्तकासु रत्तीसु पवारेमी''ति। **नेव भेसज्जपरियन्ता न रत्तिपरियन्ता** नाम भेसज्जानि च अपरिग्गहितानि होन्ति रत्तियो च अपरिग्गहितायो होन्ति।

३०८. भेसज्जपरियन्ते – येहि भेसज्जेहि पवारितो होति तानि भेसज्जानि ठपेत्वा अञ्ञानि भेसज्जानि विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। रत्तिपरियन्ते – यासु रत्तीसु पवारितो होति, ता रत्तियो ठपेत्वा अञ्ञासु रत्तीसु विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भेसज्जपरियन्ते च रत्तिपरियन्ते च – येहि भेसज्जेहि पवारितो होति, तानि भेसज्जानि ठपेत्वा यासु रत्तीसु पवारितो होति, ता रत्तियो ठपेत्वा अञ्ञानि भेसज्जानि अञ्ञासु रत्तीसु विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। नेव भेसज्जपरियन्ते न रत्तिपरियन्ते, अनापत्ति।

३०९. न भेसज्जेन करणीयेन [करणीये (सी॰ स्या॰)] भेसज्जं विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञेन भेसज्जेन करणीयेन अञ्ञं भेसज्जं विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ततुत्तरि ततुत्तरिसञ्ञी भेसज्जं विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ततुत्तरि वेमतिको भेसज्जं विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ततुत्तरि नततुत्तरिसञ्ञी भेसज्जं विञ्ञापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

नततुत्तरि ततुत्तरिसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। नततुत्तरि वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। नततुत्तरि नततुत्तरिसञ्ञी, अनापत्ति।

३१०. अनापत्ति येहि भेसज्जेहि पवारितो होति तानि भेसज्जानि विञ्ञापेति, यासु रत्तीसु पवारितो होति तासु रत्तीसु विञ्ञापेति, ''इमेहि तया भेसज्जेहि पवारिताम्ह, अम्हाकञ्च इमिना च इमिना च भेसज्जेन अत्थो''ति आचिक्खित्वा विञ्ञापेति, ''यासु तया रत्तीसु पवारिताम्ह तायो च रत्तियो वीतिवत्ता अम्हाकञ्च भेसज्जेन अत्थो''ति आचिक्खित्वा विञ्ञापेति, ञातकानं पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

महानामसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. उय्युत्तसेनासिक्खापदं

३११. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन राजा पसेनदि कोसलो सेनाय अब्भुय्यातो होति। छब्बग्गिया भिक्खू उय्युत्तं सेनं दस्सनाय अगमंसु। अद्दसा खो राजा पसेनदि कोसलो छब्बग्गिये भिक्खू दूरतोव आगच्छन्ते। दिस्वान पक्कोसापेत्वा एतदवोच – ''किस्स तुम्हे, भन्ते, आगतत्था''ति? ''महाराजानं मयं दट्ठुकामा'' [महाराज महाराजानं मयं दट्ठुकामा (क॰)] ति। ''किं, भन्ते, मं दिट्ठेन युद्धाभिनन्दिनं [युद्धाभिनन्दिना (क॰)]; ननु भगवा पस्सितब्बो''ति? मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया उय्युत्तं सेनं दस्सनाय आगच्छिस्सन्ति! अम्हाकम्पि अलाभा, अम्हाकम्पि दुल्लद्धं, ये मयं आजीवस्स हेतु पुत्तदारस्स कारणा सेनाय आगच्छामा''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू उय्युत्तं सेनं दस्सनाय

गच्छिस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गच्छथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गच्छिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गच्छेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३१२. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स भिक्खुनो मातुलो सेनाय गिलानो होति। सो तस्स भिक्खुनो सन्तिके दूतं पाहेसि – ''अहञ्हि सेनाय गिलानो। आगच्छतु भदन्तो। इच्छामि भदन्तस्स आगत''न्ति। अथ खो तस्स भिक्खुनो एतदहोसि – ''भगवता सिक्खापदं पञ्ञत्तं – 'न उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गन्तब्ब'न्ति। अयञ्च मे मातुलो सेनाय गिलानो। कथं नु खो मया पटिपज्जितब्ब''न्ति? भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, तथारूपप्पच्चया सेनाय गन्तुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३१३. **''यो पन भिक्खु उय्युत्तं सेनं दस्सनाय गच्छेय्य, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, पाचित्तिय''**न्ति।

३१४. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

उय्युत्ता नाम सेना गामतो निक्खमित्वा निविट्ठा वा होति पयाता वा।

सेना नाम हत्थी अस्सा रथा पत्ती। द्वादसपुरिसो हत्थी, तिपुरिसो अस्सो, चतुपुरिसो रथो, चत्तारो पुरिसा सरहत्था पत्ति। दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चयाति ठपेत्वा तथारूपप्पच्चयं।

३१५. उय्युत्ते उय्युत्तसञ्ञी दस्सनाय गच्छति, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, आपत्ति पाचित्तियस्स। उय्युत्ते वेमतिको दस्सनाय गच्छति, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, आपत्ति पाचित्तियस्स। उय्युत्ते अनुय्युत्तसञ्ञी दस्सनाय गच्छति, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकमेकं दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो पस्सति, आपत्ति दुक्कटस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुय्युत्ते उय्युत्तसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुय्युत्ते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुय्युत्ते अनुय्युत्तसञ्ञी, अनापत्ति।

३१६. अनापत्ति आरामे ठितो पस्सति, भिक्खुस्स ठितोकासं वा निसिन्नोकासं वा निपन्नोकासं वा आगच्छति, पटिपथं गच्छन्तो पस्सति, तथारूपप्पच्चया, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उय्युत्तसेनासिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. सेनावाससिक्खापदं

३१७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सति करणीये सेनं गन्त्वा अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया सेनाय वसिस्सन्ति! अम्हाकम्पि अलाभा, अम्हाकम्पि दुल्लद्धं, ये मयं आजीवस्स हेतु पुत्तदारस्स कारणा सेनाय पटिवसामा''ति। अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसिस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, अतिरेकतिरत्तं सेनाय वसिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३१८. **''सिया च तस्स भिक्खुनो कोचिदेव पच्चयो सेनं गमनाय, दिरत्ततिरत्तं तेन भिक्खुना सेनाय वसितब्बं। ततो चे उत्तरिं वसेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

३१९. **सिया च तस्स भिक्खुनो कोचिदेव पच्चयो सेनं गमनाया**ति सिया पच्चयो सिया करणीयं।

दिरत्ततिरत्तं तेन भिक्खुना सेनाय वसितब्बन्ति द्वेतिस्सो रत्तियो वसितब्बं।

ततो चे उत्तरि वसेय्याति चतुत्थे दिवसे अत्थङ्गते सूरिये सेनाय वसति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३२०. अतिरेकतिरत्ते अतिरेकसञ्ञी सेनाय वसति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकतिरत्ते वेमतिको सेनाय वसति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकतिरत्ते ऊनकसञ्ञी सेनाय वसति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ऊनकतिरत्ते अतिरेकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकतिरत्ते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकतिरत्ते ऊनकसञ्ञी, अनापत्ति।

३२१. अनापत्ति द्वेतिस्सो रत्तियो वसति, ऊनकद्वेतिस्सो रत्तियो वसति, द्वे रत्तियो वसित्वा ततियाय रत्तिया पुरारुणा निक्खमित्वा पुन वसति, गिलानो वसति, गिलानस्स करणीयेन वसति, सेना वा पटिसेनाय रुद्धा होति, केनचि पलिबुद्धो होति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सेनावाससिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. उय्योधिकसिक्खापदं

३२२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू दिरत्ततिरत्तं सेनाय वसमाना उय्योधिकम्पि बलग्गम्पि सेनाब्यूहम्पि अनीकदस्सनम्पि गच्छन्ति। अञ्ञतरोपि छब्बग्गियो भिक्खु उय्योधिकं गन्त्वा कण्डेन पटिविद्धो होति। मनुस्सा तं भिक्खुं उप्पण्डेसुं – ''कच्चि, भन्ते,

सुयुद्धं अहोसि, कति ते लक्खानि लद्धानी''ति? सो भिक्खु तेहि मनुस्सेहि उप्पण्डीयमानो मङ्कु अहोसि। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया उय्योधिकं दस्सनाय आगच्छिस्सन्ति! अम्हाकम्पि अलाभा, अम्हाकम्पि दुल्लद्धं, ये मयं आजीवस्स हेतु पुत्तदारस्स कारणा उय्योधिकं आगच्छामा''ति। अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू उय्योधिकं दस्सनाय गच्छिस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, उय्योधिकं दस्सनाय गच्छथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, उय्योधिकं दस्सनाय गच्छिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३२३. ''दिरत्ततिरत्तं चे भिक्खु सेनाय वसमानो उय्योधिकं वा बलग्गं वा सेनाब्यूहं वा अनीकदस्सनं वा गच्छेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

३२४. दिरत्ततिरत्तं चे भिक्खु सेनाय वसमानोति द्वेतिस्सो रत्तियो वसमानो।

उय्योधिकं नाम यत्थ सम्पहारो दिस्सति।

बलग्गं नाम एत्तका हत्थी, एत्तका अस्सा, एत्तका रथा, एत्तका पत्ती।

सेनाब्यूहं नाम इतो हत्थी होन्तु, इतो अस्सा होन्तु, इतो रथा होन्तु, इतो पत्तिका होन्तु।

अनीकं नाम हत्थानीकं, अस्सानीकं, रथानीकं, पत्तानीकं। तयो हत्थी पच्छिमं हत्थानीकं, तयो अस्सा पच्छिमं अस्सानीकं, तयो रथा पच्छिमं रथानीकं, चत्तारो पुरिसा सरहत्था पत्ती पच्छिमं पत्तानीकं। दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकमेकं दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो पस्सति, आपत्ति दुक्कटस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति, आपत्ति दुक्कटस्स।

३२५. अनापत्ति आरामे ठितो पस्सति, भिक्खुस्स ठितोकासं वा निसिन्नोकासं वा निपन्नोकासं वा आगन्त्वा सम्पहारो दिस्सति, पटिपथं गच्छन्तो पस्सति, सति करणीये गन्त्वा पस्सति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उय्योधिकसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

अचेलकवग्गो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

पूवं कथोपनन्दस्स, तयंपट्ठाकमेव च।
महानामो पसेनदि, सेनाविद्धो इमे दसाति [अचेलकं उय्योजञ्च, सभोजनं दुवे रहो। सभत्तकञ्च भेसज्जं,

उय्युत्तं सेनुय्योधिकं]॥

६. सुरापानवग्गो

१. सुरापानसिक्खापदं

३२६. तेन समयेन बुद्धो भगवा चेतियेसु चारिकं चरमानो येन भद्दवतिका तेन पायासि। अद्दसंसु खो गोपालका पसुपालका कस्सका पथाविनो भगवन्तं दूरतोव आगच्छन्तं। दिस्वान भगवन्तं एतदवोचुं – ''मा खो, भन्ते, भगवा अम्बतित्थं अगमासि। अम्बतित्थे, भन्ते, जटिलस्स अस्समे नागो पटिवसति इद्धिमा आसिविसो [आसीविसो (सी॰ स्या॰)] घोरविसो। सो भगवन्तं मा विहेठेसी''ति। एवं वुत्ते भगवा तुण्ही अहोसि। दुतियम्पि खो...पे॰... ततियम्पि खो गोपालका पसुपालका कस्सका पथाविनो भगवन्तं एतदवोचुं – ''मा खो, भन्ते, भगवा अम्बतित्थं अगमासि। अम्बतित्थे, भन्ते, जटिलस्स अस्समे नागो पटिवसति इद्धिमा आसिविसो घोरविसो। सो भगवन्तं मा विहेठेसी''ति। ततियम्पि खो भगवा तुण्ही अहोसि।

अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन भद्दवतिका तदवसरि। तत्र सुदं भगवा भद्दवतिकायं विहरति। अथ खो आयस्मा सागतो येन अम्बतित्थस्स [अम्बतित्थकस्स (सी॰), अम्बतित्थं (स्या॰)] जटिलस्स अस्समो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा अग्यागारं पविसित्वा तिणसन्थारकं पञ्ञपेत्वा निसीदि पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा। अद्दसा खो सो नागो आयस्मन्तं सागतं पविट्ठं। दिस्वान दुम्मनो [दुक्खी दुम्मनो (सी॰ स्या॰)] पधूपायि [पधूपासि (स्या॰ क॰)]। आयस्मापि सागतो पधूपायि [पधूपासि (स्या॰ क॰)]। अथ खो सो नागो मक्खं असहमानो पज्जलि। आयस्मापि सागतो तेजोधातुं समापज्जित्वा पज्जलि। अथ खो आयस्मा सागतो तस्स नागस्स तेजसा तेजं परियादियित्वा येन भद्दवतिका तेनुपसङ्कमि। अथ खो भगवा भद्दवतिकायं यथाभिरन्तं विहरित्वा येन कोसम्बी तेन चारिकं पक्कामि। अस्सोसुं खो कोसम्बिका उपासका – ''अय्यो किर सागतो अम्बतित्थिकेन नागेन सद्धिं सङ्गामेसी''ति।

अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन कोसम्बी तदवसरि। अथ खो कोसम्बिका उपासका भगवतो पच्चुग्गमनं करित्वा येनायस्मा सागतो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं सागतं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु। एकमन्तं ठिता खो कोसम्बिका उपासका आयस्मन्तं सागतं एतदवोचुं – ''किं, भन्ते, अय्यानं दुल्लभञ्च मनापञ्च, किं पटियादेमा''ति? एवं वुत्ते छब्बग्गिया भिक्खू कोसम्बिके उपासके एतदवोचुं – ''अत्थावुसो, कापोतिका नाम पसन्ना भिक्खूनं दुल्लभा च मनापा च, तं पटियादेथा''ति। अथ खो कोसम्बिका उपासका घरे घरे कापोतिकं पसन्नं पटियादेत्वा आयस्मन्तं सागतं पिण्डाय पविट्ठं दिस्वान आयस्मन्तं सागतं एतदवोचुं – ''पिवतु, भन्ते, अय्यो सागतो कापोतिकं पसन्नं, पिवतु, भन्ते, अय्यो सागतो कापोतिकं पसन्न''न्ति। अथ खो आयस्मा सागतो घरे घरे कापोतिकं पसन्नं पिवित्वा नगरम्हा निक्खमन्तो नगरद्वारे परिपति।

अथ खो भगवा सम्बहुलेहि भिक्खूहि सद्धिं नगरम्हा निक्खमन्तो अद्दस आयस्मन्तं सागतं नगरद्वारे परिपतन्तं। दिस्वान भिक्खू आमन्तेसि – ''गण्हथ, भिक्खवे, सागत''न्ति। ''एवं, भन्ते''ति खो ते भिक्खू भगवतो पटिस्सुणित्वा आयस्मन्तं सागतं आरामं नेत्वा येन भगवा तेन सीसं कत्वा निपातेसुं। अथ खो आयस्मा सागतो परिवत्तित्वा येन भगवा तेन पादे करित्वा सेय्यं कप्पेसि। अथ खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि – ''ननु, भिक्खवे, पुब्बे सागतो तथागते सगारवो अहोसि सप्पतिस्सो''ति? ''एवं, भन्ते''। ''अपि नु खो, भिक्खवे, सागतो एतरहि तथागते सगारवो सप्पतिस्सो''ति? ''नो

हेतं, भन्ते''। ''ननु, भिक्खवे, सागतो अम्बतित्थिकेन नागेन [डेड्डुभेनापि (सी० स्या०)] सद्धिं सङ्गामेसी''ति? ''एवं, भन्ते''। ''अपि नु खो, भिक्खवे, सागतो एतरहि पहोति नागेन सद्धिं सङ्गामेतु''न्ति? ''नो हेतं, भन्ते''। ''अपि नु खो, भिक्खवे, तं पातब्बं यं पिवित्वा विसञ्ञी अस्सा''ति? ''नो हेतं, भन्ते''। ''अननुच्छविकं, भिक्खवे, सागतस्स अननुलोमिकं अप्पतिरूपं अस्सामणकं अकप्पियं अकरणीयं। कथञ्हि नाम, भिक्खवे, सागतो मज्जं पिविस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३२७. **''सुरामेरयपाने पाचित्तिय''**न्ति।

३२८. **सुरा** नाम पिट्ठसुरा पूवसुरा ओदनसुरा किण्णपक्खित्ता सम्भारसंयुत्ता।

मेरयो नाम पुप्फासवो फलासवो मध्वासवो गुळासवो सम्भारसंयुत्तो।

पिवेय्याति अन्तमसो कुसग्गेनपि पिवति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

मज्जे मज्जसञ्ञी पिवति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मज्जे वेमतिको पिवति, आपत्ति पाचित्तियस्स। मज्जे अमज्जसञ्ञी पिवति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अमज्जे मज्जसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अमज्जे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अमज्जे अमज्जसञ्ञी, अनापत्ति।

३२९. अनापत्ति अमज्जञ्च होति मज्जवण्णं मज्जगन्धं मज्जरसं तं पिवति, सूपसम्पाके, मंससम्पाके, तेलसम्पाके, आमलकफाणिते, अमज्जं अरिट्ठं पिवति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सुरापानसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. अङ्गुलिपतोदकसिक्खापदं

३३०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सत्तरसवग्गियं भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेसुं। सो भिक्खु उत्तन्तो अनस्सासको कालमकासि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३३१. **''अङ्गुलिपतोदके पाचित्तिय''**न्ति।

३३२. **अङ्गुलिपतोदको** नाम [अङ्गुलिपतोदको नाम अङ्गुलियापि तुदन्ति (स्या०)] उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं हसाधिप्पायो [हस्साधिप्पायो (सी० स्या०)] कायेन कायं आमसति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी अङ्गुलिपतोदकेन हासेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको अङ्गुलिपतोदकेन हासेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी अङ्गुलिपतोदकेन हासेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

३३३. अनुपसम्पन्नं कायेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

३३४. अनापत्ति न हसाधिप्पायो, सति करणीये आमसति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अङ्गुलिपतोदकसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. हसधम्मसिक्खापदं

३३५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सत्तरसवग्गिया भिक्खू अचिरवतिया नदिया उदके कीळन्ति। तेन खो पन समयेन राजा पसेनदि कोसलो मल्लिकाय देविया सद्धिं उपरिपासादवरगतो होति। अद्दसा खो राजा पसेनदि कोसलो सत्तरसवग्गिये भिक्खू अचिरवतिया नदिया उदके कीळन्ते। दिस्वान मल्लिकं देविं एतदवोच – ''एते ते, मल्लिके, अरहन्तो उदके कीळन्ती''ति। ''निस्संसयं खो, महाराज, भगवता सिक्खापदं अपञ्ञत्तं। ते वा भिक्खू अप्पकतञ्ञुनो''ति। अथ खो रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स एतदहोसि – ''केन नु खो अहं उपायेन भगवतो च न आरोचेय्यं, भगवा च जानेय्य इमे भिक्खू उदके कीळिता''ति? अथ खो राजा पसेनदि कोसलो सत्तरसवग्गिये भिक्खू पक्कोसापेत्वा महन्तं गुळपिण्डं अदासि – ''इमं, भन्ते, गुळपिण्डं भगवतो देथा''ति। सत्तरसवग्गिया भिक्खू तं गुळपिण्डं आदाय येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं एतदवोचुं – ''इमं, भन्ते, गुळपिण्डं राजा पसेनदि कोसलो भगवतो देती''ति। ''कहं पन तुम्हे, भिक्खवे, राजा अद्दसा''ति। ''अचिरवतिया नदिया, भगवा, उदके कीळन्ते''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, उदके कीळिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३३६. **''उदके हसधम्मे** [हस्सधम्मे (सी॰ स्या॰)] **पाचित्तिय**''न्ति।

३३७. **उदके हसधम्मो** नाम उपरिगोप्फके उदके हसाधिप्पायो निमुज्जति वा उम्मुज्जति वा पलवति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३३८. उदके हसधम्मे हसधम्मसञ्ञी, आपत्ति पाचित्तियस्स। उदके हसधम्मे वेमतिको, आपत्ति पाचित्तियस्स। उदके हसधम्मे अहसधम्मसञ्ञी, आपत्ति पाचित्तियस्स।

हेट्ठागोप्फके उदके कीळति, आपत्ति दुक्कटस्स। उदके नावाय कीळति, आपत्ति दुक्कटस्स। हत्थेन वा पादेन वा कट्ठेन वा कठलाय वा उदकं पहरति, आपत्ति दुक्कटस्स। भाजनगतं उदकं वा कञ्जिकं वा खीरं वा तक्कं वा रजनं वा

पस्सावं वा चिक्खल्लं वा कीळति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उदके अहसधम्मे हसधम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। उदके अहसधम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। उदके अहसधम्मे अहसधम्मसञ्ञी, अनापत्ति।

३३९. अनापत्ति न हसाधिप्पायो, सति करणीये उदकं ओतरित्वा निमुज्जति वा उम्मुज्जति वा पलवति वा, पारं गच्छन्तो निमुज्जति वा उम्मुज्जति वा पलवति वा, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

हसधम्मसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. अनादरियसिक्खापदं

३४०. तेन समयेन बुद्धो भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा छन्नो अनाचारं आचरति। भिक्खू एवमाहंसु – ''मावुसो छन्न, एवरूपं अकासि। नेतं कप्पती''ति। सो अनादरियं पटिच्च करोतियेव। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा छन्नो अनादरियं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, छन्न, अनादरियं करोसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, अनादरियं करिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३४१. ''**अनादरिये पाचित्तिय**''न्ति।

३४२. अनादरियं नाम द्वे अनादरियानि – पुग्गलानादरियञ्च धम्मानादरियञ्च।

पुग्गलानादरियं नाम उपसम्पन्नेन पञ्ञत्तेन वुच्चमानो – ''अयं उक्खित्तको वा वम्भितो वा गरहितो वा, इमस्स वचनं अकतं भविस्सती''ति अनादरियं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

धम्मानादरियं नाम उपसम्पन्नेन पञ्ञत्तेन वुच्चमानो ''कथायं नस्सेय्य वा विनस्सेय्य वा अन्तरधायेय्य वा'', तं वा न सिक्खितुकामो अनादरियं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३४३. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी अनादरियं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको अनादरियं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी अनादरियं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अपञ्ञत्तेन वुच्चमानो – ''इदं न सल्लेखाय न धुतत्थाय न पासादिकताय न अपचयाय न वीरियारम्भाय संवत्तती''ति अनादरियं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नेन पञ्ञत्तेन वा अपञ्ञत्तेन वा वुच्चमानो – ''इदं न सल्लेखाय न धुतत्थाय न पासादिकताय न अपचयाय न वीरियारम्भाय संवत्तती''ति अनादरियं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

३४४. अनापत्ति – ''एवं अम्हाकं आचरियानं उग्गहो परिपुच्छा''ति भणति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अनादरियसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. भिंसापनसिक्खापदं

३४५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सत्तरसवग्गिये भिक्खू भिंसापेन्ति। ते भिंसापीयमाना रोदन्ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, रोदथा''ति? ''इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू अम्हे भिंसापेन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं भिंसापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुं भिंसापेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुं भिंसापेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३४६. **''यो पन भिक्खु भिक्खुं भिंसापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३४७. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुन्ति अञ्ञं भिक्खुं।

भिंसापेय्याति उपसम्पन्नो उपसम्पन्नं भिंसापेतुकामो रूपं वा सद्दं वा गन्धं वा रसं वा फोट्ठब्बं वा उपसंहरति। भायेय्य वा सो न वा भायेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स। चोरकन्तारं वा वाळकन्तारं वा पिसाचकन्तारं वा आचिक्खति। भायेय्य वा सो न वा भायेय्य, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३४८. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी भिंसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको भिंसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। 'उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी भिंसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नं भिंसापेतुकामो रूपं वा सद्दं वा गन्धं वा रसं वा फोट्ठब्बं वा उपसंहरति। भायेय्य वा सो न वा भायेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स। चोरकन्तारं वा वाळकन्तारं वा पिसाचकन्तारं वा आचिक्खति। भायेय्य वा सो न वा भायेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

३४९. अनापत्ति न भिंसापेतुकामो रूपं वा सद्दं वा गन्धं वा रसं वा फोट्ठब्बं वा उपसंहरति, चोरकन्तारं वा वाळकन्तारं वा पिसाचकन्तारं वा आचिक्खति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

भिंसापनसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. जोतिकसिक्खापदं

३५०. तेन समयेन बुद्धो भगवा भग्गेसु विहरति सुंसुमारगिरे [सुंसुमारगिरे (सी० स्या०) संसुमारगिरे (क०)]

भेसकळावने मिगदाये। तेन खो पन समयेन भिक्खू हेमन्तिके काले अञ्ञतरं महन्तं सुसिरकट्ठं जोतिं समादहित्वा विसिब्बेसुं। तस्मिञ्च सुसिरे कण्हसप्पो अग्गिना सन्तत्तो निक्खमित्वा भिक्खू परिपातेसि। भिक्खू तहं तहं उपधाविंसु। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खू जोतिं समादहित्वा विसिब्बेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू जोतिं समादहित्वा विसिब्बेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा जोतिं समादहित्वा विसिब्बेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खु विसिब्बनापेक्खो जोतिं समादहेय्य वा समादहापेय्य वा, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३५१. तेन खो पन समयेन भिक्खू गिलाना होन्ति। गिलानपुच्छका भिक्खू गिलाने भिक्खू एतदवोचुं – ''कच्चावुसो, खमनीयं, कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मयं, आवुसो, जोतिं समादहित्वा विसिब्बेम; तेन नो फासु होति। इदानि पन ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न विसिब्बेम, तेन नो न फासु होती''ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना जोतिं समादहित्वा वा समादहापेत्वा वा विसिब्बेतुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खु अगिलानो विसिब्बनापेक्खो जोतिं समादहेय्य वा समादहापेय्य वा, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३५२. तेन खो पन समयेन भिक्खू पदीपेपि जोतिकेपि जन्ताघरेपि कुक्कुच्चायन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, तथारूपप्पच्चया जोतिं समादहितुं समादहापेतुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३५३. ''**यो पन भिक्खु अगिलानो विसिब्बनापेक्खो जोतिं समादहेय्य वा समादहापेय्य वा, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, पाचित्तिय**''न्ति।

३५४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अगिलानो नाम यस्स विना अग्गिना फासु होति।

गिलानो नाम यस्स विना अग्गिना न फासु होति।

विसिब्बनापेक्खोति तप्पितुकामो।

जोति नाम अग्गि वुच्चति।

समादहेय्याति सयं समादहति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

समादहापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सकिं आणत्तो बहुकम्पि समादहति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र तथा रूपप्पच्चयाति ठपेत्वा तथारूपप्पच्चयं।

३५५. अगिलानो अगिलानसञ्ञी विसिब्बनापेक्खो जोतिं समादहति वा समादहापेति वा, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलानो वेमतिको विसिब्बनापेक्खो जोतिं समादहति वा समादहापेति वा, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलानो गिलानसञ्ञी विसिब्बनापेक्खो जोतिं समादहति वा समादहापेति वा, अञ्ञत्र तथारूपप्पच्चया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पटिलातं उक्खिपति, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो अगिलानसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलानो गिलानसञ्ञी, अनापत्ति।

३५६. अनापत्ति गिलानस्स, अञ्ञेन कतं विसिब्बेति, वीतच्चितङ्गारं विसिब्बेति, पदीपे जोतिके जन्ताघरे तथारूपप्पच्चया, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

जोतिकसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. नहानसिक्खापदं

३५७. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन भिक्खू तपोदे नहायन्ति। तेन खो पन समयेन [अथ खो (सी॰ स्या॰)] राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो ''सीसं नहायिस्सामी''ति तपोदं गन्त्वा – ''यावाय्या नहायन्ती''ति एकमन्तं पटिमानेसि। भिक्खू याव समन्धकारा नहायिंसु। अथ खो राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो विकाले सीसं नहायित्वा, नगरद्वारे थकिते बहिनगरे वसित्वा, कालस्सेव असम्भिन्नेन विलेपनेन येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो राजानं मागधं सेनियं बिम्बिसारं भगवा एतदवोच – ''किस्स त्वं, महाराज, कालस्सेव आगतो असम्भिन्नेन विलेपनेना''ति? अथ खो राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। अथ खो भगवा राजानं मागधं सेनियं बिम्बिसारं धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सितो समादपितो समुत्तेजितो सम्पहंसितो उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा भिक्खू पटिपुच्छि – ''सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू राजानम्पि पस्सित्वा न मत्तं जानित्वा नहायन्ती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा राजानम्पि पस्सित्वा न मत्तं जानित्वा नहायिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु ओरेनद्धमासं नहायेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३५८. तेन खो पन समयेन भिक्खू उण्हसमये परिळाहसमये कुक्कुच्चायन्ता न नहायन्ति, सेदगतेन गत्तेन सयन्ति। चीवरम्पि सेनासनम्पि दुस्सति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… अनुजानामि, भिक्खवे, उण्हसमये परिळाहसमये ओरेनद्धमासं नहायितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु ओरेनद्धमासं नहायेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। दियड्ढो मासो सेसो गिम्हानन्ति [गिम्हानं (इतिपि)] **वस्सानस्स पठमो मासो इच्चेते अड्ढतेय्यमासा उण्हसमयो परिळाहसमयो – अयं तत्थ समयो**''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३५९. तेन खो पन समयेन भिक्खू गिलाना होन्ति। गिलानपुच्छका भिक्खू गिलाने भिक्खू एतदवोचुं – ''कच्चावुसो, खमनीयं, कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मयं, आवुसो, ओरेनद्धमासं नहायाम, तेन नो फासु होति; इदानि पन ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न नहायाम, तेन नो न फासु होती''ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना ओरेनद्धमासं नहायितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु ओरेनद्धमासं नहायेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। दियड्ढो मासो सेसो गिम्हानन्ति [गिम्हानं (इतिपि)] **वस्सानस्स पठमो मासो इच्चेते अड्ढतेय्यमासा उण्हसमयो, परिळाहसमयो, गिलानसमयो – अयं तत्थ समयो**''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३६०. तेन खो पन समयेन भिक्खू नवकम्मं कत्वा कुक्कुच्चायन्ता न नहायन्ति। ते सेदगतेन गत्तेन सयन्ति। चीवरम्पि सेनासनम्पि दुस्सति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… अनुजानामि, भिक्खवे, कम्मसमये ओरेनद्धमासं नहायितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु ओरेनद्धमासं नहायेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। दियड्ढो मासो सेसो गिम्हानन्ति वस्सानस्स पठमो मासो इच्चेते अड्ढतेय्यमासा उण्हसमयो, परिळाहसमयो, गिलानसमयो, कम्मसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३६१. तेन खो पन समयेन भिक्खू अद्धानं गन्त्वा कुक्कुच्चायन्ता न नहायन्ति। ते सेदगतेन गत्तेन सयन्ति। चीवरम्पि सेनासनम्पि दुस्सति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे०… अनुजानामि, भिक्खवे, अद्धानगमनसमये ओरेनद्धमासं नहायितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु ओरेनद्धमासं नहायेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। दियड्ढो मासो सेसो गिम्हानन्ति वस्सानस्स पठमो मासो इच्चेते अड्ढतेय्यमासा उण्हसमयो, परिळाहसमयो, गिलानसमयो, कम्मसमयो, अद्धानगमनसमयो – अयं तत्थ समयो''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

३६२. तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू अज्झोकासे चीवरकम्मं करोन्ता सरजेन वातेन ओकिण्णा होन्ति। देवो च थोकं थोकं फुसायति। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता न नहायन्ति, किलिन्नेन गत्तेन सयन्ति। चीवरम्पि सेनासनम्पि दुस्सति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, वातवुट्ठिसमये ओरेनद्धमासं नहायितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३६३. **''यो पन भिक्खु ओरेनद्धमासं नहायेय्य, अञ्ञत्र समया, पाचित्तियं। तत्थायं समयो। दियड्ढो मासो सेसो गिम्हानन्ति वस्सानस्स पठमो मासो इच्चेते अड्ढतेय्यमासा उण्हसमयो, परिळाहसमयो, गिलानसमयो, कम्मसमयो, अद्धानगमनसमयो, वातवुट्ठिसमयो – अयं तत्थ समयो**''ति।

३६४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

ओरेनद्धमासन्ति ऊनकद्धमासं।

नहायेय्याति चुण्णेन वा मत्तिकाय वा नहायति, पयोगे पयोगे दुक्कटं। नहानपरियोसाने, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र समयाति ठपेत्वा समयं।

उण्हसमयो नाम दियड्ढो मासो सेसो गिम्हानं। **परिळाहसमयो** नाम वस्सानस्स पठमो मासो ''इच्चेते अड्ढतेय्यमासा उण्हसमयो परिळाहसमयो''ति नहायितब्बं।

गिलानसमयो नाम यस्स विना नहानेन न फासु होति। गिलानसमयोति नहायितब्बं।

कम्मसमयो नाम अन्तमसो परिवेणम्पि सम्मट्ठं होति। ''कम्मसमयो''ति नहायितब्बं।

अद्धानगमनसमयो नाम ''अद्धयोजनं गच्छिस्सामी''ति नहायितब्बं, गच्छन्तेन नहायितब्बं, गतेन नहायितब्बं।

वातवुट्ठिसमयो नाम भिक्खू सरजेन वातेन ओकिण्णा होन्ति, द्वे वा तीणि वा उदकफुसितानि काये पतितानि होन्ति। ''वातवुट्ठिसमयो''ति नहायितब्बं।

३६५. ऊनकद्धमासे ऊनकसञ्ञी, अञ्ञत्र समया, नहायति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ऊनकद्धमासे वेमतिको, अञ्ञत्र समया, नहायति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ऊनकद्धमासे अतिरेकसञ्ञी, अञ्ञत्र समया, नहायति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अतिरेकद्धमासे ऊनकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अतिरेकद्धमासे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अतिरेकद्धमासे अतिरेकसञ्ञी, अनापत्ति।

३६६. अनापत्ति समये, अद्धमासं नहायति, अतिरेकद्धमासं नहायति, पारं गच्छन्तो नहायति, सब्बपच्चन्तिमेसु

जनपदेसु, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

नहानसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. दुब्बण्णकरणसिक्खापदं

३६७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू च परिब्बाजका च साकेता सावत्थिं अद्धानमग्गप्पटिपन्ना होन्ति। अन्तरामग्गे चोरा निक्खमित्वा ते अच्छिन्दिंसु। सावत्थिया राजभटा निक्खमित्वा ते चोरे सभण्डे गहेत्वा भिक्खूनं सन्तिके दूतं पाहेसुं – ''आगच्छन्तु, भदन्ता, सकं सकं चीवरं सञ्जानित्वा गण्हन्तू''ति। भिक्खू न सञ्जानन्ति। ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता अत्तनो अत्तनो चीवरं न सञ्जानिस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा भिक्खूनं तदनुच्छविकं तदनुलोमिकं धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय...पे०... सद्धम्मट्ठितिया, विनयानुग्गहाय। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३६८. **''नवं पन भिक्खुना चीवरलाभेन तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं आदातब्बं – नीलं वा कद्दमं वा काळसामं वा। अनादा चे भिक्खु तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं नवं चीवरं परिभुञ्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३६९. **नवं** नाम अकतकप्पं वुच्चति।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं।

तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं आदातब्बन्ति अन्तमसो कुसग्गेनपि आदातब्बं।

नीलं नाम द्वे नीलानि – कंसनीलं, पलासनीलं।

कद्दमो नाम ओदको वुच्चति।

काळसामं नाम यंकिञ्चि काळसामकं [काळकं (सी० स्या०)]।

अनादा चे भिक्खु तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणन्ति अन्तमसो कुसग्गेनपि अनादियित्वा तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं नवं चीवरं परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३७०. अनादिन्ने अनादिन्नसञ्ञी परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनादिन्ने वेमतिको परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनादिन्ने आदिन्नसञ्ञी परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आदिन्ने अनादिन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। आदिन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। आदिन्ने आदिन्नसञ्ञी,

अनापत्ति।

३७१. अनापत्तिआदियित्वा परिभुञ्जति, कप्पो नट्ठो होति, कप्पकतोकासो जिण्णो होति, कप्पकतेन अकप्पकतं संसिब्बितं होति, अग्गळे अनुवाते परिभण्डे, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुब्बण्णकरणसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. विकप्पनसिक्खापदं

३७२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भातुनो सद्धिविहारिकस्स भिक्खुनो सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं [अपच्चुद्धारकं (सी॰ स्या॰)] परिभुञ्जति। अथ खो सो भिक्खु भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि – ''अयं, आवुसो, आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो मय्हं चीवरं सामं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भिक्खुस्स सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर त्वं, उपनन्द, भिक्खुस्स सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, भिक्खुस्स सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं परिभुञ्जिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३७३. **''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा सिक्खमानाय वा सामणेरस्स वा सामणेरिया वा सामं चीवरं विकप्पेत्वा अप्पच्चुद्धारणं** [अपच्चुद्धारकं (सी॰ स्या॰)] **परिभुञ्जेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

३७४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

सिक्खमाना नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा।

सामणेरो नाम दससिक्खापदिको।

सामणेरी नाम दससिक्खापदिका।

सामन्ति सयं विकप्पेत्वा।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं विकप्पनुपगं पच्छिमं।

विकप्पना नाम द्वे विकप्पना – सम्मुखाविकप्पना च परम्मुखाविकप्पना च।

सम्मुखाविकप्पना नाम ''इमं चीवरं तुय्हं विकप्पेमि इत्थन्नामस्स वा''ति।

परम्मुखाविकप्पना नाम ''इमं चीवरं विकप्पनत्थाय तुय्हं दम्मी''ति। तेन वत्तब्बो – ''को ते मित्तो वा सन्दिट्ठो वा''ति? ''इत्थन्नामो च इत्थन्नामो चा''ति। तेन वत्तब्बो – ''अहं तेसं दम्मि, तेसं सन्तकं परिभुञ्ज वा विस्सज्जेहि वा यथापच्चयं वा करोही''ति।

अप्पच्चुद्धारणं नाम तस्स वा अदिन्नं, तस्स वा अविस्ससन्तो परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३७५. अप्पच्चुद्धारणे अप्पच्चुद्धारणसञ्ञी परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अप्पच्चुद्धारणे वेमतिको परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अप्पच्चुद्धारणे अप्पच्चुद्धारणसञ्ञी परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधिट्ठेति वा विस्सज्जेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। पच्चुद्धारणे अप्पच्चुद्धारणसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पच्चुद्धारणे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पच्चुद्धारणे पच्चुद्धारणसञ्ञी, अनापत्ति।

३७६. अनापत्ति सो वा देति, तस्स वा विस्ससन्तो परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

विकप्पनसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. चीवरअपनिधानसिक्खापदं

३७७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सत्तरसवग्गिया भिक्खू असन्निहितपरिक्खारा होन्ति। छब्बग्गिया भिक्खू सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेन्ति। सत्तरसवग्गिया भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू एतदवोचुं – ''देथावुसो, अम्हाकं पत्तम्पि चीवरम्पी''ति। छब्बग्गिया भिक्खू हसन्ति, ते रोदन्ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, रोदथा''ति? ''इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू अम्हाकं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३७८. ''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स पत्तं वा चीवरं वा निसीदनं वा सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेय्य वा अपनिधापेय्य वा, अन्तमसो हसापेक्खोपि, पाचित्तिय''न्ति।

३७९. यो पनाति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

पत्तो नाम द्वे पत्ता – अयोपत्तो, मत्तिकापत्तो।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं, विकप्पनुपगं पच्छिमं।

निसीदनं नाम सदसं वुच्चति।

सूचिघरं नाम ससूचिकं वा असूचिकं वा।

कायबन्धनं नाम द्वे कायबन्धनानि – पट्टिका, सूकरन्तकं।

अपनिधेय्य वाति सयं अपनिधेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अपनिधापेय्य वाति अञ्ञं आणापेसि, आपत्ति पाचित्तियस्स। **अपनिधापेय्य वा** ति अय्यं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सकिं आणत्तो बहुकम्पि अपनिधेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अन्तमसो हसापेक्खोपीति कीळाधिप्पायो।

३८०. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी पत्तं वा चीवरं वा निसीदनं वा सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेति वा अपनिधापेति वा, अन्तमसो हसापेक्खोपि, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको…पे०… उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी पत्तं वा चीवरं वा निसीदनं वा सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेति वा अपनिधापेति वा, अन्तमसो हसापेक्खोपि, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञं परिक्खारं अपनिधेति वा अपनिधापेति वा, अन्तमसो हसापेक्खोपि, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नस्स पत्तं वा चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं अपनिधेति वा अपनिधापेति वा, अन्तमसो हसापेक्खोपि, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

३८१. अनापत्ति नहसाधिप्पायो, दुन्निक्खित्तं पटिसामेति, ''धम्मिं कथं कत्वा दस्सामी''ति पटिसामेति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चीवरअपनिधानसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

सुरापानवग्गो छट्ठो।

तस्सुद्दानं –

सुरा अङ्गुलि हासो च [तोयञ्च (इतिपि)], अनादरियञ्च भिंसनं।
जोतिनहानदुब्बण्णं, सामं अपनिधेन चाति॥

७. सप्पाणकवग्गो

१. सञ्चिच्चसिक्खापदं

३८२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी इस्सासो होति, काका चस्स अमनापा होन्ति। सो काके विज्झित्वा विज्झित्वा सीसं छिन्दित्वा सूले पटिपाटिया ठपेसि। भिक्खू एवमाहंसु – ''केनिमे, आवुसो, काका जीविता वोरोपिता''ति? ''मया, आवुसो। अमनापा मे काका''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा उदायी सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर त्वं, उदायि, सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३८३. **''यो पन भिक्खु सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३८४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सञ्चिच्चाति जानन्तो सञ्जानन्तो चेच्च अभिवितरित्वा वीतिक्कमो।

पाणो नाम तिरच्छानगतपाणो वुच्चति।

जीविता वोरोपेय्याति जीवितिन्द्रियं उपच्छिन्दति उपरोधेति सन्ततिं विकोपेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३८५. पाणे पाणसञ्ञी जीविता वोरोपेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पाणे वेमतिको जीविता वोरोपेति, आपत्ति दुक्कटस्स। पाणे अप्पाणसञ्ञी जीविता वोरोपेति, अनापत्ति। अप्पाणे पाणसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पाणे वेमितको, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पाणे अप्पाणसञ्ञी, अनापत्ति।

३८६. अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, नमरणाधिप्पायस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सञ्चिच्चसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. सप्पाणकसिक्खापदं

३८७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जिस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३८८. **''यो पन भिक्खु जानं सप्पाणकं उदकं परिभुञ्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३८९. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति। ''सप्पाणक''न्ति जानन्तो, ''परिभोगेन मरिस्सन्ती''ति जानन्तो परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३९०. सप्पाणके सप्पाणकसञ्ञी परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सप्पाणके वेमतिको परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सप्पाणके अप्पाणकसञ्ञी परिभुञ्जति, अनापत्ति। अप्पाणके सप्पाणकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पाणके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अप्पाणके अप्पाणकसञ्ञी, अनापत्ति।

३९१. अनापत्ति ''सप्पाणक''न्ति अजानन्तो, ''अप्पाणक''न्ति जानन्तो, ''परिभोगेन न मरिस्सन्ती''ति जानन्तो परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सप्पाणकसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. उक्कोटनसिक्खापदं

३९२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुनकम्माय उक्कोटेन्ति – ''अकतं कम्मं दुक्कटं कम्मं पुन कातब्बं कम्मं अनिहतं दुन्निहतं पुन निहनितब्ब''न्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुनकम्माय उक्कोटेस्सन्ती''ति ...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुनकम्माय उक्कोटेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुनकम्माय उक्कोटेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३९३. **''यो पन भिक्खु जानं यथाधम्मं निहताधिकरणं पुनकम्माय उक्कोटेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३९४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

यथाधम्मं नाम धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन कतं, एतं यथाधम्मं नाम।

अधिकरणं नाम चत्तारि अधिकरणानि – विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं।

पुनकम्माय उक्कोटेय्याति ''अकतं कम्मं दुक्कटं कम्मं पुनकातब्बं कम्मं अनिहतं दुन्निहतं पुन निहनितब्बं''ति उक्कोटेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

३९५. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी उक्कोटेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको उक्कोटेति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी उक्कोटेति, अनापत्ति। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, अनापत्ति।

३९६. अनापत्ति ''अधम्मेन वा वग्गेन वा न कम्मारहस्स वा कम्मं कत''न्ति जानन्तो उक्कोटेति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उक्कोटनसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. दुट्ठुल्लसिक्खापदं

३९७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा भातुनो सद्धिविहारिकस्स भिक्खुनो आरोचेसि – ''अहं, आवुसो, सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपन्नो। मा कस्सचि आरोचेही''ति। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा सङ्घं तस्सा आपत्तिया परिवासं याचि। तस्स सङ्घो तस्सा आपत्तिया परिवासं अदासि। सो परिवसन्तो तं भिक्खुं पस्सित्वा एतदवोच – ''अहं, आवुसो, सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा सङ्घं तस्सा आपत्तिया परिवासं याचिं, तस्स मे सङ्घो तस्सा आपत्तिया परिवासं अदासि, सोहं परिवसामि, वेदियामहं [वेदयामहं (स्या०)], आवुसो, वेदियती''ति मं आयस्मा धारेतू''ति।

''किं नु खो, आवुसो, यो अञ्ञोपि इमं आपत्तिं आपज्जति सोपि एवं करोती''ति? ''एवमावुसो''ति। ''अयं, आवुसो, आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा [आपज्जि (?)] सो मे आरोचेति मा कस्सचि आरोचेही''ति। ''किं पन त्वं, आवुसो, पटिच्छादेसी''ति? ''एवमावुसो''ति। अथ खो सो भिक्खु भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, भिक्खु, भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेसीति। ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

३९८. **''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स जानं दुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

३९९. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

जानाति नाम सामं वा जानाति अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

दुट्ठुल्ला नाम आपत्ति चत्तारि च पाराजिकानि तेरस च सङ्घादिसेसा।

पटिच्छादेय्याति ''इमं जानित्वा चोदेस्सन्ति, सारेस्सन्ति खुंसेस्सन्ति, वम्भेस्सन्ति, मङ्कुं करिस्सन्ति नारोचेस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४००. दुट्ठुल्लाय आपत्तिया दुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी पटिच्छादेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। दुट्ठुल्लाय आपत्तिया वेमतिको

पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दुट्ठुल्लाय आपत्तिया अदुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अदुट्ठुल्लं आपत्तिं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नस्स दुट्ठुल्लं वा अदुट्ठुल्लं वा अज्झाचारं पटिच्छादेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अदुट्ठुल्लाय आपत्तिया दुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अदुट्ठुल्लाय आपत्तिया वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अदुट्ठुल्लाय आपत्तिया अदुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४०१. अनापत्ति – ''सङ्घस्स भण्डनं वा कलहो वा विग्गहो वा विवादो वा भविस्सती''ति नारोचेति, ''सङ्घभेदो वा सङ्घराजि वा भविस्सती''ति नारोचेति, ''अयं कक्खळो फरुसो जीवितन्तरायं वा ब्रह्मचरियन्तरायं वा करिस्सती''ति नारोचेति, अञ्ञे पतिरूपे भिक्खू अपस्सन्तो नारोचेति, नछादेतुकामो नारोचेति, ''पञ्ञायिस्सति सकेन कम्मेना''ति नारोचेति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुट्ठुल्लसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. ऊनवीसतिवस्ससिक्खापदं

४०२. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। [इदं वत्थु महाव० ९९] तेन खो पन समयेन राजगहे सत्तरसवग्गिया दारका सहायका होन्ति। उपालिदारको तेसं पामोक्खो होति। अथ खो उपालिस्स मातापितूनं एतदहोसि – ''केन नु खो उपायेन उपालि अम्हाकं अच्चयेन सुखञ्च जीवेय्य न च किलमेय्या''ति? अथ खो उपालिस्स मातापितूनं एतदहोसि – ''सचे खो उपालि लेखं सिक्खेय्य, एवं खो उपालि अम्हाकं अच्चयेन सुखञ्च जीवेय्य, न च किलमेय्या''ति। अथ खो उपालिस्स मातापितूनं एतदहोसि – ''सचे खो उपालि लेखं सिक्खिस्सति, अङ्गुलियो दुक्खा भविस्सन्ति। सचे खो उपालि गणनं सिक्खेय्य, एवं खो उपालि अम्हाकं अच्चयेन सुखञ्च जीवेय्य न च किलमेय्या''ति। अथ खो उपालिस्स मातापितूनं एतदहोसि – ''सचे खो उपालि गणनं सिक्खिस्सति, उरस्स दुक्खो भविस्सति। सचे खो उपालि रूपं सिक्खेय्य, एवं खो उपालि अम्हाकं अच्चयेन सुखञ्च जीवेय्य न च किलमेय्या''ति। अथ खो उपालिस्स मातापितूनं एतदहोसि – ''सचे खो उपालि रूपं सिक्खिस्सति, अक्खीनि दुक्खा भविस्सन्ति। इमे खो समणा सक्यपुत्तिया सुखसीला सुखसमाचारा सुभोजनानि भुञ्जित्वा निवातेसु सयनेसु सयन्ति। सचे खो उपालि समणेसु सक्यपुत्तियेसु पब्बजेय्य, एवं खो उपालि अम्हाकं अच्चयेन सुखञ्च जीवेय्य, न च किलमेय्या''ति।

अस्सोसि खो उपालिदारको मातापितूनं इमं कथासल्लापं। अथ खो उपालिदारको येन ते दारका तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा ते दारके एतदवोच – ''एथ मयं, अय्या, समणेसु सक्यपुत्तियेसु पब्बजिस्सामा''ति। ''सचे खो त्वं, अय्य, पब्बजिस्ससि, एवं मयम्पि पब्बजिस्सामा''ति। अथ खो ते दारका एकमेकस्स मातापितरो उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – ''अनुजानाथ मं अगारस्मा अनगारियं पब्बज्जाया''ति। अथ खो तेसं दारकानं मातापितरो – ''सब्बेपिमे दारका समानच्छन्दा कल्याणाधिप्पाया''ति अनुजानिंसु। ते भिक्खू उपसङ्कमित्वा पब्बज्जं याचिंसु। ते भिक्खू पब्बाजेसुं उपसम्पादेसुं। ते रत्तिया पच्चूससमयं पच्चुट्ठाय रोदन्ति – ''यागुं देथ, भत्तं देथ, खादनीयं देथा''ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''आगमेथ, आवुसो, याव रत्ति विभायति। सचे यागु भविस्सति, पिविस्सथ। सचे भत्तं भविस्सति, भुञ्जिस्सथ। सचे खादनीयं भविस्सति, खादिस्सथ। नो चे भविस्सति यागु वा भत्तं वा खादनीयं वा, पिण्डाय चरित्वा भुञ्जिस्सथा''ति। एवम्पि खो ते भिक्खू भिक्खूहि वुच्चमाना रोदन्तियेव – ''यागुं देथ, भत्तं देथ, खादनीयं देथा''ति। सेनासनं ऊहदन्तिपि उम्मिहन्तिपि।

अस्सोसि खो भगवा रत्तिया पच्चूससमयं पच्चुट्ठाय दारकसद्दं। सुत्वान आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – "किं नु खो सो, आनन्द, दारकसद्दो"ति? अथ खो आयस्मा आनन्दो भगवतो एतमत्थं आरोचेसि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा भिक्खू पटिपुच्छि – "सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू जानं ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेन्ती"ति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा जानं ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेस्सन्ति! ऊनकवीसतिवस्सो, भिक्खवे, पुग्गलो अक्खमो होति सीतस्स उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डंसमकसवातातपसरीसपसम्फस्सानं दुरुत्तानं दुरागतानं वचनपथानं उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अनधिवासकजातिको होति। वीसतिवस्सोव खो, भिक्खवे, पुग्गलो खमो होति सीतस्स उण्हस्स...पे०... पाणहरानं अधिवासकजातिको होति। नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४०३. **"यो पन भिक्खु जानं ऊनवीसतिवस्सं पुग्गलं उपसम्पादेय्य, सो च पुग्गलो अनुपसम्पन्नो, ते च भिक्खू गारय्हा, इदं तस्मिं पाचित्तिय**"न्ति।

४०४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

ऊनवीसतिवस्सो नाम अप्पत्तवीसतिवस्सो।

"उपसम्पादेस्सामी"ति गणं वा आचरियं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति [सम्मनति (क०)], आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायस्स आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरियस्स च आपत्ति दुक्कटस्स।

४०५. ऊनवीसतिवस्से ऊनवीसतिवस्ससञ्ञी उपसम्पादेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ऊनवीसतिवस्से वेमतिको उपसम्पादेति, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनवीसतिवस्से परिपुण्णवीसतिवस्ससञ्ञी उपसम्पादेति, अनापत्ति। परिपुण्णवीसतिवस्से ऊनवीसतिवस्ससञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपुण्णवीसतिवस्से वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपुण्णवीसतिवस्से परिपुण्णवीसतिवस्ससञ्ञी, अनापत्ति।

४०६. अनापत्ति ऊनवीसतिवस्सं परिपुण्णवीसतिवस्ससञ्ञी उपसम्पादेति, परिपुण्णवीसतिवस्सं परिपुण्णवीसतिवस्ससञ्ञी उपसम्पादेति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ऊनवीसतिवस्ससिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. थेय्यसत्थसिक्खापदं

४०७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो सत्थो राजगहा पटियालोकं गन्तुकामो होति। अञ्ञतरो भिक्खु ते मनुस्से एतदवोच – "अहम्पायस्मन्तेहि सद्धिं गमिस्सामी"ति। "मयं खो, भन्ते, सुङ्कं परिहरिस्सामा"ति। "पजानाथावुसो"ति। अस्सोसुं खो कम्मिया [कम्मिका (सी०

स्या०)] – ''सत्थो किर सुङ्कं परिहरिस्सती''ति। ते मग्गे परियुट्ठिंसु। अथ खो ते कम्मिका तं सत्थं गहेत्वा अच्छिन्दित्वा तं भिक्खुं एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, भन्ते, जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं गच्छसी''ति? पलिबुन्धेत्वा मुञ्चिंसु। अथ खो सो भिक्खु सावत्थिं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिस्सती''ति…पे॰… सच्चं किर त्वं, भिक्खु, जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४०८. **''यो पन भिक्खु जानं थेय्यसत्थेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जेय्य, अन्तमसो गामन्तरम्पि, पाचित्तिय''**न्ति।

४०९. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

थेय्यसत्थो नाम चोरा कतकम्मा वा होन्ति अकतकम्मा वा, राजानं वा थेय्यं गच्छन्ति सुङ्कं वा परिहरन्ति।

सद्धिन्ति एकतो।

संविधायाति – ''गच्छामावुसो, गच्छाम भन्ते; गच्छाम भन्ते, गच्छामावुसो, अज्ज वा हिय्यो वा परे वा गच्छामा''ति संविदहति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अन्तमसो गामन्तरम्पीति कुक्कुटसम्पाते गामे गामन्तरे गामन्तरे आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्ञे अद्धयोजने अद्धयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

४१०. थेय्यसत्थे थेय्यसत्थसञ्ञी संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, आपत्ति पाचित्तियस्स। थेय्यसत्थे वेमतिको संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, आपत्ति दुक्कटस्स। थेय्यसत्थे अथेय्यसत्थसञ्ञी संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, अनापत्ति। भिक्खु संविदहति, मनुस्सा न संविदहन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। अथेय्यसत्थे थेय्यसत्थसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अथेय्यसत्थे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अथेय्यसत्थे अथेय्यसत्थसञ्ञी अनापत्ति।

४११. अनापत्ति असंविदहित्वा गच्छति, मनुस्सा संविदहन्ति भिक्खु न संविदहति, विसङ्केतेन गच्छति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

थेय्यसत्थसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. संविधानसिक्खापदं

४१२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

अञ्ञतरो भिक्खु कोसलेसु जनपदे सावत्थिं गच्छन्तो अञ्ञतरेन गामद्वारेन अतिक्कमति। अञ्ञतरा इत्थी सामिकेन सह भण्डित्वा गामतो निक्खमित्वा तं भिक्खुं पस्सित्वा एतदवोच – ''कहं, भन्ते, अय्यो गमिस्सती''ति? ''सावत्थिं खो अहं, भगिनि, गमिस्सामी''ति। ''अहं अय्येन सद्धिं गमिस्सामी''ति। ''एय्यासि, भगिनी''ति। अथ खो तस्सा इत्थिया सामिको गामतो निक्खमित्वा मनुस्से पुच्छि – ''अपाय्यो [अपय्या (सी॰ स्या॰)] एवरूपिं इत्थिं पस्सेय्याथा''ति? ''एसाय्यो, पब्बजितेन सह गच्छती''ति। अथ खो सो पुरिसो अनुबन्धित्वा तं भिक्खुं गहेत्वा आकोटेत्वा मुञ्चि। अथ खो सो भिक्खु अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले पधूपेन्तो निसीदि। अथ खो सा इत्थी तं पुरिसं एतदवोच – ''नाय्यो सो भिक्खु मं निप्पातेसि; अपिच, अहमेव तेन भिक्खुना सद्धिं गच्छामि; अकारको सो भिक्खु; गच्छ, नं खमापेही''ति। अथ खो सो पुरिसो तं भिक्खुं खमापेसि। अथ खो सो भिक्खु सावत्थिं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा... पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर त्वं, भिक्खु, मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं, उद्दिसेय्याथ –

४१३. **''यो पन भिक्खु मातुगामेन सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जेय्य, अन्तमसो गामन्तरम्पि, पाचित्तिय**''न्ति।

४१४. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

मातुगामो नाम मनुस्सित्थी, न यक्खी न पेती न तिरच्छानगता विञ्ञू पटिबला सुभासितदुब्भासितं दुट्ठुल्लादुट्ठुल्लं आजानितुं।

सद्धिन्ति एकतो।

संविधायाति – ''गच्छाम भगिनि, गच्छामाय्य, गच्छामाय्य, गच्छाम भगिनि, अज्ज वा हिय्यो वा परे वा गच्छामा''ति संविदहति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अन्तमसो गामन्तरम्पीति कुक्कुटसम्पाते गामे गामन्तरे गामन्तरे आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्ञे अद्धयोजने अद्धयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

४१५. मातुगामे मातुगामसञ्ञी संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे वेमतिको संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, आपत्ति पाचित्तियस्स। मातुगामे अमातुगामसञ्ञी संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, आपत्ति पाचित्तियस्स।

भिक्खु संविदहति मातुगामो न संविदहति, आपत्ति दुक्कटस्स। यक्खिया वा पेतिया पण्डकेन वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहित्थिया वा सद्धिं संविधाय एकद्धानमग्गं पटिपज्जति, अन्तमसो गामन्तरम्पि, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे मातुगामसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अमातुगामे अमातुगामसञ्ञी, अनापत्ति।

४१६. अनापत्ति असंविदहित्वा गच्छति, मातुगामो संविदहति भिक्खु न संविदहति, विसङ्केतेन गच्छति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

संविधानसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. अरिट्ठसिक्खापदं

४१७. [इदं वत्थु चूळव० ६५; म० नि० १.२३४] तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अरिट्ठस्स नाम भिक्खुनो गद्धबाधिपुब्बस्स [गन्धबाधिपुब्बस्स (स्या० क०)] एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं होति – ''तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया''ति। अस्सोसुं खो सम्बहुला भिक्खू – ''अरिट्ठस्स किर नाम भिक्खुनो गद्धबाधिपुब्बस्स एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति। अथ खो ते भिक्खू येन अरिट्ठो भिक्खु गद्धबाधिपुब्बो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं एतदवोचुं – ''सच्चं किर ते, आवुसो अरिट्ठ, एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'ति? ''एवंब्याखो अहं, आवुसो, भगवता धम्मं देसितं आजानामि – 'यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति।

''मा, आवुसो अरिट्ठ, एवं अवच। मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि। न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं [अब्भाचिक्खनं (इतिपि)]। न हि भगवा एवं वदेय्य। अनेकपरियायेनावुसो अरिट्ठ, अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाय। अप्पस्सादा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अट्ठिकङ्कलूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। मंसपेसूपमा कामा वुत्ता भगवता...पे०... तिणुक्कूपमा कामा वुत्ता भगवता... अङ्गारकासूपमा कामा वुत्ता भगवता... सुपिनकूपमा कामा वुत्ता भगवता... याचितकूपमा कामा वुत्ता भगवता... रुक्खफलूपमा कामा वुत्ता भगवता... असिसूनूपमा कामा वुत्ता भगवता... सत्तिसूलूपमा कामा वुत्ता भगवता... सप्पसिरूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो''ति।

एवम्पि खो अरिट्ठो भिक्खु गद्धबाधिपुब्बो तेहि भिक्खूहि वुच्चमानो तथेव तं पापकं दिट्ठिगतं थामसा परामासा अभिनिविस्स वोहरति – ''एवंब्याखो अहं, आवुसो, भगवता धम्मं देसितं आजानामि, – 'यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति। यतो च खो ते भिक्खू नासक्खिंसु अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं एतस्मा पापका दिट्ठिगता विवेचेतुं, अथ खो ते भिक्खू येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं पटिपुच्छि – ''सच्चं किर ते, अरिट्ठ, एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति? ''एवंब्याखो अहं, भन्ते, भगवता धम्मं देसितं आजानामि – 'यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति।

कस्स नु खो नाम त्वं, मोघपुरिस, मया एवं धम्मं देसितं आजानासि? ननु मया, मोघपुरिस, अनेकपरियायेन अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाय। अप्पस्सादा कामा वुत्ता मया बहुदुक्खा

बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अट्ठिकङ्कलूपमा कामा वुत्ता मया...पे०... मंसपेसूपमा कामा वुत्ता मया... तिणुक्कूपमा कामा वुत्ता मया... अङ्गारकासूपमा कामा वुत्ता मया... सुपिनकूपमा कामा वुत्ता मया... याचितकूपमा कामा वुत्ता मया... रुक्खफलूपमा कामा वुत्ता मया... असिसूनूपमा कामा वुत्ता मया... सत्तिसूलूपमा कामा वुत्ता मया... सप्पसिरूपमा कामा वुत्ता मया बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अथ च पन त्वं, मोघपुरिस, अत्तना दुग्गहितेन अम्हे चेव अब्भाचिक्खसि, अत्तानञ्च खणसि, बहुञ्च अपुञ्ञं पसवसि। तञ्हि ते, मोघपुरिस, भविस्सति दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय। नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०...। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४१८. ''यो पन भिक्खु एवं वदेय्य – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'ति सो भिक्खु भिक्खूहि एवमस्स वचनीयो – 'मायस्मा एवं अवच, मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि, न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं, न हि भगवा एवं वदेय्य, अनेकपरियायेनावुसो, अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता, अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाया'ति। एवञ्च [एवञ्च पन (क०)] सो भिक्खु भिक्खूहि वुच्चमानो तथेव पग्गण्हेय्य, सो भिक्खु भिक्खूहि यावततियं समनुभासितब्बो तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियञ्चे समनुभासियमानो तं पटिनिस्सज्जेय्य, इच्चेतं कुसलं, नो चे पटिनिस्सज्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

४१९. यो पनाति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

एवं वदेय्याति – ''तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया''ति।

सो भिक्खूति यो सो एवंवादी भिक्खु।

भिक्खूहीति अञ्ञेहि भिक्खूहि। ये पस्सन्ति ये सुणन्ति तेहि वत्तब्बो – ''मायस्मा एवं अवच, मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि, न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं, न हि भगवा एवं वदेय्य, अनेकपरियायेनावुसो अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाया''ति। दुतियम्पि वत्तब्बो। ततियम्पि वत्तब्बो। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सो भिक्खु **सङ्घमज्झम्पि** आकड्ढित्वा वत्तब्बो – ''मायस्मा एवं अवच, मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि, न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं, न हि भगवा एवं वदेय्य, अनेकपरियायेनावुसो अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाया''ति। दुतियम्पि वत्तब्बो। ततियम्पि वत्तब्बो। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं। नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सो भिक्खु समनुभासितब्बो। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बो। ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

४२०. ''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। इत्थन्नामस्स भिक्खुनो एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'ति। सो तं दिट्ठिं न पटिनिस्सज्जति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुं समनुभासेय्य – तस्सा दिट्ठिया पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

"सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। इत्थन्नामस्स भिक्खुनो एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'ति। सो तं दिट्ठिं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुं समनुभासति तस्सा दिट्ठिया पटिनिस्सग्गाय। यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो समनुभासना, तस्सा दिट्ठिया पटिनिस्सग्गाय, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

"दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰... ततियम्पि एतमत्थं वदामि – "सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। इत्थन्नामस्स भिक्खुनो एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'ति। सो तं दिट्ठिं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुं समनुभासति तस्सा दिट्ठिया पटिनिस्सग्गाय। यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो समनुभासना, तस्सा दिट्ठिया पटिनिस्सग्गाय, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

"समनुभट्ठो सङ्घेन इत्थन्नामो भिक्खु, तस्सा दिट्ठिया पटिनिस्सग्गाय। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी"ति।

ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

४२१. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४२२. अनापत्ति असमनुभासन्तस्स, पटिनिस्सज्जन्तस्स, उम्मत्तकस्साति।

अरिट्ठसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. उक्खित्तसम्भोगसिक्खापदं

४२३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू जानं तथावादिना अरिट्ठेन भिक्खुना [भिक्खुना गद्धबाधिपुब्बेन (?)] अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जन्तिपि संवसन्तिपि सहापि सेय्यं कप्पेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू जानं तथावादिना अरिट्ठेन भिक्खुना [भिक्खुना गद्धबाधिपुब्बेन (?)] अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जिस्सन्तिपि संवसिस्सन्तिपि सहापि सेय्यं कप्पेस्सन्तीति...पे॰... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, जानं तथावादिना अरिट्ठेन भिक्खुना [भिक्खुना गद्धबाधिपुब्बेन (?)] अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जथापि संवसथापि सहापि सेय्यं कप्पेथाति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, जानं तथावादिना अरिट्ठेन भिक्खुना [भिक्खुना गद्धबाधिपुब्बने (?)] अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जिस्सथापि संवसिस्सथापि सहापि सेय्यं कप्पेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४२४. **''यो पन भिक्खु जानं तथावादिना भिक्खुना अकटानुधम्मेन तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जेय्य वा संवसेय्य वा सह वा सेय्यं कप्पेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४२५. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

तथावादिनाति – ''तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया''ति एवं वादिना।

अकटानुधम्मो नाम उक्खित्तो अनोसारितो।

तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिन्ति एतं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं।

सम्भुञ्जेय्य वाति सम्भोगो नाम द्वे सम्भोगा – आमिससम्भोगो च धम्मसम्भोगो च। **आमिससम्भोगो** नाम आमिसं देति वा पटिग्गण्हाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। **धम्मसम्भोगो** नाम उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा, पदेन उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा, पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स। अक्खराय उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचित्तियस्स।

संवसेय्य वाति उक्खित्तकेन सद्धिं उपोसथं वा पवारणं वा सङ्घकम्मं वा करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सह वा सेय्यं कप्पेय्याति एकच्छन्ने उक्खित्तके निपन्ने भिक्खु निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु निपन्ने उक्खित्तको निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उट्ठहित्वा पुनप्पुनं निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४२६. उक्खित्तके उक्खित्तकसञ्ञी सम्भुञ्जति वा संवसति वा सह वा सेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उक्खित्तके वेमतिको सम्भुञ्जति वा संवसति वा सह वा सेय्यं कप्पेति, आपत्ति दुक्कटस्स। उक्खित्तके अनुक्खित्तकसञ्ञी सम्भुञ्जति वा संवसति वा सह वा सेय्यं कप्पेति, अनापत्ति। अनुक्खित्तके उक्खित्तकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुक्खित्तके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुक्खित्तके अनुक्खित्तकसञ्ञी, अनापत्ति।

४२७. अनापत्ति अनुक्खित्तोति जानाति, उक्खित्तो ओसारितोति जानाति, उक्खित्तो तं दिट्ठिं पटिनिस्सट्ठोति जानाति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उक्खित्तसम्भोगसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. कण्टकसिक्खापदं

४२८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन कण्टकस्स [कण्डकस्स (स्या० क०)] नाम समणुद्देसस्स एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं होति – ''तथाहं भगवता धम्मं

देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया''ति। अस्सोसुं खो सम्बहुला भिक्खू कण्टकस्स नाम किर समणुद्देसस्स एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – ''तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया''ति। अथ खो ते भिक्खू येन कण्टको समणुद्देसो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा कण्टकं समणुद्देसं एतदवोचुं – ''सच्चं किर ते, आवुसो कण्टक, एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा ये'मे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति? ''एवंब्याखो अहं, भन्ते, भगवता धम्मं देसितं आजानामि – 'यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति।

मा, आवुसो कण्टक, एवं अवच। मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि। न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं। न हि भगवा एवं वदेय्य। अनेकपरियायेन, आवुसो कण्टक, अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाय। अप्पस्सादा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो...पे०... एवम्पि खो कण्टको समणुद्देसो तेहि भिक्खूहि वुच्चमानो तथेव तं पापकं दिट्ठिगतं थामसा परामासा अभिनिविस्स वोहरति – ''एवंब्याखो अहं, भन्ते, भगवता धम्मं देसितं आजानामि – 'यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति।

यतो च खो ते भिक्खू नासक्खिंसु कण्टकं समणुद्देसं एतस्मा पापका दिट्ठिगता विवेचेतुं, अथ खो ते भिक्खू येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा कण्टकं समणुद्देसं पटिपुच्छि – ''सच्चं किर ते, कण्टक, एवरूपं पापकं दिट्ठिगतं उप्पन्नं – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति? ''एवंब्याखो अहं, भन्ते, भगवता धम्मं देसितं आजानामि – 'यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'''ति।

''कस्स नु खो नाम त्वं, मोघपुरिस, मया एवं धम्मं देसितं आजानासि? ननु मया, मोघपुरिस, अनेकपरियायेन अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता, अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाय? अप्पस्सादा कामा वुत्ता मया बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अट्ठिकङ्कलूपमा कामा वुत्ता मया...पे०... सप्पसिरूपमा कामा वुत्ता मया बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अथ च पन त्वं, मोघपुरिस, अत्तना दुग्गहितेन अम्हे चेव अब्भाचिक्खसि अत्तानञ्च खणसि बहुञ्च अपुञ्ञं पसवसि। तञ्हि ते, मोघपुरिस, भविस्सति दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय। नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्ताया''ति। विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, सङ्घो कण्टकं समणुद्देसं नासेतु। एवञ्च पन, भिक्खवे, नासेतब्बो – अज्जतग्गे ते, आवुसो कण्टक, न चेव सो भगवा सत्था अपदिसितब्बो। यम्पि चञ्ञे समणुद्देसा लभन्ति भिक्खूहि सद्धिं दिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं सापि ते नत्थि। चर पिरे विनस्सा''ति। अथ खो सङ्घो कण्टकं समणुद्देसं नासेसि।

तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू जानं तथानासितं कण्टकं समणुद्देसं उपलापेन्तिपि उपट्ठापेन्तिपि सम्भुञ्जन्तिपि सहापि सेय्यं कप्पेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू जानं तथानासितं कण्टकं समणुद्देसं उपलापेस्सन्तिपि उपट्ठापेस्सन्तिपि सम्भुञ्जिस्सन्तिपि सहापि सेय्यं कप्पेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, जानं तथानासितं कण्टकं समणुद्देसं उपलापेथापि उपट्ठापेथापि

सम्भुञ्जथापि सहापि सेय्यं कप्पेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, जानं तथानासितं कण्टकं समणुद्देसं उपलापेस्सथापि उपट्ठापेस्सथापि सम्भुञ्जिस्सथापि सहापि सेय्यं कप्पेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४२९. **''समणुद्देसोपि चे एवं वदेय्य – 'तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया'ति, सो समणुद्देसो भिक्खूहि एवमस्स वचनीयो – 'मावुसो समणुद्देस, एवं अवच, मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि, न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं, न हि भगवा एवं वदेय्य। अनेकपरियायेनावुसो समणुद्देस, अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाया'ति। एवञ्च [एवञ्च पन (क॰)] सो समणुद्देसो भिक्खूहि वुच्चमानो तथेव पग्गण्हेय्य, सो समणुद्देसो भिक्खूहि एवमस्स वचनीयो – 'अज्जतग्गे ते, आवुसो समणुद्देस, न चेव सो भगवा सत्था अपदिसितब्बो। यम्पि चञ्ञे समणुद्देसा लभन्ति भिक्खूहि सद्धिं दिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं सापि ते नत्थि। चर पिरे विनस्सा'ति। यो पन भिक्खु जानं तथानासितं समणुद्देसं उपलापेय्य वा उपट्ठापेय्य वा सम्भुञ्जेय्य वा सह वा सेय्यं कप्पेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४३०. **समणुद्देसो** नाम सामणेरो वुच्चति।

एवं वदेय्याति – ''तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा येमे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता, ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया''ति।

सो समणुद्देसोति यो सो एवंवादी समणुद्देसो।

भिक्खूहीति अञ्ञेहि भिक्खूहि, ये पस्सन्ति ये सुणन्ति तेहि वत्तब्बो – ''मा, आवुसो समणुद्देस, एवं अवच। मा भगवन्तं अब्भाचिक्खि। न हि साधु भगवतो अब्भक्खानं। न हि भगवा एवं वदेय्य। अनेकपरियायेनावुसो समणुद्देस, अन्तरायिका धम्मा अन्तरायिका वुत्ता भगवता। अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाया''ति। दुतियम्पि वत्तब्बो… ततियम्पि वत्तब्बो…पे॰… सचे पटिनिस्सज्जति इच्चेतं कुसलं, नो चे पटिनिस्सज्जति सो समणुद्देसो भिक्खूहि एवमस्स वचनीयो – ''अज्जतग्गे ते, आवुसो समणुद्देस, न चेव सो भगवा सत्था अपदिसितब्बो। यम्पि चञ्ञे समणुद्देसा लभन्ति भिक्खूहि सद्धिं दिरत्ततिरत्तं सहसेय्यं सापि ते नत्थि। चर पिरे विनस्सा''ति।

यो पनाति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

तथानासितन्ति एवं नासितं।

समणुद्देसो नाम सामणेरो वुच्चति।

उपलापेय्य वाति तस्स पत्तं वा चीवरं वा उद्देसं वा परिपुच्छं वा दस्सामीति उपलापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उपट्ठापेय्य वाति तस्स चुण्णं वा मत्तिकं वा दन्तकट्ठं वा मुखोदकं वा सादियति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सम्भुञ्जेय्य वाति सम्भोगो नाम द्वे सम्भोगा – आमिससम्भोगो च धम्मसम्भोगो च। **आमिससम्भोगो** नाम आमिसं देति वा पटिग्गण्हाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। **धम्मसम्भोगो** नाम उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा, पदेन उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा, पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स। अक्खराय उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचित्तियस्स।

सह वा सेय्यं कप्पेय्याति एकच्छन्ने नासितके समणुद्देसे निपन्ने भिक्खु निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खु निपन्ने नासितको समणुद्देसो निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उट्ठहित्वा पुनप्पुनं निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४३१. नासितके नासितकसञ्ञी उपलापेति वा उपट्ठापेति वा सम्भुञ्जति वा सह वा सेय्यं कप्पेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। नासितके वेमतिको उपलापेति वा उपट्ठापेति वा सम्भुञ्जति वा सह वा सेय्यं कप्पेति, आपत्ति दुक्कटस्स। नासितके अनासितकसञ्ञी उपलापेति वा उपट्ठापेति वा सम्भुञ्जति वा सह वा सेय्यं कप्पेति, अनापत्ति। अनासितके नासितकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनासितके वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनासितके अनासितकसञ्ञी, अनापत्ति।

४३२. अनापत्ति अनासितकोति जानाति, तं दिट्ठिं पटिनिस्सट्ठोति जानाति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

कण्टकसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

सप्पाणकवग्गो सत्तमो।

तस्सुद्दानं –

सञ्चिच्चवधसप्पाणं, उक्कोटं दुट्ठुल्लछादनं।
ऊनवीसति सत्थञ्च, संविधानं अरिट्ठकं।
उक्खित्तं कण्टकञ्चेव, दस सिक्खापदा इमेति॥

८. सहधम्मिकवग्गो

१. सहधम्मिकसिक्खापदं

४३३. तेन समयेन बुद्धो भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा छन्नो अनाचारं आचरति। भिक्खू एवमाहंसु – ''मावुसो छन्न, एवरूपं अकासि। नेतं कप्पती''ति। सो एवं वदेति – ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छामी''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा छन्नो भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो एवं वक्खति – न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छामी''ति…पे॰… सच्चं किर त्वं, छन्न, भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो एवं वदेसि – ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छामी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम त्वं,

मोघपुरिस, भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो एवं वक्खसि – ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छामी''ति। नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४३४. **''यो पन भिक्खु भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो एवं वदेय्य – 'न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छामी'ति, पाचित्तियं। सिक्खमानेन, भिक्खवे, भिक्खुना अञ्ञातब्बं परिपुच्छितब्बं परिपञ्हितब्बं। अयं तत्थ सामीची**''ति।

४३५. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खूहीति अञ्ञेहि भिक्खूहि।

सहधम्मिकं नाम यं भगवता पञ्ञत्तं सिक्खापदं एतं सहधम्मिकं नाम। तेन वुच्चमानो एवं वदेति [वदेय्य (क॰)] – ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं परिपुच्छामी''ति [इमानि पदानि स्या॰ पोत्थके न दिस्सन्ति]। पण्डितं ब्यत्तं [इमानि पदानि स्या॰ पोत्थके न दिस्सन्ति] मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं परिपुच्छामीति भणति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४३६. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी एवं वदेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको एवं वदेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी एवं वदेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अपञ्ञत्तेन वुच्चमानो – ''इदं न सल्लेखाय न धुतत्थाय न पासादिकताय न अपचयाय न वीरियारम्भाय संवत्तती''ति एवं वदेति, ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं पण्डितं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं परिपुच्छामी''ति भणति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनुपसम्पन्नेन पञ्ञत्तेन वा अपञ्ञत्तेन वा वुच्चमानो – ''इदं न सल्लेखाय न धुतत्थाय न पासादिकताय न अपचयाय न वीरियारम्भाय संवत्तती''ति एवं वदेति, ''न तावाहं, आवुसो, एतस्मिं सिक्खापदे सिक्खिस्सामि याव न अञ्ञं भिक्खुं ब्यत्तं विनयधरं पण्डितं मेधाविं बहुस्सुतं धम्मकथिकं परिपुच्छामी''ति भणति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

सिक्खमानेनाति सिक्खितुकामेन।

अञ्ञातब्बन्ति जानितब्बं।

परिपुच्छितब्बन्ति ''इदं, भन्ते, कथं; इमस्स वा क्वत्थो''ति?

परिपञ्हितब्बन्ति चिन्तेतब्बं तुलयितब्बं।

अयं तत्थ सामीचीति अयं तत्थ अनुधम्मता।

४३७. अनापत्ति ''जानिस्सामि सिक्खिस्सामी''ति भणति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सहधम्मिकसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. विलेखनसिक्खापदं

४३८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। [इदं वत्थु चूळव० ३२०] तेन खो पन समयेन भगवा भिक्खूनं अनेकपरियायेन विनयकथं कथेति, विनयस्स वण्णं भासति, विनयपरियत्तिया वण्णं भासति, आदिस्स आदिस्स आयस्मतो उपालिस्स वण्णं भासति। भिक्खूनं एतदहोसि [भिक्खू भगवा (स्या० क०)] – ''भगवा खो अनेकपरियायेन विनयकथं कथेति, विनयस्स वण्णं भासति, विनयपरियत्तिया वण्णं भासति, आदिस्स आदिस्स आयस्मतो उपालिस्स वण्णं भासति। हन्द मयं, आवुसो, आयस्मतो उपालिस्स सन्तिके विनयं परियापुणामा''ति, ते च बहू भिक्खू थेरा च नवा च मज्झिमा च आयस्मतो उपालिस्स सन्तिके विनयं परियापुणन्ति।

अथ खो छब्बग्गियानं भिक्खूनं एतदहोसि – ''एतरहि खो, आवुसो, बहू भिक्खू थेरा च नवा च मज्झिमा च आयस्मतो उपालिस्स सन्तिके विनयं परियापुणन्ति। सचे इमे विनये पकतञ्ञुनो भविस्सन्ति अम्हे येनिच्छकं यदिच्छकं यावदिच्छकं आकड्ढिस्सन्ति परिकड्ढिस्सन्ति। हन्द मयं, आवुसो, विनयं विवण्णेमा''ति। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खू उपसङ्कमित्वा एवं वदन्ति – ''किं पनिमेहि खुद्दानुखुद्दकेहि सिक्खापदेहि उद्दिट्ठेहि, यावदेव कुक्कुच्चाय विहेसाय विलेखाय संवत्तन्ती''ति! ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू विनयं विवण्णेस्सन्तीति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, विनयं विवण्णेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, विनयं विवण्णेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४३९. **''यो पन भिक्खु पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वदेय्य – 'किं पनिमेहि खुद्दानुखुद्दकेहि सिक्खापदेहि उद्दिट्ठेहि, यावदेव कुक्कुच्चाय विहेसाय विलेखाय संवत्तन्ती'ति, सिक्खापदविवण्णके पाचित्तिय''**न्ति।

४४०. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

पातिमोक्खे उद्दिस्समानेति उद्दिसन्ते वा उद्दिसापेन्ते वा सज्झायं वा करोन्ते।

एवं वदेय्याति – ''किं पनिमेहि खुद्दानुखुद्दकेहि सिक्खापदेहि उद्दिट्ठेहि, यावदेव कुक्कुच्चाय विहेसाय विलेखाय संवत्तन्तीति। ''ये इमं परियापुणन्ति तेसं कुक्कुच्चं होति, विहेसा होति, विलेखा होति, ये इमं न परियापुणन्ति तेसं कुक्कुच्चं न होति विहेसा न होति विलेखा न होति। अनुद्दिट्ठं इदं वरं, अनुग्गहितं इदं वरं, अपरियापुटं इदं वरं, अधारितं इदं वरं, विनयो वा अन्तरधायतु, इमे वा भिक्खू अपकतञ्ञुनो होन्तू''ति उपसम्पन्नस्स विनयं विवण्णेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४४१. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी विनयं विवण्णेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको विनयं विवण्णेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी विनयं विवण्णेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञं धम्मं विवण्णेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नस्स विनयं वा अञ्ञं वा धम्मं विवण्णेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४४२. अनापत्ति न विवण्णेतुकामो, ''इङ्घ त्वं सुत्तन्ते वा गाथायो वा अभिधम्मं वा परियापुणस्सु, पच्छा विनयं परियापुणिस्ससी''ति भणति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

विलेखनसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. मोहनसिक्खापदं

४४३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू अनाचारं आचरित्वा ''अञ्ञाणकेन आपन्नाति जानन्तू''ति पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वदन्ति – ''इदानेव खो मयं जानाम, अयम्पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्तपरियापन्नो अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वक्खन्ति – इदानेव खो मयं जानाम, अयम्पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्तपरियापन्नो अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छती''ति... पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वदेथ – ''इदानेव खो मयं जानाम, अयम्पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्तपरियापन्नो अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वक्खथ – ''इदानेव खो मयं जानाम, अयम्पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्तपरियापन्नो अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छती''ति! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४४४. ''**यो पन भिक्खु अन्वद्धमासं पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वदेय्य – 'इदानेव खो अहं जानामि, अयम्पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्तपरियापन्नो अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छती'ति। तञ्चे भिक्खुं अञ्ञे भिक्खू जानेय्युं निसिन्नपुब्बं इमिना भिक्खुना द्वत्तिक्खत्तुं पातिमोक्खे उद्दिस्समाने, को पन वादो भिय्यो [भिय्योति (स्या०)], न च तस्स भिक्खुनो अञ्ञाणकेन मुत्ति अत्थि, यञ्च तत्थ आपत्तिं आपन्नो तञ्च यथाधम्मो कारेतब्बो, उत्तरि चस्स मोहो आरोपेतब्बो – 'तस्स ते, आवुसो, अलाभा, तस्स ते दुल्लद्धं, यं त्वं पातिमोक्खे उद्दिस्समाने न साधुकं अट्ठिं कत्वा [अट्ठिकत्वा (स्या० क०)] मनसि करोसी'ति। इदं तस्मिं मोहनके पाचित्तिय**''न्ति।

४४५. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अन्वद्धमासन्ति अनुपोसथिकं।

पातिमोक्खे उद्दिस्समानेति उद्दिसन्ते।

एवं वदेय्याति अनाचारं आचरित्वा – ''अञ्ञाणकेन आपन्नोति जानन्तू''ति पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वदेति – ''इदानेव खो अहं जानामि, अयम्पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्तपरियापन्नो अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छती''ति, आपत्ति

दुक्कटस्स।

तञ्चे मोहेतुकामं भिक्खुं अञ्ञे भिक्खू जानेय्युं निसिन्नपुब्बं इमिना भिक्खुना द्वत्तिक्खत्तुं पातिमोक्खे उद्दिस्समाने, को पन वादो भिय्यो, न च तस्स भिक्खुनो अञ्ञाणकेन मुत्ति अत्थि, यञ्च तत्थ आपत्तिं आपन्नो, तञ्च यथाधम्मो कारेतब्बो, उत्तरि चस्स मोहो आरोपेतब्बो। एवञ्च पन, भिक्खवे, आरोपेतब्बो। ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

४४६. ''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। अयं इत्थन्नामो भिक्खु पातिमोक्खे उद्दिस्समाने न साधुकं अट्ठिं कत्वा मनसि करोति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहं आरोपेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। अयं इत्थन्नामो भिक्खु पातिमोक्खे उद्दिस्समाने न साधुकं अट्ठिं कत्वा मनसि करोति। सङ्घो इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहं आरोपेति। यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहस्स आरोपना, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

''आरोपितो सङ्घेन इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहो। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अनारोपिते मोहे मोहेति, आपत्ति दुक्कटस्स। आरोपिते मोहे मोहेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४४७. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी मोहेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४४८. अनापत्ति न वित्थारेन सुतं होति, ऊनकद्वत्तिक्खत्तुं वित्थारेन सुतं होति, न मोहेतुकामस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

मोहनसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. पहारसिक्खापदं

४४९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं पहारं देन्ति। ते रोदन्ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, रोदथा''ति? ''इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना अम्हाकं पहारं देन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना भिक्खूनं पहारं दस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, कुपिता अनत्तमना भिक्खूनं पहारं देथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, कुपिता अनत्तमना भिक्खूनं पहारं दस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४५०. **''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स कुपितो अनत्तमनो पहारं ददेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४५१. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

कुपितो अनत्तमनोति अनभिरद्धो आहतचित्तो खिलजातो।

पहारं ददेय्याति कायेन वा कायपटिबद्धेन वा निस्सग्गियेन वा अन्तमसो उप्पलपत्तेनपि पहारं देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४५२. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी कुपितो अनत्तमनो पहारं देति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको कुपितो अनत्तमनो पहारं देति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी कुपितो अनत्तमनो पहारं देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नस्स कुपितो अनत्तमनो पहारं देति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४५३. अनापत्ति केनचि विहेठीयमानो मोक्खाधिप्पायो पहारं देति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पहारसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. तलसत्तिकसिक्खापदं

४५४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं तलसत्तिकं उग्गिरन्ति। ते पहारसमुच्चिता रोदन्ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, रोदथा''ति? ''इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना अम्हाकं तलसत्तिकं उग्गिरन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू कुपिता अनत्तमना सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं तलसत्तिकं उग्गिरिस्सन्ती''ति…पे०… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, कुपिता अनत्तमना सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं तलसत्तिकं उग्गिरथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, कुपिता अनत्तमना सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं तलसत्तिकं उग्गिरिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४५५. **''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स कुपितो अनत्तमनो तलसत्तिकं उग्गिरेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४५६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

कुपितो अनत्तमनोति अनभिरद्धो आहतचित्तो खिलजातो।

तलसत्तिकं उग्गिरेय्याति कायं वा कायपटिबद्धं वा अन्तमसो उप्पलपत्तम्पि उच्चारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४५७. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी कुपितो अनत्तमनो तलसत्तिकं उग्गिरति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको कुपितो अनत्तमनो तलसत्तिकं उग्गिरति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी कुपितो अनत्तमनो तलसत्तिकं उग्गिरति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नस्स कुपितो अनत्तमनो तलसत्तिकं उग्गिरति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४५८. अनापत्ति केनचि विहेठीयमानो मोक्खाधिप्पायो तलसत्तिकं उग्गिरति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

तलसत्तिकसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. अमूलकसिक्खापदं

४५९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४६०. **''यो पन भिक्खु भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४६१. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुन्ति अञ्ञं भिक्खुं।

अमूलकं नाम अदिट्ठं अस्सुतं अपरिसङ्कितं।

सङ्घादिसेसेनाति तेरसन्नं अञ्ञतरेन।

अनुद्धंसेय्याति चोदेति वा चोदापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४६२. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आचारविपत्तिया वा दिट्ठिविपत्तिया वा अनुद्धंसेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं अनुद्धंसेति, आपत्ति

दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४६३. अनापत्ति तथासञ्ञी चोदेति, वा चोदापेति वा, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अमूलकसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. सञ्चिच्चसिक्खापदं

४६४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सत्तरसवग्गियानं भिक्खूनं सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहन्ति – ''भगवता, आवुसो, सिक्खापदं पञ्ञत्तं – 'न ऊनवीसतिवस्सो पुग्गलो उपसम्पादेतब्बो'ति। तुम्हे च ऊनवीसतिवस्सा उपसम्पन्ना। कच्चि नो तुम्हे अनुपसम्पन्ना''ति? ते रोदन्ति। भिक्खू एवमाहंसु – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, रोदथा''ति? ''इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू अम्हाकं सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खूनं सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खूनं सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४६५. **''यो पन भिक्खु भिक्खुस्स सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहेय्य** [उप्पादेय्य (इतिपि)] **– 'इतिस्स मुहुत्तम्पि अफासु भविस्सती'ति एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं, पाचित्तिय''**न्ति।

४६६. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खुस्साति अञ्ञस्स भिक्खुस्स।

सञ्चिच्चाति जानन्तो सञ्जानन्तो चेच्च अभिवितरित्वा वीतिक्कमो।

कुक्कुच्चं उपदहेय्याति ''ऊनवीसतिवस्सो मञ्ञे त्वं उपसम्पन्नो, विकाले मञ्ञे तया भुत्तं, मज्जं मञ्ञे तया पीतं, मातुगामेन सद्धिं रहो मञ्ञे तया निसिन्न''न्ति कुक्कुच्चं उपदहति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एतदेव पच्चयं करित्वा, अनञ्ञन्ति न अञ्ञो कोचि पच्चयो होति कुक्कुच्चं उपदहितुं।

४६७. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नस्स सञ्चिच्च कुक्कुच्चं उपदहति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४६८. अनापत्ति न कुक्कुच्चं उपदहितुकामो ''ऊनवीसतिवस्सो मञ्ञे त्वं उपसम्पन्नो, विकाले मञ्ञे तया भुत्तं, मज्जं मञ्ञे तया पीतं, मातुगामेन सद्धिं रहो मञ्ञे तया निसिन्नं, इङ्घ जानाहि, मा ते पच्छा कुक्कुच्चं अहोसी''ति भणति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सञ्चिच्चसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. उपस्सुतिसिक्खापदं

४६९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पेसलेहि भिक्खूहि सद्धिं भण्डन्ति। पेसला भिक्खू एवं वदन्ति – ''अलज्जिनो इमे, आवुसो, छब्बग्गिया भिक्खू। न सक्का इमेहि सह भण्डितु''न्ति। छब्बग्गिया भिक्खू एवं वदन्ति – ''किस्स तुम्हे, आवुसो, अम्हे अलज्जिवादेन पापेथा''ति? ''कहं पन तुम्हे, आवुसो, अस्सुत्था''ति? ''मयं आयस्मन्तानं उपस्सुतिं [उपस्सुति (?)] तिट्ठम्हा''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं [उपस्सुति (?)] तिट्ठिस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं [उपस्सुति (?)] तिट्ठथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं [उपस्सुति (?)] तिट्ठिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४७०. ''यो पन भिक्खु भिक्खूनं भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानं उपस्सुतिं तिट्ठेय्य – 'यं इमे भणिस्सन्ति तं सोस्सामी'ति एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं, पाचित्तिय''न्ति।

४७१. यो पनाति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

भिक्खूनन्ति अञ्ञेसं भिक्खूनं।

भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानन्ति अधिकरणजातानं।

उपस्सुतिं तिट्ठेय्याति ''इमेसं सुत्वा चोदेस्सामि सारेस्सामि पटिचोदेस्सामि पटिसारेस्सामि मङ्कू करिस्सामी''ति गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो सुणाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पच्छतो गच्छन्तो तुरितो गच्छति सोस्सामीति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो सुणाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पुरतो गच्छन्तो ओहिय्यति सोस्सामीति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठितो सुणाति, आपत्ति पाचित्तियस्स। भिक्खुस्स ठितोकासं वा निसिन्नोकासं वा निपन्नोकासं वा आगन्त्वा मन्तेन्तं उक्कासितब्बं, विजानापेतब्बं, नो चे उक्कासेय्य वा विजानापेय्य वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञन्ति न अञ्ञो कोचि पच्चयो होति उपस्सुतिं तिट्ठितुं।

४७२. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी उपस्सुतिं तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिको उपस्सुतिं तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी उपस्सुतिं तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नस्स उपस्सुतिं तिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स।

४७३. अनापत्ति – ''इमेसं सुत्वा ओरमिस्सामि विरमिस्सामि वूपसमिस्सामि [वूपसमेस्सामि (सी॰)] अत्तानं परिमोचेस्सामी''ति गच्छति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

उपस्सुतिसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. कम्मपटिबाहनसिक्खापदं

४७४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू अनाचारं आचरित्वा एकमेकस्स कम्मे कयिरमाने पटिक्कोसन्ति। तेन खो पन समयेन सङ्घो सन्निपतितो होति केनचिदेव करणीयेन। छब्बग्गिया भिक्खू चीवरकम्मं करोन्ता एकस्स छन्दं अदंसु। अथ खो सङ्घो – ''अयं, आवुसो, छब्बग्गियो भिक्खु एकको आगतो, हन्दस्स मयं कम्मं करोमा''ति तस्स कम्मं अकासि। अथ खो सो भिक्खु येन छब्बग्गिया भिक्खू तेनुपसङ्कमि। छब्बग्गिया भिक्खू तं भिक्खुं एतदवोचुं – ''किं, आवुसो, सङ्घो अकासी''ति? ''सङ्घो मे, आवुसो, कम्मं अकासी''ति। ''न मयं, आवुसो, एतदत्थाय छन्दं अदम्हा – ''तुम्हं कम्मं करिस्सती''ति। सचे च मयं जानेय्याम ''तुम्हं कम्मं करिस्सती''ति, न मयं छन्दं ददेय्यामा''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं [खिय्यधम्मं (इतिपि)] आपज्जिस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं [खिय्यधम्मं (इतिपि)] आपज्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं [खिय्यधम्मं (इतिपि)] आपज्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४७५. **''यो पन भिक्खु धम्मिकानं कम्मानं छन्दं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४७६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

धम्मिकं नाम **कम्मं** अपलोकनकम्मं ञत्तिकम्मं ञत्तिदुतियकम्मं ञत्तिचतुत्थकम्मं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन कतं, एतं धम्मिकं नाम कम्मं। छन्दं दत्वा खिय्यति आपत्ति पाचित्तियस्स।

४७७. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी छन्दं दत्वा खिय्यति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको छन्दं दत्वा खिय्यति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी छन्दं दत्वा खिय्यति, अनापत्ति। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, अनापत्ति।

४७८. अनापत्ति – ''अधम्मेन वा वग्गेन वा न कम्मारहस्स वा कम्मं कत''न्ति जानन्तो खिय्यति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

कम्मपटिबाहनसिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. छन्दंअदत्वागमनसिक्खापदं

४७९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सङ्घो सन्निपतितो होति केनचिदेव करणीयेन। छब्बग्गिया भिक्खू चीवरकम्मं करोन्ता एकस्स छन्दं अदंसु। अथ खो सङ्घो ''यस्सत्थाय सन्निपतितो तं कम्मं करिस्सामी''ति ञत्तिं ठपेसि। अथ खो सो भिक्खु – ''एवमेविमे एकमेकस्स कम्मं करोन्ति, कस्स तुम्हे कम्मं करिस्सथा''ति छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कामि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर त्वं, भिक्खु, सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४८०. **''यो पन भिक्खु सङ्घे विनिच्छयकथाय वत्तमानाय छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

४८१. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सङ्घे विनिच्छयकथा नाम वत्थु वा आरोचितं होति अविनिच्छितं, ञत्ति वा ठपिता होति, कम्मवाचा वा विप्पकता होति।

छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमेय्याति – ''कथं इदं कम्मं कुप्पं अस्स वग्गं अस्स न करेय्या''ति गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। परिसाय हत्थपासं विजहन्तस्स आपत्ति दुक्कटस्स। विजहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

४८२. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी छन्दं अदत्वा उट्ठायासना पक्कमति, अनापत्ति। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, अनापत्ति।

४८३. अनापत्ति – ''सङ्घस्स भण्डनं वा कलहो वा विग्गहो वा विवादो वा भविस्सती''ति गच्छति, ''सङ्घभेदो वा सङ्घराजि वा भविस्सती''ति गच्छति, ''अधम्मेन वा वग्गेन वा न कम्मारहस्स वा कम्मं करिस्सती''ति गच्छति, गिलानो गच्छति, गिलानस्स करणीयेन गच्छति, उच्चारेन वा पस्सावेन वा पीळितो गच्छति, ''न कम्मं कोपेतुकामो पुन पच्चागमिस्सामी''ति गच्छति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छन्दं अदत्वा गमनसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

११. दुब्बलसिक्खापदं

४८४. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन आयस्मा दब्बो मल्लपुत्तो सङ्घस्स सेनासनञ्च पञ्ञपेति भत्तानि च उद्दिसति। सो चायस्मा दुब्बलचीवरो होति। तेन खो पन समयेन सङ्घस्स एकं चीवरं उप्पन्नं होति। अथ खो सङ्घो तं चीवरं आयस्मतो दब्बस्स मल्लपुत्तस्स अदासि। छब्बग्गिया भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''यथासन्थुतं भिक्खू सङ्घिकं लाभं परिणामेन्ती''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू समग्गेन सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जिस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, समग्गेन सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, समग्गेन सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं, वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४८५. **''यो पन भिक्खु समग्गेन सङ्घेन चीवरं दत्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जेय्य 'यथासन्थुतं भिक्खू सङ्घिकं लाभं परिणामेन्ती'ति, पाचित्तिय''**न्ति।

४८६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

समग्गो नाम सङ्घो समानसंवासको समानसीमायं ठितो।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं विकप्पनुपगं पच्छिमं।

दत्वाति सयं दत्वा।

यथासन्थुतं नाम यथामित्तता यथासन्दिट्ठता यथासम्भत्तता यथासमानुपज्झायकता यथासमानाचरियकता।

सङ्घिकं नाम सङ्घस्स दिन्नं होति परिच्चत्तं।

लाभो नाम चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारा, अन्तमसो चुण्णपिण्डोपि, दन्तकट्ठम्पि, दसिकसुत्तम्पि।

पच्छा खीयनधम्मं आपज्जेय्याति उपसम्पन्नस्स सङ्घेन सम्मतस्स सेनासनपञ्ञापकस्स वा भत्तुद्देसकस्स वा यागुभाजकस्स वा फलभाजकस्स वा खज्जभाजकस्स वा अप्पमत्तकविस्सज्जकस्स वा चीवरं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४८७. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी चीवरं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिको चीवरं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी चीवरं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञं परिक्खारं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति दुक्कटस्स। उपसम्पन्नस्स सङ्घेन असम्मतस्स सेनासनपञ्ञापकस्स वा भत्तुद्देसकस्स वा यागुभाजकस्स वा फलभाजकस्स वा खज्जभाजकस्स वा अप्पमत्तकविस्सज्जकस्स वा चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नस्स सङ्घेन सम्मतस्स वा असम्मतस्स वा

सेनासनपञ्ञापकस्स वा भत्तुद्देसकस्स वा यागुभाजकस्स वा फलभाजकस्स वा खज्जभाजकस्स वा अप्पमत्तकविस्सज्जकस्स वा चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं दिन्ने खिय्यति, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञी, अनापत्ति।

४८८. अनापत्ति – पकतिया छन्दा दोसा मोहा भया करोन्तं ''क्वत्थो तस्स दिन्नेन लद्धापि विनिपातेस्सति न सम्मा उपनेस्सती''ति खिय्यति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुब्बलसिक्खापदं निट्ठितं एकादसमं।

१२. परिणामनसिक्खापदं

४८९. [इदं वत्थु पारा० ६५७] तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सावत्थियं अञ्ञतरस्स पूगस्स सङ्घस्स सचीवरभत्तं पटियत्तं होति – ''भोजेत्वा चीवरेन अच्छादेस्सामा''ति। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू येन सो पूगो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा तं पूगं एतदवोचुं – ''देथावुसो, इमानि चीवरानि इमेसं भिक्खून''न्ति। ''न मयं, भन्ते, दस्साम। अम्हाकं सङ्घस्स अनुवस्सं सचीवरभिक्खा पञ्ञत्ता''ति। ''बहू, आवुसो, सङ्घस्स दायका, बहू सङ्घस्स भत्ता [भद्दा (क०)]। इमे तुम्हे निस्साय तुम्हे सम्पस्सन्ता इध विहरन्ति। तुम्हे चे इमेसं न दस्सथ, अथ को चरहि इमेसं दस्सति? देथावुसो, इमानि चीवरानि इमेसं भिक्खून''न्ति। अथ खो सो पूगो छब्बग्गियेहि भिक्खूहि निप्पीळियमानो यथापटियत्तं चीवरं छब्बग्गियानं भिक्खूनं दत्वा सङ्घं भत्तेन परिविसि। ये ते भिक्खू जानन्ति सङ्घस्स सचीवरभत्तं पटियत्तं ''न च जानन्ति छब्बग्गियानं भिक्खूनं दिन्न''न्ति ते एवमाहंसु – ''ओणोजेथावुसो, सङ्घस्स चीवर''न्ति। ''नत्थि, भन्ते। यथापटियत्तं चीवरं अय्या छब्बग्गिया अय्यानं छब्बग्गियानं परिणामेसु''न्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४९०. **''यो पन भिक्खु जानं सङ्घिकं लाभं परिणतं पुग्गलस्स परिणामेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

४९१. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्स आरोचेन्ति, सो वा आरोचेति।

सङ्घिकं नाम सङ्घस्स दिन्नं होति परिच्चत्तं।

लाभो नाम चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारा, अन्तमसो चुण्णपिण्डोपि, दन्तकट्ठम्पि, दसिकसुत्तम्पि।

परिणतं नाम ''दस्साम करिस्सामा''ति वाचा भिन्ना होति, तं पुग्गलस्स परिणामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

४९२. परिणते परिणतसञ्ञी पुग्गलस्स परिणामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परिणते वेमतिको पुग्गलस्स परिणामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। परिणते अपरिणतसञ्ञी पुग्गलस्स परिणामेति, अनापत्ति। सङ्घस्स परिणतं अञ्ञसङ्घस्स वा चेतियस्स वा परिणामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। चेतियस्स परिणतं अञ्ञचेतियस्स वा सङ्घस्स वा पुग्गलस्स वा परिणामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। पुग्गलस्स परिणतं अञ्ञपुग्गलस्स वा सङ्घस्स वा चेतियस्स वा परिणामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अपरिणते परिणतसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अपरिणते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अपरिणते अपरिणतसञ्ञी, अनापत्ति।

४९३. अनापत्ति – ''कत्थ देमा''ति पुच्छीयमानो – ''यत्थ तुम्हाकं देय्यधम्मो परिभोगं वा लभेय्य पटिसङ्खारं वा लभेय्य चिरट्ठितिको वा अस्स यत्थ वा पन तुम्हाकं चित्तं पसीदति तत्थ देथा''ति भणति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

परिणामनसिक्खापदं निट्ठितं द्वादसमं।

सहधम्मिकवग्गो अट्ठमो।

तस्सुद्दानं –

सहधम्म-विवण्णञ्च, मोहापनं पहारकं।
तलसत्ति अमूलञ्च, सञ्चिच्च च उपस्सुति।
पटिबाहनछन्दञ्च, दब्बञ्च परिणामनन्ति॥

९. रतनवग्गो

१. अन्तेपुरसिक्खापदं

४९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन राजा पसेनदि कोसलो उय्यानपालं आणापेसि – ''गच्छ, भणे, उय्यानं सोधेहि। उय्यानं गमिस्सामा''ति। ''एवं, देवा''ति खो सो उय्यानपालो रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स पटिस्सुत्वा उय्यानं सोधेन्तो अद्दस भगवन्तं अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले निसिन्नं। दिस्वान येन राजा पसेनदि कोसलो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा राजानं पसेनदिं कोसलं एतदवोच – ''सुद्धं, देव, उय्यानं। अपिच, भगवा तत्थ निसिन्नो''ति। ''होतु, भणे! मयं भगवन्तं पयिरुपासिस्सामा''ति। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो उय्यानं गन्त्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो उपासको भगवन्तं पयिरुपासन्तो निसिन्नो होति। अद्दसा खो राजा पसेनदि कोसलो तं उपासकं भगवन्तं पयिरुपासन्तं निसिन्नं। दिस्वान भीतो अट्ठासि। अथ खो रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स एतदहोसि – ''नारहतायं पुरिसो पापो होतुं, यथा भगवन्तं पयिरुपासती''ति। येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। अथ खो सो उपासको भगवतो गारवेन राजानं पसेनदिं कोसलं नेव अभिवादेसि न पच्चुट्ठासि। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो अनत्तमनो अहोसि – ''कथञ्हि नामायं पुरिसो मयि आगते नेव अभिवादेस्सति न पच्चुट्ठेस्सती''ति! अथ खो भगवा राजानं पसेनदिं कोसलं अनत्तमनं विदित्वा

राजानं पसेनदिं कोसलं एतदवोच – ''एसो खो, महाराज, उपासको बहुस्सुतो आगतागमो कामेसु वीतरागो''ति। अथ खो रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स एतदहोसि – ''नारहतायं उपासको ओरको होतुं, भगवापि इमस्स वण्णं भासती''ति। तं उपासकं एतदवोच – ''वदेय्यासि, उपासक, येन अत्थो''ति। ''सुट्ठु, देवा''ति। अथ खो भगवा राजानं पसेनदिं कोसलं धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सितो समादपितो समुत्तेजितो सम्पहंसितो उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि।

४९५. तेन खो पन समयेन राजा पसेनदि कोसलो उपरिपासादवरगतो होति। अद्दसा खो राजा पसेनदि कोसलो तं उपासकं रथिकाय [रथियाय (इतिपि)] छत्तपाणिं गच्छन्तं। दिस्वान पक्कोसापेत्वा एतदवोच – ''त्वं किर, उपासक, बहुस्सुतो आगतागमो। साधु, उपासक, अम्हाकं इत्थागारं धम्मं वाचेही''ति। ''यमहं [यम्पाहं (सी॰)], देव, जानामि अय्यानं वाहसा, अय्याव देवस्स इत्थागारं धम्मं वाचेस्सन्ती''ति। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो – ''सच्चं खो उपासको आहा''ति येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो राजा पसेनदि कोसलो भगवन्तं एतदवोच – ''साधु, भन्ते, भगवा एकं भिक्खुं आणापेतु यो अम्हाकं इत्थागारं धम्मं वाचेस्सती''ति। अथ खो भगवा राजानं पसेनदिं कोसलं धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि...पे॰... पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – ''तेनहानन्द, रञ्ञो इत्थागारं धम्मं वाचेही''ति। ''एवं, भन्ते''ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुत्वा कालेन कालं पविसित्वा रञ्ञो इत्थागारं धम्मं वाचेति। अथ खो आयस्मा आनन्दो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स निवेसनं तेनुपसङ्कमि।

४९६. तेन खो पन समयेन राजा पसेनदि कोसलो मल्लिकाय देविया सद्धिं सयनगतो होति। अद्दसा खो मल्लिका देवी आयस्मन्तं आनन्दं दूरतोव आगच्छन्तं। दिस्वान सहसा वुट्ठासि; पीतकमट्ठं दुस्सं पभस्सित्थ। अथ खो आयस्मा आनन्दो ततोव पटिनिवत्तित्वा आरामं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा आनन्दो पुब्बे अप्पटिसंविदितो रञ्ञो अन्तेपुरं पविसिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर त्वं, आनन्द, पुब्बे अप्पटिसंविदितो रञ्ञो अन्तेपुरं पविससीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम त्वं, आनन्द, पुब्बे अप्पटिसंविदितो रञ्ञो अन्तेपुरं पविसिस्ससि! नेतं, आनन्द, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... विगरहित्वा...पे॰... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि –

४९७. [अ॰ नि॰ १०.४५] ''दसयिमे, भिक्खवे, आदीनवा राजन्तेपुरप्पवेसने। कतमे दस? इध, भिक्खवे, राजा महेसिया सद्धिं निसिन्नो होति, तत्थ भिक्खु पविसति। महेसी वा भिक्खुं दिस्वा सितं पातुकरोति। भिक्खु वा महेसिं दिस्वा सितं पातुकरोति। तत्थ रञ्ञो एवं होति – ''अद्धा इमेसं कतं वा करिस्सन्ति वा''ति। अयं, भिक्खवे, पठमो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

''पुन चपरं, भिक्खवे, राजा बहुकिच्चो बहुकरणीयो। अञ्ञतरं इत्थिं गन्त्वा नस्सरति। सा तेन गब्भं गण्हि। तत्थ रञ्ञो एवं होति – ''न खो इध अञ्ञो कोचि पविसति अञ्ञत्र पब्बजितेन। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म''न्ति। अयं, भिक्खवे, दुतियो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

''पुन चपरं, भिक्खवे, रञ्ञो अन्तेपुरे अञ्ञतरं रतनं नस्सति। तत्थ रञ्ञो एवं होति – ''न खो इध अञ्ञो कोचि पविसति अञ्ञत्र पब्बजितेन। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म''न्ति। अयं, भिक्खवे, ततियो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, रञ्ञो अन्तेपुरे अब्भन्तरा गुय्हमन्ता बहिद्धा सम्भेदं गच्छन्ति। तत्थ रञ्ञो एवं होति – "न खो इध अञ्ञो कोचि पविसति अञ्ञत्र पब्बजितेन। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म"न्ति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, रञ्ञो अन्तेपुरे पुत्तो वा पितरं पत्थेति पिता वा पुत्तं पत्थेति। तेसं एवं होति – "न खो इध अञ्ञो कोचि पविसति अञ्ञत्र पब्बजितेन। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म"न्ति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, राजा नीचट्ठानियं उच्चे ठाने ठपेति। येसं तं अमनापं तेसं एवं होति – "राजा खो पब्बजितेन संसट्ठो। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म"न्ति। अयं, भिक्खवे, छट्ठो आदीनवो, राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, राजा उच्चट्ठानियं नीचे ठाने ठपेति। येसं तं अमनापं तेसं एवं होति – "राजा खो पब्बजितेन संसट्ठो। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म"न्ति। अयं, भिक्खवे, सत्तमो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, राजा अकाले सेनं उय्योजेति। येसं तं अमनापं तेसं एवं होति – "राजा खो पब्बजितेन संसट्ठो। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म"न्ति। अयं, भिक्खवे, अट्ठमो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, राजा काले सेनं उय्योजेत्वा अन्तरामग्गतो निवत्तापेति। येसं तं अमनापं तेसं एवं होति – ""राजा खो पब्बजितेन संसट्ठो। सिया नु खो पब्बजितस्स कम्म"न्ति। अयं, भिक्खवे, नवमो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने।

"पुन चपरं, भिक्खवे, रञ्ञो राजन्तेपुरं हत्थिसम्मद्दं अस्ससम्मद्दं रथसम्मद्दं रज्जनीयानि [रज्जनीयानि (क॰)] रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बानि, यानि न पब्बजितस्स सारुप्पानि। अयं, भिक्खवे, दसमो आदीनवो राजन्तेपुरप्पवेसने। इमे खो, भिक्खवे, दस आदीनवा राजन्तेपुरप्पवेसने"ति। अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

४९८. "यो पन भिक्खु रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स [मुद्धाभिसित्तस्स (स्या॰)] अनिक्खन्तराजके अनिग्गतरतनके पुब्बे अप्पटिसंविदितो इन्दखीलं अतिक्कामेय्य, पाचित्तिय"न्ति।

४९९. **यो पना**ति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

खत्तियो नाम उभतो सुजातो होति, मातितो च पितितो च संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपकुट्ठो जातिवादेन।

मुद्धावसित्तो नाम खत्तियाभिसेकेन अभिसित्तो होति।

अनिक्खन्तराजकेति राजा सयनिघरा अनिक्खन्तो होति।

अनिग्गतरतनकेति महेसी सयनिघरा अनिक्खन्ता होति, उभो वा अनिक्खन्ता होन्ति।

पुब्बे अप्पटिसंविदितोति पुब्बे अनामन्तेत्वा।

इन्दखीलो नाम सयनिघरस्स उम्मारो वुच्चति।

सयनिघरं नाम यत्थ कत्थचि रञ्ञो सयनं पञ्ञत्तं होति, अन्तमसो साणिपाकारपरिक्खित्तम्पि।

इन्दखीलं अतिक्कामेय्याति पठमं पादं उम्मारं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दुतियं पादं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

५००. अप्पटिसंविदिते अप्पटिसंविदितसञ्ञी इन्दखीलं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अप्पटिसंविदिते वेमतिको इन्दखीलं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अप्पटिसंविदिते पटिसंविदितसञ्ञी इन्दखीलं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पटिसंविदिते अप्पटिसंविदितसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पटिसंविदिते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पटिसंविदिते पटिसंविदितसञ्ञी, अनापत्ति।

५०१. अनापत्ति पटिसंविदिते, न खत्तियो होति, न खत्तियाभिसेकेन अभिसित्तो होति, राजा सयनिघरा निक्खन्तो होति, महेसी सयनिघरा निक्खन्ता होति, उभो वा निक्खन्ता होन्ति, न सयनिघरे, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अन्तेपुरसिक्खापदं निट्ठितं पठमं।

२. रतनसिक्खापदं

५०२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु अचिरवतिया नदिया नहायति। अञ्ञतरोपि ब्राह्मणो पञ्चसतानं थविकं थले निक्खिपित्वा अचिरवतिया नदिया नहायन्तो विस्सरित्वा अगमासि। अथ खो सो भिक्खु – ''तस्सायं ब्राह्मणस्स थविका, मा इध नस्सी''ति अग्गहेसि। अथ खो सो ब्राह्मणो सरित्वा तुरितो आधावित्वा तं भिक्खुं एतदवोच – ''अपि मे, भो, थविकं पस्सेय्यासी''ति? ''हन्द, ब्राह्मणा''ति अदासि। अथ खो तस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि – ''केन नु खो अहं उपायेन इमस्स भिक्खुनो पुण्णपत्तं न ददेय्य''न्ति! ''न मे, भो, पञ्चसतानि, सहस्सं मे''ति पलिबुन्धेत्वा मुञ्चि। अथ खो सो भिक्खु आरामं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु रतनं उग्गहेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, भिक्खु, रतनं उग्गहेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, रतनं उग्गहेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय... पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु रतनं वा रतनसम्मतं वा उग्गण्हेय्य वा उग्गण्हापेय्य वा, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५०३. तेन खो पन समयेन सावत्थिया उस्सवो होति। मनुस्सा अलङ्कतप्पटियत्ता उय्यानं गच्छन्ति। विसाखापि

मिगारमाता अलङ्कतप्पटियत्ता ''उय्यानं गमिस्सामी''ति गामतो निक्खमित्वा – ''क्याहं करिस्सामि उय्यानं गन्त्वा, यंनूनाहं भगवन्तं पयिरुपासेय्य''न्ति आभरणं ओमुञ्चित्वा उत्तरासङ्गेन भण्डिकं बन्धित्वा दासिया अदासि – ''हन्द, जे, इमं भण्डिकं गण्हाही''ति। अथ खो विसाखा मिगारमाता येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो विसाखं मिगारमातरं भगवा धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो विसाखा मिगारमाता भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सिता समादपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अथ खो सा दासी तं भण्डिकं विस्सरित्वा अगमासि। भिक्खू पस्सित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। ''तेन हि, भिक्खवे, उग्गहेत्वा निक्खिपथा''ति। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, रतनं वा रतनसम्मतं वा अज्झारामे उग्गहेत्वा वा उग्गहापेत्वा वा निक्खिपितुं – ''यस्स भविस्सति सो हरिस्सती''ति। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यो पन भिक्खु रतनं वा रतनसम्मतं वा, अञ्ञत्र अज्झारामा, उग्गण्हेय्य वा उग्गण्हापेय्य वा, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५०४. तेन खो पन समयेन कासीसु जनपदे अनाथपिण्डिकस्स गहपतिस्स कम्मन्तगामो होति। तेन च गहपतिना अन्तेवासी आणत्तो होति – ''सचे भदन्ता आगच्छन्ति भत्तं करेय्यासी''ति। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू कासीसु जनपदे चारिकं चरमाना येन अनाथपिण्डिकस्स गहपतिस्स कम्मन्तगामो तेनुपसङ्कमिंसु। अद्दसा खो सो पुरिसो ते भिक्खू दूरतोव आगच्छन्ते। दिस्वान येन ते भिक्खू तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा ते भिक्खू अभिवादेत्वा एतदवोच – ''अधिवासेन्तु, भन्ते, अय्या स्वातनाय गहपतिनो भत्त''न्ति। अधिवासेसुं खो ते भिक्खू तुण्हीभावेन। अथ खो सो पुरिसो तस्सा रत्तिया अच्चयेन पणीतं खादनीयं भोजनीयं पटियादापेत्वा कालं आरोचापेत्वा अङ्गुलिमुद्दिकं ओमुञ्चित्वा ते भिक्खू भत्तेन परिविसित्वा – ''अय्या भुञ्जित्वा गच्छन्तु, अहम्पि कम्मन्तं गमिस्सामी''ति अङ्गुलिमुद्दिकं विस्सरित्वा अगमासि। भिक्खू पस्सित्वा – ''सचे मयं गमिस्साम नस्सिस्सतायं अङ्गुलिमुद्दिका''ति तत्थेव अच्छिंसु। अथ खो सो पुरिसो कम्मन्ता आगच्छन्तो ते भिक्खू पस्सित्वा एतदवोच – ''किस्स, भन्ते, अय्या इधेव अच्छन्ती''ति? अथ खो ते भिक्खू तस्स पुरिसस्स एतमत्थं आरोचेत्वा सावत्थिं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, रतनं वा रतनसम्मतं वा अज्झारामे वा अज्झावसथे वा उग्गहेत्वा वा उग्गहापेत्वा वा निक्खिपितुं – यस्स भविस्सति सो हरिस्सती''ति। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५०५. **''यो पन भिक्खु रतनं वा रतनसम्मतं वा, अञ्ञत्र अज्झारामा वा अज्झावसथा वा, उग्गण्हेय्य वा उग्गण्हापेय्य वा, पाचित्तियं। रतनं वा पन भिक्खुना रतनसम्मतं वा अज्झारामे वा अज्झावसथे वा उग्गहेत्वा वा उग्गहापेत्वा वा निक्खिपितब्बं – 'यस्स भविस्सति सो हरिस्सती'ति। अयं तत्थ सामीची**''ति।

५०६. **यो पना**ति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

रतनं नाम मुत्ता मणि वेळुरियो सङ्खो सिला पवालं रजतं जातरूपं लोहितङ्को [लोहितको (?)] मसारगल्लं।

रतनसम्मतं नाम यं मनुस्सानं उपभोगपरिभोगं, एतं रतनसम्मतं नाम।

अञ्ञत्र अज्झारामा वा अज्झावसथा वाति ठपेत्वा अज्झारामं अज्झावसथं।

अज्झारामो नाम परिक्खित्तस्स आरामस्स अन्तो आरामो, अपरिक्खित्तस्स उपचारो।

अज्झावसथो नाम परिक्खित्तस्स आवसथस्स अन्तो आवसथो, अपरिक्खित्तस्स उपचारो।

उग्गण्हेय्याति सयं गण्हाति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

उग्गण्हापेय्याति अञ्ञं गाहापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

रतनं वा पन भिक्खुना रतनसम्मतं वा अज्झारामे वा अज्झावसथे वा उग्गहेत्वा वा उग्गहापेत्वा वा निक्खिपितब्बन्ति रूपेन वा निमित्तेन वा सञ्ञाणं कत्वा निक्खिपित्वा आचिक्खितब्बं – ''यस्स भण्डं नट्ठं सो आगच्छतू''ति। सचे तत्थ आगच्छति सो वत्तब्बो – ''आवुसो, कीदिसं ते भण्ड''न्ति? सचे रूपेन वा निमित्तेन वा सम्पादेति दातब्बं, नो चे सम्पादेति ''विचिनाहि आवुसो''ति वत्तब्बो। तम्हा आवासा पक्कमन्तेन ये तत्थ होन्ति भिक्खू पतिरूपा, तेसं हत्थे निक्खिपित्वा पक्कमितब्बं। नो चे होन्ति भिक्खू पतिरूपा, ये तत्थ होन्ति गहपतिका पतिरूपा, तेसं हत्थे निक्खिपित्वा पक्कमितब्बं।

अयं तत्थ सामीचीति अयं तत्थ अनुधम्मता।

५०७. अनापत्ति रतनं वा रतनसम्मतं वा अज्झारामे वा अज्झावसथे वा उग्गहेत्वा वा उग्गहापेत्वा वा निक्खिपति – ''यस्स **भविस्सति सो हरिस्सती''ति, रतनसम्मतं विस्सासं गण्हाति,** तावकालिकं गण्हाति, पंसुकूलसञ्ञिस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

रतनसिक्खापदं निट्ठितं दुतियं।

३. विकालगामप्पविसनसिक्खापदं

५०८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू विकाले गामं पविसित्वा सभायं निसीदित्वा अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्ति, सेय्यथिदं – [इमा तिरच्छानकथायो दी॰ १.१७; म॰ नि॰ २.२२३; सं॰ नि॰; अ॰ नि॰ १०.६९] राजकथं चोरकथं महामत्तकथं सेनाकथं भयकथं युद्धकथं अन्नकथं पानकथं वत्थकथं सयनकथं मालाकथं गन्धकथं ञातिकथं यानकथं गामकथं निगमकथं नगरकथं जनपदकथं इत्थिकथं [इत्थिकथं पुरिसकथं (क॰) मज्झिमपण्णासट्ठकथा १५६ पिट्ठे ओलोकेतब्बा] सूरकथं विसिखाकथं कुम्भट्ठानकथं पुब्बपेतकथं नानत्तकथं लोकक्खायिकं समुद्दक्खायिकं इतिभवाभवकथं इति वा। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया विकाले गामं पविसित्वा सभायं निसीदित्वा अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेस्सन्ति, सेय्यथिदं – राजकथं चोरकथं...पे॰... इतिभवाभवकथं इति वा, सेय्यथापि गिही कामभोगिनो''ति!

अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू विकाले गामं पविसित्वा सभायं निसीदित्वा अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेस्सन्ति, सेय्यथिदं – राजकथं चोरकथं...पे०... इतिभवाभवकथं इति वा''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, विकाले गामं पविसित्वा सभायं निसीदित्वा अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेथ, सेय्यथिदं – राजकथं चोरकथं...पे०... इतिभवाभवकथं इति वाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, विकाले गामं पविसित्वा सभायं निसीदित्वा अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेस्सथ, सेय्यथिदं – राजकथं चोरकथं...पे०... इतिभवाभवकथं इति वा! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खु विकाले गामं पविसेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५०९. तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू कोसलेसु जनपदे सावत्थिं गच्छन्ता सायं अञ्ञतरं गामं उपगच्छिंसु। मनुस्सा ते भिक्खू पस्सित्वा एतदवोचुं – ''पविसथ, भन्ते''ति। अथ खो ते भिक्खू – ''भगवता पटिक्खित्तं विकाले गामं पविसितु''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न पविसिंसु। चोरा ते भिक्खू अच्छिन्दिंसु। अथ खो ते भिक्खू सावत्थिं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, आपुच्छा विकाले गामं पविसितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खु अनापुच्छा विकाले गामं पविसेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५१०. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु कोसलेसु जनपदे सावत्थिं गच्छन्तो सायं अञ्ञतरं गामं उपगच्छि। मनुस्सा तं भिक्खुं पस्सित्वा एतदवोचुं – ''पविसथ, भन्ते''ति। अथ खो सो भिक्खु – ''भगवता पटिक्खित्तं अनापुच्छा विकाले गामं पविसितु''न्ति कुक्कुच्चायन्तो न पाविसि। चोरा तं भिक्खुं अच्छिन्दिंसु। अथ खो सो भिक्खु सावत्थिं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, सन्तं भिक्खुं आपुच्छा विकाले गामं पविसितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**यो पन भिक्खु सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा विकाले गामं पविसेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५११. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु अहिना दट्ठो होति। अञ्ञतरो भिक्खु ''अग्गिं आहरिस्सामी''ति गामं गच्छति। अथ खो सो भिक्खु – ''भगवता पटिक्खित्तं सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा विकाले गामं पविसितु''न्ति कुक्कुच्चायन्तो न पाविसि...पे०... भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं

कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, तथारूपे अच्चायिके करणीये सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा विकाले गामं पविसितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५१२. ''**यो पन भिक्खु सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा विकाले गामं पविसेय्य, अञ्ञत्र तथारूपा अच्चायिका करणीया, पाचित्तिय**''न्ति।

५१३. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सन्तो नाम भिक्खु सक्का होति आपुच्छा पविसितुं।

असन्तो नाम भिक्खु न सक्का होति आपुच्छा पविसितुं।

विकालो नाम मज्झन्हिके वीतिवत्ते याव अरुणुग्गमना।

गामं पविसेय्याति परिक्खित्तस्स गामस्स परिक्खेपं अतिक्कमन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स। अपरिक्खित्तस्स गामस्स उपचारं ओक्कमन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञत्र तथारूपा अच्चायिका करणीयाति ठपेत्वा तथारूपं अच्चायिकं करणीयं।

५१४. विकाले विकालसञ्ञी सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा गामं पविसति, अञ्ञत्र तथारूपा अच्चायिका करणीया, आपत्ति पाचित्तियस्स। विकाले वेमतिको सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा गामं पविसति, अञ्ञत्र तथारूपा अच्चायिका करणीया, आपत्ति पाचित्तियस्स। विकाले कालसञ्ञी सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा गामं पविसति, अञ्ञत्र तथारूपा अच्चायिका करणीया, आपत्ति पाचित्तियस्स।

काले विकालसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। काले वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। काले कालसञ्ञी, अनापत्ति।

५१५. अनापत्ति तथारूपे अच्चायिके करणीये, सन्तं भिक्खुं आपुच्छा पविसति, असन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पविसति, अन्तरारामं गच्छति, भिक्खुनुपस्सयं गच्छति, तित्थियसेय्यं गच्छति, पटिक्कमनं गच्छति, गामेन मग्गो होति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

विकालगामप्पविसनसिक्खापदं निट्ठितं ततियं।

४. सूचिघरसिक्खापदं

५१६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सक्केसु विहरति कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरेन दन्तकारेन भिक्खू पवारिता होन्ति – ''येसं अय्यानं सूचिघरेन अत्थो अहं सूचिघरेना''ति। तेन खो पन समयेन भिक्खू बहू सूचिघरे विञ्ञापेन्ति। येसं खुद्दका सूचिघरा ते महन्ते सूचिघरे विञ्ञापेन्ति। येसं महन्ता सूचिघरा ते खुद्दके सूचिघरे विञ्ञापेन्ति। अथ खो सो दन्तकारो भिक्खूनं बहू सूचिघरे करोन्तो न सक्कोति अञ्ञं विक्कायिकं भण्डं कातुं, अत्तनापि न यापेति, पुत्तदारोपिस्स किलमति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया न

मत्तं जानित्वा बहू सूचिघरे विञ्ञापेस्सन्ति! अयं इमेसं बहू सूचिघरे करोन्तो न सक्कोति अञ्ञं विक्कायिकं भण्डं कातुं, अत्तनापि न यापेति, पुत्तदारोपिस्स किलमती''ति। अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खू न मत्तं जानित्वा बहू सूचिघरे विञ्ञापेस्सन्ती''ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू न मत्तं जानित्वा बहू सूचिघरे विञ्ञापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा न मत्तं जानित्वा बहू सूचिघरे विञ्ञापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५१७. **''यो पन भिक्खु अट्ठिमयं वा दन्तमयं वा विसाणमयं वा सूचिघरं कारापेय्य भेदनकं, पाचित्तिय**''न्ति।

५१८. **यो पना**ति यो यादिसो…पे०… **भिक्खू**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अट्ठि नाम यं किञ्चि अट्ठि।

दन्तो नाम हत्थिदन्तो वुच्चति।

विसाणं नाम यं किञ्चि विसाणं।

कारापेय्याति करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन भिन्दित्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

५१९. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति [परियोसावापेति (क०)], आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति [परियोसावापेति (क०)], आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५२०. अनापत्ति गण्ठिकाय [गण्डिकाय (स्या०)], अरणिके, विधे [वीठे (सी०), वीथे (स्या०)], अञ्जनिया, अञ्जनिसलाकाय, वासिजटे, उदकपुञ्छनिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सूचिघरसिक्खापदं निट्ठितं चतुत्थं।

५. मञ्चपीठसिक्खापदं

५२१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो उच्चे मञ्चे सयति। अथ खो भगवा सम्बहुलेहि भिक्खूहि सद्धिं सेनासनचारिकं आहिण्डन्तो येनायस्मतो उपनन्दस्स सक्यपुत्तस्स विहारो तेनुपसङ्कमि। अद्दसा खो आयस्मा उपनन्दो सक्यपुत्तो भगवन्तं दूरतोव आगच्छन्तं। दिस्वान भगवन्तं एतदवोच – ''आगच्छतु मे, भन्ते, भगवा सयनं पस्सतू''ति। अथ खो भगवा ततोव पटिनिवत्तित्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''आसयतो, भिक्खवे, मोघपुरिसो वेदितब्बो''ति। अथ खो भगवा आयस्मन्तं उपनन्दं

सक्यपुत्तं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५२२. ''नवं पन भिक्खुना मञ्चं वा पीठं वा कारयमानेन अट्ठङ्गुलपादकं कारेतब्बं सुगतङ्गुलेन, अञ्ञत्र हेट्ठिमाय अटनिया; तं अतिक्कामयतो छेदनकं पाचित्तिय''न्ति।

५२३. नवं नाम करणं उपादाय वुच्चति।

मञ्चो नाम चत्तारो मञ्चा – मसारको, बुन्दिकाबद्धो, कुळीरपादको, आहच्चपादको।

पीठं नाम चत्तारि पीठानि – मसारकं, बुन्दिकाबद्धं, कुळीरपादकं, आहच्चपादकं।

कारयमानेनाति करोन्तो वा कारापेन्तो वा।

अट्ठङ्गुलपादकं कारेतब्बं सुगतङ्गुलेन, अञ्ञत्र हेट्ठिमाय अटनियाति ठपेत्वा हेट्ठिमं अटनिं; तं अतिक्कामेत्वा करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं, पटिलाभेन छिन्दित्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

५२४. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५२५. अनापत्ति पमाणिकं करोति, ऊनकं करोति, अञ्ञेन कतं पमाणातिक्कन्तं पटिलभित्वा छिन्दित्वा परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

मञ्चपीठसिक्खापदं निट्ठितं पञ्चमं।

६. तूलोनद्धसिक्खापदं

५२६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू मञ्चम्पि पीठम्पि तूलोनद्धं कारापेन्ति। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया मञ्चम्पि पीठम्पि तूलोनद्धं कारापेस्सन्ति, सेय्यथापि गिही कामभोगिनो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू मञ्चम्पि पीठम्पि तूलोनद्धं कारापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, मञ्चम्पि पीठम्पि तूलोनद्धं कारापेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, मञ्चम्पि पीठम्पि तूलोनद्धं कारापेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५२७. **"यो पन भिक्खु मञ्चं वा पीठं वा तूलोनद्धं कारापेय्य, उद्दालनकं पाचित्तिय"**न्ति।

५२८. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

मञ्चो नाम चत्तारो मञ्चा – मसारको, बुन्दिकाबद्धो, कुळीरपादको, आहच्चपादको।

पीठं नाम चत्तारि पीठानि – मसारकं, बुन्दिकाबद्धं, कुळीरपादकं, आहच्चपादकं।

तूलं नाम तीणि तूलानि – रुक्खतूलं, लतातूलं, पोटकितूलं।

कारापेय्याति करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन उद्दालेत्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

५२९. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५३०. अनापत्ति आयोगे, कायबन्धने, अंसबद्धके, पत्तथविकाय, परिस्सावने, बिब्बोहनं करोति, अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा उद्दालेत्वा परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

तूलोनद्धसिक्खापदं निट्ठितं छट्ठं।

७. निसीदनसिक्खापदं

५३१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भगवता भिक्खूनं निसीदनं अनुञ्ञातं होति। छब्बग्गिया भिक्खू – "भगवता निसीदनं अनुञ्ञात"न्ति अप्पमाणिकानि निसीदनानि धारेन्ति। मञ्चस्सपि पीठस्सपि पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमाणिकानि निसीदनानि धारेस्सन्ती"ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, अप्पमाणिकानि निसीदनानि धारेथाति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, अप्पमाणिकानि निसीदनानि धारेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

"निसीदनं पन भिक्खुना कारयमानेन पमाणिकं कारेतब्बं। तत्रिदं पमाणं – दीघसो द्वे विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं दियड्ढं। तं अतिक्कामयतो छेदनकं पाचित्तिय"न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५३२. तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी महाकायो होति। सो भगवतो पुरतो निसीदनं पञ्‍ञपेत्वा समन्ततो समञ्छमानो निसीदति। अथ खो भगवा आयस्मन्तं उदायिं एतदवोच – ''किस्स त्वं, उदायि, निसीदनं समन्ततो समञ्छसि; सेय्यथापि पुराणासिकोट्ठो''ति? ''तथा हि पन, भन्ते, भगवता भिक्खूनं अतिखुद्दकं निसीदनं अनुञ्‍ञात''न्ति। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, निसीदनस्स दसं विदत्थिं। एवञ्‍च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५३३. **''निसीदनं पन भिक्खुना कारयमानेन पमाणिकं कारेतब्बं। तत्रिदं पमाणं – दीघसो द्वे विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं दियड्ढं। दसा विदत्थि। तं अतिक्कामयतो छेदनकं पाचित्तिय**''न्ति।

५३४. **निसीदनं** नाम सदसं वुच्चति।

कारयमानेनाति करोन्तो वा कारापेन्तो वा पमाणिकं कारेतब्बं। तत्रिदं पमाणं – दीघसो द्वे विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं दियड्ढं। दसा विदत्थि। तं अतिक्कामेत्वा करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन छिन्दित्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

५३५. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्‍ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्‍ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५३६. अनापत्ति पमाणिकं करोति, ऊनकं करोति, अञ्‍ञेन कतं पमाणातिक्कन्तं पटिलभित्वा छिन्दित्वा परिभुञ्जति, वितानं वा भूमत्थरणं वा साणिपाकारं वा भिसिं वा बिब्बोहनं वा करोति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

निसीदनसिक्खापदं निट्ठितं सत्तमं।

८. कण्डुप्पटिच्छादिसिक्खापदं

५३७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भगवता भिक्खूनं कण्डुप्पटिच्छादि अनुञ्‍ञाता होति। छब्बग्गिया भिक्खू – ''भगवता कण्डुप्पटिच्छादि अनुञ्‍ञाता''ति अप्पमाणिकायो कण्डुप्पटिच्छादियो धारेन्ति; पुरतोपि पच्छतोपि आकड्ढन्ता आहिण्डन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमाणिकायो कण्डुप्पटिच्छादियो धारेस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, अप्पमाणिकायो कण्डुप्पटिच्छादियो धारेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, अप्पमाणिकायो कण्डुप्पटिच्छादियो धारेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्‍च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५३८. **''कण्डुप्पटिच्छादिं पन भिक्खुना कारयमानेन पमाणिका कारेतब्बा। तत्रिदं पमाणं – दीघसो**

चतस्सो विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं द्वे विदत्थियो। तं अतिक्कामयतो छेदनकं पाचित्तिय''न्ति।

५३९. **कण्डुप्पटिच्छादि** नाम यस्स अधोनाभि उब्भजाणुमण्डलं कण्डु वा पीळका वा अस्सावो वा थुल्लकच्छु वा आबाधो, तस्स पटिच्छादनत्थाय।

कारयमानेनाति करोन्तो वा कारापेन्तो वा। पमाणिका कारेतब्बा। तत्रिदं पमाणं – दीघसो चतस्सो विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं द्वे विदत्थियो। तं अतिक्कामेत्वा करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन छिन्दित्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

५४०. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५४१. अनापत्ति पमाणिकं करोति, ऊनकं करोति, अञ्ञेन कतं पमाणातिक्कन्तं पटिलभित्वा छिन्दित्वा परिभुञ्जति, वितानं वा भूमत्थरणं वा साणिपाकारं वा भिसिं वा बिब्बोहनं वा करोति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

कण्डुप्पटिच्छादिसिक्खापदं निट्ठितं अट्ठमं।

९. वस्सिकसाटिकासिक्खापदं

५४२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भगवता भिक्खूनं वस्सिकसाटिका अनुञ्ञाता होति। छब्बग्गिया भिक्खू – ''भगवता वस्सिकसाटिका अनुञ्ञाता''ति अप्पमाणिकायो वस्सिकसाटिकायो धारेन्ति। पुरतोपि पच्छतोपि आकड्ढन्ता आहिण्डन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू अप्पमाणिकायो वस्सिकसाटिकायो धारेस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, अप्पमाणिकायो वस्सिकसाटिकायो धारेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, अप्पमाणिकायो वस्सिकसाटिकायो धारेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५४३. **''वस्सिकसाटिकं पन भिक्खुना कारयमानेन पमाणिका कारेतब्बा। तत्रिदं पमाणं – दीघसो छ विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं अड्ढतेय्या। तं अतिक्कामयतो छेदनकं पाचित्तिय**''न्ति।

५४४. **वस्सिकसाटिका** नाम वस्सानस्स चतुमासत्थाय।

कारयमानेनाति करोन्तो वा कारापेन्तो वा। पमाणिका कारेतब्बा। तत्रिदं पमाणं – दीघसो छ विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं अड्ढतेय्या। तं अतिक्कामेत्वा करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन छिन्दित्वा

पाचित्तियं देसेतब्बं।

५४५. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५४६. अनापत्ति पमाणिकं करोति, ऊनकं करोति, अञ्ञेन कतं पमाणातिक्कन्तं पटिलभित्वा छिन्दित्वा परिभुञ्जति, वितानं वा भूमत्थरणं वा साणिपाकारं वा भिसिं वा बिब्बोहनं वा करोति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

वस्सिकसाटिकासिक्खापदं निट्ठितं नवमं।

१०. नन्दसिक्खापदं

५४७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा नन्दो भगवतो मातुच्छापुत्तो अभिरूपो होति दस्सनीयो पासादिको चतुरङ्गुलोमको भगवता [भगवतो (क०)]। सो सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं धारेति। अद्दसंसु खो थेरा भिक्खू आयस्मन्तं नन्दं दूरतोव आगच्छन्तं। दिस्वान – ''भगवा आगच्छती''ति आसना वुट्ठहन्ति। ते उपगते जानित्वा [उपगतं सञ्जानित्वा (स्या०), उपगते सञ्जानित्वा (सी०)] उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम आयस्मा नन्दो सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं धारेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर त्वं, नन्द, सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं धारेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम त्वं, नन्द, सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं धारेस्ससि! नेतं, नन्द, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५४८. **''यो पन भिक्खु सुगतचीवरप्पमाणं चीवरं कारापेय्य अतिरेकं वा, छेदनकं पाचित्तियं। तत्रिदं सुगतस्स सुगतचीवरप्पमाणं – दीघसो नव विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं छ विदत्थियो। इदं सुगतस्स सुगतचीवरप्पमाण**''न्ति।

५४९. **यो पना**ति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

सुगतचीवरप्पमाणं [सुगतचीवरं (क०)] नाम दीघसो नव विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं छ विदत्थियो।

कारापेय्याति करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन छिन्दित्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

५५०. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

५५१. अनापत्ति ऊनकं करोति, अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा छिन्दित्वा परिभुञ्जति, वितानं वा भूमत्थरणं वा साणिपाकारं वा भिसिं वा बिब्बोहनं वा करोति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

नन्दसिक्खापदं निट्ठितं दसमं।

रतनवग्गो [राजवग्गो (सी॰)] नवमो।

तस्सुद्दानं –

रञ्ञो च रतनं सन्तं, सूचि मञ्चञ्च तूलिकं।
निसीदनञ्च कण्डुञ्च, वस्सिका सुगतेन चाति॥

उद्दिट्ठा खो, आयस्मन्तो, द्वेनवुति पाचित्तिया धम्मा। तत्थायस्मन्ते पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थायस्मन्तो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

खुद्दकं समत्तं।

पाचित्तियकण्डं निट्ठितं।

६. पाटिदेसनीयकण्डं

१. पठमपाटिदेसनीयसिक्खापदं

इमे खो पनायस्मन्तो चत्तारो पाटिदेसनीया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

५५२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी सावत्थियं पिण्डाय चरित्वा पटिक्कमनकाले अञ्ञतरं भिक्खुं पस्सित्वा एतदवोच – ''हन्दाय्य, भिक्खं पटिग्गण्हा''ति। ''सुट्ठु, भगिनी''ति सब्बेव अग्गहेसि। सा उपकट्ठे काले नासक्खि पिण्डाय चरितुं, छिन्नभत्ता अहोसि। अथ खो सा भिक्खुनी दुतियम्पि दिवसं…पे॰… ततियम्पि दिवसं सावत्थियं पिण्डाय चरित्वा पटिक्कमनकाले तं भिक्खुं पस्सित्वा एतदवोच – ''हन्दाय्य, भिक्खं पटिग्गण्हा''ति। ''सुट्ठु, भगिनी''ति सब्बेव अग्गहेसि। सा उपकट्ठे काले नासक्खि पिण्डाय चरितुं, छिन्नभत्ता अहोसि। अथ खो सा भिक्खुनी चतुत्थे दिवसे रथिकाय पवेधेन्ती गच्छति। सेट्ठि गहपति रथेन पटिपथं आगच्छन्तो तं भिक्खुनिं एतदवोच – ''अपेहाय्ये''ति। सा वोक्कमन्ती तत्थेव परिपति। सेट्ठि गहपति

तं भिक्खुनिं खमापेसि – ''खमाहाय्ये, मयासि पातिता''ति। ''नाहं, गहपति, तया पातिता। अपिच, अहमेव दुब्बला''ति। ''किस्स पन त्वं, अय्ये, दुब्बला''ति? अथ खो सा भिक्खुनी सेट्ठिस्स गहपतिस्स एतमत्थं आरोचेसि। सेट्ठि गहपति तं भिक्खुनिं घरं नेत्वा भोजेत्वा उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता भिक्खुनिया हत्थतो आमिसं पटिग्गहेस्सन्ति! किच्छलाभो मातुगामो''ति!

अस्सोसुं खो भिक्खू तस्स सेट्ठिस्स गहपतिस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा... पे॰... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु भिक्खुनिया हत्थतो आमिसं पटिग्गहेस्सती''ति ...पे॰... सच्चं किर त्वं, भिक्खु, भिक्खुनिया हत्थतो आमिसं पटिग्गहेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। ''ञातिका ते, भिक्खु, अञ्ञातिका''ति? ''अञ्ञातिका, भगवा''ति। ''अञ्ञातको, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय न जानाति पतिरूपं वा अप्पतिरूपं वा सन्तं वा असन्तं वा। कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया हत्थतो आमिसं पटिग्गहेस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५५३. ''यो पन भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पटिदेसेतब्बं तेन भिक्खुना – 'गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी'''ति।

५५४. यो पनाति यो यादिसो...पे॰... **भिक्खू**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

अञ्ञातिका नाम मातितो वा। पितितो वा याव सत्तमा पितामहयुगा असम्बद्धा।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

अन्तरघरं नाम रथिका ब्यूहं सिङ्घाटकं घरं।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं। ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

५५५. अञ्ञातिकाय अञ्ञातिकसञ्ञी अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अञ्ञातिकाय वेमतिको अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अञ्ञातिकाय ञातिकसञ्ञी अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। एकतोउपसम्पन्नाय हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा – ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय अञ्ञातिकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। ञातिकाय ञातिकसञ्ञी, अनापत्ति।

५५६. अनापत्ति ञातिकाय, दापेति न देति, उपनिक्खिपित्वा देति अन्तरारामे, भिक्खुनुपस्सये, तित्थियसेय्याय, पटिक्कमने, गामतो नीहरित्वा देति, यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ''सति पच्चये परिभुञ्जा''ति देति, सिक्खमानाय, सामणेरिया, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पठमपाटिदेसनीयसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियपाटिदेसनीयसिक्खापदं

५५७. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन भिक्खू कुलेसु निमन्तिता भुञ्जन्ति। छब्बग्गिया भिक्खुनियो छब्बग्गियानं भिक्खूनं वोसासन्तियो ठिता होन्ति – ''इध सूपं देथ, इध ओदनं देथा''ति। छब्बग्गिया भिक्खू यावदत्थं भुञ्जन्ति। अञ्ञे भिक्खू न चित्तरूपं भुञ्जन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा... पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनियो वोसासन्तियो न निवारेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, भिक्खुनियो वोसासन्तियो न निवारेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा ...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुनियो वोसासन्तियो न निवारेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५५८. ''**भिक्खू पनेव कुलेसु निमन्तिता भुञ्जन्ति, तत्र चे सा** [तत्र चे (स्या०)] **भिक्खुनी वोसासमानरूपा ठिता होति – 'इध सूपं देथ, इध ओदनं देथा'ति, तेहि भिक्खूहि सा भिक्खुनी अपसादेतब्बा – 'अपसक्क ताव, भगिनि, याव भिक्खू भुञ्जन्ती'ति। एकस्स चेपि** [एकस्सपि चे (सी० स्या०)] **भिक्खुनो न पटिभासेय्य तं भिक्खुनिं अपसादेतुं – 'अपसक्क ताव, भगिनि, याव भिक्खू भुञ्जन्ती'ति पटिदेसेतब्बं तेहि भिक्खूहि – 'गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिम्हा असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमा'**''ति।

५५९. **भिक्खू पनेव कुलेसु निमन्तिता भुञ्जन्ती**ति कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं, सुद्दकुलं।

निमन्तिता भुञ्जन्तीति पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरेन भोजनेन निमन्तिता भुञ्जन्ति।

भिक्खुनी नाम उभतोसङ्घे उपसम्पन्ना।

वोसासन्ती नाम यथामित्तता यथासन्दिट्ठता यथासम्भत्तता यथासमानुपज्झायकता यथासमानाचरियकता – ''इध सूपं देथ, इध ओदनं देथा''ति। एसा वोसासन्ती नाम।

तेहि भिक्खूहीति भुञ्जमानेहि भिक्खूहि।

सा भिक्खुनीति या सा वोसासन्ती भिक्खुनी।

तेहि भिक्खूहि सा भिक्खुनी अपसादेतब्बा – ''अपसक्क ताव, भगिनि, याव भिक्खू भुञ्जन्ती''ति। एकस्स चेपि [एकस्सपि चे (सी० स्या०)] भिक्खुनो अनपसादितो [अनपसादिते (सी० स्या०)] – ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

५६०. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञी वोसासन्तिया न निवारेति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिको वोसासन्तिया न निवारेति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञी वोसासन्तिया न निवारेति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

एकतोउपसम्पन्नाय वोसासन्तिया न निवारेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञी, अनापत्ति।

५६१. अनापत्ति अत्तनो भत्तं दापेति न देति, अञ्ञेसं भत्तं देति न दापेति, यं न दिन्नं तं दापेति, यत्थ न दिन्नं तत्थ दापेति, सब्बेसं समकं दापेति, सिक्खमाना वोसासति, सामणेरी वोसासति, पञ्च भोजनानि ठपेत्वा सब्बत्थ, अनापत्ति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुतियपाटिदेसनीयसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियपाटिदेसनीयसिक्खापदं

५६२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सावत्थियं अञ्ञतरं कुलं उभतोपसन्नं होति। सद्धाय वड्ढति, भोगेन हायति, यं तस्मिं कुले उप्पज्जति पुरेभत्तं खादनीयं वा भोजनीयं वा तं सब्बं भिक्खूनं विस्सज्जेत्वा अप्पेकदा अनसिता अच्छन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया न मत्तं जानित्वा पटिग्गहेस्सन्ति! इमे इमेसं दत्वा अप्पेकदा अनसिता अच्छन्ती''ति!! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, यं कुलं सद्धाय वड्ढति, भोगेन हायति एवरूपस्स कुलस्स ञत्तिदुतियेन कम्मेन सेक्खसम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

५६३. ''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। इत्थन्नामं कुलं सद्धाय वड्ढति, भोगेन हायति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामस्स कुलस्स सेक्खसम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। इत्थन्नामं कुलं सद्धाय वड्ढति, भोगेन हायति। सङ्घो इत्थन्नामस्स कुलस्स सेक्खसम्मुतिं देति। यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स कुलस्स सेक्खसम्मुतिया दानं, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामस्स कुलस्स सेक्खसम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यानि खो पन तानि सेक्खसम्मतानि कुलानि, यो पन भिक्खु तथारूपेसु सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पटिदेसेतब्बं तेन भिक्खुना – 'गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं तं पटिदेसेमी'''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५६४. तेन खो पन समयेन सावत्थियं उस्सवो होति। मनुस्सा भिक्खू निमन्तेत्वा भोजेन्ति। तम्पि खो कुलं भिक्खू निमन्तेसि। भिक्खू कुक्कुच्चायन्ता नाधिवासेन्ति – ''पटिक्खित्तं भगवता सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादितुं भुञ्जितु''न्ति। ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''किं नु खो नाम अम्हाकं जीवितेन यं अय्या अम्हाकं न पटिग्गण्हन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, निमन्तितेन सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादितुं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''यानि खो पन तानि सेक्खसम्मतानि कुलानि, यो पन भिक्खु तथारूपेसु सेक्खसम्मतेसु कुलेसु पुब्बे अनिमन्तितो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पटिदेसेतब्बं तेन भिक्खुना – 'गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी'''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५६५. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु तस्स कुलस्स कुलूपको होति। अथ खो सो भिक्खु पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन तं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। तेन खो पन समयेन सो भिक्खु गिलानो होति। अथ खो ते मनुस्सा तं भिक्खुं एतदवोचुं – ''भुञ्जथ, भन्ते''ति। अथ खो सो भिक्खु – ''भगवता पटिक्खित्तं अनिमन्तितेन सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादितुं भुञ्जितु''न्ति कुक्कुच्चायन्तो न पटिग्गहेसि; नासक्खि पिण्डाय चरितुं; छिन्नभत्तो अहोसि। अथ खो सो भिक्खु आरामं गन्त्वा भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना सेक्खसम्मतेसु कुलेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादितुं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५६६. **''यानि खो पन तानि सेक्खसम्मतानि कुलानि, यो पन भिक्खु तथारूपेसु सेक्खसम्मतेसु कुलेसु पुब्बे अनिमन्तितो अगिलानो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पटिदेसेतब्बं तेन भिक्खुना – 'गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी''**ति।

५६७. **यानि खो पन तानि सेक्खसम्मतानि कुलानी**ति सेक्खसम्मतं नाम कुलं यं कुलं सद्धाय वड्ढति, भोगेन हायति। एवरूपस्स कुलस्स ञत्तिदुतियेन कम्मेन सेक्खसम्मुति दिन्ना होति।

यो पनाति यो यादिसो...पे०... **भिक्खू**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

तथारूपेसु सेक्खसम्मतेसु कुलेसूति एवरूपेसु सेक्खसम्मतेसु कुलेसु।

अनिमन्तितो नाम अज्जतनाय वा स्वातनाय वा अनिमन्तितो, घरूपचारं ओक्कमन्ते निमन्तेति, एसो अनिमन्तितो नाम।

निमन्तितो नाम अज्जतनाय वा स्वातनाय वा निमन्तितो, घरूपचारं अनोक्कमन्ते निमन्तेति, एसो निमन्तितो नाम।

अगिलानो नाम सक्कोति पिण्डाय चरितुं।

गिलानो नाम न सक्कोति पिण्डाय चरितुं।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

अनिमन्तितो अगिलानो ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

५६८. सेक्खसम्मते सेक्खसम्मतसञ्ञी अनिमन्तितो अगिलानो खादनीयं वा भोजनीयंव सहत्था पटिग्गहेत्वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। सेक्खसम्मते वेमतिको...पे०... सेक्खसम्मते असेक्खसम्मतसञ्ञी अनिमन्तितो अगिलानो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। असेक्खसम्मते सेक्खसम्मतसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। असेक्खसम्मते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। असेक्खसम्मते असेक्खसम्मतसञ्ञी, अनापत्ति।

५६९. अनापत्ति निमन्तितस्स, गिलानस्स, निमन्तितस्स वा गिलानस्स वा सेसकं भुञ्जति, अञ्ञेसं भिक्खा तत्थ पञ्ञत्ता होति, घरतो नीहरित्वा देन्ति, निच्चभत्ते, सलाकभत्ते, पक्खिके, उपोसथिके, पाटिपदिके, यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं – ''सति पच्चये परिभुञ्जा''ति देति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ततियपाटिदेसनीयसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थपाटिदेसनीयसिक्खापदं

५७०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सक्केसु विहरति कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे। तेन खो पन समयेन साकियदासका अवरुद्धा होन्ति। साकियानियो इच्छन्ति आरञ्ञकेसु सेनासनेसु भत्तं कातुं। अस्सोसुं खो साकियदासका – ''साकियानियो किर आरञ्ञकेसु सेनासनेसु भत्तं कत्तुकामा''ति। ते मग्गे परियुट्ठिंसु। साकियानियो पणीतं खादनीयं भोजनीयं आदाय आरञ्ञकं सेनासनं अगमंसु। साकियदासका निक्खमित्वा साकियानियो अच्छिन्दिंसु च दूसेसुञ्च। साकिया निक्खमित्वा ते चोरे सभण्डे [सह भण्डेन (क०)] गहेत्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भदन्ता आरामे चोरे पटिवसन्ते नारोचेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू साकियानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

“यानि खो पन तानि आरञ्ञकानि सेनासनानि सासङ्कसम्मतानि सप्पटिभयानि, यो पन भिक्खु तथारूपेसु सेनासनेसु [सेनासनेसु विहरन्तो (सी॰ स्या॰)] **पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पटिदेसेतब्बं तेन भिक्खुना – ‘गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं तं पटिदेसेमी’**”ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

५७१. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु आरञ्ञकेसु सेनासनेसु गिलानो होति। मनुस्सा खादनीयं वा भोजनीयं वा आदाय आरञ्ञकं सेनासनं अगमंसु। अथ खो ते मनुस्सा तं भिक्खुं एतदवोचुं – “भुञ्जथ, भन्ते”ति। अथ खो सो भिक्खु – “भगवता पटिक्खित्तं आरञ्ञकेसु सेनासनेसु खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादितुं भुञ्जितु”न्ति कुक्कुच्चायन्तो न पटिग्गहेसि, नासक्खि पिण्डाय चरितुं [पविसितुं (क॰)], छिन्नभत्तो अहोसि। अथ खो सो भिक्खु भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसि। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – “अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना आरञ्ञकेसु सेनासनेसु पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादितुं भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

५७२. “यानि खो पन तानि आरञ्ञकानि सेनासनानि सासङ्कसम्मतानि सप्पटिभयानि, यो पन भिक्खु तथारूपेसु सेनासनेसु पुब्बे अप्पटिसंविदितं खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा अगिलानो खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पटिदेसेतब्बं तेन भिक्खुना – ‘गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी’”ति।

५७३. यानि खो पन तानि आरञ्ञकानि सेनासनानीति **आरञ्ञकं** नाम **सेनासनं** पञ्चधनुसतिकं पच्छिमं।

सासङ्कं नाम आरामे आरामूपचारे चोरानं निविट्ठोकासो दिस्सति, भुत्तोकासो दिस्सति, ठितोकासो दिस्सति, निसिन्नोकासो दिस्सति, निपन्नोकासो दिस्सति।

सप्पटिभयं नाम आरामे आरामूपचारे चोरेहि मनुस्सा हता दिस्सन्ति, विलुत्ता दिस्सन्ति, आकोटिता दिस्सन्ति।

यो पनाति यो यादिसो…पे॰… **भिक्खू**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खूति।

तथारूपेसु सेनासनेसूति एवरूपेसु सेनासनेसु।

अप्पटिसंविदितं नाम पञ्चन्नं पटिसंविदितं, एतं अप्पटिसंविदितं नाम। आरामं आरामूपचारं ठपेत्वा पटिसंविदितं, एतं [एतम्पि (सी॰)] अप्पटिसंविदितं नाम।

पटिसंविदितं नाम यो कोचि इत्थी वा पुरिसो वा आरामं आरामूपचारं आगन्त्वा आरोचेति – “इत्थन्नामस्स, भन्ते, खादनीयं वा भोजनीयं वा आहरिस्सन्ती”ति। सचे सासङ्कं होति, सासङ्कन्ति आचिक्खितब्बं; सचे सप्पटिभयं होति, सप्पटिभयन्ति आचिक्खितब्बं; सचे – “होतु, भन्ते, आहरियिस्सती”ति भणति, चोरा वत्तब्बा – “मनुस्सा इधूपचरन्ति

अपसक्कथा''ति। यागुया पटिसंविदिते तस्सा परिवारो आहरिय्यति, एतं पटिसंविदितं नाम। भत्तेन पटिसंविदिते तस्स परिवारो आहरिय्यति, एतं पटिसंविदितं नाम। खादनीयेन पटिसंविदिते तस्स परिवारो आहरिय्यति, एतं पटिसंविदितं नाम। कुलेन पटिसंविदिते यो तस्मिं कुले मनुस्सो खादनीयं वा भोजनीयं वा आहरति, एतं पटिसंविदितं नाम। गामेन पटिसंविदिते यो तस्मिं गामे मनुस्सो खादनीयं वा भोजनीयं वा आहरति, एतं पटिसंविदितं नाम। पूगेन पटिसंविदिते यो तस्मिं पूगे मनुस्सो खादनीयं वा भोजनीयं वा आहरति, एतं पटिसंविदितं नाम।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

अज्झारामो नाम परिक्खित्तस्स आरामस्स अन्तोआरामो। अपरिक्खित्तस्स उपचारो।

अगिलानो नाम सक्कोति पिण्डाय चरितुं [गन्तुं (क॰)]।

गिलानो नाम न सक्कोति पिण्डाय चरितुं [गन्तुं (क॰)]।

अप्पटिसंविदितं अगिलानो ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

५७४. अप्पटिसंविदिते अप्पटिसंविदितसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा अगिलानो खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अप्पटिसंविदिते वेमतिको खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा अगिलानो खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अप्पटिसंविदिते पटिसंविदितसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा अज्झारामे सहत्था पटिग्गहेत्वा अगिलानो खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। पटिसंविदिते अप्पटिसंविदितसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स। पटिसंविदिते वेमतिको, आपत्ति दुक्कटस्स। पटिसंविदिते पटिसंविदितसञ्ञी, अनापत्ति।

५७५. अनापत्ति पटिसंविदिते, गिलानस्स, पटिसंविदिते वा गिलानस्स वा सेसकं भुञ्जति, बहारामे पटिग्गहेत्वा अन्तोआरामे भुञ्जति, तत्थ जातकं मूलं वा तचं वा पत्तं वा पुप्फं वा फलं वा भुञ्जति, यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं सति पच्चये परिभुञ्जति, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थपाटिदेसनीयसिक्खापदं निट्ठितं।

उद्दिट्ठा खो, आयस्मन्तो, चत्तारो पाटिदेसनीया धम्मा। तत्थायस्मन्ते पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थायस्मन्तो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

पाटिदेसनीयकण्डं निट्ठितं।

७. सेखियकण्डं

१. परिमण्डलवग्गो

इमे खो पनायस्मन्तो सेखिया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

५७६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता निवासेन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता निवासेस्सन्ति, सेय्यथापि गिही कामभोगिनो''ति। अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता निवासेस्सन्ती''ति! अथ खो ते भिक्खू छब्बग्गिये भिक्खू अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा छब्बग्गिये भिक्खू पटिपुच्छि – ''सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता निवासेथा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता निवासेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**परिमण्डलं निवासेस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

परिमण्डलं निवासेतब्बं नाभिमण्डलं जाणुमण्डलं पटिच्छादेन्तेन। यो अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तो निवासेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

५७७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ता पारुपन्ति...पे०...।

''**परिमण्डलं पारुपिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

परिमण्डलं पारुपितब्बं उभो कण्णे समं कत्वा। यो अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्तो पारुपति,

आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

५७८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कायं विवरित्वा अन्तरघरे गच्छन्ति…पे॰…।

‘‘**सुप्पटिच्छन्नो अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

सुप्पटिच्छन्नेन अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च कायं विवरित्वा अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

५७९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कायं विवरित्वा अन्तरघरे निसीदन्ति…पे॰…।

‘‘**सुप्पटिच्छन्नो अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

सुप्पटिच्छन्नेन अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च कायं विवरित्वा अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५८०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू हत्थम्पि पादम्पि कीळापेन्ता अन्तरघरे गच्छन्ति…पे॰…।

‘‘**सुसंवुतो अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

सुसंवुतेन अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च हत्थं वा पादं वा कीळापेन्तो अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति

दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

५८१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू हत्थम्पि पादम्पि कीळापेन्ता अन्तरघरे निसीदन्ति…पे०…।

''**सुसंवुतो अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

सुसंवुतेन अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च हत्थं वा पादं वा कीळापेन्तो अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

५८२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू तहं तहं ओलोकेन्ता अन्तरघरे गच्छन्ति…पे०…।

''**ओक्खित्तचक्खु अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

ओक्खित्तचक्खुना अन्तरघरे गन्तब्बं युगमत्तं पेक्खन्तेन। यो अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

५८३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू तहं तहं ओलोकेन्ता अन्तरघरे निसीदन्ति…पे०…।

''**ओक्खित्तचक्खु अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

ओक्खित्तचक्खुना अन्तरघरे निसीदितब्बं युगमत्तं पेक्खन्तेन। यो अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

५८४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उक्खित्तकाय अन्तरघरे गच्छन्ति…पे॰…।

‘‘**न उक्खित्तकाय अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न उक्खित्तकाय अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च एकतो वा उभतो वा उक्खिपित्वा अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

५८५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उक्खित्तकाय अन्तरघरे निसीदन्ति…पे॰…।

‘‘**न उक्खित्तकाय अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न उक्खित्तकाय अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च एकतो वा उभतो वा उक्खिपित्वा अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

परिमण्डलवग्गो पठमो।

२. उज्जग्घिकवग्गो

५८६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू महाहसितं हसन्ता अन्तरघरे गच्छन्ति…पे॰…।

“**न उज्जग्घिकाय अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

न उज्जग्घिकाय अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च महाहसितं हसन्तो अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, हसनीयस्मिं वत्थुस्मिं मिहितमत्तं करोति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

५८७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू महाहसितं हसन्ता अन्तरघरे निसीदन्ति…पे०…।

“**न उज्जग्घिकाय अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

न उज्जग्घिकाय अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च महाहसितं हसन्तो अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, हसनीयस्मिं वत्थुस्मिं मिहितमत्तं करोति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

५८८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उच्चासद्दं महासद्दं करोन्ता अन्तरघरे गच्छन्ति…पे०…।

“**अप्पसद्दो अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

अप्पसद्देन अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च उच्चासद्दं महासद्दं करोन्तो अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

५८९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उच्चासद्दं महासद्दं करोन्ता अन्तरघरे निसीदन्ति…पे०…।

“**अप्पसद्दो अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

अप्पसद्देन अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च उच्चासद्दं महासद्दं करोन्तो अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५९०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कायप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्ति कायं ओलम्बेन्ता...पे०...।

''न कायप्पचालकं अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न कायप्पचालकं अन्तरघरे गन्तब्बं। कायं पग्गहेत्वा गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च कायप्पचालकं अन्तरघरे गच्छति कायं ओलम्बेन्तो, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

५९१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कायप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्ति, कायं ओलम्बेन्ता...पे०...।

''न कायप्पचालकं अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न कायप्पचालकं अन्तरघरे निसीदितब्बं। कायं पग्गहेत्वा निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च कायप्पचालकं अन्तरघरे निसीदति कायं ओलम्बेन्तो, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

५९२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू बाहुप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्ति बाहुं ओलम्बेन्ता...पे०...।

''न बाहुप्पचालकं अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न बाहुप्पचालकं अन्तरघरे गन्तब्बं। बाहुं पग्गहेत्वा गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च बाहुप्पचालकं अन्तरघरे गच्छति बाहुं ओलम्बेन्तो, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

५९३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू बाहुप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्ति बाहुं ओलम्बेन्ता...पे॰...।

''**न बाहुप्पचालकं अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न बाहुप्पचालकं अन्तरघरे निसीदितब्बं। बाहुं पग्गहेत्वा निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च बाहुप्पचालकं अन्तरघरे निसीदति बाहुं ओलम्बेन्तो, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

५९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सीसप्पचालकं अन्तरघरे गच्छन्ति सीसं ओलम्बेन्ता...पे॰...।

''**न सीसप्पचालकं अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न सीसप्पचालकं अन्तरघरे गन्तब्बं। सीसं पग्गहेत्वा गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च सीसप्पचालकं अन्तरघरे गच्छति सीसं ओलम्बेन्तो, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

५९५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सीसप्पचालकं अन्तरघरे निसीदन्ति सीसं ओलम्बेन्ता...पे॰...।

''**न सीसप्पचालकं अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न सीसप्पचालकं अन्तरघरे निसीदितब्बं। सीसं पग्गहेत्वा निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च सीसप्पचालकं अन्तरघरे निसीदति सीसं ओलम्बेन्तो, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

उज्जग्घिकवग्गो दुतियो।

३. खम्भकतवग्गो

५९६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू खम्भकता अन्तरघरे गच्छन्ति...पे॰...।

‘‘**न खम्भकतो अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न खम्भकतेन अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च एकतो वा उभतो वा खम्भं कत्वा अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

५९७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू खम्भकता अन्तरघरे निसीदन्ति...पे॰...।

‘‘**न खम्भकतो अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न खम्भकतेन अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च एकतो वा उभतो वा खम्भं कत्वा अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

५९८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू ससीसं पारुपित्वा अन्तरघरे गच्छन्ति...पे॰...।

‘‘**न ओगुण्ठितो अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न ओगुण्ठितेन अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च ससीसं पारुपित्वा अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

५९९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू ससीसं पारुपित्वा अन्तरघरे निसीदन्ति…पे॰…।

‘‘**न ओगुण्ठितो अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न ओगुण्ठितेन अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च ससीसं पारुपित्वा अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

६००. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उक्कुटिकाय अन्तरघरे गच्छन्ति…पे॰…।

‘‘**न उक्कुटिकाय अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न उक्कुटिकाय अन्तरघरे गन्तब्बं। यो अनादरियं पटिच्च उक्कुटिकाय अन्तरघरे गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६०१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पल्लत्थिकाय [पल्लत्तिकाय (क॰)] अन्तरघरे निसीदन्ति…पे॰…।

‘‘**न पल्लत्थिकाय अन्तरघरे निसीदिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न पल्लत्थिकाय अन्तरघरे निसीदितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च हत्थपल्लत्थिकाय वा दुस्सपल्लत्थिकाय वा अन्तरघरे निसीदति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, वासूपगतस्स, आपदासु,

उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

६०२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू असक्कच्चं पिण्डपातं पटिग्गण्हन्ति छड्डेतुकामा विय...पे॰...।

‘‘**सक्कच्चं पिण्डपातं पटिग्गहेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

सक्कच्चं पिण्डपातो पटिग्गहेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च असक्कच्चं पिण्डपातं पटिग्गण्हाति छड्डेतुकामो विय, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

६०३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू तहं तहं ओलोकेन्ता पिण्डपातं पटिग्गण्हन्ति, आकिरन्तेपि अतिक्कन्तेपि [अतिक्कमन्तेपि (सी॰)] न जानन्ति...पे॰...।

‘‘**पत्तसञ्ञी पिण्डपातं पटिग्गहेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

पत्तसञ्ञिना पिण्डपातो पटिग्गहेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो पिण्डपातं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६०४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पिण्डपातं पटिग्गण्हन्ता सूपञ्ञेव बहुं पटिग्गण्हन्ति...पे॰...।

‘‘**समसूपकं पिण्डपातं पटिग्गहेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

सूपो नाम द्वे सूपा – मुग्गसूपो, माससूपो। हत्थहारियो समसूपको पिण्डपातो पटिग्गहेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च सूपञ्ञेव बहुं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, रसरसे, ञातकानं पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

६०५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

छब्बग्गिया भिक्खू थूपीकतं पिण्डपातं पटिग्गण्हन्ति...पे०... ।

"**समतित्तिकं** [समतित्थिकं (क०)] **पिण्डपातं पटिग्गहेस्सामीति सिक्खा करणीया**"ति ।

समतित्तिको [समतित्थिकं (क०)] पिण्डपातो पटिग्गहेतब्बो । यो अनादरियं पटिच्च थूपीकतं पिण्डपातं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स ।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति ।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं ।

खम्भकतवग्गो ततियो ।

४. सक्कच्चवग्गो

६०६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे । तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू असक्कच्चं पिण्डपातं भुञ्जन्ति अभुञ्जितुकामा विय...पे०... ।

"**सक्कच्चं पिण्डपातं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**"ति ।

सक्कच्चं पिण्डपातो भुञ्जितब्बो । यो अनादरियं पटिच्च असक्कच्चं पिण्डपातं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स ।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स,

आदिकम्मिकस्साति ।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं ।

६०७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे । तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू तहं तहं ओलोकेन्ता पिण्डपातं भुञ्जन्ति, आकिरन्तेपि अतिक्कन्तेपि न जानन्ति...पे०... ।

"**पत्तसञ्ञी पिण्डपातं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**"ति ।

पत्तसञ्ञिना पिण्डपातो भुञ्जितब्बो । यो अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओलोकेन्तो पिण्डपातं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स ।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति ।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं ।

६०८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू तहं तहं ओमसित्वा [ओमद्दित्वा (क॰)] पिण्डपातं भुञ्जन्ति…पे॰…।

''**सपदानं पिण्डपातं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

सपदानं पिण्डपातो भुञ्जितब्बो। यो अनादरियं पटिच्च तहं तहं ओमसित्वा [ओमद्दित्वा (क॰)] पिण्डपातं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, अञ्ञेसं देन्तो ओमसति, अञ्ञस्स भाजने आकिरन्तो ओमसति, उत्तरिभङ्गे, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

६०९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पिण्डपातं भुञ्जन्ता सूपञ्ञेव बहुं भुञ्जन्ति…पे॰…।

''**समसूपकं पिण्डपातं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

सूपो नाम द्वे सूपा – मुग्गसूपो, माससूपो हत्थहारियो। समसूपको पिण्डपातो भुञ्जितब्बो। यो अनादरियं पटिच्च सूपञ्ञेव बहुं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, रसरसे, ञातकानं पवारितानं, अत्तनो धनेन, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

६१०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू थूपकतो ओमद्दित्वा पिण्डपातं भुञ्जन्ति…पे॰…।

''**न थूपकतो ओमद्दित्वा पिण्डपातं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न थूपकतो ओमद्दित्वा पिण्डपातो भुञ्जितब्बो। यो अनादरियं पटिच्च थूपकतो ओमद्दित्वा पिण्डपातं भुञ्जति आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, परित्तके सेसे एकतो संकड्ढित्वा ओमद्दित्वा भुञ्जति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६११. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सूपम्पि ब्यञ्जनम्पि ओदनेन पटिच्छादेन्ति भिय्योकम्यतं उपादाय...पे०...।

''न सूपं वा ब्यञ्जनं वा ओदनेन पटिच्छादेस्सामि भिय्योकम्यतं उपादायाति सिक्खा करणीया''ति।

न सूपं वा ब्यञ्जनं वा ओदनेन पटिच्छादेतब्बं भिय्योकम्यतं उपादाय। यो अनादरियं पटिच्च सूपं वा ब्यञ्जनं वा ओदनेन पटिच्छादेति भिय्योकम्यतं उपादाय, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, सामिका पटिच्छादेत्वा देन्ति, न भिय्योकम्यतं उपादाय, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

६१२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! कस्स सम्पन्नं न मनापं! कस्स सादुं न रुच्चती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''न सूपं वा ओदनं वा अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६१३. तेन खो पन समयेन भिक्खू गिलाना होन्ति। गिलानपुच्छका भिक्खू गिलाने भिक्खू एतदवोचुं – ''कच्चावुसो, खमनीयं, कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मयं, आवुसो, सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जाम, तेन नो फासु होति। इदानि पन – ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न विञ्ञापेम, तेन नो न फासु होती''ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना सूपम्पि ओदनम्पि अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''न सूपं वा ओदनं वा अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न सूपं वा ओदनं वा अगिलानेन अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च सूपं वा ओदनं वा अगिलानो अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, ञातकानं पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

६१४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उज्झानसञ्ञी परेसं पत्तं ओलोकेन्ति…पे०…।

‘‘**न उज्झानसञ्ञी परेसं पत्तं ओलोकेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न उज्झानसञ्ञिना परेसं पत्तो ओलोकेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च उज्झानसञ्ञी परेसं पत्तं ओलोकेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, ‘‘दस्सामी’’ति वा ‘‘दापेस्सामी’’ति वा ओलोकेति, न उज्झानसञ्ञिस्स, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६१५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू महन्तं कबळं करोन्ति…पे०…।

‘‘**नातिमहन्तं कबळं करिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

नातिमहन्तो कबळो कातब्बो। यो अनादरियं पटिच्च महन्तं कबळं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, खज्जके, फलाफले, उत्तरिभङ्गे, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

६१६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू दीघं आलोपं करोन्ति…पे०…।

‘‘**परिमण्डलं आलोपं करिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

परिमण्डलो आलोपो कातब्बो। यो अनादरियं पटिच्च दीघं आलोपं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, खज्जके, फलाफले, उत्तरिभङ्गे, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

सक्कच्चवग्गो चतुत्थो।

५. कबळवग्गो

६१७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरन्ति...पे०...।

''**न अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६१८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भुञ्जमाना सब्बं हत्थं मुखे पक्खिपन्ति...पे०...।

''**न भुञ्जमानो सब्बं हत्थं मुखे पक्खिपिस्सामीति सिक्खाकरणीया**''ति।

न भुञ्जमानेन सब्बो हत्थो मुखे पक्खिपितब्बो। यो अनादरियं पटिच्च भुञ्जमानो सब्बं हत्थं मुखे पक्खिपति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

६१९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सकबळेन मुखेन ब्याहरन्ति...पे०...।

''**न सकबळेन मुखेन ब्याहरिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न सकबळेन मुखेन ब्याहरितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च सकबळेन मुखेन ब्याहरति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

६२०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पिण्डुक्खेपकं भुञ्जन्ति…पे०…।

‘‘**न पिण्डुक्खेपकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न पिण्डुक्खेपकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च पिण्डुक्खेपकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, खज्जके, फलाफले, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

६२१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू कबळावच्छेदकं भुञ्जन्ति…पे०…।

‘‘**न कबळावच्छेदकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न कबळावच्छेदकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च कबळावच्छेदकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, खज्जके फलाफले, उत्तरिभङ्गे, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६२२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू अवगण्डकारकं भुञ्जन्ति…पे०…।

‘‘**न अवगण्डकारकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न अवगण्डकारकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च एकतो वा उभतो वा गण्डं कत्वा भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, फलाफले, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

६२३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू हत्थनिद्धुनकं भुञ्जन्ति…पे०…।

‘‘**न हत्थनिद्धुनकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न हत्थनिद्धुनकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च हत्थनिद्धुनकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, कचवरं छड्डेन्तो हत्थं निद्धुनाति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

६२४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सित्थावकारकं भुञ्जन्ति…पे॰…।

‘‘**न सित्थावकारकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न सित्थावकारकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च सित्थावकारकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, कचवरं छड्डेन्तो सित्थं छड्डयति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६२५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू जिव्हानिच्छारकं भुञ्जन्ति…पे॰…।

‘‘**न जिव्हानिच्छारकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न जिव्हानिच्छारकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च जिव्हानिच्छारकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

६२६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू चपुचपुकारकं भुञ्जन्ति…पे॰…।

‘‘**न चपुचपुकारकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न चपुचपुकारकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च चपुचपुकारकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

कबळवग्गो पञ्चमो।

६. सुरुसुरुवग्गो

६२७. तेन समयेन बुद्धो भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरेन ब्राह्मणेन सङ्घस्स पयोपानं पटियत्तं होति। भिक्खू सुरुसुरुकारकं खीरं पिवन्ति। अञ्ञतरो नटपुब्बको भिक्खु एवमाह – ''सब्बोयं मञ्ञे सङ्घो सीतीकतो''ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे॰… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खु सङ्घं आरब्भ दवं करिस्सती''ति…पे॰… सच्चं किर त्वं, भिक्खु, सङ्घं आरब्भ दवं अकासीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, सङ्घं आरब्भ दवं करिस्ससि! नेतं, मोघपुरिस, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… विगरहित्वा…पे॰… धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''न, भिक्खवे, बुद्धं वा धम्मं वा सङ्घं वा आरब्भ दवो कातब्बो। यो करेय्य, आपत्ति दुक्कटस्सा''ति। अथ खो भगवा तं भिक्खुं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**न सुरुसुरुकारकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न सुरुसुरुकारकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च सुरुसुरुकारकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६२८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू हत्थनिल्लेहकं भुञ्जन्ति…पे॰…।

''**न हत्थनिल्लेहकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न हत्थनिल्लेहकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च हत्थनिल्लेहकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

६२९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पत्तनिल्लेहकं भुञ्जन्ति…पे॰…।

''**न पत्तनिल्लेहकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न पत्तनिल्लेहकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च पत्तनिल्लेहकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, परित्तके सेसे एकतो सङ्कड्ढित्वा निल्लेहित्वा भुञ्जति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

६३०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू ओट्ठनिल्लेहकं भुञ्जन्ति…पे०…।

"न ओट्ठनिल्लेहकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

न ओट्ठनिल्लेहकं भुञ्जितब्बं। यो अनादरियं पटिच्च ओट्ठनिल्लेहकं भुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे०… आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

६३१. तेन समयेन बुद्धो भगवा भग्गेसु विहरति सुसुमारगिरे [सुंसुमारगिरे (सी० स्या०), संसुमारगिरे (क०)] भेसकळावने मिगदाये। तेन खो पन समयेन भिक्खू कोकनदे [कोकनुदे (क०)] पासादे सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गण्हन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गहेस्सन्ति, सेय्यथापि गिही कामभोगिनो"ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा…पे०… ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खू सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गहेस्सन्ती"ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गण्हन्तीति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गहेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

"न सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गहेस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

न सामिसेन हत्थेन पानीयथालको पटिग्गहेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च सामिसेन हत्थेन पानीयथालकं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, "धोविस्सामी"ति वा "धोवापेस्सामी"ति वा पटिग्गण्हाति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६३२. तेन समयेन बुद्धो भगवा भग्गेसु विहरति सुसुमारगिरे भेसकळावने मिगदाये। तेन खो पन समयेन भिक्खू

कोकनदे पासादे ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेस्सन्ति, सेय्यथापि गिही कामभोगिनो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खू ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खू ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम ते, भिक्खवे, मोघपुरिसा ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**न ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेतब्बं। यो अनादरियं पटिच्च ससित्थकं पत्तधोवनं अन्तरघरे छड्डेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, उद्धरित्वा वा भिन्दित्वा वा पटिग्गहे वा नीहरित्वा वा छड्डेति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

६३३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू छत्तपाणिस्स धम्मं देसेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू छत्तपाणिस्स धम्मं देसेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, छत्तपाणिस्स धम्मं देसेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, छत्तपाणिस्स धम्मं देसेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**न छत्तपाणिस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६३४. तेन खो पन समयेन भिक्खू छत्तपाणिस्स गिलानस्स धम्मं देसेतुं कुक्कुच्चायन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया छत्तपाणिस्स गिलानस्स धम्मं न देसेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, छत्तपाणिस्स गिलानस्स धम्मं देसेतुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**न छत्तपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

छत्तं नाम तीणि छत्तानि – सेतच्छत्तं, किलञ्जच्छत्तं, पण्णच्छत्तं मण्डलबद्धं सलाकबद्धं।

धम्मो नाम बुद्धभासितो सावकभासितो इसिभासितो देवताभासितो अत्थूपसञ्हितो धम्मूपसञ्हितो।

देसेय्याति पदेन देसेति, पदे पदे आपत्ति दुक्कटस्स। अक्खराय देसेति, अक्खरक्खराय आपत्ति दुक्कटस्स। न छत्तपाणिस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च छत्तपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

६३५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू दण्डपाणिस्स धम्मं देसेन्ति…पे॰…।

‘‘**न दण्डपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

दण्डो नाम मज्झिमस्स पुरिसस्स चतुहत्थो दण्डो। ततो उक्कट्ठो अदण्डो, ओमको अदण्डो।

न दण्डपाणिस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च दण्डपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६३६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सत्थपाणिस्स धम्मं देसेन्ति…पे॰…।

‘‘**न सत्थपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

सत्थं नाम एकतोधारं उभतोधारं पहरणं।

न सत्थपाणिस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च सत्थपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च…पे॰… आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

६३७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

छब्बग्गिया भिक्खू आवुधपाणिस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

"न आवुधपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

आवुधं नाम चापो कोदण्डो।

न आवुधपाणिस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च आवुधपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

सुरुसुरुवग्गो छट्ठो।

७. पादुकवग्गो

६३८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पादुकारुळ्हस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

"न पादुकारुळ्हस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

न पादुकारुळ्हस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च अक्कन्तस्स वा पटिमुक्कस्स वा ओमुक्कस्स वा अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६३९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उपाहनारुळ्हस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

"न उपाहनारुळ्हस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खाकरणीया"ति।

न उपाहनारुळ्हस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च अक्कन्तस्स वा पटिमुक्कस्स वा ओमुक्कस्स वा अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

६४०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू यानगतस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

“**न यानगतस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

यानं नाम वय्हं रथो सकटं सन्दमानिका सिविका पाटङ्की।

न यानगतस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च यानगतस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

६४१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू सयनगतस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

“**न सयनगतस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

न सयनगतस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च अन्तमसो छमायम्पि निपन्नस्स सयनगतस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

६४२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पल्लत्थिकाय निसिन्नस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

“**न पल्लत्थिकाय निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**”ति।

न पल्लत्थिकाय निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च हत्थपल्लत्थिकाय वा दुस्सपल्लत्थिकाय वा निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६४३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

छब्बग्गिया भिक्खू वेठितसीसस्स धम्मं देसेन्ति...पे॰...।

"न वेठितसीसस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

वेठितसीसो नाम केसन्तं न दस्सापेत्वा वेठितो होति।

न वेठितसीसस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च वेठितसीसस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, केसन्तं विवरापेत्वा देसेति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

६४४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू ओगुण्ठितसीसस्स धम्मं देसेन्ति...पे॰...।

"न ओगुण्ठितसीसस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

ओगुण्ठितसीसो नाम ससीसं पारुतो वुच्चति।

न ओगुण्ठितसीसस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च ओगुण्ठितसीसस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, सीसं विवरापेत्वा देसेति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

६४५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू छमाय निसीदित्वा आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेन्ति...पे॰...।

"न छमायं निसीदित्वा आसने निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया"ति।

न छमायं निसीदित्वा [निसिन्नेन (अट्ठकथा)] आसने निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च छमायं निसीदित्वा आसने निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे॰... आदिकम्मिकस्साति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

६४६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेन्ति। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि –

६४७. ''भूतपुब्बं, भिक्खवे, बाराणसियं अञ्ञतरस्स छपकस्स [छवकस्स (स्या०)] पजापति गब्भिनी अहोसि। अथ खो, भिक्खवे, सा छपकी तं छपकं एतदवोच – 'गब्भिनीम्हि, अय्यपुत्त! इच्छामि अम्बं खादितु'न्ति। 'नत्थि अम्बं [अम्बो (स्या०)], अकालो अम्बस्सा'ति। 'सचे न लभिस्सामि मरिस्सामी'ति। तेन खो पन समयेन, रञ्ञो अम्बो धुवफलो होति। अथ खो, भिक्खवे, सो छपको येन सो अम्बो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं अम्बं अभिरुहित्वा निलीनो अच्छि। अथ खो, भिक्खवे, राजा पुरोहितेन ब्राह्मणेन सद्धिं येन सो अम्बो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा उच्चे आसने निसीदित्वा मन्तं परियापुणाति। अथ खो, भिक्खवे, तस्स छपकस्स एतदहोसि – 'याव अधम्मिको अयं राजा, यत्र हि नाम उच्चे आसने निसीदित्वा मन्तं परियापुणिस्सति। अयञ्च ब्राह्मणो अधम्मिको, यत्र हि नाम नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स मन्तं वाचेस्सति। अहञ्चम्हि अधम्मिको, योहं इत्थिया कारणा रञ्ञो अम्बं अवहरामि। सब्बमिदं चरिमं कत'न्ति तत्थेव परिपति।

[इमा गाथायो जा० १.४.३३-३५ जातके अञ्ञथा दिस्सन्ति] ''उभो अत्थं न जानन्ति, उभो धम्मं न पस्सरे।
यो चायं मन्तं वाचेति, यो चाधम्मेनधीयति॥

''सालीनं ओदनो भुत्तो, सुचिमंसूपसेचनो।
तस्मा धम्मे न वत्तामि, धम्मो अरियेभि वण्णितो॥

''धिरत्थु तं धनलाभं, यसलाभञ्च ब्राह्मण।
या वुत्ति विनिपातेन, अधम्मचरणेन वा॥

''परिब्बज महाब्रह्मे, पचन्तञ्ञेपि पाणिनो।
मा त्वं अधम्मो आचरितो, अस्मा कुम्भमिवाभिदा''ति॥

''तदापि मे, भिक्खवे, अमनापा नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स मन्तं वाचेतुं, किमङ्ग पन एतरहि न अमनापा भविस्सति नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स धम्मं देसेतुं। नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''न नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च नीचे आसने निसीदित्वा उच्चे आसने निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

६४८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू ठिता निसिन्नस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

‘‘**न ठितो निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न ठितेन निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च ठितो निसिन्नस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

६४९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू पच्छतो गच्छन्ता पुरतो गच्छन्तस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

‘‘**न पच्छतो गच्छन्तो पुरतो गच्छन्तस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न पच्छतो गच्छन्तेन पुरतो गच्छन्तस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च पच्छतो गच्छन्तो पुरतो गच्छन्तस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

एकादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

६५०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उप्पथेन गच्छन्ता पथेन गच्छन्तस्स धम्मं देसेन्ति...पे०...।

‘‘**न उप्पथेन गच्छन्तो पथेन गच्छन्तस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया**’’ति।

न उप्पथेन गच्छन्तेन पथेन गच्छन्तस्स अगिलानस्स धम्मो देसेतब्बो। यो अनादरियं पटिच्च उप्पथेन गच्छन्तो पथेन गच्छन्तस्स अगिलानस्स धम्मं देसेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

द्वादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

६५१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू ठिता उच्चारम्पि पस्सावम्पि करोन्ति...पे०...।

''न ठितो अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं वा करिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न ठितेन अगिलानेन उच्चारो वा पस्सावो वा कातब्बो। यो अनादरियं पटिच्च ठितो अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं वा करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च...पे०... आदिकम्मिकस्साति।

तेरसमसिक्खापदं निट्ठितं।

६५२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू हरिते उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करोन्ति...पे०...।

''न हरिते अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न हरिते अगिलानेन उच्चारो वा पस्सावो वा खेळो वा कातब्बो। यो अनादरियं पटिच्च हरिते अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, अप्पहरिते कतो हरितं ओत्थरति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति।

चुद्दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

६५३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करोन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम समणा सक्यपुत्तिया उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करिस्सन्ति, सेय्यथापि गिही कामभोगिनो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खू तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा...पे०... ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर तुम्हे, भिक्खवे, उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करोथाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करिस्सथ! नेतं, मोघपुरिसा, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''न उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६५४. तेन खो पन समयेन गिलाना भिक्खू उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि कातुं कुक्कुच्चायन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानेन भिक्खुना उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि कातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ –

''**न उदके अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करिस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

न उदके अगिलानेन उच्चारो वा पस्सावो वा खेळो वा कातब्बो। यो अनादरियं पटिच्च उदके अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तस्स, गिलानस्स, थले कतो उदकं ओत्थरति, आपदासु, उम्मत्तकस्स, खित्तचित्तस्स, वेदनाट्टस्स, आदिकम्मिकस्साति।

पन्नरसमसिक्खापदं निट्ठितं।

पादुकवग्गो सत्तमो।

उद्दिट्ठा खो, आयस्मन्तो, सेखिया धम्मा। तत्थायस्मन्ते पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थायस्मन्तो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

सेखिया निट्ठिता।

सेखियकण्डं निट्ठितं।

८. अधिकरणसमथा

इमे खो पनायस्मन्तो सत्त अधिकरणसमथा

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

६५५. उप्पन्नुप्पन्नानं अधिकरणानं समथाय वूपसमाय सम्मुखाविनयो दातब्बो, सतिविनयो दातब्बो, अमूळ्हविनयो दातब्बो, पटिञ्ञाय कारेतब्बं, येभुय्यसिका, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारकोति।

उद्दिट्ठा खो, आयस्मन्तो, सत्त अधिकरणसमथा धम्मा। तत्थायस्मन्ते पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थायस्मन्तो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

अधिकरणसमथा निट्ठिता।

उद्दिट्ठं खो, आयस्मन्तो, निदानं; उद्दिट्ठा चत्तारो पाराजिका धम्मा; उद्दिट्ठा तेरस सङ्घादिसेसा धम्मा; उद्दिट्ठा द्वे अनियता धम्मा; उद्दिट्ठा तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया धम्मा; उद्दिट्ठा द्वेनवुति पाचित्तिया धम्मा; उद्दिट्ठा चत्तारो पाटिदेसनीया धम्मा; उद्दिट्ठा सेखिया धम्मा; उद्दिट्ठा सत्त अधिकरणसमथा धम्मा। एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छति। तत्थ सब्बेहेव समग्गेहि सम्मोदमानेहि अविवदमानेहि सिक्खितब्बन्ति।

महाविभङ्गो निट्ठितो।

॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

भिक्खुनीविभङ्गो

१. पाराजिककण्डं (भिक्खुनीविभङ्गो)

१. पठमपाराजिकं

६५६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन साळ्हो मिगारनत्ता भिक्खुनिसङ्घस्स विहारं कत्तुकामो होति। अथ खो साळ्हो मिगारनत्ता भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोच – ‘‘इच्छामहं, अय्ये, भिक्खुनिसङ्घस्स विहारं कातुं। देथ मे नवकम्मिकं भिक्खुनि’’न्ति। तेन खो पन समयेन चतस्सो भगिनियो भिक्खुनीसु पब्बजिता होन्ति – नन्दा, नन्दवती, सुन्दरीनन्दा, थुल्लनन्दाति। तासु सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी तरुणपब्बजिता अभिरूपा होति दस्सनीया पासादिका पण्डिता ब्यत्ता मेधाविनी दक्खा अनलसा, तत्रुपायाय वीमंसाय समन्नागता, अलं कातुं अलं संविधातुं। अथ खो भिक्खुनिसङ्घो सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं सम्मन्नित्वा साळ्हस्स मिगारनत्तुनो नवकम्मिकं अदासि। तेन खो पन समयेन सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी साळ्हस्स मिगारनत्तुनो निवेसनं अभिक्खणं गच्छति – ‘‘वासिं देथ, परसुं [फरसुं (स्या॰ क॰)] देथ, कुठारिं [कुधारिं (क॰)] देथ, कुद्दालं देथ, निखादनं देथा’’ति। साळ्होपि मिगारनत्ता भिक्खुनुपस्सयं अभिक्खणं गच्छति कताकतं जानितुं। ते अभिण्हदस्सनेन पटिबद्धचित्ता अहेसुं।

अथ खो साळ्हो मिगारनत्ता सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं दूसेतुं ओकासं अलभमानो एतदेवत्थाय भिक्खुनिसङ्घस्स भत्तं अकासि। अथ खो साळ्हो मिगारनत्ता भत्तग्गे आसनं पञ्ञपेन्तो – ‘‘एत्तका भिक्खुनियो अय्याय सुन्दरीनन्दाय वुड्ढतरा’’ति एकमन्तं आसनं पञ्ञपेसि ‘‘एत्तका नवकतरा’’ति – एकमन्तं आसनं पञ्ञपेसि। पटिच्छन्ने ओकासे निकूटे सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया आसनं पञ्ञपेसि, यथा थेरा भिक्खुनियो जानेय्युं – ‘‘नवकानं भिक्खुनीनं सन्तिके निसिन्ना’’ति; नवकापि भिक्खुनियो जानेय्युं – ‘‘थेरानं भिक्खुनीनं सन्तिके निसिन्ना’’ति। अथ खो साळ्हो मिगारनत्ता भिक्खुनिसङ्घस्स कालं आरोचापेसि – ‘‘कालो, अय्ये, निट्ठितं भत्त’’न्ति। सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी सल्लक्खेत्वा – ‘‘न बहुकतो साळ्हो मिगारनत्ता भिक्खुनिसङ्घस्स भत्तं अकासि; मं सो दूसेतुकामो। सचाहं गमिस्सामि विस्सरो मे भविस्सती’’ति, अन्तेवासिनिं भिक्खुनिं आणापेसि – ‘‘गच्छ मे पिण्डपातं नीहर। यो चे मं पुच्छति, ‘गिलाना’ति पटिवेदेही’’ति। ‘‘एवं, अय्ये’’ति खो सा भिक्खुनी सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया पच्चस्सोसि।

तेन खो पन समयेन साळ्हो मिगारनत्ता बहिद्वारकोट्ठके ठितो होति सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं पटिपुच्छन्तो – "कहं, अय्ये, अय्या सुन्दरीनन्दा? कहं, अय्ये, अय्या सुन्दरीनन्दा"ति? एवं वुत्ते सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया अन्तेवासिनी भिक्खुनी साळ्हं मिगारनत्तारं एतदवोच – "गिलानावुसो; पिण्डपातं नीहरिस्सामी"ति। अथ खो साळ्हो मिगारनत्ता – "यम्पाहं अत्थाय [यंपाहं (स्या०)] भिक्खुनिसङ्घस्स भत्तं अकासिं अय्याय सुन्दरीनन्दाय कारणा"ति मनुस्से आणापेत्वा – "भिक्खुनिसङ्घं भत्तेन परिविसथा"ति वत्वा येन भिक्खुनुपस्सयो तेनुपसङ्कमि। तेन खो पन समयेन सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी बहारामकोट्ठके ठिता होति साळ्हं मिगारनत्तारं पतिमानेन्ती। अद्दसा खो सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी साळ्हं मिगारनत्तारं दूरतोव आगच्छन्तं। दिस्वान उपस्सयं पविसित्वा ससीसं पारुपित्वा मञ्चके निपज्जि। अथ खो साळ्हो मिगारनत्ता येन सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – "किं ते, अय्ये, अफासु, किस्स निपन्नासी"ति? "एवञ्हेतं, आवुसो, होति या अनिच्छन्तं इच्छती"ति। "क्याहं तं, अय्ये, न इच्छिस्सामि? अपि चाहं ओकासं न लभामि तं दूसेतु"न्ति। अवस्सुतो अवस्सुताय सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया कायसंसग्गं समापज्जि।

तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी जरादुब्बला चरणगिलाना सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया अविदूरे निपन्ना होति। अद्दसा खो सा भिक्खुनी साळ्हं मिगारनत्तारं अवस्सुतं अवस्सुताय सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया कायसंसग्गं समापज्जन्तं। दिस्वान उज्झायति खिय्यति विपाचेति – "कथञ्हि नाम अय्या सुन्दरीनन्दा अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियिस्सती"ति! अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा सन्तुट्ठा लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम अय्या सुन्दरीनन्दा अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियिस्सती"ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। ये ते भिक्खू अप्पिच्छा सन्तुट्ठा लज्जिनो कुक्कुच्चका सिक्खाकामा ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियिस्सती"ति!

अथ खो ते भिक्खू सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं अनेकपरियायेन विगरहित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा भिक्खू पटिपुच्छि – "सच्चं किर, भिक्खवे, सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियती"ति [सादियीति (क०)]? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा – "अननुच्छविकं, भिक्खवे, सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया अननुलोमिकं अप्पतिरूपं अस्सामणकं अकप्पियं अकरणीयं। कथञ्हि नाम, भिक्खवे, सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स कायसंसग्गं सादियिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय पसन्नानं वा भिय्योभावाय। अथ ख्वेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानञ्चेव अप्पसादाय पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्ताया"ति। अथ खो भगवा सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय दुप्पोसताय महिच्छताय असन्तुट्ठिताय [असन्तुट्ठताय (स्या०), असन्तुट्ठिया (क०)] सङ्गणिकाय कोसज्जस्स अवण्णं भासित्वा, अनेकपरियायेन सुभरताय सुपोसताय अप्पिच्छस्स सन्तुट्ठस्स [सन्तुट्ठिया (क०)] सल्लेखस्स धुतस्स पासादिकस्स अपचयस्स वीरियारम्भस्स वण्णं भासित्वा, भिक्खूनं तदनुच्छविकं तदनुलोमिकं धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – "तेन हि, भिक्खवे, भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय, सङ्घफासुताय, दुम्मङ्कूनं भिक्खुनीनं निग्गहाय, पेसलानं भिक्खुनीनं फासुविहाराय, दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय, सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय, सद्धम्मट्ठितिया विनयानुग्गहाय। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६५७. "या पन भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं आमसनं वा

परामसनं वा गहणं वा छुपनं वा पटिपीळनं वा सादियेय्य, अयम्पि पाराजिका होति असंवासा उब्भजाणुमण्डलिका''ति।

६५८. या पनाति या यादिसा यथायुत्ता यथाजच्चा यथानामा यथागोत्ता यथासीला यथाविहारिनी यथागोचरा थेरा वा नवा वा मज्झिमा वा, एसा वुच्चति या पनाति।

भिक्खुनीति भिक्खिकाति भिक्खुनी; भिक्खाचरियं अज्झुपगताति भिक्खुनी; भिन्नपटधराति भिक्खुनी; समञ्ञाय भिक्खुनी; पटिञ्ञाय भिक्खुनी; एहि भिक्खुनीति भिक्खुनी; तीहि सरणगमनेहि उपसम्पन्नाति भिक्खुनी; भद्रा भिक्खुनी; सारा भिक्खुनी; सेखा भिक्खुनी; असेखा भिक्खुनी; समग्गेन उभतोसङ्घेन ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन अकुप्पेन ठानारहेन उपसम्पन्नाति भिक्खुनी। तत्र यायं भिक्खुनी समग्गेन उभतोसङ्घेन ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन अकुप्पेन ठानारहेन उपसम्पन्ना, अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अवस्सुता नाम सारत्ता अपेक्खवती पटिबद्धचित्ता।

अवस्सुतो नाम सारत्तो अपेक्खवा पटिबद्धचित्तो।

पुरिसपुग्गलो नाम मनुस्सपुरिसो न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो विञ्ञू पटिबलो कायसंसग्गं समापज्जितुं।

अधक्खकन्ति हेट्ठक्खकं।

उब्भजाणुमण्डलन्ति उपरिजाणुमण्डलं।

आमसनं नाम आमट्ठमत्तं।

परामसनं नाम इतोचितो च सञ्चोपनं।

गहणं नाम गहितमत्तं।

छुपनं नाम फुट्ठमत्तं।

पटिपीळनं वा सादियेय्याति अङ्गं गहेत्वा निप्पीळनं सादियति।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पाराजिका होतीति सेय्यथापि नाम पुरिसो सीसच्छिन्नो अभब्बो तेन सरीरबन्धनेन जीवितुं, एवमेव भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं आमसनं वा परामसनं वा गहणं वा छुपनं वा पटिपीळनं वा सादियन्ती अस्समणी होति असक्यधीता। तेन वुच्चति पाराजिका होतीति।

असंवासाति **संवासो** नाम एककम्मं एकुद्देसो समसिक्खता, एसो संवासो नाम। सो ताय सद्धिं नत्थि, तेन वुच्चति

असंवासाति।

६५९. उभतोअवस्सुते अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति पाराजिकस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

६६०. एकतोअवस्सुते अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

६६१. उभतोअवस्सुते यक्खस्स वा पेतस्स वा पण्डकस्स वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहस्स वा अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति

दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

६६२. एकतोअवस्सुते अधक्खकं उब्भजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं कायेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। कायपटिबद्धेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

निस्सग्गियेन कायं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन कायपटिबद्धं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सग्गियेन निस्सग्गियं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स।

६६३. अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तिया, असादियन्तिया, उम्मत्तिकाय, खित्तचित्ताय, वेदनाट्टाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमपाराजिकं समत्तं [भिक्खुनिविभङ्गे सिक्खापदगणना भिक्खूहि§असाधारणवसेन पकासिताति वेदितब्बा]।

२. दुतियपाराजिकं

६६४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी साळ्हेन मिगारनत्तुना गब्भिनी होति। याव गब्भो तरुणो अहोसि ताव छादेसि। परिपक्के गब्भे विब्भमित्वा विजायि। भिक्खुनियो थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''सुन्दरीनन्दा खो, अय्ये, अचिरविब्भन्ता विजाता। कच्चि नो सा भिक्खुनीयेव समाना गब्भिनी''ति? ''एवं, अय्ये''ति। ''किस्स पन त्वं, अय्ये, जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेसि न गणस्स आरोचेसी''ति? ''यो एतिस्सा अवण्णो मय्हेसो अवण्णो, या एतिस्सा अकित्ति मय्हेसा अकित्ति, यो एतिस्सा अयसो मय्हेसो अयसो, यो एतिस्सा अलाभो मय्हेसो अलाभो। क्याहं, अय्ये, अत्तनो अवण्णं अत्तनो अकित्तिं अत्तनो अयसं अत्तनो अलाभं परेसं आरोचेस्सामी''ति? या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा... पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेस्सति न गणस्स आरोचेस्सती''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू [ये ते भिक्खू...पे०... (?)] भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा भिक्खू पटिपुच्छि – ''सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना

पटिचोदेति [पटिचोदेसि... आरोचेसीति (क०)] न गणस्स आरोचेती''ति [पटिचोदेसि... आरोचेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेस्सति न गणस्स आरोचेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६६५. ''या पन भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेय्य न गणस्स आरोचेय्य, यदा च सा ठिता वा अस्स चुता वा नासिता वा अवस्सटा वा, सा पच्छा एवं वदेय्य – 'पुब्बेवाहं, अय्ये, अञ्ञासिं एतं भिक्खुनिं एवरूपा च एवरूपा च सा भगिनीति, नो च खो अत्तना पटिचोदेस्सं न गणस्स आरोचेस्स'न्ति, अयम्पि पाराजिका होति असंवासा वज्जप्पटिच्छादिका''ति।

६६६. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्सा आरोचेन्ति, सा वा आरोचेति।

पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नन्ति अट्ठन्नं पाराजिकानं अञ्ञतरं पाराजिकं अज्झापन्नं।

नेवत्तना पटिचोदेय्याति न सयं चोदेय्य।

न गणस्स आरोचेय्याति न अञ्ञासं भिक्खुनीनं आरोचेय्य।

यदा च सा ठिता वा अस्स चुता वाति **ठिता** नाम सलिङ्गे ठिता वुच्चति। **चुता** नाम कालङ्कता वुच्चति। **नासिता** नाम सयं वा विब्भन्ता होति अञ्ञेहि वा नासिता। **अवस्सटा** नाम तित्थायतनं सङ्कन्ता वुच्चति। सा पच्छा एवं वदेय्य – ''पुब्बेवाहं, अय्ये, अञ्ञासिं एतं भिक्खुनिं एवरूपा च एवरूपा च सा भगिनी''ति।

नो च खो अत्तना पटिचोदेस्सन्ति सयं वा न चोदेस्सं।

न गणस्स आरोचेस्सन्ति न अञ्ञासं भिक्खुनीनं आरोचेस्सं।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पाराजिका होतीति सेय्यथापि नाम पण्डुपलासो बन्धना पमुत्तो अभब्बो हरितत्थाय, एवमेव भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेस्सामि न गणस्स आरोचेस्सामीति धुरं निक्खित्तमत्ते अस्समणी होति असक्यधीता। तेन वुच्चति पाराजिका होतीति।

असंवासाति **संवासो** नाम एककम्मं एकुद्देसो समसिक्खता। एसो संवासो नाम। सो ताय सद्धिं नत्थि। तेन वुच्चति असंवासाति।

६६७. अनापत्ति ''सङ्घस्स भण्डनं वा कलहो वा विग्गहो वा विवादो वा भविस्सती''ति नारोचेति, ''सङ्घभेदो वा सङ्घराजि वा भविस्सती''ति नारोचेति, ''अयं कक्खळा फरुसा जीवितन्तरायं वा ब्रह्मचरियन्तरायं वा करिस्सती''ति

नारोचेति, अञ्ञा पतिरूपा भिक्खुनियो अपस्सन्ती नारोचेति, नच्छादेतुकामा नारोचेति, पञ्ञायिस्सति सकेन कम्मेनाति नारोचेति, उम्मत्तिकाय...पे०... आदिकम्मिकायाति।

दुतियपाराजिकं समत्तं।

३. ततियपाराजिकं

६६८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्तति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्तिस्सती"ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्ततीति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्तिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय... पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६६९. **"या पन भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरं अप्पटिकारं अकतसहायं तमनुवत्तेय्य, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि एवमस्स वचनीया – 'एसो खो, अय्ये, भिक्खु समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तो धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरो अप्पटिकारो अकतसहायो, माय्ये, एतं भिक्खुं अनुवत्ती'ति। एवञ्च सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि वुच्चमाना तथेव पग्गण्हेय्य, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि यावततियं समनुभासितब्बा तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियं चे समनुभासियमाना तं पटिनिस्सज्जेय्य, इच्चेतं कुसलं। नो चे पटिनिस्सज्जेय्य, अयम्पि पाराजिका होति असंवासा उक्खित्तानुवत्तिका"**ति।

६७०. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

समग्गो नाम सङ्घो समानसंवासको समानसीमायं ठितो।

उक्खित्तो नाम आपत्तिया अदस्सने वा अप्पटिकम्मे वा अप्पटिनिस्सग्गे वा [अदस्सनेन वा अप्पटिकम्मेन वा अप्पटिनिस्सग्गेन वा (क०), अदस्सने वा अप्पटिकम्मे वा पापिकाय दिट्ठिया अप्पटिनिस्सग्गे वा (?)] उक्खित्तो।

धम्मेन विनयेनाति येन धम्मेन येन विनयेन।

सत्थुसासनेनाति जिनसासनेन बुद्धसासनेन।

अनादरो नाम सङ्घं वा गणं वा पुग्गलं वा कम्मं वा नादियति।

अप्पटिकारो नाम उक्खित्तो अनोसारितो।

अकतसहायो नाम समानसंवासका भिक्खू वुच्चन्ति सहाया। सो तेहि सद्धिं नत्थि, तेन वुच्चति अकतसहायोति।

तमनुवत्तेय्याति यंदिट्ठिको सो होति यंखन्तिको यंरुचिको, सापि तंदिट्ठिका होति तंखन्तिका तंरुचिका।

सा भिक्खुनीति या सा उक्खित्तानुवत्तिका भिक्खुनी।

भिक्खुनीहीति अञ्ञाहि भिक्खुनीहि। या पस्सन्ति या सुणन्ति ताहि वत्तब्बा – ''एसो खो, अय्ये, भिक्खु समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तो धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरो अप्पटिकारो अकतसहायो। माय्ये, एतं भिक्खुं अनुवत्ती''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी सङ्घमज्झम्पि आकड्ढित्वा वत्तब्बा – ''एसो खो, अय्ये, भिक्खु समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तो धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरो अप्पटिकारो अकतसहायो। माय्ये, एतं भिक्खुं अनुवत्ती''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं। नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी समनुभासितब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

६७१. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरं अप्पटिकारं अकतसहायं तमनुवत्तति, सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासेय्य तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरं अप्पटिकारं अकतसहायं तमनुवत्तति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासति तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय भिक्खुनिया समनुभासना तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰... ततियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰...।

''समनुभट्ठा सङ्घेन इत्थन्नामा भिक्खुनी तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया, कम्मवाचा परियोसाने आपत्ति पाराजिकस्स।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पाराजिका होतीति सेय्यथापि नाम पुथुसिला द्वेधा भिन्ना अप्पटिसन्धिका होति, एवमेव भिक्खुनी यावततियं समनुभासनाय न पटिनिस्सज्जन्ती अस्समणी होति असक्यधीता। तेन वुच्चति पाराजिका होतीति।

असंवासाति **संवासो** नाम एककम्मं एकुद्देसो समसिक्खता। एसो संवासो नाम। सो ताय सद्धिं नत्थि। तेन वुच्चति असंवासाति।

६७२. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाराजिकस्स। धम्मकम्मे वेमतिका न

पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाराजिकस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाराजिकस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

६७३. अनापत्ति असमनुभासन्तिया, पटिनिस्सज्जन्तिया, उम्मत्तिकाय...पे०... आदिकम्मिकायाति।

तितियपाराजिकं समत्तं।

४. चतुत्थपाराजिकं

६७४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थग्गहणम्पि सादियन्ति, सङ्घाटिकण्णग्गहणम्पि सादियन्ति, सन्तिट्ठन्तिपि, सल्लपन्तिपि, सङ्केतम्पि गच्छन्ति, पुरिसस्सपि अब्भागमनं सादियन्ति, छन्नम्पि अनुपविसन्ति, कायम्पि तदत्थाय उपसंहरन्ति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थग्गहणम्पि सादियिस्सन्ति, सङ्घाटिकण्णग्गहणम्पि सादियिस्सन्ति, सन्तिट्ठिस्सन्तिपि, सल्लपिस्सन्तिपि, सङ्केतम्पि गच्छिस्सन्ति, पुरिसस्सपि अब्भागमनं सादियिस्सन्ति, छन्नम्पि अनुपविसिस्सन्ति, कायम्पि तदत्थाय उपसंहरिस्सन्ति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाया''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थग्गहणम्पि सादियन्ति, सङ्घाटिकण्णग्गहणम्पि सादियन्ति, सन्तिट्ठन्तिपि, सल्लपन्तिपि, सङ्केतम्पि गच्छन्ति, पुरिसस्सपि अब्भागमनं सादियन्ति, छन्नम्पि अनुपविसन्ति, कायम्पि तदत्थाय उपसंहरन्ति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थायाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थग्गहणम्पि सादियिस्सन्ति, सङ्घाटिकण्णग्गहणम्पि सादियिस्सन्ति, सन्तिट्ठिस्सन्तिपि, सल्लपिस्सन्तिपि, सङ्केतम्पि गच्छिस्सन्ति, पुरिसस्सपि अब्भागमनं सादियिस्सन्ति, छन्नम्पि अनुपविसिस्सन्ति, कायम्पि तदत्थाय उपसंहरिस्सन्ति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६७५. **''या पन भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थग्गहणं वा सादियेय्य, सङ्घाटिकण्णग्गहणं वा सादियेय्य, सन्तिट्ठेय्य वा, सल्लपेय्य वा, सङ्केतं वा गच्छेय्य, पुरिसस्स वा अब्भागमनं सादियेय्य, छन्नं वा अनुपविसेय्य, कायं वा तदत्थाय उपसंहरेय्य एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय, अयम्पि पाराजिका होति असंवासा अट्ठवत्थुका''**ति।

६७६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अवस्सुता नाम सारत्ता अपेक्खवती पटिबद्धचित्ता।

अवस्सुतो नाम सारत्तो अपेक्खवा पटिबद्धचित्तो।

पुरिसपुग्गलो नाम मनुस्सपुरिसो, न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो विञ्ञू पटिबलो कायसंसग्गं समापज्जितुं।

हत्थग्गहणं वा सादियेय्याति हत्थो नाम कप्परं उपादाय याव अग्गनखा। एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय उब्भक्खकं अधोजाणुमण्डलं गहणं सादियति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

सङ्घाटिकण्णग्गहणं वा सादियेय्याति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय निवत्थं वा पारुतं वा गहणं सादियति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

सन्तिट्ठेय्य वाति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय पुरिसस्स हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

सल्लपेय्य वाति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय पुरिसस्स हत्थपासे ठिता सल्लपति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

सङ्केतं वा गच्छेय्याति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय पुरिसेन – ''इत्थन्नामं ओकासं [इदं पदं अट्ठकथायं न दिस्सति] आगच्छा''ति – वुत्ता गच्छति। पदे पदे आपत्ति दुक्कटस्स। पुरिसस्स हत्थपासं ओक्कन्तमत्ते आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

पुरिसस्स वा अब्भागमनं सादियेय्याति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय पुरिसस्स अब्भागमनं सादियति, आपत्ति दुक्कटस्स। हत्थपासं ओक्कन्तमत्ते आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

छन्नं वा अनुपविसेय्याति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय येन केनचि पटिच्छन्नं ओकासं पविट्ठमत्ते आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

कायं वा तदत्थाय उपसंहरेय्याति एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय पुरिसस्स हत्थपासे ठिता कायं उपसंहरति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पाराजिका होतीति सेय्यथापि नाम तालो मत्थकच्छिन्नो अभब्बो पुन विरुळ्हिया एवमेव भिक्खुनी अट्ठमं वत्थुं परिपूरेन्ती अस्समणी होति असक्यधीता। तेन वुच्चति पाराजिका होतीति।

असंवासाति **संवासो** नाम एककम्मं एकुद्देसो समसिक्खता। एसो संवासो नाम। सो ताय सद्धिं नत्थि। तेन वुच्चति असंवासाति।

६७७. अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तिया, असादियन्तिया, उम्मत्तिकाय, खित्तचित्ताय, वेदनाट्टाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थपाराजिकं समत्तं।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, अट्ठ पाराजिका धम्मा। येसं भिक्खुनी अञ्ञतरं वा अञ्ञतरं वा आपज्जित्वा न लभति

भिक्खुनीहि सद्धिं संवासं, यथा पुरे तथा पच्छा, पाराजिका होति असंवासा। तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

भिक्खुनिविभङ्गे पाराजिककण्डं निट्ठितं।

२. सङ्घादिसेसकण्डं (भिक्खुनीविभङ्गो)

१. पठमसङ्घादिसेससिक्खापदं

इमे खो पनाय्यायो सत्तरस सङ्घादिसेसा

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

६७८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो उपासको भिक्खुनिसङ्घस्स उदोसितं [उद्दोसितं (सी० स्या०)] दत्वा कालङ्कतो होति। तस्स द्वे पुत्ता होन्ति – एको अस्सद्धो अप्पसन्नो, एको सद्धो पसन्नो। ते पेत्तिकं सापतेय्यं विभजिंसु। अथ खो सो अस्सद्धो अप्पसन्नो तं सद्धं पसन्नं एतदवोच – ''अम्हाकं उदोसितो, तं भाजेमा''ति। एवं वुत्ते सो सद्धो पसन्नो तं अस्सद्धं अप्पसन्नं एतदवोच – ''माय्यो, एवं अवच। अम्हाकं पितुना भिक्खुनिसङ्घस्स दिन्नो''ति। दुतियम्पि खो सो अस्सद्धो अप्पसन्नो तं सद्धं पसन्नं एतदवोच – ''अम्हाकं उदोसितो, तं भाजेमा''ति। अथ खो सो सद्धो पसन्नो तं अस्सद्धं अप्पसन्नं एतदवोच – ''माय्यो, एवं अवच। अम्हाकं पितुना भिक्खुनिसङ्घस्स दिन्नो''ति। ततियम्पि खो सो अस्सद्धो अप्पसन्नो तं सद्धं पसन्नं एतदवोच – ''अम्हाकं उदोसितो, तं भाजेमा''ति। अथ खो सो सद्धो पसन्नो – ''सचे मय्हं भविस्सति, अहम्पि भिक्खुनिसङ्घस्स दस्सामी''ति – तं अस्सद्धं अप्पसन्नं एतदवोच – ''भाजेमा''ति। अथ खो सो उदोसितो तेहि भाजीयमानो तस्स अस्सद्धस्स अप्पसन्नस्स पापुणाति [पापुणि (स्या०)]। अथ खो सो अस्सद्धो अप्पसन्नो भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोच – ''निक्खमथाय्ये, अम्हाकं उदोसितो''ति।

एवं वुत्ते थुल्लनन्दा भिक्खुनी तं पुरिसं एतदवोच – ''माय्यो, एवं अवच, तुम्हाकं पितुना भिक्खुनिसङ्घस्स दिन्नो''ति। ''दिन्नो न दिन्नो''ति वोहारिके महामत्ते पुच्छिंसु। महामत्ता एवमाहंसु – ''को, अय्ये, जानाति भिक्खुनिसङ्घस्स दिन्नो''ति? एवं वुत्ते थुल्लनन्दा भिक्खुनी ते महामत्ते एतदवोच – ''अपि नाय्यो [अपि न्वय्या (स्या०), अपि नाय्यो (क०)] तुम्हेहि दिट्ठं वा सुतं वा सक्खिं ठपयित्वा दानं दिय्यमान''न्ति? अथ खो ते महामत्ता – ''सच्चं खो अय्या आहा''ति तं उदोसितं भिक्खुनिसङ्घस्स अकंसु। अथ खो सो पुरिसो पराजितो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''अस्समणियो इमा मुण्डा बन्धकिनियो। कथञ्हि नाम अम्हाकं उदोसितं अच्छिन्दापेस्सन्ती''ति! थुल्लनन्दा भिक्खुनी महामत्तानं एतमत्थं आरोचेसि। महामत्ता तं पुरिसं दण्डापेसुं। अथ खो सो पुरिसो दण्डितो भिक्खुनूपस्सयस्स अविदूरे आजीवकसेय्यं कारापेत्वा आजीवके उय्योजेसि – ''एता भिक्खुनियो अच्चावदथा''ति।

थुल्लनन्दा भिक्खुनी महामत्तानं एतमत्थं आरोचेसि। महामत्ता तं पुरिसं बन्धापेसुं। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''पठमं भिक्खुनियो उदोसितं अच्छिन्दापेसुं, दुतियं दण्डापेसुं, ततियं बन्धापेसुं। इदानि घातापेस्सन्ती''ति!

अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा उस्सयवादिका विहरिस्सती''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी उस्सयवादिका विहरतीति। ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी उस्सयवादिका विहरिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६७९. ''या पन भिक्खुनी उस्सयवादिका विहरेय्य गहपतिना वा गहपतिपुत्तेन वा दासेन वा कम्मकारेन [कम्मकरेन (सी० स्या०)] वा अन्तमसो समणपरिब्बाजकेनापि, अयं भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

६८०. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

उस्सयवादिका नाम अड्डकारिका वुच्चति।

गहपति नाम यो कोचि अगारं अज्झावसति।

गहपतिपुत्तो नाम ये केचि पुत्तभातरो।

दासो नाम अन्तोजातो धनक्कीतो करमरानीतो।

कम्मकारो नाम भटको आहतको।

समणपरिब्बाजको नाम भिक्खुञ्च भिक्खुनिञ्च सिक्खमानञ्च सामणेरञ्च सामणेरिञ्च ठपेत्वा यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो।

अड्डं करिस्सामीति दुतियं वा परियेसति गच्छति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। एकस्स आरोचेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दुतियस्स आरोचेति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। अड्डपरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

पठमापत्तिकन्ति सह वत्थुज्झाचारा आपज्जति असमनुभासनाय।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसन्ति सङ्घोव तस्सा आपत्तिया मानत्तं देति मूलाय पटिकस्सति अब्भेति, न सम्बहुला न एका भिक्खुनी। तेन वुच्चति ''सङ्घादिसेसो''ति। तस्सेव आपत्तिनिकायस्स नामकम्मं अधिवचनं। तेनपि वुच्चति ''सङ्घादिसेसो''ति।

६८१. अनापत्ति मनुस्सेहि आकड्ढीयमाना गच्छति, आरक्खं याचति, अनोदिस्स आचिक्खति, उम्मत्तिकाय...पे०... आदिकम्मिकायाति।

पठमसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसङ्घादिसेससिक्खापदं

६८२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन वेसालियं अञ्ञतरस्स लिच्छविस्स पजापति अतिचारिनी होति। अथ खो सो लिच्छवि तं इत्थिं एतदवोच – ''साधु विरमाहि, अनत्थं खो ते करिस्सामी''ति। एवम्पि सा वुच्चमाना नादियि। तेन खो पन समयेन वेसालियं लिच्छविगणो सन्निपतितो होति केनचिदेव करणीयेन। अथ खो सो लिच्छवि ते लिच्छवयो एतदवोच – ''एकं मे, अय्यो, इत्थिं अनुजानाथा''ति। ''का नाम सा''ति? ''मय्हं पजापति अतिचरति, तं घातेस्सामी''ति। ''जानाही''ति। अस्सोसि खो सा इत्थी – ''सामिको किर मं घातेतुकामो''ति। वरभण्डं आदाय सावत्थिं गन्त्वा तित्थिये उपसङ्कमित्वा पब्बज्जं याचि। तित्थिया न इच्छिंसु पब्बाजेतुं। भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा पब्बज्जं याचि। भिक्खुनियोपि न इच्छिंसु पब्बाजेतुं। थुल्लनन्दं भिक्खुनिं उपसङ्कमित्वा भण्डकं दस्सेत्वा पब्बज्जं याचि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी भण्डकं गहेत्वा पब्बाजेसि।

अथ खो सो लिच्छवि तं इत्थिं गवेसन्तो सावत्थिं गन्त्वा भिक्खुनीसु पब्बजितं दिस्वान येन राजा पसेनदि कोसलो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा राजानं पसेनदिं कोसलं एतदवोच – ''पजापति मे, देव, वरभण्डं आदाय सावत्थिं अनुप्पत्ता। तं देवो अनुजानातू''ति। ''तेन हि, भणे, विचिनित्वा आचिक्खा''ति। ''दिट्ठा, देव, भिक्खुनीसु पब्बजिता''ति। ''सचे, भणे, भिक्खुनीसु पब्बजिता, न सा लब्भा किञ्चि कातुं। स्वाक्खातो भगवता धम्मो, चरतु ब्रह्मचरियं सम्मा दुक्खस्स अन्तकिरियाया''ति। अथ खो सो लिच्छवि उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो चोरिं पब्बाजेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तस्स लिच्छविस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा चोरिं पब्बाजेस्सती''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी चोरिं पब्बाजेतीति [पब्बाजेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी चोरिं पब्बाजेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६८३. ''या पन भिक्खुनी जानं चोरिं वज्झं विदितं अनपलोकेत्वा राजानं वा सङ्घं वा गणं वा पूगं वा सेणिं वा अञ्ञत्र कप्पा वुट्ठापेय्य, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

६८४. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

जानाति नाम सामं वा जानाति अञ्ञे वा तस्सा आरोचेन्ति, सा वा आरोचेति।

चोरी नाम या पञ्चमासकं वा अतिरेकपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति, एसा चोरी नाम।

वज्झा नाम यं कत्वा वज्झप्पत्ता होति।

विदिता नाम अञ्ञेहि मनुस्सेहि ञाता होति ''वज्झा एसा''ति।

अनपलोकेत्वाति अनापुच्छा।

राजा नाम यत्थ राजा अनुसासति, राजा अपलोकेतब्बो।

सङ्घो नाम भिक्खुनिसङ्घो वुच्चति, भिक्खुनिसङ्घो अपलोकेतब्बो।

गणो नाम यत्थ गणो अनुसासति, गणो अपलोकेतब्बो।

पूगो नाम यत्थ पूगो अनुसासति, पूगो अपलोकेतब्बो।

सेणि नाम यत्थ सेणि अनुसासति, सेणि अपलोकेतब्बो।

अञ्ञत्र कप्पाति ठपेत्वा कप्पं। **कप्पं** नाम द्वे कप्पानि – तित्थियेसु वा पब्बजिता होति अञ्ञासु वा भिक्खुनीसु पब्बजिता। अञ्ञत्र कप्पा ''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

अयम्पीति पुरिमं उपादाय वुच्चति।

पठमापत्तिकन्ति सह वत्थुज्झाचारा आपज्जति असमनुभासनाय।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसन्ति...पे०... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

६८५. चोरिया चोरिसञ्ञा अञ्ञत्र कप्पा वुट्ठापेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। चोरिया वेमतिका अञ्ञत्र कप्पा वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। चोरिया अचोरिसञ्ञा अञ्ञत्र कप्पा वुट्ठापेति, अनापत्ति। अचोरिया चोरिसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अचोरिया वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अचोरिया अचोरिसञ्ञा, अनापत्ति।

६८६. अनापत्ति अजानन्ती वुट्ठापेति, अपलोकेत्वा वुट्ठापेति, कप्पकतं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसङ्घादिसेससिक्खापदं

६८७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भद्दाय कापिलानिया अन्तेवासिनी भिक्खुनी भिक्खुनीहि सद्धिं भण्डित्वा गामकं [गामके (स्या०)] ञातिकुलं अगमासि। भद्दा कापिलानी तं भिक्खुनिं अपस्सन्ती भिक्खुनियो पुच्छि – ''कहं इत्थन्नामा, न दिस्सती''ति! ''भिक्खुनीहि सद्धिं, अय्ये, भण्डित्वा न दिस्सती''ति। ''अम्मा, अमुकस्मिं गामके एतिस्सा ञातिकुलं। तत्थ गन्त्वा विचिनथा''ति। भिक्खुनियो तत्थ गन्त्वा तं भिक्खुनिं पस्सित्वा एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, अय्ये, एकिका आगता, कच्चिसि अप्पधंसिता''ति? ''अप्पधंसिताम्हि, अय्ये''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम

भिक्खुनी एका गामन्तरं गच्छिस्सती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी एका गामन्तरं गच्छतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी एका गामन्तरं गच्छिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी एका गामन्तरं गच्छेय्य, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६८८. तेन खो पन समयेन द्वे भिक्खुनियो साकेता सावत्थिं अद्धानमग्गप्पटिपन्ना होन्ति। अन्तरामग्गे नदी तरितब्बा होति। अथ खो ता भिक्खुनियो नाविके उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – ''साधु नो, आवुसो, तारेथा''ति। ''नाय्ये, सक्का उभो सकिं तारेतु''न्ति। एको एकं उत्तारेसि। उत्तिण्णो उत्तिण्णं दूसेसि। अनुत्तिण्णो अनुत्तिण्णं दूसेसि। ता पच्छा समागन्त्वा पुच्छिंसु – ''कच्चिसि, अय्ये, अप्पधंसिता''ति? ''पधंसिताम्हि, अय्ये! त्वं पन, अय्ये, अप्पधंसिता''ति? ''पधंसिताम्हि, अय्ये''ति। अथ खो ता भिक्खुनियो सावत्थिं गन्त्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी एका नदीपारं गच्छिस्सती''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी एका नदीपारं गच्छती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी एका नदीपारं गच्छिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी एका वा गामन्तरं गच्छेय्य, एका वा नदीपारं गच्छेय्य, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६८९. तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खुनियो कोसलेसु जनपदे सावत्थिं गच्छन्ता [गन्त्वा (क॰)] सायं अञ्ञतरं गामं उपगच्छिंसु। तत्थ अञ्ञतरा भिक्खुनी अभिरूपा होति दस्सनीया पासादिका। अञ्ञतरो पुरिसो तस्सा भिक्खुनिया सह दस्सनेन पटिबद्धचित्तो होति। अथ खो सो पुरिसो तासं भिक्खुनीनं सेय्यं पञ्ञपेन्तो तस्सा भिक्खुनिया सेय्यं एकमन्तं पञ्ञापेसि। अथ खो सा भिक्खुनी सल्लक्खेत्वा – ''परियुट्ठितो अयं पुरिसो; सचे रत्तिं आगच्छिस्सति, विस्सरो मे भविस्सती''ति, भिक्खुनियो अनापुच्छा अञ्ञतरं कुलं गन्त्वा सेय्यं कप्पेसि। अथ खो सो पुरिसो रत्तिं आगन्त्वा तं भिक्खुनिं गवेसन्तो भिक्खुनियो घट्टेसि। भिक्खुनियो तं भिक्खुनिं अपस्सन्तियो एवमाहंसु – ''निस्संसयं खो सा भिक्खुनी पुरिसेन सद्धिं निक्खन्ता''ति।

अथ खो सा भिक्खुनी तस्सा रत्तिया अच्चयेन येन ता भिक्खुनियो तेनुपसङ्कमि। भिक्खुनियो तं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, अय्ये, पुरिसेन सद्धिं निक्खन्ता''ति? ''नाहं, अय्ये, पुरिसेन सद्धिं निक्खन्ता''ति। भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी एका रत्तिं विप्पवसिस्सती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी एका रत्तिं विप्पवसीति [विप्पवसीति (क॰)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी एका रत्तिं विप्पवसिस्सति! नेतं, भिक्खवे,

अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी एका वा गामन्तरं गच्छेय्य, एका वा नदीपारं गच्छेय्य, एका वा रत्तिं विप्पवसेय्य, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

६९०. तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खुनियो कोसलेसु जनपदे सावत्थिं अद्धानमग्गप्पटिपन्ना होन्ति। तत्थ अञ्ञतरा भिक्खुनी वच्चेन पीळिता एकिका ओहीयित्वा [ओहियित्वा (क॰)] पच्छा अगमासि। मनुस्सा तं भिक्खुनिं पस्सित्वा दूसेसुं। अथ खो सा भिक्खुनी येन ता भिक्खुनियो तेनुपसङ्कमि। भिक्खुनियो तं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, अय्ये, एकिका ओहीना, कच्चिसि अप्पधंसिता''ति? ''पधंसिताम्हि, अय्ये''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम भिक्खुनी एका गणम्हा ओहीयिस्सतीति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी एका गणम्हा ओहीयतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी एका गणम्हा ओहीयिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६९१. ''या पन भिक्खुनी एका वा गामन्तरं गच्छेय्य, एका वा नदीपारं गच्छेय्य, एका वा रत्तिं विप्पवसेय्य, एका वा गणम्हा ओहीयेय्य, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

६९२. या पनाति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

एका वा गामन्तरं गच्छेय्याति परिक्खित्तस्स गामस्स परिक्खेपं पठमं पादं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति थुल्लच्चयस्स, दुतियं पादं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अपरिक्खित्तस्स गामस्स उपचारं पठमं पादं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति थुल्लच्चयस्स। दुतियं पादं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

एका वा नदीपारं गच्छेय्याति नदी नाम तिमण्डलं पटिच्छादेत्वा यत्थ कत्थचि उत्तरन्तिया भिक्खुनिया अन्तरवासको तेमियति। पठमं पादं उत्तरन्तिया आपत्ति थुल्लच्चयस्स। दुतियं पादं उत्तरन्तिया आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

एका वा रत्तिं विप्पवसेय्याति सह अरुणुग्गमना दुतियिकाय भिक्खुनिया हत्थपासं विजहन्तिया आपत्ति थुल्लच्चयस्स। विजहिते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

एका वा गणम्हा ओहीयेय्याति अगामके अरञ्ञे दुतियिकाय भिक्खुनिया दस्सनूपचारं वा सवनूपचारं वा विजहन्तिया आपत्ति थुल्लच्चयस्स। विजहिते आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पठमापत्तिकन्ति सह वत्थुज्झाचारा आपज्जति असमनुभासनाय।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे०... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

६९३. अनापत्ति दुतियिका भिक्खुनी पक्कन्ता वा होति विब्भन्ता वा कालङ्कता वा पक्खसङ्कन्ता वा, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

तततियसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसङ्घादिसेससिक्खापदं

६९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी भण्डनकारिका होति कलहकारिका विवादकारिका भस्सकारिका सङ्घे अधिकरणकारिका। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तस्सा कम्मे करीयमाने पटिक्कोसति। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी गामकं अगमासि केनचिदेव करणीयेन। अथ खो भिक्खुनिसङ्घो – "थुल्लनन्दा भिक्खुनी पक्कन्ता"ति, चण्डकाळिं भिक्खुनिं आपत्तिया अदस्सने [अदस्सनेन (क०)] उक्खिपि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी गामके तं करणीयं तीरेत्वा पुनदेव सावत्थिं पच्चागच्छि। चण्डकाळी भिक्खुनी थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया आगच्छन्तिया नेव आसनं पञ्ञपेसि न पादोदकं पादपीठं पादकठलिकं उपनिक्खिपि न पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं पटिग्गहेसि न पानीयेन आपुच्छि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी चण्डकाळिं भिक्खुनिं एतदवोच – "किस्स त्वं, अय्ये, मयि आगच्छन्तिया नेव आसनं पञ्ञपेसि न पादोदकं पादपीठं पादकठलिकं उपनिक्खिपि न पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं पटिग्गहेसि न पानीयेन आपुच्छी"ति? "एवञ्हेतं, अय्ये, होति यथा तं अनाथाया"ति। "किस्स पन त्वं, अय्ये, अनाथा"ति? "इमा मं, अय्ये, भिक्खुनियो – 'अयं अनाथा अप्पञ्ञाता, नत्थि इमिस्सा काचि पटिवत्ता'ति, आपत्तिया अदस्सने [अदस्सनेन (क०)] उक्खिपिंसू"ति।

थुल्लनन्दा भिक्खुनी – "बाला एता अब्यत्ता एता, नेव जानन्ति कम्मं वा कम्मदोसं वा कम्मविपत्तिं वा कम्मसम्पत्तिं वा। मयं खो जानाम कम्मम्पि कम्मदोसम्पि कम्मविपत्तिम्पि कम्मसम्पत्तिम्पि। मयं खो अकतं वा कम्मं कारेय्याम कतं वा कम्मं कोपेय्यामा"ति, लहुं लहुं भिक्खुनिसङ्घं सन्निपातेत्वा चण्डकाळिं भिक्खुनिं ओसारेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेस्सती"ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेतीति [ओसारेसीति (क०)]? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

६९५. **"या पन भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुनिं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनपलोकेत्वा कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेय्य, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस**"न्ति।

६९६. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

समग्गो नाम **सङ्घो** समानसंवासको समानसीमायं ठितो।

उक्खित्ता नाम आपत्तिया अदस्सने वा अप्पटिकम्मे वा अप्पटिनिस्सग्गे वा [अदस्सनेन वा अप्पटिकम्मेन वा अप्पटिनिस्सग्गेन वा (क०), अदस्सने वा अप्पटिकम्मे वा पापिकाय दिट्ठिया अप्पटिनिस्सग्गे वा (?)] उक्खित्ता।

धम्मेन विनयेनाति येन धम्मेन येन विनयेन।

सत्थुसासनेनाति जिनसासनेन बुद्धसासनेन।

अनपलोकेत्वा कारकसङ्घन्ति कम्मकारकसङ्घं अनापुच्छा।

अनञ्ञाय गणस्स छन्दन्ति गणस्स छन्दं अजानित्वा।

''ओसारेस्सामी''ति गणं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया, कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पठमापत्तिकन्ति सह वत्थुज्झाचारा आपज्जति असमनुभासनाय।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे०... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

६९७. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा ओसारेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे वेमतिका ओसारेति आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा ओसारेति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

६९८. अनापत्ति कम्मकारकसङ्घं अपलोकेत्वा ओसारेति, गणस्स छन्दं जानित्वा ओसारेति, वत्ते वत्तन्तिं ओसारेति, असन्ते कम्मकारकसङ्घे ओसारेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसङ्घादिसेससिक्खापदं

६९९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अभिरूपा होति दस्सनीया पासादिका। मनुस्सा भत्तग्गे सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं पस्सित्वा अवस्सुता अवस्सुताय सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया अग्गमग्गानि भोजनानि देन्ति। सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी यावदत्थं भुञ्जति; अञ्ञा भिक्खुनियो न चित्तरूपं लभन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या सुन्दरीनन्दा अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादिस्सति भुञ्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादति भुञ्जतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादिस्सति भुञ्जिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७००. ''या पन भिक्खुनी अवस्सुता अवस्सुतस्स पुरिसपुग्गलस्स हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा सहत्था पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

७०१. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अवस्सुता नाम सारत्ता अपेक्खवती पटिबद्धचित्ता।

अवस्सुतो नाम सारत्तो अपेक्खवा पटिबद्धचित्तो।

पुरिसपुग्गलो नाम मनुस्सपुरिसो, न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो, विञ्ञू पटिबलो सारज्जितुं।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – उदकदन्तपोनं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति थुल्लच्चयस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पठमापत्तिकन्ति सह वत्थुज्झाचारा आपज्जति असमनुभासनाय।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे०... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। एकतोअवस्सुते ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

७०२. अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति थुल्लच्चयस्स। उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। उभतोअवस्सुते यक्खस्स वा पेतस्स वा पण्डकस्स वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहस्स वा हत्थतो ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति थुल्लच्चयस्स। उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। एकतोअवस्सुते ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

७०३. अनापत्ति उभतोअनवस्सुता होन्ति, ''अनवस्सुतो''ति जानन्ती पटिग्गण्हाति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसङ्घादिसेससिक्खापदं

७०४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी अभिरूपा होति दस्सनीया पासादिका। मनुस्सा भत्तग्गे सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं पस्सित्वा अवस्सुता सुन्दरीनन्दाय भिक्खुनिया अग्गमग्गानि भोजनानि देन्ति। सुन्दरीनन्दा भिक्खुनी कुक्कुच्चायन्ती न पटिग्गण्हाति। अनन्तरिका भिक्खुनी सुन्दरीनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''किस्स त्वं, अय्ये, न पटिग्गण्हासी''ति? ''अवस्सुता, अय्ये''ति। ''त्वं पन, अय्ये, अवस्सुता''ति? ''नाहं, अय्ये, अवस्सुता''ति। ''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता। इङ्घं, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा, भुञ्ज वा''ति।

या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी एवं वक्खति – 'किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता। इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी एवं वदेति – ''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा यतो त्वं अनवस्सुता! इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी एवं वक्खति – ''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा यतो त्वं अनवस्सुता; इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''। नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७०५. **''या पन भिक्खुनी एवं वदेय्य – 'किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता। इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा'ति, अयम्पि भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस**''न्ति।

७०६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

एवं वदेय्याति – ''किं ते, अय्ये, एसो पुरिसपुग्गलो करिस्सति अवस्सुतो वा अनवस्सुतो वा, यतो त्वं अनवस्सुता। इङ्घ, अय्ये, यं ते एसो पुरिसपुग्गलो देति खादनीयं वा भोजनीयं वा तं त्वं सहत्था पटिग्गहेत्वा खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्सा वचनेन ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति थुल्लच्चयस्स। भोजनपरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

पठमापत्तिकन्ति सह वत्थुज्झाचारा आपज्जति असमनुभासनाय।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे०... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

उदकदन्तपोनं ''पटिग्गण्हा''ति उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्सा वचनेन खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

७०७. एकतोअवस्सुते यक्खस्स वा पेतस्स वा पण्डकस्स वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहस्स वा हत्थतो खादनीयं वा भोजनीयं वा ''खाद वा भुञ्ज वा''ति उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्सा वचनेन ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स। भोजनपरियोसाने आपत्ति थुल्लच्चयस्स। उदकदन्तपोनं पटिग्गण्हाति उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्सा वचनेन ''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स।

७०८. अनापत्ति ''अनवस्सुतो''ति जानन्ती उय्योजेति, ''कुपिता न पटिग्गण्हाती''ति उय्योजेति, ''कुलानुद्दयताय न पटिग्गण्हाती''ति उय्योजेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसङ्घादिसेससिक्खापदं

७०९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी भिक्खुनीहि सद्धिं भण्डित्वा कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – ''बुद्धं पच्चाचिक्खामि, धम्मं पच्चाचिक्खामि, सङ्घं पच्चाचिक्खामि, सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो, सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या चण्डकाळी [चण्डकाळी भिक्खुनी (क०)] कुपिता अनत्तमना एवं वक्खति – बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो, सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – ''बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो, सन्तञ्ञापि समणियो

लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं वक्खति – ''बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो, सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी''ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७१०. ''या पन भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं वदेय्य – 'बुद्धं पच्चाचिक्खामि, धम्मं पच्चाचिक्खामि, सङ्घं पच्चाचिक्खामि, सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी'ति, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि एवमस्स वचनीया – 'माय्ये, कुपिता अनत्तमना एवं अवच – बुद्धं पच्चाचिक्खामि, धम्मं पच्चाचिक्खामि, सङ्घं पच्चाचिक्खामि, सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामीति, अभिरमाय्ये, स्वाक्खातो धम्मो; चर ब्रह्मचरियं सम्मा दुक्खस्स अन्तकिरियाया'ति। एवञ्च सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि वुच्चमाना तथेव पग्गण्हेय्य, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि यावततियं समनुभासितब्बा तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियञ्चे समनुभासीयमाना तं पटिनिस्सज्जेय्य इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जेय्य, अयम्पि भिक्खुनी यावततियकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

७११. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

कुपिता अनत्तमनाति अनभिरद्धा आहतचित्ता खिलजाता।

एवं वदेय्याति – ''बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी''ति।

सा भिक्खुनीति या सा एवंवादिनी भिक्खुनी। **भिक्खुनीही**ति अञ्ञाहि भिक्खुनीहि।

या पस्सन्ति या सुणन्ति ताहि वत्तब्बा – ''माय्ये, कुपिता अनत्तमना एवं अवच – 'बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी'ति। अभिरमाय्ये, स्वाक्खातो धम्मो; चर ब्रह्मचरियं सम्मा दुक्खस्स अन्तकिरियाया''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति इच्चेतं कुसलं, नो चे पटिनिस्सज्जति आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी सङ्घमज्झम्पि आकड्ढित्वा वत्तब्बा – ''माय्ये, कुपिता अनत्तमना एवं अवच – 'बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी'ति। अभिरमाय्ये, स्वाक्खातो धम्मो; चर ब्रह्मचरियं सम्मा दुक्खस्स अन्तकिरियाया''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति इच्चेतं कुसलं, नो चे पटिनिस्सज्जति आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी समनुभासितब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

७१२. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – 'बुद्धं पच्चाचिक्खामि,

धम्मं पच्चाचिक्खामि, सङ्घं पच्चाचिक्खामि, सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी'ति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासेय्य तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – 'बुद्धं पच्चाचिक्खामि...पे०... सिक्खं पच्चाचिक्खामि। किन्नुमाव समणियो या समणियो सक्यधीतरो! सन्तञ्ञापि समणियो लज्जिनियो कुक्कुच्चिका सिक्खाकामा, तासाहं सन्तिके ब्रह्मचरियं चरिस्सामी'ति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासति तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय भिक्खुनिया समनुभासना तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति सा, भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे०... ततियम्पि एतमत्थं वदामि...पे०...।

''समनुभट्ठा सङ्घेन इत्थन्नामा भिक्खुनी तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया। कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। सङ्घादिसेसं अज्झापज्जन्तिया ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया पटिप्पस्सम्भन्ति।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

यावततियकन्ति यावततियं समनुभासनाय आपज्जति, न सह वत्थुज्झाचारा।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे०... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

७१३. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे वेमतिका न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

७१४. अनापत्ति असमनुभासन्तिया, पटिनिस्सज्जन्तिया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसङ्घादिसेससिक्खापदं

७१५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – ''छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो, दोसगामिनियो च भिक्खुनियो, मोहगामिनियो च भिक्खुनियो, भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या चण्डकाळी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वक्खति – छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – ''छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वक्खति – ''छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७१६. ''या पन भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वदेय्य – 'छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो, दोसगामिनियो च भिक्खुनियो, मोहगामिनियो च भिक्खुनियो, भयगामिनियो च भिक्खुनियो'ति, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि एवमस्स वचनीया – 'माय्ये, किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं अवच – छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो दोसगामिनियो च भिक्खुनियो मोहगामिनियो च भिक्खुनियो भयगामिनियो च भिक्खुनियोति। अय्या खो छन्दापि गच्छेय्य, दोसापि गच्छेय्य, मोहापि गच्छेय्य, भयापि गच्छेय्या'ति। एवञ्च सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि वुच्चमाना तथेव पग्गण्हेय्य, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि यावततियं समनुभासितब्बा तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियञ्चे समनुभासीयमाना तं पटिनिस्सज्जेय्य, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जेय्य, अयम्पि भिक्खुनी यावततियकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

७१७. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

किस्मिञ्चिदेव अधिकरणेति अधिकरणं नाम चत्तारि अधिकरणानि – विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं।

पच्चाकता नाम पराजिता वुच्चति।

कुपिता अनत्तमनाति अनभिरद्धा आहतचित्ता खिलजाता।

एवं वदेय्याति – ''छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो''ति।

सा भिक्खुनीति या सा एवंवादिनी भिक्खुनी।

भिक्खुनीहीति अञ्ञाहि भिक्खुनीहि।

या पस्सन्ति या सुणन्ति ताहि वत्तब्बा – ''माय्ये, किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं अवच – 'छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो'ति। अय्या खो छन्दापि गच्छेय्य...पे॰... भयापि

गच्छेय्या''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी सङ्घमज्झम्पि आकड्ढित्वा वत्तब्बा – ''माय्ये, किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं अवच – 'छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो'ति। अय्या खो छन्दापि गच्छेय्य...पे॰... भयापि गच्छेय्या''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी समनुभासितब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

७१८. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – 'छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो'ति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासेय्य तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी किस्मिञ्चिदेव अधिकरणे पच्चाकता कुपिता अनत्तमना एवं वदेति – 'छन्दगामिनियो च भिक्खुनियो...पे॰... भयगामिनियो च भिक्खुनियो'ति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासति तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय भिक्खुनिया समनुभासना तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰... ततियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰...।

''समनुभट्ठा सङ्घेन इत्थन्नामा भिक्खुनी तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया। कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। सङ्घादिसेसं अज्झापज्जन्तिया ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया पटिप्पस्सम्भन्ति।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

यावततियकन्ति यावततियं समनुभासनाय आपज्जति, न सह वत्थुज्झाचारा।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे॰... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

७१९. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेस्स। धम्मकम्मे वेमतिका न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा आपत्ति दुक्कटस्स।

७२०. अनापत्ति असमनुभासन्तिया, पटिनिस्सज्जन्तिया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसङ्घादिसेससिक्खापदं

७२१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया अन्तेवासिका भिक्खुनियो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो संसट्ठा विहरिस्सन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिकाति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो संसट्ठा विहरिस्सन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७२२. ''**भिक्खुनियो पनेव संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता भिक्खुनियो भिक्खुनीहि एवमस्सु वचनीया – 'भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'ति। एवञ्च ता भिक्खुनियो भिक्खुनीहि वुच्चमाना तथेव पग्गण्हेय्युं, ता भिक्खुनियो भिक्खुनीहि यावततियं समनुभासितब्बा तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियञ्चे समनुभासीयमाना तं पटिनिस्सज्जेय्युं, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जेय्युं, इमापि भिक्खुनियो यावततियकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस**''न्ति।

७२३. **भिक्खुनियो पनेवा**ति उपसम्पन्नायो वुच्चन्ति।

संसट्ठा विहरन्तीति संसट्ठा नाम अननुलोमिकेन कायिकवाचसिकेन संसट्ठा विहरन्ति।

पापाचाराति पापकेन आचारेन समन्नागता।

पापसद्दाति पापकेन कित्तिसद्देन अब्भुग्गता।

पापसिलोकाति पापकेन मिच्छाजीवेन जीवितं कप्पेन्ति।

भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिकाति अञ्ञमञ्ञिस्सा कम्मे करीयमाने पटिक्कोसन्ति।

अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिकाति अञ्ञमञ्ञं वज्जं पटिच्छादेन्ति।

ता भिक्खुनियोति या ता संसट्ठा भिक्खुनियो।

भिक्खुनीहीति अञ्ञाहि भिक्खुनीहि।

या पस्सन्ति या सुणन्ति ताहि वत्तब्बा – ''भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जन्ति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। ता भिक्खुनियो सङ्घमज्झम्पि आकड्ढित्वा वत्तब्बा – ''भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जन्ति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। ता भिक्खुनियो समनुभासितब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

७२४. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। इत्थन्नामा च इत्थन्नामा च भिक्खुनियो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जन्ति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामञ्च इत्थन्नामञ्च भिक्खुनियो समनुभासेय्य तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। इत्थन्नामा च इत्थन्नामा च भिक्खुनियो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जन्ति। सङ्घो इत्थन्नामञ्च इत्थन्नामञ्च भिक्खुनियो समनुभासति तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय च इत्थन्नामाय च भिक्खुनीनं समनुभासना तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰... ततियम्पि एतमत्थं वदामि...पे॰...।

''समनुभट्ठा सङ्घेन, इत्थन्नामा च इत्थन्नामा च भिक्खुनियो तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया, कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। सङ्घादिसेसं अज्झापज्जन्तीनं ञत्तिया दुक्कटं द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया पटिप्पस्सम्भन्ति। द्वे तिस्सो एकतो समनुभासितब्बा। ततुत्तरि न समनुभासितब्बा।

इमापि भिक्खुनियोति पुरिमायो उपादाय वुच्चन्ति।

यावततियकन्ति यावततियं समनुभासनाय आपज्जन्ति, न सह वत्थुज्झाचारा।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति...पे॰... तेनपि वुच्चति सङ्घादिसेसोति।

७२५. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे वेमतिका न

पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जन्ति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

७२६. अनापत्ति असमनुभासन्तीनं, पटिनिस्सज्जन्तीनं, उम्मत्तिकानं, आदिकम्मिकानन्ति।

नवमसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसङ्घादिसेससिक्खापदं

७२७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनीसङ्घेन समनुभट्ठा भिक्खुनियो एवं वदेति – ''संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह। तुम्हञ्ञेव [तुम्हेयेव (स्या॰)] सङ्घो उञ्ञाय परिभवेन अक्खन्तिया वेभस्सिया [वेभस्सा (सी॰ स्या॰)] दुब्बल्या एवमाह – 'भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती' ''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा भिक्खुनी सङ्घेन समनुभट्ठा भिक्खुनियो एवं वक्खति – संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो…पे॰… विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेतीति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सङ्घेन समनुभट्ठा भिक्खुनियो एवं वदेति – संसट्ठाव अय्ये तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह। तुम्हञ्ञेव सङ्घो उञ्ञाय परिभवेन अक्खन्तिया वेभस्सिया दुब्बल्या एवमाह – भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेतीति? ''सच्चं भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सङ्घेन समनुभट्ठा भिक्खुनियो एवं वक्खति – संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो…पे॰… विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेतीति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७२८. **''या पन भिक्खुनी एवं वदेय्य – 'संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह। तुम्हञ्ञेव सङ्घो उञ्ञाय परिभवेन अक्खन्तिया वेभस्सिया दुब्बल्या एवमाह – भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'ति। सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि एवमस्स वचनीया – 'मा, अय्ये, एवं अवच – संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह। तुम्हञ्ञेव सङ्घो उञ्ञाय परिभवेन अक्खन्तिया**

वेभस्सिया दुब्बल्या एवमाह – भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'ति। एवञ्च सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि वुच्चमाना तथेव पग्गण्हेय्य, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि यावततियं समनुभासितब्बा तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियञ्चे समनुभासीयमाना तं पटिनिस्सज्जेय्य, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जेय्य, अयम्पि भिक्खुनी यावततियकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेस''न्ति।

७२९. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

एवं वदेय्याति – ''संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह''।

तुम्हञ्ञेव सङ्घो उञ्ञायाति अवञ्ञाय।

परिभवेनाति पारिभब्यता।

अक्खन्तियाति कोपेन।

वेभस्सियाति विभस्सीकता [विभस्सिकताय (सी॰)]।

दुब्बल्याति अपक्खता।

एवमाह – ''भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विचिच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती''ति।

सा भिक्खुनीति या सा एवंवादिनी भिक्खुनी।

भिक्खुनीहीति अञ्ञाहि भिक्खुनीहि।

या पस्सन्ति या सुणन्ति ताहि वत्तब्बा – ''माय्ये, एवं अवच – 'संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो...पे॰... विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी सङ्घमज्झम्पि आकड्ढित्वा वत्तब्बा – ''माय्ये, एवं अवच – 'संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो...पे॰... विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी समनुभासितब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

७३०. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी सङ्घेन समनुभट्ठा भिक्खुनियो एवं वदेति – 'संसट्ठाव

अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह। तुम्हञ्ञेव सङ्घो उञ्ञाय परिभवेन अक्खन्तिया वेभस्सिया दुब्बल्या एवमाह – भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'ति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासेय्य तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी सङ्घेन समनुभट्ठा भिक्खुनियो एवं वदेति – 'संसट्ठाव अय्ये, तुम्हे विहरथ। मा तुम्हे नाना विहरित्थ। सन्ति सङ्घे अञ्ञापि भिक्खुनियो एवाचारा एवंसद्दा एवंसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। ता सङ्घो न किञ्चि आह। तुम्हञ्ञेव सङ्घो उञ्ञाय परिभवेन अक्खन्तिया वेभस्सिया दुब्बल्या एवमाह – भगिनियो खो संसट्ठा विहरन्ति पापाचारा पापसद्दा पापसिलोका, भिक्खुनिसङ्घस्स विहेसिका, अञ्ञमञ्ञिस्सा वज्जप्पटिच्छादिका। विविच्चथाय्ये। विवेकञ्ञेव भगिनीनं सङ्घो वण्णेती'ति। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासति तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय भिक्खुनिया समनुभासना तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे०... ततियम्पि एतमत्थं वदामि...पे०...।

''समनुभट्ठा सङ्घेन इत्थन्नामा भिक्खुनी तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया, कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। सङ्घादिसेसं अज्झापज्जन्तिया ञत्तिया दुक्कटं, द्वीहि कम्मवाचाहि थुल्लच्चया पटिप्पस्सम्भन्ति।

अयम्पीति पुरिमायो उपादाय वुच्चति।

यावततियकन्ति यावततियं समनुभासनाय आपज्जति, न सहवत्थुज्झाचारा।

निस्सारणीयन्ति सङ्घम्हा निस्सारीयति।

सङ्घादिसेसोति सङ्घोव तस्सा आपत्तिया मानत्तं देति, मूलाय पटिकस्सति, अब्भेति, न सम्बहुला न एका भिक्खुनी। तेन वुच्चति ''सङ्घादिसेसो''ति। तस्सेव आपत्तिनिकायस्स नामकम्मं अधिवचनं, तेनपि वुच्चति ''सङ्घादिसेसो''ति।

७३१. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे वेमतिका न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति सङ्घादिसेसस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

७३२. अनापत्ति असमनुभासन्तिया, पटिनिस्सज्जन्तिया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसङ्घादिसेससिक्खापदं निट्ठितं।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, सत्तरस सङ्घादिसेसा धम्मा – नव पठमापत्तिका, अट्ठ यावततियका। येसं भिक्खुनी अञ्ञतरं वा अञ्ञतरं वा आपज्जति, ताय भिक्खुनिया उभतोसङ्घे पक्खमानत्तं चरितब्बं। चिण्णमानत्ता भिक्खुनी यत्थ सिया वीसतिगणो भिक्खुनिसङ्घो तत्थ (सा भिक्खुनी) [( ) (कत्थपि नत्थि)] अब्भेतब्बा। एकायपि चे ऊनो वीसतिगणो भिक्खुनिसङ्घो तं भिक्खुनिं अब्भेय्य। सा च भिक्खुनी अनब्भिता, ता च भिक्खुनियो गारय्हा, अयं तत्थ सामीचि।

तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

सत्तरसकं निट्ठितं।

भिक्खुनिविभङ्गे सङ्घादिसेसकण्डं निट्ठितं।

३. निस्सग्गियकण्डं (भिक्खुनीविभङ्गो)

१. पत्तवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

इमे खो पनाय्यायो तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

७३३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो बहू पत्ते सन्निचयं करोन्ति। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो बहू पत्ते सन्निचयं करिस्सन्ति, पत्तवाणिज्जं वा भिक्खुनियो करिस्सन्ति, आमत्तिकापणं वा पसारेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो पत्तसन्निचयं करिस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो पत्तसन्निचयं करोन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो पत्तसन्निचयं करिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७३४. **''या पन भिक्खुनी पत्तसन्निचयं करेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''**न्ति।

७३५. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पत्तो नाम द्वे पत्ता – अयोपत्तो, मत्तिकापत्तो। तयो पत्तस्स वण्णा – उक्कट्ठो पत्तो, मज्झिमो पत्तो, ओमको पत्तो। **उक्कट्ठो नाम पत्तो** अड्ढाळ्हकोदनं गण्हाति चतुभागं खादनं तदुपियं ब्यञ्जनं। **मज्झिमो नाम पत्तो** नाळिकोदनं गण्हाति चतुभागं खादनं तदुपियं ब्यञ्जनं। **ओमको नाम पत्तो** पत्थोदनं गण्हाति चतुभागं खादनं तदुपियं ब्यञ्जनं। ततो उक्कट्ठो अपत्तो ओमको अपत्तो।

सन्निचयं करेय्याति अनधिट्ठितो अविकप्पितो।

निस्सग्गियो होतीति सह अरुणुग्गमना निस्सग्गियो होति। निस्सज्जितब्बो सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बो। ताय भिक्खुनिया सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा वुड्ढानं भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अयं मे, अय्ये, पत्तो रत्तातिक्कन्तो निस्सग्गियो, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति। निस्सज्जित्वा आपत्ति देसेतब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय आपत्ति पटिग्गहेतब्बा। निस्सट्ठपत्तो दातब्बो –

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं पत्तो इत्थन्नामाय भिक्खुनिया निस्सग्गियो सङ्घस्स निस्सट्ठो। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इमं पत्तं इत्थन्नामाय भिक्खुनिया ददेय्या''ति।

ताय भिक्खुनिया सम्बहुला भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा वुड्ढानं भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्सु वचनीया – ''अयं मे, अय्यायो, पत्तो रत्तातिक्कन्तो निस्सग्गियो, इमाहं अय्यानं निस्सज्जामी''ति। निस्सज्जित्वा आपत्ति देसेतब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय आपत्ति पटिग्गहेतब्बा। निस्सट्ठपत्तो दातब्बो –

''सुणन्तु मे अय्यायो। अयं पत्तो इत्थन्नामाय भिक्खुनिया निस्सग्गियो अय्यानं निस्सट्ठो। यदि अय्यानं पत्तकल्लं, अय्यायो इमं पत्तं इत्थन्नामाय भिक्खुनिया ददेय्यु''न्ति।

ताय भिक्खुनिया एकं भिक्खुनिं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीया – ''अयं मे, अय्ये, पत्तो रत्तातिक्कन्तो निस्सग्गियो। इमाहं अय्याय निस्सज्जामी''ति। निस्सज्जित्वा आपत्ति देसेतब्बा। ताय भिक्खुनिया आपत्ति पटिग्गहेतब्बा। निस्सट्ठपत्तो दातब्बो – ''इमं पत्तं अय्याय दम्मी''ति।

७३६. रत्तातिक्कन्ते अतिक्कन्तसञ्ञा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। रत्तातिक्कन्ते वेमतिका, निस्सग्गियं पाचित्तियं। रत्तातिक्कन्ते अनतिक्कन्तसञ्ञा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अनधिट्ठिते अधिट्ठितसञ्ञा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अविकप्पिते विकप्पितसञ्ञा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अविस्सज्जिते विस्सज्जितसञ्ञा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अनट्ठे नट्ठसञ्ञा... अविनट्ठे विनट्ठसञ्ञा... अभिन्ने भिन्नसञ्ञा... अविलुत्ते विलुत्तसञ्ञा, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

निस्सग्गियं पत्तं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। रत्तानतिक्कन्ते अतिक्कन्तसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। रत्तानतिक्कन्ते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। रत्तानतिक्कन्ते अनतिक्कन्तसञ्ञा अनापत्ति।

७३७. अनापत्ति अन्तोअरुणे अधिट्ठेति, विकप्पेति, विस्सज्जेति, नस्सति, विनस्सति, भिज्जति, अच्छिन्दित्वा गण्हन्ति, विस्सासं गण्हन्ति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो निस्सट्ठपत्तं न देन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। न, भिक्खवे, निस्सट्ठपत्तो न दातब्बो। या न ददेय्य, आपत्ति दुक्कटस्साति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

७३८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खुनियो गामकावासे वस्संवुट्ठा [वस्संवुत्था (सी॰ स्या॰)] सावत्थिं अगमंसु वत्तसम्पन्ना इरियापथसम्पन्ना दुच्चोळा लूखचीवरा। उपासका ता भिक्खुनियो पस्सित्वा – ''इमा भिक्खुनियो वत्तसम्पन्ना इरियापथसम्पन्ना दुच्चोळा लूखचीवरा, इमा भिक्खुनियो अच्छिन्ना भविस्सन्ती''ति भिक्खुनिसङ्घस्स अकालचीवरं अदंसु। थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''अम्हाकं कथिनं अत्थतं कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेसि। उपासका ता भिक्खुनियो पस्सित्वा एतदवोचुं – ''अपय्याहि चीवरं लद्ध''न्ति? ''न मयं, आवुसो, चीवरं लभाम। अय्या थुल्लनन्दा – 'अम्हाकं कथिनं अत्थतं कालचीवर'न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेसी''ति। उपासका उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अकालचीवरं 'कालचीवर'न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेस्सती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं उपासकानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अकालचीवरं 'कालचीवर'न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेस्सती''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं ...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अकालचीवरं ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेतीति [भाजापेसीति (क॰)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अकालचीवरं ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७३९. ''या पन भिक्खुनी अकालचीवरं 'कालचीवर'न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''न्ति।

७४०. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अकालचीवरं नाम अनत्थते कथिने एकादसमासे उप्पन्नं, अत्थते कथिने सत्तमासे उप्पन्नं, कालेपि आदिस्स दिन्नं, एतं अकालचीवरं नाम।

अकालचीवरं ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे॰... इदं मे, अय्ये, अकालचीवरं ''कालचीवर'न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति...पे॰... ददेय्याति...पे॰... ददेय्युन्ति...पे॰... अय्याय दम्मीति।

७४१. अकालचीवरे अकालचीवरसञ्ञा ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अकालचीवरे वेमतिका ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अकालचीवरे कालचीवरसञ्ञा ''कालचीवर''न्ति अधिट्ठहित्वा भाजापेति, अनापत्ति। कालचीवरे अकालचीवरसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। कालचीवरे

वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। कालचीवरे कालचीवरसञ्ञा, अनापत्ति।

७४२. अनापत्ति अकालचीवरं कालचीवरसञ्ञा भाजापेति, कालचीवरं कालचीवरसञ्ञा भाजापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

७४३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञतराय भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा परिभुञ्जि। अथ खो सा भिक्खुनी तं चीवरं सङ्घरित्वा [संहरित्वा (क०)] निक्खिपि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तं भिक्खुनिं एतदवोच – ''यं ते, अय्ये, मया सद्धिं चीवरं परिवत्तितं, कहं तं चीवर''न्ति? अथ खो सा भिक्खुनी तं चीवरं नीहरित्वा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया दस्सेसि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तं भिक्खुनिं एतदवोच – ''हन्दाय्ये, तुय्हं चीवरं, आहर मे'तं चीवरं, यं तुय्हं तुय्हमेवेतं, यं मय्हं मय्हमेवेतं, आहर मे'तं, सकं पच्चाहरा''ति अच्छिन्दि। अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दिस्सती''ति! अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आराचेसुं...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दतीति [अच्छिन्दीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७४४. ''या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा सा पच्छा एवं वदेय्य – 'हन्दाय्ये, तुय्हं चीवरं आहर, मेतं चीवरं, यं तुय्हं तुय्हमेवेतं, यं मय्हं मय्हमेवेतं, आहर मेतं, सकं पच्चाहरा'ति अच्छिन्देय्य वा अच्छिन्दापेय्य वा, निस्सग्गियं पाचित्तिय''न्ति।

७४५. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुनिया सद्धिन्ति अञ्ञाय भिक्खुनिया सद्धिं।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं विकप्पनुपगं पच्छिमं।

परिवत्तेत्वाति परित्तेन वा विपुलं, विपुलेन वा परित्तं।

अच्छिन्देय्याति सयं अच्छिन्दति निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अच्छिन्दापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। सकिं आणत्ता बहुकम्पि अच्छिन्दति, निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे०... ''इदं मे अय्ये

चीवरं भिक्खुनिया सद्धिं परिवत्तेत्वा अच्छिन्नं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति...पे०... ददेय्याति...पे०... ददेय्युन्ति...पे०... अय्याय दम्मीति।

७४६. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दति वा अच्छिन्दापेति वा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। उपसम्पन्नाय वेमतिका चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दति वा अच्छिन्दापेति वा, निस्सग्गियं पाचित्तियं। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दति वा अच्छिन्दापेति वा, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अञ्ञं परिक्खारं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दति वा अच्छिन्दापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय सद्धिं चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दति वा अच्छिन्दापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

७४७. अनापत्ति सा वा देति, तस्सा वा विस्ससन्ती गण्हाति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

७४८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी गिलाना होति। अथ खो अञ्ञतरो उपासको येन थुल्लनन्दा भिक्खुनी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''किं ते, अय्ये, अफासु, किं आहरीयतू''ति? ''सप्पिना मे, आवुसो, अत्थो''ति। अथ खो सो उपासको अञ्ञतरस्स आपणिकस्स घरा कहापणस्स सप्पिं आहरित्वा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया अदासि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी एवमाह – ''न मे, आवुसो, सप्पिना अत्थो; तेलेन मे अत्थो''ति। अथ खो सो उपासको येन सो आपणिको तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं आपणिकं एतदवोच – ''न किराय्यो अय्याय सप्पिना अत्थो, तेलेन अत्थो। हन्द ते सप्पिं, तेलं मे देही''ति। ''सचे मयं अय्यो विक्कीतं भण्डं पुन आदियिस्साम [आहरिस्साम (क०)], कदा अम्हाकं भण्डं विक्कायिस्सति [विक्कीयिस्सति (?)]; सप्पिस्स कयेन सप्पि हटं, तेलस्स कयं आहर, तेलं हरिस्ससी''ति। अथ खो सो उपासको उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेस्सती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तस्स उपासकस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति...पे०... अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेतीति [विञ्ञापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा ...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७४९. **''या पन भिक्खुनी अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''**न्ति।

७५०. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञं विञ्ञापेत्वाति यं किञ्चि विञ्ञापेत्वा।

अञ्ञं विञ्ञापेय्याति तं ठपेत्वा अञ्ञं विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं…पे०… ''इदं मे अय्ये अञ्ञं विञ्ञापेत्वा अञ्ञं विञ्ञापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामीति…पे०… ददेय्याति…पे०… ददेय्युन्ति…पे०… अय्याय दम्मी''ति।

७५१. अञ्ञे अञ्ञसञ्ञा अञ्ञं विञ्ञापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञे वेमतिका अञ्ञं विञ्ञापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञे अनञ्ञसञ्ञा अञ्ञं विञ्ञापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अनञ्ञे अञ्ञसञ्ञा अनञ्ञं विञ्ञापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञे वेमतिका अनञ्ञं विञ्ञापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञे अनञ्ञसञ्ञा, अनापत्ति।

७५२. अनापत्ति तञ्ञेव [तञ्चेव (स्या०)] विञ्ञापेति, अञ्ञञ्च विञ्ञापेति, आनिसंसं दस्सेत्वा विञ्ञापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

७५३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी गिलाना होति। अथ खो अञ्ञतरो उपासको येन थुल्लनन्दा भिक्खुनी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''कच्चि, अय्ये, खमनीयं कच्चि यापनीय''न्ति? ''न मे, आवुसो, खमनीयं, न यापनीय''न्ति। ''अमुकस्स, अय्ये, आपणिकस्स घरे कहापणं निक्खिपिस्सामि, ततो यं इच्छेय्यासि तं आहरापेय्यासी''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञतरं सिक्खमानं आणापेसि – ''गच्छ, सिक्खमाने, अमुकस्स आपणिकस्स घरा कहापणस्स तेलं आहरा''ति। अथ खो सा सिक्खमाना तस्स आपणिकस्स घरा कहापणस्स तेलं आहरित्वा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया अदासि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी एवमाह – ''न मे, सिक्खमाने, तेलेन अत्थो, सप्पिना मे अत्थो''ति। अथ खो सा सिक्खमाना येन सो आपणिको तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं आपणिकं एतदवोच – ''न किर, आवुसो, अय्याय तेलेन अत्थो, सप्पिना अत्थो, हन्द ते तेलं, सप्पिं मे देही''ति। ''सचे मयं, अय्ये, विक्कीतं भण्डं पुन आदियिस्साम, कदा अम्हाकं भण्डं विक्कायिस्सति! तेलस्स कयेन तेलं हटं, सप्पिस्स कयं आहर, सप्पिं हरिस्ससी''ति। अथ खो सा सिक्खमाना रोदन्ती अट्ठासि। भिक्खुनियो तं सिक्खमानं एतदवोचुं – ''किस्स त्वं, सिक्खमाने, रोदसी''ति? अथ खो सा सिक्खमाना भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेस्सती''ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेतीति [चेतापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७५४. **''या पन भिक्खुनी अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''**न्ति।

७५५. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञं चेतापेत्वाति यं किञ्चि चेतापेत्वा।

अञ्ञं चेतापेय्याति तं ठपेत्वा अञ्ञं चेतापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं…पे०… ''इदं मे, अय्ये, अञ्ञं चेतापेत्वा अञ्ञं चेतापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति…पे०… ददेय्याति…पे०… ददेय्युन्ति…पे०… अय्याय दम्मीति।

७५६. अञ्ञे अञ्ञसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञे वेमतिका अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञे अनञ्ञसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

अनञ्ञे अञ्ञसञ्ञा अनञ्ञं चेतापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञे वेमतिका अनञ्ञं चेतापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञे अनञ्ञसञ्ञा अनापत्ति।

७५७. अनापत्ति तञ्ञेव [तञ्चेव (स्या०)] चेतापेति, अञ्ञञ्च चेतापेति, आनिसंसं दस्सेत्वा चेतापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

७५८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन उपासका भिक्खुनिसङ्घस्स चीवरत्थाय छन्दकं सङ्घरित्वा अञ्ञतरस्स पावारिकस्स घरे परिक्खारं निक्खिपित्वा भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – ''अमुकस्स, अय्ये, पावारिकस्स घरे चीवरत्थाय परिक्खारो निक्खित्तो, ततो चीवरं आहरापेत्वा भाजेथा''ति। भिक्खुनियो तेन परिक्खारेन भेसज्जं चेतापेत्वा परिभुञ्जिंसु। उपासका जानित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं उपासकानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा …पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ती''ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७५९. **''या पन भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''**न्ति।

७६०. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेनाति अञ्ञस्सत्थाय दिन्नेन।

सङ्घिकेनाति सङ्घस्स, न गणस्स, न एकभिक्खुनिया।

अञ्ञं चेतापेय्याति यंअत्थाय दिन्नं, तं ठपेत्वा अञ्ञं चेतापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं…पे॰… ''इदं मे, अय्ये, अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति।…पे॰… ददेय्याति…पे॰… ददेय्युन्ति…पे॰… अय्याय दम्मीति।

७६१. अञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके वेमतिका अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। निस्सट्ठं पटिलभित्वा यथादाने उपनेतब्बं।

अनञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा, अनापत्ति।

७६२. अनापत्ति सेसकं उपनेति, सामिके अपलोकेत्वा उपनेति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

७६३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन उपासका भिक्खुनिसङ्घस्स चीवरत्थाय छन्दकं सङ्घरित्वा अञ्ञतरस्स पावारिकस्स घरे परिक्खारं निक्खिपित्वा भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – ''अमुकस्स, अय्ये, पावारिकस्स घरे चीवरत्थाय परिक्खारो निक्खित्तो, ततो चीवरं आहरापेत्वा भाजेथा''ति। भिक्खुनियो तेन च परिक्खारेन सयम्पि याचित्वा भेसज्जं चेतापेत्वा परिभुञ्जिंसु। उपासका जानित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७६४. **''या पन भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''**न्ति।

७६५. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेनाति अञ्ञस्सत्थाय दिन्नेन।

सङ्घिकेनाति सङ्घस्स, न गणस्स, न एकभिक्खुनिया।

सञ्ञाचिकेनाति सयं याचित्वा।

अञ्ञं चेतापेय्याति यंअत्थाय दिन्नं तं ठपेत्वा अञ्ञं चेतापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे०... ''इदं मे, अय्ये, अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति...पे०... ददेय्याति...पे०... ददेय्युन्ति...पे०... अय्याय दम्मीति।

७६६. अञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके वेमतिका अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। निस्सट्ठं पटिलभित्वा यथादाने उपनेतब्बं।

अनञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा, अनापत्ति।

७६७. अनापत्ति सेसकं उपनेति, सामिके अपलोकेत्वा उपनेति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

७६८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स पूगस्स परिवेणवासिका भिक्खुनियो यागुया किलमन्ति। अथ खो सो पूगो भिक्खुनीनं यागुअत्थाय छन्दकं सङ्गरित्वा अञ्ञतरस्स आपणिकस्स घरे परिक्खारं निक्खिपित्वा भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोच – ''अमुकस्स, अय्ये, आपणिकस्स घरे यागुअत्थाय परिक्खारो निक्खित्तो, ततो तण्डुलं आहरापेत्वा यागुं पचापेत्वा परिभुञ्जथा''ति। भिक्खुनियो तेन परिक्खारेन भेसज्जं चेतापेत्वा परिभुञ्जिंसु। सो पूगो जानित्वा उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७६९. **''या पन भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''**न्ति।

७७०. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेनाति अञ्ञस्सत्थाय दिन्नेन।

महाजनिकेनाति गणस्स, न सङ्घस्स, न एकभिक्खुनिया।

अञ्ञं चेतापेय्याति यंअत्थाय दिन्नं तं ठपेत्वा अञ्ञं चेतापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे॰... ''इदं मे, अय्ये, अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन अञ्ञं चेतापितं निस्सग्गियं इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति...पे॰... ददेय्याति...पे॰... ददेय्युन्ति...पे॰... अय्याय दम्मीति।

७७१. अञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके वेमतिका अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। निस्सट्ठं पटिलभित्वा यथादाने उपनेतब्बं।

अनञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा, अनापत्ति।

७७२. अनापत्ति सेसकं उपनेति, सामिके अपलोकेत्वा उपनेति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

७७३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स पूगस्स परिवेणवासिका भिक्खुनियो यागुया किलमन्ति। अथ खो सो पूगो भिक्खुनीनं यागुअत्थाय छन्दकं सङ्घरित्वा अञ्ञतरस्स आपणिकस्स घरे परिक्खारं निक्खिपित्वा भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोच – ''अमुकस्स, अय्ये, आपणिकस्स घरे यागुअत्थाय परिक्खारो निक्खित्तो। ततो तण्डुले आहरापेत्वा यागुं पचापेत्वा परिभुञ्जथा''ति। भिक्खुनियो तेन च परिक्खारेन सयम्पि याचित्वा भेसज्जं चेतापेत्वा परिभुञ्जिंसु। सो पूगो जानित्वा उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७७४. ''या पन भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''न्ति।

७७५. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेनाति अञ्ञस्सत्थाय दिन्नेन।

महाजनिकेनाति गणस्स, न सङ्घस्स, न एकभिक्खुनिया।

सञ्ञाचिकेनाति सयं याचित्वा।

अञ्ञं चेतापेय्याति यंअत्थाय दिन्नं तं ठपेत्वा अञ्ञं चेतापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे०... ''इदं मे, अय्ये, अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन महाजनिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापितं निस्सग्गियं। इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति...पे०... ददेय्याति...पे०... ददेय्युन्ति...पे०... अय्याय दम्मीति।

७७६. अञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके वेमतिका अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। निस्सट्ठं पटिलभित्वा यथादाने उपनेतब्बं।

अनञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा अनापत्ति।

७७७. अनापत्ति सेसकं उपनेति, सामिके अपलोकेत्वा उपनेति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

७७८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी बहुस्सुता होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं। बहू मनुस्सा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं पयिरुपासन्ति। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया परिवेणं उन्द्रियति [उद्रीयति (स्या०)]। मनुस्सा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''किस्सिदं ते, अय्ये, परिवेणं उन्द्रियती''ति? ''नत्थावुसो, दायका, नत्थि कारका''ति। अथ खो ते मनुस्सा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया परिवेणत्थाय छन्दकं सङ्घरित्वा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया परिक्खारं अदंसु। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तेन च परिक्खारेन सयम्पि याचित्वा भेसज्जं चेतापेत्वा परिभुञ्जि। मनुस्सा जानित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७७९. ''या पन भिक्खुनी अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''न्ति।

७८०. या पनाति या यादिसा...पे०... भिक्खुनीति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेनाति अञ्ञस्सत्थाय दिन्नेन।

पुग्गलिकेनाति एकाय भिक्खुनिया, न सङ्घस्स, न गणस्स।

सञ्ञाचिकेनाति सयं याचित्वा।

अञ्ञं चेतापेय्याति यंअत्थाय दिन्नं तं ठपेत्वा अञ्ञं चेतापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे०... ''इदं मे, अय्ये, अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन पुग्गलिकेन सञ्ञाचिकेन अञ्ञं चेतापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति...पे०... ददेय्याति...पे०... ददेय्युन्ति...पे०... अय्याय दम्मीति।

७८१. अञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके वेमतिका अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा अञ्ञं चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। निस्सट्ठं पटिलभित्वा यथादाने उपनेतब्बं।

अनञ्ञदत्थिके अञ्ञदत्थिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनञ्ञदत्थिके अनञ्ञदत्थिकसञ्ञा, अनापत्ति।

७८२. अनापत्ति सेसकं उपनेति, सामिके अपलोकेत्वा उपनेति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

११. एकादसमसिक्खापदं

७८३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी बहुस्सुता होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो सीतकाले महग्घं कम्बलं पारुपित्वा येन थुल्लनन्दा भिक्खुनी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो राजानं पसेनदिं कोसलं थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया धम्मिया कथाय सन्दस्सितो समादपितो समुत्तेजितो सम्पहंसितो थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''वदेय्यासि, अय्ये, येन अत्थो''ति? ''सचे मे त्वं, महाराज, दातुकामोसि, इमं कम्बलं देही''ति। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया कम्बलं दत्वा उट्ठायासना थुल्लनन्दं भिक्खुनिं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''महिच्छा इमा भिक्खुनियो असन्तुट्ठा। कथञ्हि नाम राजानं कम्बलं विञ्ञापेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा राजानं कम्बलं विञ्ञापेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी राजानं कम्बलं विञ्ञापेतीति [विञ्ञापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम,

भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी राजानं कम्बलं विञ्ञापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७८४. ''**गरुपावुरणं** [पापुरणं (सी० स्या०)] **पन भिक्खुनिया चेतापेन्तिया चतुक्कंसपरमं चेतापेतब्बं। ततो चे उत्तरि चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय**''न्ति।

७८५. **गरुपावुरणं** नाम यं किञ्चि सीतकाले पावुरणं।

चेतापेन्तियाति विञ्ञापेन्तिया।

चतुक्कंसपरमं चेतापेतब्बन्ति सोळसकहापणग्घनकं चेतापेतब्बं।

ततो चे उत्तरि चेतापेय्याति ततुत्तरि विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं…पे०… ''इदं मे, अय्ये, गरुपावुरणं अतिरेकचतुक्कंसपरमं चेतापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामी''ति…पे०… ददेय्याति…पे०… ददेय्युन्ति…पे०… अय्याय दम्मीति।

७८६. अतिरेकचतुक्कंसे अतिरेकसञ्ञा चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अतिरेकचतुक्कंसे वेमतिका चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अतिरेकचतुक्कंसे ऊनकसञ्ञा चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

ऊनकचतुक्कंसे अतिरेकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकचतुक्कंसे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकचतुक्कंसे ऊनकसञ्ञा, अनापत्ति।

७८७. अनापत्ति चतुक्कंसपरमं चेतापेति, ऊनकचतुक्कंसपरमं चेतापेति, ञातकानं, पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, महग्घं चेतापेतुकामस्स अप्पग्घं चेतापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

एकादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

१२. द्वादसमसिक्खापदं

७८८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी बहुस्सुता होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो उण्हकाले महग्घं खोमं पारुपित्वा येन थुल्लनन्दा भिक्खुनी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो राजानं पसेनदिं कोसलं थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया धम्मिया कथाय सन्दस्सितो समादपितो समुत्तेजितो सम्पहंसितो थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''वदेय्यासि, अय्ये, येन अत्थो''ति। ''सचे मे त्वं, महाराज, दातुकामोसि, इमं खोमं देही''ति। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया खोमं दत्वा उट्ठायासना थुल्लनन्दं भिक्खुनिं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''महिच्छा इमा

भिक्खुनियो असन्तुट्ठा। कथञ्हि नाम राजानं खोमं विञ्ञापेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा राजानं खोमं विञ्ञापेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी राजानं खोमं विञ्ञापेतीति [विञ्ञापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवाति''। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी राजानं खोमं विञ्ञापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७८९. ''लहुपावुरणं पन भिक्खुनिया चेतापेन्तिया अड्ढतेय्यकंसपरमं चेतापेतब्बं। ततो चे उत्तरि चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय''न्ति।

७९०. लहुपावुरणं नाम यं किञ्चि उण्हकाले पावुरणं।

चेतापेन्तियाति विञ्ञापेन्तिया।

अड्ढतेय्यकंसपरमं चेतापेतब्बन्ति दसकहापणग्घनकं चेतापेतब्बं।

ततो चे उत्तरि चेतापेय्याति ततुत्तरि विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन निस्सग्गियं होति। निस्सज्जितब्बं सङ्घस्स वा गणस्स वा एकभिक्खुनिया वा। एवञ्च पन, भिक्खवे, निस्सज्जितब्बं...पे०... इदं मे, अय्ये, लहुपावुरणं अतिरेकअड्ढतेय्यकंसपरमं चेतापितं निस्सग्गियं, इमाहं सङ्घस्स निस्सज्जामीति...पे०... ददेय्याति...पे०... ददेय्युन्ति...पे०... अय्याय दम्मीति।

७९१. अतिरेकअड्ढतेय्यकंसे अतिरेकसञ्ञा चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अतिरेकअड्ढतेय्यकंसे वेमतिका चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं। अतिरेकअड्ढतेय्यकंसे ऊनकसञ्ञा चेतापेति, निस्सग्गियं पाचित्तियं।

ऊनकअड्ढतेय्यकंसे अतिरेकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकअड्ढतेय्यकंसे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकअड्ढतेय्यकंसे ऊनकसञ्ञा, अनापत्ति।

७९२. अनापत्ति अड्ढतेय्यकंसपरमं चेतापेति, ऊनकअड्ढतेय्यकंसपरमं चेतापेति, ञातकानं, पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, महग्घं चेतापेतुकामस्स अप्पग्घं चेतापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

द्वादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया धम्मा। तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

भिक्खुनिविभङ्गे निस्सग्गियकण्डं निट्ठितं।

४. पाचित्तियकण्डं (भिक्खुनीविभङ्गो)

१. लसुणवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

इमे खो पनाय्यायो छसट्ठिसता पाचित्तिया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

७९३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरेन उपासकेन भिक्खुनिसङ्घो लसुणेन पवारितो होति – ''यासं अय्यानं लसुणेन अत्थो, अहं लसुणेना''ति। खेत्तपालो च आणत्तो होति – ''सचे भिक्खुनियो आगच्छन्ति, एकमेकाय भिक्खुनिया द्वेतयो भण्डिके देही''ति। तेन खो पन समयेन सावत्थियं उस्सवो होति। यथाभतं लसुणं परिक्खयं अगमासि। भिक्खुनियो तं उपासकं उपसङ्कमित्वा एतदवोचुं – ''लसुणेन, आवुसो, अत्थो''ति। ''नत्थाय्ये। यथाभतं लसुणं परिक्खीणं। खेत्तं गच्छथा''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी खेत्तं गन्त्वा न मत्तं जानित्वा बहुं लसुणं हरापेसि। खेत्तपालो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो न मत्तं जानित्वा बहुं लसुणं हरापेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तस्स खेत्तपालस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा न मत्तं जानित्वा बहुं लसुणं हरापेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी न मत्तं जानित्वा बहुं लसुणं हरापेतीति [हरापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी न मत्तं जानित्वा बहुं लसुणं हरापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि –

''भूतपुब्बं, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अञ्ञतरस्स ब्राह्मणस्स पजापति अहोसि। तिस्सो च धीतरो – नन्दा, नन्दवती, सुन्दरीनन्दा। अथ खो, भिक्खवे, सो ब्राह्मणो कालङ्कत्वा अञ्ञतरं हंसयोनिं उपपज्जि। तस्स सब्बसोवण्णमया पत्ता अहेसुं। सो तासं एकेकं पत्तं देति। अथ खो, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी ''अयं हंसो अम्हाकं एकेकं पत्तं देती''ति तं हंसराजं गहेत्वा निप्पत्तं अकासि। तस्स पुन जायमाना पत्ता सेता सम्पज्जिंसु। तदापि, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अतिलोभेन सुवण्णा परिहीना। इदानि लसुणा परिहायिस्सती''ति।

[जा० १.१.१३६ सुवण्णहंसजातकेपि] ''यं लद्धं तेन तुट्ठब्बं, अतिलोभो हि पापको।
हंसराजं गहेत्वान, सुवण्णा परिहायथा''ति॥

अथ खो भगवा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७९४. **''या पन भिक्खुनी लसुणं खादेय्य पाचित्तिय''**न्ति।

७९५. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

लसुणं नाम मागधकं वुच्चति।

''खादिस्सामीति पटिग्गण्हा''ति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

७९६. लसुणे लसुणसञ्ञा खादति, आपत्ति पाचित्तियस्स। लसुणे वेमतिका खादति, आपत्ति पाचित्तियस्स। लसुणे अलसुणसञ्ञा खादति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अलसुणे लसुणसञ्ञा खादति, आपत्ति दुक्कटस्स। अलसुणे वेमतिका खादति, आपत्ति दुक्कटस्स। अलसुणे अलसुणसञ्ञा खादति, अनापत्ति।

७९७. अनापत्ति पलण्डुके, भञ्जनके, हरीतके, चापलसुणे, सूपसम्पाके, मंससम्पाके, तेलसम्पाके, साळवे, उत्तरिभङ्गे, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

७९८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो सम्बाधे लोमं संहरापेत्वा अचिरवतिया नदिया वेसियाहि सद्धिं नग्गा एकतित्थे नहायन्ति। वेसिया उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो सम्बाधे लोमं संहरापेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तासं वेसियानं उज्झायन्तीनं खिय्यन्तीनं विपाचेन्तीनं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो सम्बाधे लोमं संहरापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो सम्बाधे लोमं संहरापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो सम्बाधे लोमं संहरापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

७९९. **''या पन भिक्खुनी सम्बाधे लोमं संहरापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८००. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सम्बाधो नाम उभो उपकच्छका, मुत्तकरणं।

संहरापेय्याति एकम्पि लोमं संहरापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। बहुकेपि लोमे संहरापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८०१. अनापत्ति आबाधपच्चया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

८०२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन द्वे भिक्खुनियो अनभिरतिया पीळिता ओवरकं पविसित्वा तलघातकं करोन्ति। भिक्खुनियो तेन सद्देन उपधावित्वा ता भिक्खुनियो एतदवोचुं – "किस्स तुम्हे, अय्ये, पुरिसेन सद्धिं सम्पदुस्सथा"ति? "न मयं, अय्ये, पुरिसेन सद्धिं सम्पदुस्सामा"ति। भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खुनियो तलघातकं करिस्सन्ती"ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो तलघातकं करोन्तीति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो तलघातकं करिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८०३. "**तलघातके पाचित्तिय**"न्ति।

८०४. **तलघातकं** नाम सम्फस्सं सादियन्ती अन्तमसो उप्पलपत्तेनपि मुत्तकरणे पहारं देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८०५. अनापत्ति आबाधपच्चया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

८०६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा पुराणराजोरोधा भिक्खुनीसु पब्बजिता [अञ्ञतरो पुराणराजोरोधो भिक्खुनीसु पब्बजितो (स्या०)] होति। अञ्ञतरा भिक्खुनी अनभिरतिया पीळिता येन सा भिक्खुनी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं भिक्खुनिं एतदवोच – "राजा खो, अय्ये, तुम्हे चिराचिरं गच्छति। कथं तुम्हे धारेथा"ति? "जतुमट्ठकेन, अय्ये"ति। "किं एतं, अय्ये, जतुमट्ठक"न्ति? अथ खो सा भिक्खुनी तस्सा भिक्खुनिया जतुमट्ठकं आचिक्खि। अथ खो सा भिक्खुनी जतुमट्ठकं आदियित्वा धोवितुं विस्सरित्वा एकमन्तं छड्डेसि। भिक्खुनियो मक्खिकाहि सम्परिकिण्णं पस्सित्वा एवमाहंसु – "कस्सिदं कम्म"न्ति? सा एवमाह – "मय्हिदं कम्म"न्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खुनी जतुमट्ठकं आदियिस्सती"ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी जतुमट्ठकं आदियतीति [आदियीति (क०)]? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी जतुमट्ठकं आदियिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८०७. "**जतुमट्ठके** [जतुमट्टके (सी०)] **पाचित्तिय**"न्ति।

८०८. **जतुमट्ठकं** नाम जतुमयं कट्ठमयं पिट्ठमयं मत्तिकामयं।

आदियेय्याति सम्फस्सं सादियन्ती अन्तमसो उप्पलपत्तम्पि मुत्तकरणं पवेसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८०९. अनापत्ति आबाधपच्चया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

८१०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सक्केसु विहरति कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे। अथ खो महापजापति गोतमी येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा अधोवाते अट्ठासि – ''दुग्गन्धो, भगवा, मातुगामो''ति। अथ खो भगवा – ''आदियन्तु खो भिक्खुनियो उदकसुद्धिक''न्ति, महापजापतिं गोतमिं धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो महापजापति गोतमी भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सिता समादपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, भिक्खुनीनं उदकसुद्धिक''न्ति। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी – ''भगवता उदकसुद्धिका अनुञ्ञाता''ति अतिगम्भीरं उदकसुद्धिकं आदियन्ती मुत्तकरणे वणं अकासि। अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम भिक्खुनी अतिगम्भीरं उदकसुद्धिकं आदियिस्सतीति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी अतिगम्भीरं उदकसुद्धिकं आदियती''ति [आदियीति (क॰)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी अतिगम्भीरं उदकसुद्धिकं आदियिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८११. ''उदकसुद्धिकं पन भिक्खुनिया आदियमानाय द्वङ्गुलपब्बपरमं आदातब्बं। तं अतिक्कामेन्तिया पाचित्तिय''न्ति।

८१२. उदकसुद्धिकं नाम मुत्तकरणस्स धोवना वुच्चति।

आदियमानायाति धोवन्तिया।

द्वङ्गुलपब्बपरमं आदातब्बन्ति द्वीसु अङ्गुलेसु द्वे पब्बपरमा आदातब्बा।

तं अतिक्कामेन्तियाति सम्फस्सं सादियन्ती अन्तमसो केसग्गमत्तम्पि अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८१३. अतिरेकद्वङ्गुलपब्बे अतिरेकसञ्ञा आदियति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकद्वङ्गुलपब्बे वेमतिका आदियति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अतिरेकद्वङ्गुलपब्बे ऊनकसञ्ञा आदियति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

ऊनकद्वङ्गुलपब्बे अतिरेकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकद्वङ्गुलपब्बे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनकद्वङ्गुलपब्बे ऊनकसञ्ञा, अनापत्ति।

८१४. अनापत्ति द्वङ्गुलपब्बपरमं आदियति, ऊनकद्वङ्गुलपब्बपरमं आदियति, आबाधपच्चया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

८१५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आरोहन्तो नाम महामत्तो भिक्खूसु पब्बजितो होति। तस्स पुराणदुतियिका भिक्खुनीसु पब्बजिता होति। तेन खो पन समयेन सो भिक्खु तस्सा भिक्खुनिया सन्तिके भत्तविस्सग्गं करोति। अथ खो सा भिक्खुनी तस्स भिक्खुनो भुञ्जन्तस्स पानीयेन च विधूपनेन च उपतिट्ठित्वा अच्चावदति। अथ खो सो भिक्खु तं भिक्खुनिं अपसादेति – ''मा, भगिनि, एवरूपं अकासि। नेतं कप्पती''ति। ''पुब्बे मं त्वं एवञ्च एवञ्च करोसि, इदानि एत्तकं न सहसी''ति – पानीयथालकं मत्थके आसुम्भित्वा विधूपनेन पहारं अदासि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी भिक्खुस्स पहारं दस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी भिक्खुस्स पहारं अदासीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी भिक्खुस्स पहारं दस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८१६. **''या पन भिक्खुनी भिक्खुस्स भुञ्जन्तस्स पानीयेन वा विधूपनेन वा उपतिट्ठेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८१७. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुस्साति उपसम्पन्नस्स।

भुञ्जन्तस्साति पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरं भोजनं भुञ्जन्तस्स।

पानीयं नाम यं किञ्चि पानीयं।

विधूपनं नाम या काचि बीजनी।

उपतिट्ठेय्याति हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८१८. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञा पानीयेन वा विधूपनेन वा उपतिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिका पानीयेन वा विधूपनेन वा उपतिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञा पानीयेन वा विधूपनेन वा उपतिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

हत्थपासं विजहित्वा उपतिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स। खादनीयं खादन्तस्स उपतिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नस्स उपतिट्ठति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८१९. अनापत्ति देति, दापेति, अनुपसम्पन्नं आणापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

८२०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

भिक्खुनियो सस्सकाले आमकधञ्ञं विञ्ञापेत्वा नगरं अतिहरन्ति द्वारट्ठाने – ''देथाय्ये, भाग''न्ति। पलिबुन्धेत्वा मुञ्चिंसु। अथ खो ता भिक्खुनियो उपस्सयं गन्त्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो आमकधञ्ञं विञ्ञापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो आमकधञ्ञं विञ्ञापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो आमकधञ्ञं विञ्ञापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८२१. ''या पन भिक्खुनी आमकधञ्ञं विञ्ञत्वा वा विञ्ञापेत्वा वा भज्जित्वा वा भज्जापेत्वा वा कोट्टेत्वा वा कोट्टापेत्वा वा पचित्वा वा पचापेत्वा वा भुञ्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

८२२. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

आमकधञ्ञं नाम सालि वीहि यवो गोधुमो कङ्गु वरको कुद्रुसको।

विञ्ञत्वाति सयं विञ्ञत्वा। **विञ्ञापेत्वा**ति अञ्ञं विञ्ञापेत्वा।

भज्जित्वाति सयं भज्जित्वा। **भज्जापेत्वा**ति अञ्ञं भज्जापेत्वा।

कोट्टेत्वाति सयं कोट्टेत्वा। **कोट्टापेत्वा**ति अञ्ञं कोट्टापेत्वा।

पचित्वाति सयं पचित्वा। **पचापेत्वा**ति अञ्ञं पचापेत्वा।

''भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

८२३. अनापत्ति आबाधपच्चया, अपरण्णं विञ्ञापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

८२४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो ब्राह्मणो निब्बिट्ठराजभटो ''तञ्ञेव भटपथं याचिस्सामी''ति सीसं नहायित्वा भिक्खुनुपस्सयं निस्साय राजकुलं गच्छति। अञ्ञतरा भिक्खुनी कटाहे वच्चं कत्वा तिरोकुट्टे छड्डेन्ती तस्स ब्राह्मणस्स मत्थके आसुम्भि। अथ खो सो ब्राह्मणो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''अस्समणियो इमा मुण्डा बन्धकिनियो। कथञ्हि नाम गूथकटाहं मत्थके आसुम्भिस्सन्ति! इमासं उपस्सयं झापेस्सामी''ति! उम्मुकं गहेत्वा उपस्सयं पविसति। अञ्ञतरो उपासको उपस्सया निक्खमन्तो अद्दस तं ब्राह्मणं उम्मुकं गहेत्वा उपस्सयं पविसन्तं। दिस्वान तं ब्राह्मणं एतदवोच – ''किस्स त्वं, भो, उम्मुकं गहेत्वा उपस्सयं पविससी''ति? ''इमा मं, भो, मुण्डा बन्धकिनियो गूथकटाहं मत्थके आसुम्भिंसु। इमासं उपस्सयं झापेस्सामी''ति। ''गच्छ, भो ब्राह्मण, मङ्गलं एतं। सहस्सं लच्छसि तञ्च भटपथ''न्ति। अथ खो सो ब्राह्मणो सीसं नहायित्वा राजकुलं गन्त्वा सहस्सं अलत्थ तञ्च भटपथं। अथ खो सो उपासको उपस्सयं पविसित्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं

आरोचेत्वा परिभासि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो उच्चारं तिरोकुट्टे छड्डेस्सन्ती’’ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो उच्चारं तिरोकुट्टे छड्डेन्तीति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो उच्चारं तिरोकुट्टे छड्डेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८२५. **‘‘या पन भिक्खुनी उच्चारं वा पस्सावं वा सङ्कारं वा विघासं वा तिरोकुट्टे वा तिरोपाकारे वा छड्डेय्य वा छड्डापेय्य वा, पाचित्तिय**’’न्ति।

८२६. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

उच्चारो नाम गूथो वुच्चति। **पस्सावो** नाम मुत्तं वुच्चति।

सङ्कारं नाम कचवरं वुच्चति।

विघासं नाम चलकानि वा अट्ठिकानि वा उच्छिट्ठोदकं वा।

कुट्टो नाम तयो कुट्टा – इट्ठकाकुट्टो, सिलाकुट्टो, दारुकुट्टो।

पाकारो नाम तयो पाकारा – इट्ठकापाकारो, सिलापाकारो, दारुपाकारो।

तिरोकुट्टेति कुट्टस्स परतो। **तिरोपाकारे**ति पाकारस्स परतो।

छड्डेय्याति सयं छड्डेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

छड्डापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। सकिं आणत्ता बहुकम्पि छड्डेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८२७. अनापत्ति ओलोकेत्वा छड्डेति, अवळञ्जे छड्डेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

८२८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स ब्राह्मणस्स भिक्खुनूपस्सयं निस्साय यवखेत्तं होति। भिक्खुनियो उच्चारम्पि पस्सावम्पि सङ्कारम्पि विघासम्पि खेत्ते छड्डेन्ति। अथ खो सो ब्राह्मणो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अम्हाकं यवखेत्तं दूसेस्सन्ती’’ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तस्स ब्राह्मणस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो उच्चारम्पि पस्सावम्पि सङ्कारम्पि विघासम्पि हरिते छड्डेस्सन्ती’’ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो उच्चारम्पि पस्सावम्पि सङ्कारम्पि विघासम्पि हरिते छड्डेन्तीति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो उच्चारम्पि

पस्सावम्पि सङ्कारम्पि विघासम्पि हरिते छड्डेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८२९. "या पन भिक्खुनी उच्चारं वा पस्सावं वा सङ्कारं वा विघासं वा हरिते छड्डेय्य वा छड्डापेय्य वा, पाचित्तिय"न्ति।

८३०. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

उच्चारो नाम गूथो वुच्चति। **पस्सावो** नाम मुत्तं वुच्चति।

सङ्कारं नाम कचवरं वुच्चति।

विघासं नाम चलकानि वा अट्ठिकानि वा उच्छिट्ठोदकं वा।

हरितं नाम पुब्बण्णं अपरण्णं यं मनुस्सानं उपभोगपरिभोगं रोपिमं।

छड्डेय्याति सयं छड्डेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

छड्डापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। सकिं आणत्ता बहुकम्पि छड्डेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८३१. हरिते हरितसञ्ञा छड्डेति वा छड्डापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। हरिते वेमतिका छड्डेति वा छड्डापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। हरिते अहरितसञ्ञा छड्डेति वा छड्डापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अहरिते हरितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अहरिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अहरिते अहरितसञ्ञा, अनापत्ति।

८३२. अनापत्ति ओलोकेत्वा छड्डेति, खेत्तमरियादे [छड्डितखेत्ते (?) अट्ठकथा ओलोकेतब्बा] छड्डेति सामिके आपुच्छित्वा अपलोकेत्वा छड्डेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

८३३. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन राजगहे गिरग्गसमज्जो होति। छब्बग्गिया भिक्खुनियो गिरग्गसमज्जं दस्सनाय अगमंसु। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खुनियो नच्चम्पि गीतम्पि वादितम्पि दस्सनाय गच्छिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो"ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो नच्चम्पि गीतम्पि वादितम्पि दस्सनाय गच्छिस्सन्ती"ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो नच्चम्पि गीतम्पि वादितम्पि दस्सनाय गच्छन्तीति? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो

नच्चम्पि गीतम्पि वादितम्पि दस्सनाय गच्छिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८३४. **''या पन भिक्खुनी नच्चं वा गीतं वा वादितं वा दस्सनाय गच्छेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८३५. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

नच्चं नाम यं किञ्चि नच्चं। **गीतं** नाम यं किञ्चि गीतं। **वादितं** नाम यं किञ्चि वादितं।

८३६. दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठिता पस्सति वा सुणाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति वा सुणाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। एकमेकं दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठिता पस्सति वा सुणाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति वा सुणाति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८३७. अनापत्ति आरामे ठिता पस्सति वा सुणाति वा, भिक्खुनिया ठितोकासं वा निसिन्नोकासं वा निपन्नोकासं वा आगन्त्वा नच्चन्ति वा गायन्ति वा वादेन्ति वा, पटिपथं गच्छन्ती पस्सति वा सुणाति वा, सति करणीये गन्त्वा पस्सति वा सुणाति वा, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

लसुणवग्गो पठमो।

२. अन्धकारवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

८३८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भद्दाय कापिलानिया अन्तेवासिनिया भिक्खुनिया ञातको पुरिसो गामका सावत्थिं अगमासि केनचिदेव करणीयेन। अथ खो सा भिक्खुनी तेन पुरिसेन सद्धिं रत्तन्धकारे अप्पदीपे एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपी''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८३९. **''या पन भिक्खुनी रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठेय्य वा सल्लपेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

८४०. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

रत्तन्धकारेति ओग्गते सूरिये। अप्पदीपेति अनालोके।

पुरिसो नाम मनुस्सपुरिसो न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो विञ्ञू पटिबलो सन्तिट्ठितुं सल्लपितुं।

सद्धिन्ति एकतो। **एकेनेका**ति पुरिसो चेव होति भिक्खुनी च।

सन्तिट्ठेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सल्लपेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे ठिता सल्लपति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

हत्थपासं विजहित्वा सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। यक्खेन वा पेतेन वा पण्डकेन वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहेन वा सद्धिं सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८४१. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू दुतियो [या काचि विञ्ञू दुतिया (स्या०)] होति, अरहोपेक्खा, अञ्ञविहिता सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

८४२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भद्दाय कापिलानिया अन्तेवासिनिया भिक्खुनिया ञातको पुरिसो गामका सावत्थिं अगमासि केनचिदेव करणीयेन। अथ खो सा भिक्खुनी – ''भगवता पटिक्खित्तं रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठितुं सल्लपितु''न्ति तेनेव पुरिसेन सद्धिं पटिच्छन्ने ओकासे **एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता** उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपी''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८४३. ''या पन भिक्खुनी पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठेय्य वा सल्लपेय्य वा, पाचित्तिय''न्ति।

८४४. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पटिच्छन्नो नाम ओकासो कुट्टेन वा कवाटेन वा किलञ्जेन वा साणिपाकारेन वा रुक्खेन वा **थम्भेन वा कोत्थळिया** वा येन केनचि पटिच्छन्नो होति।

पुरिसो नाम मनुस्सपुरिसो न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो विञ्ञू पटिबलो सन्तिट्ठितुं सल्लपितुं।

सद्धिन्ति एकतो। **एकेनेका**ति पुरिसो चेव होति भिक्खुनी च।

सन्तिट्ठेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सल्लपेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे ठिता सल्लपति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

हत्थपासं विजहित्वा सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। यक्खेन वा पेतेन वा पण्डकेन वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहेन वा सद्धिं सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८४५. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू दुतियो होति, अरहोपेक्खा, अञ्ञविहिता सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

८४६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भद्दाय कापिलानिया अन्तेवासिनिया भिक्खुनिया ञातको पुरिसो गामका सावत्थिं अगमासि केनचिदेव करणीयेन। अथ खो सा भिक्खुनी – ''भगवता पटिक्खित्तं पटिच्छन्ने ओकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठितुं सल्लपितु''न्ति तेनेव पुरिसेन सद्धिं अज्झोकासे एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपी''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८४७. **''या पन भिक्खुनी अज्झोकासे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठेय्य वा सल्लपेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

८४८. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अज्झोकासो नाम अप्पटिच्छन्नो होति कुट्टेन वा कवाटेन वा किलञ्जेन वा साणिपाकारेन वा रुक्खेन वा थम्भेन वा कोत्थळिया वा, येन केनचि अप्पटिच्छन्नो होति।

पुरिसो नाम मनुस्सपुरिसो, न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो, विञ्ञू पटिबलो सन्तिट्ठितुं सल्लपितुं।

सद्धिन्ति एकतो। **एकेनेका**ति पुरिसो चेव होति भिक्खुनी च।

सन्तिट्ठेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सल्लपेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे ठिता सल्लपति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

हत्थपासं विजहित्वा सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। यक्खेन वा पेतेन वा पण्डकेन वा तिरच्छागतमनुस्सविग्गहेन वा सद्धिं सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८४९. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू दुतियो होति, अरहोपेक्खा, अञ्ञविहिता सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

८५०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी रथिकायपि ब्यूहेपि सिङ्घाटकेपि पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपि निकण्णिकम्पि जप्पेति दुतियिकम्पि भिक्खुनिं उय्योजेति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा रथिकायपि ब्यूहेपि सिङ्घाटकेपि पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपि निकण्णिकम्पि जप्पिस्सति दुतियिकम्पि भिक्खुनिं उय्योजेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी रथिकायपि ब्यूहेपि सिङ्घाटकेपि पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठतिपि सल्लपतिपि निकण्णिकम्पि जप्पेति दुतियिकम्पि भिक्खुनिं उय्योजेतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी रथिकायपि ब्यूहेपि सिङ्घाटकेपि पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठिस्सतिपि सल्लपिस्सतिपि निकण्णिकम्पि जप्पिस्सति दुतियिकम्पि भिक्खुनिं उय्योजेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८५१. **''या पन भिक्खुनी रथिकाय वा ब्यूहे वा सिङ्घाटके वा पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठेय्य वा सल्लपेय्य वा निकण्णिकं वा जप्पेय्य दुतियिकं वा भिक्खुनिं उय्योजेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८५२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

रथिका नाम रच्छा वुच्चति। **ब्यूहं** नाम येनेव पविसन्ति तेनेव निक्खमन्ति। **सिङ्घाटको** नाम चच्चरं वुच्चति।

पुरिसो नाम मनुस्सपुरिसो न यक्खो न पेतो न तिरच्छानगतो विञ्ञू पटिबलो सन्तिट्ठितुं सल्लपितुं।

सद्धिन्ति एकतो। **एकेनेका**ति पुरिसो चेव होति भिक्खुनी च।

सन्तिट्ठेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे तिट्ठति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

सल्लपेय्य वाति पुरिसस्स हत्थपासे ठिता सल्लपति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

निकण्णिकं वा जप्पेय्याति पुरिसस्स उपकण्णके आरोचेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

दुतियिकं वा भिक्खुनिं उय्योजेय्याति अनाचारं आचरितुकामा दुतियिकम्पि भिक्खुनिं उय्योजेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दस्सनूपचारं वा सवनूपचारं वा विजहन्तिया आपत्ति दुक्कटस्स। विजहिते आपत्ति पाचित्तियस्स।

हत्थपासं विजहित्वा सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा आपत्ति दुक्कटस्स। यक्खेन वा पेतेन वा पण्डकेन वा तिरच्छानगतमनुस्सविग्गहेन वा सद्धिं सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८५३. अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू दुतियो होति, अरहोपेक्खा, अञ्ञविहिता सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, न अनाचारं आचरितुकामा, सति करणीये दुतियिकं भिक्खुनिं उय्योजेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

८५४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी अञ्ञतरस्स कुलस्स कुलूपिका होति निच्चभत्तिका। अथ खो सा भिक्खुनी पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन तं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कामि। तस्स कुलस्स दासी घरं सम्मज्जन्ती तं आसनं भाजनन्तरिकाय पक्खिपि। मनुस्सा तं आसनं अपस्सन्ता तं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''कहं तं, अय्ये, आसन''न्ति? ''नाहं तं, आवुसो, आसनं पस्सामी''ति। ''देथाय्ये, तं आसन''न्ति परिभासित्वा निच्चभत्तं पच्छिन्दिंसु। अथ खो ते मनुस्सा घरं सोधेन्ता तं आसनं भाजनन्तरिकाय पस्सित्वा तं भिक्खुनिं खमापेत्वा निच्चभत्तं पट्ठपेसुं। अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कमिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कमतीति [पक्कमीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे भिक्खुनी पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कमिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८५५. **''या पन भिक्खुनी पुरेभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा आसने निसीदित्वा सामिके अनापुच्छा पक्कमेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८५६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पुरेभत्तं नाम अरुणुग्गमनं उपादाय याव मज्झन्हिका।

कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं, सुद्दकुलं। **उपसङ्कमित्वा**ति तत्थ गन्त्वा।

आसनं नाम पल्लङ्कस्स ओकासो वुच्चति। **निसीदित्वा**ति तस्मिं निसीदित्वा।

सामिके अनापुच्छा पक्कमेय्याति यो तस्मिं कुले मनुस्सो विञ्ञू तं अनापुच्छा अनोवस्सकं अतिक्कामेन्तिया

आपत्ति पाचित्तियस्स। अज्झोकासे उपचारं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स।

८५७. अनापुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते वेमतिका पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पल्लङ्कस्स अनोकासे आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा, अनापत्ति।

८५८. अनापत्ति आपुच्छा गच्छति, असंहारिमे, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

८५९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदतिपि अभिनिपज्जतिपि। मनुस्सा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं हिरीयमाना आसने नेव अभिनिसीदन्ति न अभिनिपज्जन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदिस्सतिपि अभिनिपज्जिस्सतिपी''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदिस्सतिपि अभिनिपज्जिस्सतिपी''ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदतिपि अभिनिपज्जतिपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदिस्सतिपि अभिनिपज्जिस्सतिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८६०. **''या पन भिक्खुनी पच्छाभत्तं कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा आसने अभिनिसीदेय्य वा अभिनिपज्जेय्य वा, पाचित्तिय**''न्ति।

८६१. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पच्छाभत्तं नाम मज्झन्हिके वीतिवत्ते याव अत्थङ्गते सूरिये।

कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं, सुद्दकुलं। **उपसङ्कमित्वा**ति तत्थ गन्त्वा।

सामिके अनापुच्छाति यो तस्मिं कुले मनुस्सो सामिको दातुं, तं अनापुच्छा।

आसनं नाम पल्लङ्कस्स ओकासो वुच्चति।

अभिनिसीदेय्याति तस्मिं अभिनिसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अभिनिपज्जेय्याति तस्मिं अभिनिपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८६२. अनापुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा आसने अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते वेमतिका आसने अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा आसने अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पल्लङ्कस्स अनोकासे आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा, अनापत्ति।

८६३. अनापत्ति आपुच्छा आसने अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, धुवपञ्ञत्ते, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

८६४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खुनियो कोसलेसु जनपदे सावत्थिं गच्छन्तियो सायं अञ्ञतरं गामं उपगन्त्वा अञ्ञतरं ब्राह्मणकुलं उपसङ्कमित्वा ओकासं याचिंसु। अथ खो सा ब्राह्मणी ता भिक्खुनियो एतदवोच – ''आगमेथ, अय्ये, याव ब्राह्मणो आगच्छती''ति। भिक्खुनियो – ''याव ब्राह्मणो आगच्छती''ति सेय्यं सन्थरित्वा एकच्चा निसीदिंसु एकच्चा निपज्जिंसु। अथ खो सो ब्राह्मणो रत्तिं आगन्त्वा तं ब्राह्मणिं एतदवोच – ''का इमा''ति? ''भिक्खुनियो, अय्या''ति। ''निक्कड्ढथ इमा मुण्डा बन्धकिनियो''ति, घरतो निक्कड्ढापेसि। अथ खो ता भिक्खुनियो सावत्थिं गन्त्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा अभिनिसीदिस्सन्तिपि अभिनिपज्जिस्सन्तिपी''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा अभिनिसीदन्तिपि अभिनिपज्जन्तिपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा अभिनिसीदिस्सन्तिपि अभिनिपज्जिस्सन्तिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८६५. **''या पन भिक्खुनी विकाले कुलानि उपसङ्कमित्वा सामिके अनापुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदेय्य वा अभिनिपज्जेय्य वा, पाचित्तिय**''न्ति।

८६६. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

विकालो नाम अत्थङ्गते सूरिये याव अरुणुग्गमना।

कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं सुद्दकुलं। **उपसङ्कमित्वा**ति तत्थ गन्त्वा।

सामिके अनापुच्छाति यो तस्मिं कुले मनुस्सो सामिको दातुं, तं अनापुच्छा।

सेय्यं नाम अन्तमसो पण्णसन्थारोपि। **सन्थरित्वा**ति सयं सन्थरित्वा। **सन्थरापेत्वा**ति अञ्ञं सन्थरापेत्वा। **अभिनिसीदेय्या**ति तस्मिं अभिनिसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। **अभिनिपज्जेय्या**ति तस्मिं अभिनिपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८६७. अनापुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते वेमतिका सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आपुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा, अनापत्ति।

८६८. अनापत्ति आपुच्छा सेय्यं सन्थरित्वा वा सन्थरापेत्वा वा अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

८६९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भद्दाय कापिलानिया अन्तेवासिनी भिक्खुनी भद्दं कापिलानिं सक्कच्चं उपट्ठेति। भद्दा कापिलानी भिक्खुनियो एतदवोच – ''अयं मं, अय्ये, भिक्खुनी सक्कचं उपट्ठेति, इमिस्साहं चीवरं दस्सामी''ति। अथ खो सा भिक्खुनी दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेसि – ''अहं किराय्ये, अय्यं न सक्कच्चं उपट्ठेमि, न किर मे अय्या चीवरं दस्सती''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेस्सती''ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेतीति [उज्झापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८७०. **''या पन भिक्खुनी दुग्गहितेन दूपधारितेन परं उज्झापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८७१. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

दुग्गहितेनाति अञ्ञथा गहितेन [उग्गहितेन (क०)]।

दूपधारितेनाति अञ्ञथा उपधारितेन।

परन्ति उपसम्पन्नं उज्झापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८७२. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा उज्झापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका उज्झापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा उज्झापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नं उज्झापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८७३. अनापत्ति उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

८७४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो अत्तनो भण्डकं अपस्सन्तियो चण्डकाळिं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''अपाय्ये, अम्हाकं, भण्डकं पस्सेय्यासी''ति? चण्डकाळी भिक्खुनी उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''अहमेव नून चोरी, अहमेव नून अलज्जिनी, या अय्यायो अत्तनो भण्डकं अपस्सन्तियो ता मं एवमाहंसु – 'अपाय्ये, अम्हाकं भण्डकं पस्सेय्यासी'ति? सचाहं, अय्ये, तुम्हाकं भण्डकं गण्हामि, अस्समणी होमि, ब्रह्मचरिया चवामि, निरयं उपपज्जामि; या पन मं अभूतेन एवमाह सापि अस्समणी होतु, ब्रह्मचरिया चवतु, निरयं उपपज्जतू''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या चण्डकाळी अत्तानम्पि परम्पि निरयेनपि ब्रह्मचरियेनपि अभिसपिस्सती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी अत्तानम्पि परम्पि निरयेनपि ब्रह्मचरियेनपि अभिसपतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी अत्तानम्पि परम्पि निरयेनपि ब्रह्मचरियेनपि अभिसपिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८७५. **''या पन भिक्खुनी अत्तानं वा परं वा निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपेय्य, पाचित्तिय्य''**न्ति।

८७६. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अत्तानन्ति पच्चत्तं। **पर**न्ति उपसम्पन्नं। निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

८७७. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

तिरच्छानयोनिया वा पेत्तिविसयेन वा मनुस्सदोभग्गेन वा अभिसपति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं अभिसपति,

आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८७८. अनापत्ति अत्थपुरेक्खाराय, धम्मपुरेक्खाराय, अनुसासनिपुरेक्खाराय, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

८७९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी भिक्खुनीहि सद्धिं भण्डित्वा अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या चण्डकाळी अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८८०. **''या पन भिक्खुनी अत्तानं वधित्वा वधित्वा रोदेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८८१. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अत्तानन्ति पच्चत्तं। वधित्वा वधित्वा रोदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। वधति न रोदति, आपत्ति दुक्कटस्स। रोदति न वधति, आपत्ति दुक्कटस्स।

८८२. अनापत्ति ञातिब्यसनेन वा भोगब्यसनेन वा रोगब्यसनेन वा फुट्ठा रोदति न वधति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

अन्धकारवग्गो दुतियो।

३. नग्गवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

८८३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला [महाव॰ ३५०] भिक्खुनियो अचिरवतिया नदिया वेसियाहि सद्धिं नग्गा एकतित्थे नहायन्ति। वेसिया ता भिक्खुनियो उप्पण्डेसुं – ''किं नु खो नाम तुम्हाकं, अय्ये, दहरानं [दहरानं दहरानं (सी॰)] ब्रह्मचरियं चिण्णेन, ननु नाम कामा परिभुञ्जितब्बा! यदा जिण्णा भविस्सथ तदा ब्रह्मचरियं चरिस्सथ। एवं तुम्हाकं उभो अत्था परिग्गहिता भविस्सन्ती''ति। भिक्खुनियो वेसियाहि उप्पण्डियमाना मङ्कू अहेसुं। अथ खो ता भिक्खुनियो उपस्सयं गन्त्वा भिक्खुनीनं

एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय...पे०... विनयानुग्गहाय। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८८४. ''या पन भिक्खुनी नग्गा नहायेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

८८५. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

नग्गा नहायेय्याति अनिवत्था वा अपारुता वा नहायति, पयोगे दुक्कटं। नहानपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

८८६. अनापत्ति अच्छिन्नचीवरिकाय वा नट्ठचीवरिकाय वा, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

८८७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भगवता भिक्खुनीनं [महाव० ३५१] उदकसाटिका अनुञ्ञाता होति। छब्बग्गिया भिक्खुनियो – ''भगवता उदकसाटिका अनुञ्ञाता''ति अप्पमाणिकायो उदकसाटिकायो धारेसुं [धारेन्ति (पाचि० ५३१-५४५)]। पुरतोपि पच्छतोपि आकड्ढन्ता आहिण्डन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो अप्पमाणिकायो उदकसाटिकायो धारेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो अप्पमाणिकायो उदकसाटिकायो धारेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो अप्पमाणिकायो उदकसाटिकायो धारेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८८८. ''उदकसाटिकं पन भिक्खुनिया कारयमानाय पमाणिका कारेतब्बा। तत्रिदं पमाणं – दीघसो चतस्सो विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं द्वे विदत्थियो। तं अतिक्कामेन्तिया छेदनकं पाचित्तिय''न्ति।

८८९. उदकसाटिका नाम याय निवत्था [निवत्थाय (स्या०)] नहायति।

कारयमानायाति करोन्तिया वा कारापेन्तिया वा।

पमाणिका कारेतब्बा। तत्रिदं पमाणं – दीघसो चतस्सो विदत्थियो, सुगतविदत्थिया; तिरियं द्वे विदत्थियो। तं अतिक्कामेत्वा करोति वा कारापेति वा, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन छिन्दित्वा पाचित्तियं देसेतब्बं।

८९०. अत्तना विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्तना विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं अत्तना परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। परेहि विप्पकतं परेहि परियोसापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञस्सत्थाय करोति वा कारापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अञ्ञेन कतं पटिलभित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स।

८९१. अनापत्ति पमाणिकं करोति, ऊनकं करोति, अञ्ञेन कतं पमाणातिक्कन्तं पटिलभित्वा छिन्दित्वा परिभुञ्जति, वितानं वा भूमत्थरणं वा साणिपाकारं वा भिसिं वा बिब्बोहनं वा करोति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

८९२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरिस्सा भिक्खुनिया महग्घे चीवरदुस्से चीवरं दुक्कटं होति दुस्सिब्बितं। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तं भिक्खुनिं एतदवोच – ''सुन्दरं खो इदं ते, अय्ये, चीवरदुस्सं; चीवरञ्च खो दुक्कटं दुस्सिब्बित''न्ति। ''विसिब्बेमि, अय्ये, सिब्बिस्ससी''ति? ''आमाय्ये, सिब्बिस्सामी''ति। अथ खो सा भिक्खुनी तं चीवरं विसिब्बेत्वा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया अदासि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''सिब्बिस्सामि सिब्बिस्सामी''ति नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोति। अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बापेत्वा नेव सिब्बिस्सति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बापेत्वा नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बापेत्वा नेव सिब्बिस्सति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८९३. **''या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बेय्य न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करेय्य, अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहा, पाचित्तिय**''न्ति।

८९४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुनियाति अञ्ञाय भिक्खुनिया।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं।

विसिब्बेत्वाति सयं विसिब्बेत्वा। **विसिब्बापेत्वा**ति अञ्ञं विसिब्बापेत्वा।

सा पच्छा अनन्तरायिकिनीति असति अन्तराये।

नेव सिब्बेय्याति न सयं सिब्बेय्य। **न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करेय्या**ति न अञ्ञं आणापेय्य।

अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहाति ठपेत्वा चतूहपञ्चाहं। ''नेव सिब्बिस्सामि न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करिस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

८९५. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा चीवरं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोति, अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका चीवरं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोति, अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा चीवरं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोति, अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अञ्ञं परिक्खारं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोति, अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं विसिब्बेत्वा वा विसिब्बापेत्वा वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बति न सिब्बापनाय उस्सुक्कं करोति, अञ्ञत्र चतूहपञ्चाहा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

८९६. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, करोन्ती चतूहपञ्चाहं अतिक्कामेति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

८९७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो भिक्खुनीनं हत्थे चीवरं निक्खिपित्वा सन्तरुत्तरेन जनपदचारिकं पक्कमन्ति। तानि चीवरानि चिरं निक्खित्तानि कण्णकितानि होन्ति। तानि भिक्खुनियो ओतापेन्ति। भिक्खुनियो ता भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''कस्सिमानि, अय्ये, चीवरानि कण्णकितानी''ति? अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसुं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे०… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो भिक्खुनीनं हत्थे चीवरं निक्खिपित्वा सन्तरुत्तरेन जनपदचारिकं पक्कमिस्सन्ती''ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो भिक्खुनीनं हत्थे चीवरं निक्खिपित्वा सन्तरुत्तरेन जनपदचारिकं पक्कमन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो भिक्खुनीनं हत्थे चीवरं निक्खिपित्वा सन्तरुत्तरेन जनपदचारिकं पक्कमिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

८९८. **''या पन भिक्खुनी पञ्चाहिकं सङ्घाटिचारं** [सङ्घाटिवारं (स्या०)] **अतिक्कामेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

८९९. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पञ्चाहिकं सङ्घाटिचारं अतिक्कामेय्याति पञ्चमं दिवसं पञ्च चीवरानि नेव निवासेति न पारुपति न ओतापेति, पञ्चमं दिवसं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९००. पञ्चाहातिक्कन्ते अतिक्कन्तसञ्ञा, आपत्ति पाचित्तियस्स। पञ्चाहातिक्कन्ते वेमतिका, आपत्ति पाचित्तियस्स। पञ्चाहातिक्कन्ते अनतिक्कन्तसञ्ञा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

पञ्चाहानतिक्कन्ते अतिक्कन्तसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। पञ्चाहानतिक्कन्ते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। पञ्चाहानतिक्कन्ते अनतिक्कन्तसञ्ञा, अनापत्ति।

९०१. अनापत्ति पञ्चमं दिवसं पञ्च चीवरानि निवासेति वा पारुपति वा ओतापेति वा, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

९०२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी पिण्डाय चरित्वा अल्लचीवरं पत्थरित्वा विहारं पाविसि। अञ्ञतरा भिक्खुनी तं चीवरं पारुपित्वा गामं पिण्डाय पाविसि। सा निक्खमित्वा भिक्खुनियो पुच्छि – ''अपाय्ये, मय्हं चीवरं पस्सेय्याथा''ति? भिक्खुनियो तस्सा भिक्खुनिया एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो सा भिक्खुनी उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी मय्हं चीवरं अनापुच्छा पारुपिस्सती''ति! अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा... पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं अनापुच्छा पारुपिस्सती''ति... पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं अनापुच्छा पारुपतीति [पारुपीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं अनापुच्छा पारुपिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९०३. **''या पन भिक्खुनी चीवरसङ्कमनीयं धारेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९०४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

चीवरसङ्कमनीयं नाम उपसम्पन्नाय पञ्चन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं तस्सा वा अदिन्नं तं वा अनापुच्छा निवासेति वा पारुपति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९०५. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा चीवरसङ्कमनीयं धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका चीवरसङ्कमनीयं धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा चीवरसङ्कमनीयं धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नाय चीवरसङ्कमनीयं धारेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

९०६. अनापत्ति सा वा देति, तं वा आपुच्छा निवासेति वा पारुपति वा, अच्छिन्नचीवरिकाय, नट्ठचीवरिकाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

९०७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया उपट्ठाककुलं थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''भिक्खुनिसङ्घस्स, अय्ये, चीवरं दस्सामा''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''तुम्हे बहुकिच्चा बहुकरणीया''ति अन्तरायं अकासि। तेन खो पन समयेन तस्स कुलस्स घरं डय्हति। ते उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अम्हाकं देय्यधम्मं अन्तरायं करिस्सति! उभयेनाम्ह परिबाहिरा [परिहीना (सी॰)], भोगेहि च पुञ्ञेन चा''ति। अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं करिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं अकासीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९०८. **''या पन भिक्खुनी गणस्स चीवरलाभं अन्तरायं करेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९०९. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

गणो नाम भिक्खुनिसङ्घो वुच्चति।

चीवरं नाम छन्नं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं विकप्पनुपगं पच्छिमं।

अन्तरायं करेय्याति ''कथं इमे चीवरं न [इमं चीवरं (क॰)] ददेय्यु''न्ति अन्तरायं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अञ्ञं परिक्खारं अन्तरायं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स। सम्बहुलानं भिक्खुनीनं वा एकभिक्खुनिया वा अनुपसम्पन्नाय वा चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं अन्तरायं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

९१०. अनापत्ति आनिसंसं दस्सेत्वा निवारेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

९११. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनिसङ्घस्स अकालचीवरं उप्पन्नं होति। अथ खो भिक्खुनिसङ्घो तं चीवरं भाजेतुकामो सन्निपति। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया अन्तेवासिनियो भिक्खुनियो पक्कन्ता होन्ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी ता भिक्खुनियो एतदवोच – ''अय्ये, भिक्खुनियो पक्कन्ता, न ताव चीवरं भाजीयिस्सती''ति। चीवरविभङ्गं पटिबाहि। भिक्खुनियो न ताव चीवरं भाजीयिस्सतीति पक्कमिंसु [विपक्कमिंसु (स्या॰)]। थुल्लनन्दा भिक्खुनी अन्तेवासिनीसु भिक्खुनीसु आगतासु तं चीवरं भाजापेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा धम्मिकं चीवरविभङ्गं पटिबाहिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिकं

चीवरविभङ्गं पटिबाहतीति [पटिबाहीति (क०)]? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिकं चीवरविभङ्गं पटिबाहिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९१२. **‘‘या पन भिक्खुनी धम्मिकं चीवरविभङ्गं पटिबाहेय्य, पाचित्तिय’’**न्ति।

९१३. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

धम्मिकोनाम चीवरविभङ्गो समग्गो भिक्खुनिसङ्घो सन्निपतित्वा भाजेति।

पटिबाहेय्याति कथं इमं चीवरं न भाजेय्याति [चीवरं भाजेय्याति (क०)] पटिबाहति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९१४. धम्मिके धम्मिकसञ्ञा पटिबाहति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मिके वेमतिका पटिबाहति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मिके अधम्मिकसञ्ञा पटिबाहति, अनापत्ति। अधम्मिके धम्मिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मिके अधम्मिकसञ्ञा, अनापत्ति।

९१५. अनापत्ति आनिसंसं दस्सेत्वा पटिबाहति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

९१६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी नटानम्पि नटकानम्पि लङ्घकानम्पि सोकज्झायिकानम्पि [सोकसायिकानम्पि (सी०)] कुम्भथूणिकानम्पि [कुम्भथुणिकानम्पि (क०)] समणचीवरं देति – ‘‘मय्हं परिसति [परिसतिं (सी०)] वण्णं भासथा’’ति। नटापि नटकापि लङ्घकापि सोकज्झायिकापि कुम्भथूणिकापि थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया परिसति वण्णं भासन्ति – ‘‘अय्या थुल्लनन्दा बहुस्सुता भाणिका विसारदा पट्ठा धम्मिं कथं कातुं; देथ अय्याय, करोथ अय्याया’’ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा, ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अगारिकस्स समणचीवरं दस्सती’’ति…पे०… सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अगारिकस्स समणचीवरं देतीति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे०… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अगारिकस्स समणचीवरं दस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे०… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९१७. **‘‘या पन भिक्खुनी अगारिकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा समणचीवरं ददेय्य, पाचित्तिय’’**न्ति।

९१८. **या पना**ति या यादिसा…पे०… **भिक्खुनी**ति…पे०… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अगारिको नाम यो कोचि अगारं अज्झावसति।

परिब्बाजको नाम भिक्खुञ्च सामणेरञ्च ठपेत्वा यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो।

परिब्बाजिका नाम भिक्खुनिञ्च सिक्खमानञ्च सामणेरिञ्च ठपेत्वा या काचि परिब्बाजिकसमापन्ना।

समणचीवरं नाम कप्पकतं वुच्चति। देति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९१९. अनापत्ति मातापितूनं देति, तावकालिकं देति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

९२०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया उपट्ठाककुलं थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोच – ''सचे मयं, अय्ये, सक्कोम, भिक्खुनिसङ्घस्स चीवरं दस्सामा''ति। तेन खो पन समयेन वस्संवुट्ठा भिक्खुनियो चीवरं भाजेतुकामा सन्निपतिंसु। थुल्लनन्दा भिक्खुनी ता भिक्खुनियो एतदवोच – ''आगमेथ, अय्ये, अत्थि भिक्खुनिसङ्घस्स चीवरपच्चासा''ति। भिक्खुनियो थुल्लनन्दं भिक्खुनिं एतदवोचुं – ''गच्छाय्ये, तं चीवरं जानाही''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी येन तं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा ते मनुस्से एतदवोच – ''देथावुसो, भिक्खुनिसङ्घस्स चीवर''न्ति। ''न मयं, अय्ये, सक्कोम भिक्खुनिसङ्घस्स चीवरं दातु''न्ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा दुब्बलचीवरपच्चासाय चीवरकालसमयं अतिक्कामेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुब्बलचीवरपच्चासाय चीवरकालसमयं अतिक्कामेतीति [अतिक्कामेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुब्बलचीवरपच्चासाय चीवरकालसमयं अतिक्कामेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९२१. **''या पन भिक्खुनी दुब्बलचीवरपच्चासाय चीवरकालसमयं अतिक्कामेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९२२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

दुब्बलचीवरपच्चासा नाम ''सचे मयं सक्कोम, दस्साम करिस्सामा''ति वाचा भिन्ना होति।

चीवरकालसमयो नाम अनत्थते कथिने वस्सानस्स पच्छिमो मासो, अत्थते कथिने पञ्च मासा।

चीवरकालसमयं अतिक्कामेय्याति अनत्थते कथिने वस्सानस्स पच्छिमं दिवसं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अत्थते कथिने कथिनुद्धारदिवसं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९२३. दुब्बलचीवरे दुब्बलचीवरसञ्ञा चीवरकालसमयं अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। दुब्बलचीवरे वेमतिका चीवरकालसमयं अतिक्कामेति, आपत्ति दुक्कटस्स। दुब्बलचीवरे अदुब्बलचीवरसञ्ञा चीवरकालसमयं अतिक्कामेति, अनापत्ति।

अदुब्बलचीवरे दुब्बलचीवरसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अदुब्बलचीवरे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अदुब्बलचीवरे अदुब्बलचीवरसञ्ञा, अनापत्ति।

९२४. अनापत्ति आनिसंसं दस्सेत्वा निवारेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

९२५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरेन उपासकेन सङ्घं उद्दिस्स विहारो कारापितो होति। सो तस्स विहारस्स महे उभतोसङ्घस्स अकालचीवरं दातुकामो होति। तेन खो पन समयेन उभतोसङ्घस्स कथिनं अत्थतं होति। अथ खो सो उपासको सङ्घं उपसङ्कमित्वा कथिनुद्धारं याचि। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ‘‘अनुजानामि, भिक्खवे, कथिनं उद्धरितुं। एवञ्च पन भिक्खवे कथिनं उद्धरितब्बं। ब्यत्तेन भिक्खुना पटिबलेन सङ्घो ञापेतब्बो –

९२६. ‘‘सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो कथिनं उद्धरेय्य। एसा ञत्ति।

‘‘सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो। सङ्घो कथिनं उद्धरति। यस्सायस्मतो खमति कथिनस्स उद्धारो, सो तुण्हस्स; यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

‘‘उब्भतं सङ्घेन कथिनं, खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी’’ति।

९२७. अथ खो सो उपासको भिक्खुनिसङ्घं उपसङ्कमित्वा कथिनुद्धारं याचि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ‘‘चीवरं अम्हाकं भविस्सती’’ति कथिनुद्धारं पटिबाहि। अथ खो सो उपासको उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अम्हाकं कथिनुद्धारं न दस्सन्ती’’ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तस्स उपासकस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहिस्सती’’ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहतीति [पटिबाहीति (क॰)]? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९२८. ‘‘**या पन भिक्खुनी धम्मिकं कथिनुद्धारं पटिबाहेय्य, पाचित्तिय**’’न्ति।

९२९. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

धम्मिको नाम कथिनुद्धारो समग्गो भिक्खुनिसङ्घो सन्निपतित्वा उद्धरति।

पटिबाहेय्याति ‘‘कथं इदं कथिनं न उद्धरेय्या’’ति [कथिनं उद्धरेय्याति (क॰)] पटिबाहति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९३०. धम्मिके धम्मिकसञ्ञा पटिबाहति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मिके वेमतिका पटिबाहति, आपत्ति दुक्कटस्स। धम्मिके अधम्मिकसञ्ञा पटिबाहति, अनापत्ति। अधम्मिके धम्मिकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मिके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मिके अधम्मिकसञ्ञा, अनापत्ति।

९३१. अनापत्ति अनिसंसं दस्सेत्वा पटिबाहति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

नग्गवग्गो ततियो।

४. तुवट्टवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

९३२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेन्ति। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९३३. **''या पन भिक्खुनियो द्वे एकमञ्चे तुवट्टेय्युं, पाचित्तिय''**न्ति।

९३४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनियो**ति उपसम्पन्नायो वुच्चन्ति।

द्वे एकमञ्चे तुवट्टेय्युन्ति एकाय निपन्नाय अपरा निपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उभो वा निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उट्ठहित्वा पुनप्पुनं निपज्जन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९३५. अनापत्ति एकाय निपन्नाय अपरा निसीदति, उभो वा निसीदन्ति, उम्मत्तिकानं, आदिकम्मिकानन्ति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

९३६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेन्ति। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति

खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९३७. ''**या पन भिक्खुनियो द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेय्युं, पाचित्तिय**''न्ति।

९३८. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनियो**ति उपसम्पन्नायो वुच्चन्ति।

द्वे एकत्थरणपावुरणा तुवट्टेय्युन्ति तञ्ञेव अत्थरित्वा तञ्ञेव पारुपन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९३९. एकत्थरणपावुरणे एकत्थरणपावुरणसञ्ञा तुवट्टेन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। एकत्थरणपावुरणे वेमतिका तुवट्टेन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स। एकत्थरणपावुरणे नानत्थरणपावुरणसञ्ञा तुवट्टेन्ति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

एकत्थरणे नानापावुरणे [नानापावुरणसञ्ञा (क०)], आपत्ति दुक्कटस्स। नानत्थरणे एकपावुरणे [एकपावुरणसञ्ञा (क०)], आपत्ति दुक्कटस्स। नानत्थरणपावुरणे एकत्थरणपावुरणसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। नानत्थरणपावुरणे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। नानत्थरणपावुरणे नानत्थरणपावुरणसञ्ञा, अनापत्ति।

९४०. अनापत्ति ववत्थानं दस्सेत्वा निपज्जन्ति, उम्मत्तिकानं, आदिकम्मिकानन्ति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

९४१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी बहुस्सुता होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं। भद्दापि कापिलानी बहुस्सुता होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं उळारसम्भाविता। मनुस्सा – ''अय्या भद्दा कापिलानी बहुस्सुता भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं उळारसम्भाविता''ति भद्दं कापिलानिं पठमं पयिरुपासित्वा, पच्छा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं पयिरुपासन्ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी इस्सापकता – ''इमा किर अप्पिच्छा सन्तुट्ठा पविवित्ता असंसट्ठा या इमा सञ्ञत्तिबहुला विञ्ञत्तिबहुला विहरन्ती''ति भद्दाय कापिलानिया पुरतो चङ्कमतिपि तिट्ठतिपि निसीदतिपि सेय्यम्पि कप्पेति उद्दिसतिपि उद्दिसापेतिपि सज्झायम्पि करोति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अय्याय भद्दाय कापिलानिया सञ्चिच्च अफासुं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भद्दाय कापिलानिया सञ्चिच्च अफासुं करोतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भद्दाय कापिलानिया सञ्चिच्च अफासुं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९४२. ''**या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया सञ्चिच्च अफासुं करेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

९४३. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुनियाति अञ्ञाय भिक्खुनिया।

सञ्चिच्चाति जानन्ती सञ्जानन्ती चेच्च अभिवितरित्वा वीतिक्कमो।

अफासुं करेय्याति – ''इमिना इमिस्सा अफासु भविस्सती''ति अनापुच्छा पुरतो चङ्कमति वा तिट्ठति वा निसीदति वा सेय्यं वा कप्पेति उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा सज्झायं वा करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९४४. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा सञ्चिच्च अफासुं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका सञ्चिच्च अफासुं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा सञ्चिच्च अफासुं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नाय सञ्चिच्च अफासुं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

९४५. अनापत्ति न अफासुं कत्तुकामा आपुच्छा पुरतो चङ्कमति वा तिट्ठति वा निसीदति वा सेय्यं वा कप्पेति उद्दिसति वा उद्दिसापेति वा सज्झायं वा करोति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

९४६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेति न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करोति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेस्सति न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेति न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करोतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेस्सति न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९४७. ''या पन भिक्खुनी दुक्खितं सहजीविनिं नेव उपट्ठेय्य न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

९४८. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

दुक्खिता नाम गिलाना वुच्चति।

सहजीविनी नाम सद्धिविहारिनी वुच्चति।

नेव उपट्ठेय्याति न सयं उपट्ठेय्य।

न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करेय्याति न अञ्ञं आणापेय्य।

''नेव उपट्ठेस्सामि, न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स। अन्तेवासिनिं वा अनुपसम्पन्नं वा नेव उपट्ठेति, न उपट्ठापनाय उस्सुक्कं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

९४९. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

९५०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भद्दा कापिलानी साकेते वस्सं उपगता होति। सा केनचिदेव करणीयेन उब्बाळ्हा थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया सन्तिके दूतं पाहेसि – ''सचे मे अय्या थुल्लनन्दा उपस्सयं ददेय्य आगच्छेय्यामहं सावत्थि''न्ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी एवमाह – ''आगच्छतु, दस्सामी''ति। अथ खो भद्दा कापिलानी साकेता सावत्थिं अगमासि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी भद्दाय कापिलानिया उपस्सयं अदासि। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी बहुस्सुता होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं। भद्दापि कापिलानी बहुस्सुता [बहुस्सुतायेव (क॰)] होति भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं उळारसम्भाविता। मनुस्सा – ''अय्या भद्दा कापिलानी बहुस्सुता भाणिका विसारदा पट्टा धम्मिं कथं कातुं उळारसम्भाविता''ति भद्दं कापिलानिं पठमं पयिरुपासित्वा पच्छा थुल्लनन्दं भिक्खुनिं पयिरुपासन्ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी इस्सापकता – ''इमा किर अप्पिच्छा सन्तुट्ठा पविवित्ता असंसट्ठा या इमा सञ्ञत्तिबहुला विञ्ञत्तिबहुला विहरन्ती''ति कुपिता अनत्तमना भद्दं कापिलानिं उपस्सया निक्कड्ढि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अय्याय भद्दाय कापिलानिया उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भद्दाय कापिलानिया उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढतीति [निक्कड्ढीति (क॰)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भद्दाय कापिलानिया उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९५१. ''या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढेय्य वा निक्कड्ढापेय्य वा, पाचित्तिय''न्ति।

९५२. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुनियाति अञ्ञाय भिक्खुनिया। **उपस्सयो** नाम कवाटबद्धो वुच्चति। **दत्वा**ति सयं दत्वा। **कुपिता अनत्तमना**ति अनभिरद्धा आहतचित्ता खिलजाता।

निक्कड्ढेय्याति गब्भे गहेत्वा पमुखं निक्कड्ढति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पमुखे गहेत्वा बहि निक्कड्ढति, आपत्ति

पाचित्तियस्स। एकेन पयोगेन बहुकेपि द्वारे अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

निक्कड्ढापेय्याति अञ्ञं आणापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स [एत्थ ''आपत्ति दुक्कटस्सा''ति सब्बत्थ दिस्सति, भिक्खुविभङ्गे पन इदिसेसु आणत्तिसहगतसिक्खापदेसु ''अञ्ञं आणापेति आपत्ति पाचित्तियस्सा''ति आगतत्ता तमनुवत्तित्वा विसोधितमिदं]। सकिं आणत्ता बहुकेपि द्वारे अतिक्कामेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९५३. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा उपस्सयं दत्वा कुपिता अनत्तमना निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अकवाटबद्धा निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नं कवाटबद्धा वा अकवाटबद्धा वा निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

९५४. अनापत्ति अलज्जिनिं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, उम्मत्तिकं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, भण्डनकारिकं कलहकारिकं विवादकारिकं भस्सकारिकं सङ्घे अधिकरणकारिकं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, अन्तेवासिनिं वा सद्धिविहारिनिं वा न सम्मा वत्तन्तिं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, तस्सा परिक्खारं निक्कड्ढति वा निक्कड्ढापेति वा, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

९५५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी संसट्ठा विहरति गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या चण्डकाळी संसट्ठा विहरिस्सति गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपी''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी संसट्ठा विहरति गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी संसट्ठा विहरिस्सति गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९५६. **''या पन भिक्खुनी संसट्ठा विहरेय्य गहपतिना वा गहपतिपुत्तेन वा सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि एवमस्स वचनीया – 'माय्ये, संसट्ठा विहरि गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि। विविच्चाय्ये; विवेकञ्ञेव भगिनिया सङ्घो वण्णेती'ति। एवञ्च** [एवञ्च पन (क॰)] **सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि वुच्चमाना तथेव पग्गण्हेय्य, सा भिक्खुनी भिक्खुनीहि यावततियं समनुभासितब्बा तस्स पटिनिस्सग्गाय। यावततियञ्चे समनुभासीयमाना तं**

पटिनिस्सज्जेय्य, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

९५७. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

संसट्ठा नाम अननुलोमिकेन कायिकवाचसिकेन संसट्ठा।

गहपति नाम यो कोचि अगारं अज्झावसति।

गहपतिपुत्तो नाम ये केचि [यो कोचि (क०)] पुत्तभातरो।

सा भिक्खुनीति या सा संसट्ठा भिक्खुनी।

भिक्खुनीहीति अञ्ञाहि भिक्खुनीहि। या पस्सन्ति या सुणन्ति ताहि वत्तब्बा – ''माय्ये, संसट्ठा विहरि गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि। विविच्चाय्ये; विवेकञ्ञेव भगिनिया सङ्घो वण्णेती''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सुत्वा न वदन्ति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी सङ्घमज्झम्पि आकड्ढित्वा वत्तब्बा – ''माय्ये, संसट्ठा विहरि गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि। विविच्चाय्ये; विवेकञ्ञेवभगिनिया सङ्घो वण्णेती''ति। दुतियम्पि वत्तब्बा। ततियम्पि वत्तब्बा। सचे पटिनिस्सज्जति, इच्चेतं कुसलं; नो चे पटिनिस्सज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सा भिक्खुनी समनुभासितब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, समनुभासितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

९५८. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी संसट्ठा विहरति गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासेय्य तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा भिक्खुनी संसट्ठा विहरति गहपतिनापि गहपतिपुत्तेनपि। सा तं वत्थुं न पटिनिस्सज्जति। सङ्घो इत्थन्नामं भिक्खुनिं समनुभासति तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय भिक्खुनिया समनुभासना तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दुतियम्पि एतमत्थं वदामि...पे०... ततियम्पि एतमत्थं वदामि...पे०...।

''समनुभट्ठा सङ्घेन इत्थन्नामा भिक्खुनी तस्स वत्थुस्स पटिनिस्सग्गाय; खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

९५९. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा न पटिनिस्सज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे

अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

९६०. अनापत्ति असमनुभासन्तिया, पटिनिस्सज्जन्तिया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

९६१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरन्ति। धुत्ता दूसेन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा... पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९६२. **''या पन भिक्खुनी अन्तोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९६३. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अन्तोरट्ठेति यस्स विजिते विहरति, तस्स रट्ठे।

सासङ्कं नाम तस्मिं मग्गे चोरानं निविट्ठोकासो दिस्सति, भुत्तोकासो दिस्सति, ठितोकासो दिस्सति, निसिन्नोकासो दिस्सति, निपन्नोकासो दिस्सति।

सप्पटिभयं नाम तस्मिं मग्गे चोरेहि मनुस्सा हता दिस्सन्ति, विलुत्ता दिस्सन्ति, आकोटिता दिस्सन्ति।

असत्थिका नाम विना सत्थेन।

चारिकं चरेय्याति कुक्कुटसम्पाते गामे गामन्तरे गामन्तरे आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्ञे अद्धयोजने अद्धयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

९६४. अनापत्ति सत्थेन सह गच्छति, खेमे अप्पटिभये गच्छति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

९६५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

भिक्खुनियो तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरन्ति। धुत्ता दूसेन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९६६. **''या पन भिक्खुनी तिरोरट्ठे सासङ्कसम्मते सप्पटिभये असत्थिका चारिकं चरेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९६७. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

तिरोरट्ठेति यस्स विजिते विहरति, तं ठपेत्वा अञ्ञस्स रट्ठे।

सासङ्कं नाम तस्मिं मग्गे चोरानं निविट्ठोकासो दिस्सति, भुत्तोकासो दिस्सति, ठितोकासो दिस्सति, निसिन्नोकासो दिस्सति, निपन्नोकासो दिस्सति।

सप्पटिभयं नाम तस्मिं मग्गे चोरेहि मनुस्सा हता दिस्सन्ति, विलुत्ता दिस्सन्ति, आकोटिता दिस्सन्ति।

असत्थिका नाम विना सत्थेन।

चारिकं चरेय्याति कुक्कुटसम्पाते गामे गामन्तरे गामन्तरे, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्ञे अद्धयोजने अद्धयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

९६८. अनापत्ति सत्थेन सह गच्छति, खेमे अप्पटिभये गच्छति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

९६९. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरिस्सन्ति हरितानि तिणानि च सम्मद्दन्ता, एकिन्द्रियं जीवं विहेठेन्ता, बहू खुद्दके पाणे सङ्घातं आपादेन्ता''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९७०. **''या पन भिक्खुनी अन्तोवस्सं चारिकं चरेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९७१. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अन्तोवस्सन्ति पुरिमं वा तेमासं पच्छिमं वा तेमासं अवसित्वा।

चारिकं चरेय्याति कुक्कुटसम्पाते गामे गामन्तरे गामन्तरे आपत्ति पाचित्तियस्स। अगामके अरञ्ञे अद्धयोजने अद्धयोजने आपत्ति पाचित्तियस्स।

९७२. अनापत्ति सत्ताहकरणीयेन गच्छति, केनचि उब्बाळ्हा गच्छति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

९७३. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो तत्थेव राजगहे वस्सं वसन्ति, तत्थ हेमन्तं, तत्थ गिम्हं। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''आहुन्दरिका भिक्खुनीनं दिसा अन्धकारा, न इमासं दिसा पक्खायन्ती''ति। अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। अथ खो ता भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''तेन हि, भिक्खवे, भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामि दस अत्थवसे पटिच्च – सङ्घसुट्ठुताय...पे०... सद्धम्मट्ठितिया विनयानुग्गहाय। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९७४. **''या पन भिक्खुनी वस्संवुट्ठा चारिकं न पक्कमेय्य अन्तमसो छप्पञ्चयोजनानिपि, पाचित्तिय''**न्ति।

९७५. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

वस्संवुट्ठा नाम पुरिमं वा तेमासं पच्छिमं वा तेमासं वुट्ठा।

''चारिकं न पक्कमिस्सामि अन्तमसो छप्पञ्चयोजनानिपी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

९७६. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा दुतियिकं भिक्खुनिं न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

तुवट्टवग्गो चतुत्थो।

५. चित्तागारवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

९७७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स उय्याने चित्तागारे पटिभानचित्तं कतं होति। बहू मनुस्सा चित्तागारं दस्सनाय गच्छन्ति। छब्बग्गियापि भिक्खुनियो चित्तागारं दस्सनाय अगमंसु। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो चित्तागारं दस्सनाय गच्छिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे○... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो चित्तागारं दस्सनाय गच्छिस्सन्ती''ति...पे○... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो चित्तागारं दस्सनाय गच्छन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे○... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो चित्तागारं दस्सनाय गच्छिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे○... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९७८. ''**या पन भिक्खुनी राजागारं वा चित्तागारं वा आरामं वा उय्यानं वा पोक्खरणिं वा दस्सनाय गच्छेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

९७९. **या पना**ति या यादिसा...पे○... **भिक्खुनी**ति...पे○... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

राजागारं नाम यत्थ कत्थचि रञ्ञो कीळितुं रमितुं कतं होति।

चित्तागारं नाम यत्थ कत्थचि मनुस्सानं कीळितुं रमितुं कतं होति।

आरामो नाम यत्थ कत्थचि मनुस्सानं कीळितुं रमितुं कतो होति।

उय्यानं नाम यत्थ कत्थचि मनुस्सानं कीळितुं रमितुं कतं होति।

पोक्खरणी नाम यत्थ कत्थचि मनुस्सानं कीळितुं रमितुं कता होति।

९८०. दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठिता पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स। एकमेकं दस्सनाय गच्छति, आपत्ति दुक्कटस्स। यत्थ ठिता पस्सति, आपत्ति पचित्तियस्स। दस्सनूपचारं विजहित्वा पुनप्पुनं पस्सति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९८१. अनापत्ति आरामे ठिता पस्सति, गच्छन्ती वा आगच्छन्ती वा पस्सति, सति करणीये गन्त्वा पस्सति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

९८२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो आसन्दिम्पि पल्लङ्कम्पि परिभुञ्जन्ति। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो आसन्दिम्पि पल्लङ्कम्पि परिभुञ्जिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो

कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो आसन्दिम्पि पल्लङ्कम्पि परिभुञ्जिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो आसन्दिम्पि पल्लङ्कम्पि परिभुञ्जन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो आसन्दिम्पि पल्लङ्कम्पि परिभुञ्जिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९८३. **''या पन भिक्खुनी आसन्दिं वा पल्लङ्कं वा परिभुञ्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९८४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

आसन्दी नाम अतिक्कन्तप्पमाणा वुच्चति।

पल्लङ्को नाम आहरिमेहि [''असंहारिमेहि'' इति कङ्खावितरणिया समेति] वाळेहि कतो होति।

परिभुञ्जेय्याति तस्मिं अभिनिसीदति वा अभिनिपज्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९८५. अनापत्ति आसन्दिया पादे छिन्दित्वा परिभुञ्जति, पल्लङ्कस्स वाळे भिन्दित्वा परिभुञ्जति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

९८६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो सुत्तं कन्तन्ति। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो सुत्तं कन्तिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा ...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो सुत्तं कन्तिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो सुत्तं कन्तन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो सुत्तं कन्तिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९८७. **''या पन भिक्खुनी सुत्तं कन्तेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९८८. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सुत्तं नाम छ सुत्तानि – खोमं, कप्पासिकं, कोसेय्यं, कम्बलं, साणं, भङ्गं।

कन्तेय्याति सयं कन्तति, पयोगे दुक्कटं। उज्जवुज्जवे आपत्ति पाचित्तियस्स।

९८९. अनापत्ति कन्तितसुत्तं कन्तति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

९९०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो गिहिवेय्यावच्चं करोन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो गिहिवेय्यावच्चं करिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो गिहिवेय्यावच्चं करोन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो गिहिवेय्यावच्चं करिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९९१. **''या पन भिक्खुनी गिहिवेय्यावच्चं करेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

९९२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

गिहिवेय्यावच्चं नाम अगारिकस्स यागुं वा भत्तं वा खादनीयं वा पचति, साटकं वा वेठनं वा धोवति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९९३. अनापत्ति यागुपाने, सङ्घभत्ते, चेतियपूजाय, अत्तनो वेय्यावच्चकरस्स यागुं वा भत्तं वा खादनीयं वा पचति, साटकं वा वेठनं वा धोवति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

९९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी थुल्लनन्दं भिक्खुनिं उपसङ्कमित्वा एतदवोच – ''एहाय्ये, इमं अधिकरणं वूपसमेही''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी 'साधू'ति पटिस्सुणित्वा नेव वूपसमेति न वूपसमाय उस्सुक्कं करोति। अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा भिक्खुनिया – 'एहाय्ये', इमं अधिकरणं वूपसमेही'ति वुच्चमाना – 'साधू'ति पटिस्सुणित्वा, नेव वूपसमेस्सति न वूपसमाय उस्सुक्कं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया – ''एहाय्ये, इमं अधिकरणं वूपसमेही''ति वुच्चमाना – ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा, नेव वूपसमेति न वूपसमाय उस्सुक्कं करोतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी भिक्खुनिया – ''एहाय्ये, इमं अधिकरणं वूपसमेही''ति वुच्चमाना – ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा, नेव वूपसमेस्सति न वूपसमाय उस्सुक्कं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

९९५. **''या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया – 'एहाय्ये, इमं अधिकरणं वूपसमेही'ति वुच्चमाना – 'साधू'ति**

पटिस्सुणित्वा सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव वूपसमेय्य न वूपसमाय उस्सुक्कं करेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

९९६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुनियाति अञ्ञाय भिक्खुनिया।

अधिकरणं नाम चत्तारि अधिकरणानि – विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं, आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं।

एहाय्ये इमं अधिकरणं वूपसमेहीति एहाय्ये इमं अधिकरणं विनिच्छेहि।

सा पच्छा अनन्तरायिकिनीति असति अन्तराये।

नेव वूपसमेय्याति न सयं वूपसमेय्य।

न वूपसमाय उस्सुक्कं करेय्याति न अञ्ञं आणापेय्य। ''नेव वूपसमेस्सामि न वूपसमाय उस्सुक्कं करिस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते, आपत्ति पाचित्तियस्स।

९९७. उपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा अधिकरणं नेव वूपसमेति न वूपसमाय उस्सुक्कं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय वेमतिका अधिकरणं नेव वूपसमेति, न वूपसमाय उस्सुक्कं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा अधिकरणं नेव वूपसमेति, न वूपसमाय उस्सुक्कं करोति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नाय अधिकरणं नेव वूपसमेति, न वूपसमाय उस्सुक्कं करोति, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्नाय अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

९९८. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

९९९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी नटानम्पि नटकानम्पि लङ्घकानम्पि सोकज्झायिकानम्पि कुम्भथूणिकानम्पि सहत्था खादनीयं भोजनीयं देति – ''मय्हं परिसति वण्णं भासथा''ति। नटापि नटकापि लङ्घकापि सोकज्झायिकापि कुम्भथूणिकापि थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया परिसति वण्णं भासन्ति – ''अय्या थुल्लनन्दा बहुस्सुता भाणिका विसारदा पट्ठा धम्मिं कथं कातुं; देथ अय्याय, करोथ अय्याया''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अगारिकस्स सहत्था खादनीयं भोजनीयं दस्सतीति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अगारिकस्स सहत्था खादनीयं भोजनीयं देतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी अगारिकस्स सहत्था खादनीयं भोजनीयं दस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...

पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०००. **''या पन भिक्खुनी अगारिकस्स वा परिब्बाजकस्स वा परिब्बाजिकाय वा सहत्था खादनीयं वा भोजनीयं वा ददेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१००१. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अगारिको नाम यो कोचि अगारं अज्झावसति।

परिब्बाजको नाम भिक्खुञ्च सामणेरञ्च ठपेत्वा यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो।

परिब्बाजिका नाम भिक्खुनिञ्च सिक्खमानञ्च सामणेरिञ्च ठपेत्वा या काचि परिब्बाजिकसमापन्ना।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – उदकदन्तपोनं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

ददेय्याति कायेन वा कायपटिबद्धेन वा निस्सग्गियेन वा देति, आपत्ति पाचित्तियस्स। उदकदन्तपोनं देति, आपत्ति दुक्कटस्स।

१००२. अनापत्ति दापेति न देति, उपनिक्खिपित्वा देति, बाहिरालेपं देति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

१००३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जति। अञ्ञा उतुनियो भिक्खुनियो न लभन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१००४. **''या पन भिक्खुनी आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१००५. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

आवसथचीवरं नाम ''उतुनियो भिक्खुनियो परिभुञ्जन्तू''ति दिन्नं होति।

अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जेय्याति द्वेतिस्सो रत्तियो परिभुञ्जित्वा चतुत्थदिवसे धोवित्वा भिक्खुनिया वा सिक्खमानाय वा सामणेरिया वा अनिस्सज्जित्वा परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१००६. अनिस्सज्जिते अनिस्सज्जितसञ्ञा परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनिस्सज्जिते वेमतिका परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनिस्सज्जिते निस्सज्जितसञ्ञा परिभुञ्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

निस्सज्जिते अनिस्सज्जितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सज्जिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सज्जिते निस्सज्जितसञ्ञा अनापत्ति।

१००७. अनापत्ति निस्सज्जित्वा परिभुञ्जति, पुन परियायेन परिभुञ्जति, अञ्ञा उतुनियो भिक्खुनियो न होन्ति, अच्छिन्नचीवरिकाय, नट्ठचीवरिकाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

१००८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कामि। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया आवसथो डय्हति। भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''हन्दाय्ये, भण्डकं नीहरामा''ति। एकच्चा एवमाहंसु – ''न मयं, अय्ये, नीहरिस्साम। यं किञ्चि नट्ठं सब्बं अम्हे अभियुञ्जिस्सती''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी पुनदेव तं आवसथं पच्चागन्त्वा भिक्खुनियो पुच्छि – ''अपाय्ये, भण्डकं नीहरित्था''ति? ''न मयं, अय्ये, नीहरिम्हा''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो आवसथे डय्हमाने भण्डकं न नीहरिस्सन्ती''ति! या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमतीति [पक्कमीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१००९. **''या पन भिक्खुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०१०. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

आवसथो नाम कवाटबद्धो वुच्चति।

अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमेय्याति भिक्खुनिया वा सिक्खमानाय वा सामणेरिया वा अनिस्सज्जित्वा परिक्खित्तस्स आवसथस्स परिक्खेपं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स। अपरिक्खित्तस्स आवसथस्स उपचारं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०११. अनिस्सज्जिते अनिस्सज्जितसञ्ञा पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनिस्सज्जिते वेमतिका पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनिस्सज्जिते निस्सज्जितसञ्ञा पक्कमति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अकवाटबद्धं अनिस्सज्जित्वा पक्कमति, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सज्जिते अनिस्सज्जितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सज्जिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। निस्सज्जिते निस्सज्जितसञ्ञा, अनापत्ति।

१०१२. अनापत्ति निस्सज्जित्वा पक्कमति, सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

१०१३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं परियापुणन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं परियापुणिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं परियापुणिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं परियापुणन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं परियापुणिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०१४. ''**या पन भिक्खुनी तिरच्छानविज्जं परियापुणेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

१०१५. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

तिरच्छानविज्जा [तिरच्छानविज्जं (क०)] नाम यं किञ्चि बाहिरकं अनत्थसंहितं।

परियापुणेय्याति पदेन परियापुणाति, पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स। अक्खराय परियापुणाति, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०१६. अनापत्ति लेखं परियापुणाति, धारणं परियापुणाति, गुत्तत्थाय परित्तं परियापुणाति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

१०१७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं वाचेन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं वाचेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं वाचेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं वाचेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो तिरच्छानविज्जं वाचेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०१८. **''या पन भिक्खुनी तिरच्छानविज्जं वाचेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

१०१९. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

तिरच्छानविज्जा [तिरच्छानविज्जं (क०)] नाम यं किञ्चि बाहिरकं अनत्थसंहितं।

वाचेय्याति पदेन वाचेति, पदे पदे आपत्ति पाचित्तियस्स। अक्खराय वाचेति, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०२०. अनापत्ति लेखं वाचेति, धारणं वाचेति, गुत्तत्थाय परित्तं वाचेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

चित्तागारवग्गो पञ्चमो।

६. आरामवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

१०२१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खू गामकावासे एकचीवरा चीवरकम्मं करोन्ति। भिक्खुनियो अनापुच्छा आरामं पविसित्वा येन ते भिक्खू तेनुपसङ्कमिंसु। भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अनापुच्छा आरामं पविसिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनापुच्छा आरामं पविसन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनापुच्छा आरामं पविसिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी अनापुच्छा आरामं पविसेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१०२२. तेन खो पन समयेन ते भिक्खू तम्हा आवासा पक्कमिंसु। भिक्खुनियो – ''अय्या पक्कन्ता''ति, आरामं नागमंसु। अथ खो ते भिक्खू पुनदेव तं आवासं पच्चागच्छिंसु। भिक्खुनियो – ''अय्या आगता''ति, आपुच्छा आरामं

पविसित्वा येन ते भिक्खू तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा ते भिक्खू अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु। एकमन्तं ठिता खो ता भिक्खुनियो ते भिक्खू एतदवोचुं – ''किस्स तुम्हे, भगिनियो, आरामं नेव सम्मज्जित्थ न पानीयं परिभोजनीयं उपट्ठापित्थाति? भगवता, अय्या, सिक्खापदं पञ्ञत्तं [पञ्ञत्तं होति (क॰)] होति – ''न अनापुच्छा आरामो पविसितब्बो''ति। तेन मयं न आगमिम्हा''ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... अनुजानामि, भिक्खवे, सन्तं भिक्खुं आपुच्छा आरामं पविसितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा आरामं पविसेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१०२३. तेन खो पन समयेन ते भिक्खू तम्हा आवासा पक्कमित्वा पुनदेव तं आवासं पच्चागच्छिंसु। भिक्खुनियो – ''अय्या पक्कन्ता''ति अनापुच्छा आरामं पविसिंसु। तासं कुक्कुच्चं अहोसि – ''भगवता सिक्खापदं पञ्ञत्तं – 'न सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा आरामो पविसितब्बो'ति। मयञ्चम्हा सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा आरामं पविसिम्हा। कच्चि नु खो मयं पाचित्तियं आपत्तिं आपन्ना''ति...पे॰... भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा एतस्मिं निदाने एतस्मिं पकरणे धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०२४. **''या पन भिक्खुनी जानं सभिक्खुकं आरामं अनापुच्छा पविसेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०२५. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

जानाति नाम सामं वा जानाति, अञ्ञे वा तस्सा आरोचेन्ति, ते वा आरोचेन्ति।

सभिक्खुको नाम आरामो यत्थ भिक्खू रुक्खमूलेपि वसन्ति।

अनापुच्छा आरामं पविसेय्याति भिक्खुं वा सामणेरं वा आरामिकं वा अनापुच्छा परिक्खित्तस्स आरामस्स परिक्खेपं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स। अपरिक्खित्तस्स आरामस्स उपचारं ओक्कमन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०२६. सभिक्खुके सभिक्खुकसञ्ञा सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा आरामं पविसति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सभिक्खुके वेमतिका सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा आरामं पविसति, आपत्ति दुक्कटस्स। सभिक्खुके अभिक्खुकसञ्ञा सन्तं भिक्खुं अनापुच्छा आरामं पविसति, अनापत्ति।

अभिक्खुके सभिक्खुकसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अभिक्खुके वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अभिक्खुके अभिक्खुकसञ्ञा, अनापत्ति।

१०२७. अनापत्ति सन्तं भिक्खुं आपुच्छा पविसति, असन्तं भिक्खुं अनापुच्छा पविसति, सीसानुलोकिका गच्छति, यत्थ भिक्खुनियो सन्निपतिता होन्ति तत्थ गच्छति, आरामेन मग्गो होति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

१०२८. तेन समयेन बुद्धो भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन आयस्मतो उपालिस्स उपज्झायो आयस्मा कप्पितको सुसाने विहरति। तेन खो पन समयेन छब्बग्गियानं भिक्खुनीनं महत्तरा [महन्ततरा (सी॰)] भिक्खुनी कालङ्कता होति। छब्बग्गिया भिक्खुनियो तं भिक्खुनिं नीहरित्वा आयस्मतो कप्पितकस्स विहारस्स अविदूरे झापेत्वा थूपं कत्वा गन्त्वा तस्मिं थूपे रोदन्ति। अथ खो आयस्मा कप्पितको तेन सद्देन उब्बाळ्हो तं थूपं भिन्दित्वा पकिरेसि। छब्बग्गिया भिक्खुनियो – ''इमिना कप्पितकेन अम्हाकं अय्याय थूपो भिन्नो, हन्द नं घातेमा''ति, मन्तेसुं। अञ्ञतरा भिक्खुनी आयस्मतो उपालिस्स एतमत्थं आरोचेसि। आयस्मा उपालि आयस्मतो कप्पितकस्स एतमत्थं आरोचेसि। अथ खो आयस्मा कप्पितको विहारा निक्खमित्वा निलीनो अच्छि। अथ खो छब्बग्गिया भिक्खुनियो येनायस्मतो कप्पितकस्स विहारो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा आयस्मतो कप्पितकस्स विहारं पासाणेहि च लेड्डूहि च ओत्थरापेत्वा, ''मतो कप्पितको''ति पक्कमिंसु।

अथ खो आयस्मा कप्पितको तस्सा रत्तिया अच्चयेन पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय वेसालिं पिण्डाय पाविसि। अद्दसंसु खो छब्बग्गिया भिक्खुनियो आयस्मन्तं कप्पितकं पिण्डाय चरन्तं। दिस्वान एवमाहंसु – ''अयं कप्पितको जीवति, को नु खो अम्हाकं मन्तं संहरी''ति? अस्सोसुं खो छब्बग्गिया भिक्खुनियो – ''अय्येन किर उपालिना अम्हाकं मन्तो संहटो''ति। ता आयस्मन्तं उपालिं अक्कोसिंसु – ''कथञ्हि नाम अयं कासावटो मलमज्जनो निहीनजच्चो अम्हाकं मन्तं संहरिस्सती''ति! या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो अय्यं उपालिं अक्कोसिस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो उपालिं अक्कोसन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो उपालिं अक्कोसिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०२९. **''या पन भिक्खुनी भिक्खुं अक्कोसेय्य वा परिभासेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

१०३०. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुन्ति उपसम्पन्नं। **अक्कोसेय्य वा**ति दसहि वा अक्कोसवत्थूहि अक्कोसति एतेसं वा अञ्ञतरेन, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिभासेय्य वाति भयं उपदंसेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०३१. उपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञा अक्कोसति वा परिभासति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने वेमतिका अक्कोसति वा परिभासति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञा अक्कोसति वा परिभासति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अनुपसम्पन्नं अक्कोसति वा परिभासति वा, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने उपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति

दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अनुपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

१०३२. अनापत्ति अत्थपुरेक्खाराय, धम्मपुरेक्खाराय, अनुसासनिपुरेक्खाराय, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

१०३३. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी भण्डनकारिका होति कलहकारिका विवादकारिका भस्सकारिका सङ्घे अधिकरणकारिका। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तस्सा कम्मे करीयमाने पटिक्कोसति। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी गामकं अगमासि केनचिदेव करणीयेन। अथ खो भिक्खुनिसङ्घो – ''थुल्लनन्दा भिक्खुनी पक्कन्ता''ति चण्डकाळिं भिक्खुनिं आपत्तिया अदस्सने उक्खिपि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी गामके तं करणीयं तीरेत्वा पुनदेव सावत्थिं पच्चागच्छि। चण्डकाळी भिक्खुनी थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया आगच्छन्तिया नेव आसनं पञ्ञपेसि न पादोदकं पादपीठं पादकठलिकं उपनिक्खिपि; न पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं पटिग्गहेसि न पानीयेन आपुच्छि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी चण्डकाळिं भिक्खुनिं एतदवोच – ''किस्स त्वं, अय्ये, मयि आगच्छन्तिया नेव आसनं पञ्ञपेसि न पादोदकं पादपीठं पादकठलिकं उपनिक्खिपि; न पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं पटिग्गहेसि न पानीयेन आपुच्छी''ति? ''एवञ्हेतं, अय्ये, होति यथा तं अनाथाया''ति। ''किस्स पन त्वं, अय्ये, अनाथा''ति? ''इमा मं, अय्ये, भिक्खुनियो – ''अयं अनाथा अप्पञ्ञाता, नत्थि इमिस्सा काचि पतिवत्ता''ति, आपत्तिया अदस्सने उक्खिपिंसू''ति। थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''बाला एता अब्यत्ता एता नेता जानन्ति कम्मं वा कम्मदोसं वा कम्मविपत्तिं वा कम्मसम्पत्तिं वा''ति, चण्डीकता गणं परिभासि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा चण्डीकता गणं परिभासिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी चण्डीकता गणं परिभासतीति [परिभासीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा ...पे०...कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी चण्डीकता गणं परिभासिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०३४. **''या पन भिक्खुनी चण्डीकता गणं परिभासेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०३५. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

चण्डीकता नाम कोधना वुच्चति।

गणो नाम भिक्खुनिसङ्घो वुच्चति।

परिभासेय्याति ''बाला एता अब्यत्ता एता नेता जानन्ति कम्मं वा कम्मदोसं वा कम्मविपत्तिं वा कम्मसम्पत्तिं वा''ति परिभासति, आपत्ति पाचित्तियस्स। सम्बहुला भिक्खुनियो वा एकं भिक्खुनिं वा अनुपसम्पन्नं वा परिभासति, आपत्ति दुक्कटस्स।

१०३६. अनापत्ति अत्थपुरेक्खाराय, धम्मपुरेक्खाराय, अनुसासनिपुरेक्खाराय, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

१०३७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो ब्राह्मणो भिक्खुनियो निमन्तेत्वा भोजेसि। भिक्खुनियो भुत्तावी [भुत्ताविनी (क॰)] पवारिता ञातिकुलानि गन्त्वा एकच्चा भुञ्जिंसु एकच्चा पिण्डपातं आदाय अगमंसु। अथ खो सो ब्राह्मणो पटिविस्सके एतदवोच – ''भिक्खुनियो मया अय्या सन्तप्पिता, एथ तुम्हेपि सन्तप्पेस्सामी''ति। ते एवमाहंसु – ''किं त्वं, अय्यो, अम्हे सन्तप्पेस्ससि! यापि तया निमन्तिता तापि अम्हाकं घरानि आगन्त्वा एकच्चा भुञ्जिंसु एकच्चा पिण्डपातं आदाय अगमंसू''ति। अथ खो सो ब्राह्मणो उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अम्हाकं घरे भुञ्जित्वा अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ति, न चाहं पटिबलो यावदत्थं दातु''न्ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तस्स ब्राह्मणस्स उज्झायन्तस्स खिय्यन्तस्स विपाचेन्तस्स। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो भुत्तावी [भुत्ताविनी (क॰)] पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो भुत्तावी पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो भुत्तावी पवारिता अञ्ञत्र भुञ्जिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०३८. **''या पन भिक्खुनी निमन्तिता वा पवारिता वा खादनीयं वा भोजनीयं वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा, पाचित्तिय''**न्ति।

१०३९. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

निमन्तिता नाम पञ्चन्नं भोजनानं अञ्ञतरेन भोजनेन निमन्तिता।

पवारिता नाम असनं पञ्ञायति, भोजनं पञ्ञायति, हत्थपासे ठिता अभिहरति, पटिक्खेपो पञ्ञायति।

खादनीयं नाम पञ्च भोजनानि – यागुं यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं ठपेत्वा अवसेसं खादनीयं नाम।

भोजनीयं नाम पञ्च भोजनानि – ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं।

''खादिस्सामि भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०४०. निमन्तिते निमन्तितसञ्ञा खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। निमन्तिते वेमतिका खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स। निमन्तिते अनिमन्तितसञ्ञा खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स।

यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं आहारत्थाय पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स...पे॰...।

१०४१. अनापत्ति निमन्तिता अप्पवारिता, यागुं पिवति, सामिके अपलोकेत्वा भुञ्जति, यामकालिकं सत्ताहकालिकं यावजीविकं सति पच्चये परिभुञ्जति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

१०४२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी सावत्थियं अञ्ञतरिस्सा विसिखाय पिण्डाय चरमाना येन अञ्ञतरं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो ते मनुस्सा तं भिक्खुनिं भोजेत्वा एतदवोचुं – ''अञ्ञापि, अय्ये, भिक्खुनियो आगच्छन्तू''ति। अथ खो सा भिक्खुनी, ''कथञ्हि नाम [कथं अञ्ञा (स्या॰)] भिक्खुनियो नागच्छेय्यु''न्ति, भिक्खुनियो उपसङ्कमित्वा एतदवोच – ''अमुकस्मिं, अय्ये, ओकासे वाळा सुनखा चण्डो बलिबद्दो चिक्खल्लो ओकासो। मा खो तत्थ अगमित्था''ति। अञ्ञतरापि भिक्खुनी तस्सा विसिखाय पिण्डाय चरमाना येन तं कुलं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो ते मनुस्सा तं भिक्खुनिं भोजेत्वा एतदवोचुं – ''किस्स, अय्ये, भिक्खुनियो न आगच्छन्ती''ति? अथ खो सा भिक्खुनी तेसं मनुस्सानं एतमत्थं आरोचेसि। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी कुलं मच्छरायिस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी कुलं मच्छरायतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी कुलं मच्छरायिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०४३. ''**या पन भिक्खुनी कुलमच्छरिनी अस्स, पाचित्तिय**''न्ति।

१०४४. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

कुलं नाम चत्तारि कुलानि – खत्तियकुलं, ब्राह्मणकुलं, वेस्सकुलं, सुद्दकुलं।

मच्छरिनी अस्साति ''कथं भिक्खुनियो नागच्छेय्यु''न्ति भिक्खुनीनं सन्तिके कुलस्स अवण्णं भासति, आपत्ति पाचित्तियस्स। कुलस्स वा सन्तिके भिक्खुनीनं अवण्णं भासति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०४५. अनापत्ति कुलं न मच्छरायन्ती सन्तंयेव आदीनवं आचिक्खति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

१०४६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खुनियो गामकावासे वस्संवुट्ठा सावत्थिं अगमंसु। भिक्खुनियो ता भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''कत्थाय्यायो वस्संवुट्ठा? कच्चि ओवादो इद्धो अहोसी''ति? ''नत्थय्ये, तत्थ भिक्खू; कुतो ओवादो इद्धो भविस्सती''ति! या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अभिक्खुके आवासे

वस्सं वसिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अभिक्खुके आवासे वस्सं वसन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अभिक्खुके आवासे वस्सं वसिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०४७. **''या पन भिक्खुनी अभिक्खुके आवासे वस्सं वसेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०४८. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अभिक्खुको नाम आवासो न सक्का होति ओवादाय वा संवासाय वा गन्तुं। ''वस्सं वसिस्सामी''ति सेनासनं पञ्ञपेति पानीयं परिभोजनीयं उपट्ठपेति परिवेणं सम्मज्जति, आपत्ति दुक्कटस्स। सह अरुणुग्गमना आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०४९. अनापत्ति वस्सुपगता भिक्खू पक्कन्ता वा होन्ति विब्भन्ता वा कालङ्कता वा पक्खसङ्कन्ता वा, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

१०५०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला भिक्खुनियो गामकावासे वस्संवुट्ठा सावत्थिं अगमंसु। भिक्खुनियो ता भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''कत्थाय्यायो वस्संवुट्ठा; कत्थ [कच्चि (स्या०)] भिक्खुसङ्घो पवारितो''ति? ''न मयं, अय्ये, भिक्खुसङ्घं पवारेमा''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो वस्संवुट्ठा भिक्खुसङ्घं न पवारेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो वस्संवुट्ठा भिक्खुसङ्घं न पवारेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो वस्संवुट्ठा भिक्खुसङ्घं न पवारेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०५१. **''या पन भिक्खुनी वस्संवुट्ठा उभतोसङ्घे तीहि ठानेहि न पवारेय्य दिट्ठेन वा सुतेन वा परिसङ्काय वा, पाचित्तिय''**न्ति।

१०५२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

वस्संवुट्ठा नाम पुरिमं वा तेमासं पच्छिमं वा तेमासं वुट्ठा। उभतोसङ्घे तीहि ठानेहि न पवारेस्सामि दिट्ठेन वा सुतेन वा परिसङ्काय वा''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०५३. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

१०५४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सक्केसु विहरति कपिलवत्थुस्मिं निग्रोधारामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुनुपस्सयं उपसङ्कमित्वा छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवदन्ति। भिक्खुनियो छब्बग्गिया भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''एथाय्ये ओवादं गमिस्सामा''ति। ''यम्पि मयं, अय्ये, गच्छेय्याम ओवादस्स कारणा, अय्या छब्बग्गिया इधेव आगन्त्वा अम्हे ओवदन्ती''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवादं न गच्छिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवादं न गच्छन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो ओवादं न गच्छिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०५५. ''**या पन भिक्खुनी ओवादाय वा संवासाय वा न गच्छेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

१०५६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

ओवादो नाम अट्ठ गरुधम्मा।

संवासो नाम एककम्मं एकुद्देसो समसिक्खता। ओवादाय वा संवासाय वा न गच्छिस्सामीति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०५७. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा दुतियिकं भिक्खुनिं न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

१०५८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो उपोसथम्पि न पुच्छन्ति ओवादम्पि न याचन्ति। भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो उपोसथम्पि न पुच्छिस्सन्ति ओवादम्पि न याचिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो ''उपोसथम्पि न पुच्छन्ति ओवादम्पि न याचन्ती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो उपोसथम्पि न पुच्छिस्सन्ति ओवादम्पि न याचिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०५९. ''**अन्वद्धमासं भिक्खुनिया भिक्खुसङ्घतो द्वे धम्मा पच्चासीसितब्बा – उपोसथपुच्छकञ्च ओवादूपसङ्कमनञ्च। तं अतिक्कामेन्तिया पाचित्तिय**''न्ति।

१०६०. **अन्वद्धमास**न्ति अनुपोसथिकं। **उपोसथो** नाम द्वे उपोसथा – चातुद्दसिको च पन्नरसिको च।

ओवादो नाम अट्ठ गरुधम्मा। ''उपोसथम्पि न पुच्छिस्सामि ओवादम्पि न याचिस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति

पाचित्तियस्स।

१०६१. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा दुतियिकं भिक्खुनिं न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

१०६२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेसि। अथ खो सो पुरिसो तं भिक्खुनिं दूसेतुं उपक्कमि। सा विस्सरमकासि। भिक्खुनियो उपधावित्वा तं भिक्खुनिं एतदवोचुं – "किस्स त्वं, अय्ये, विस्सरमकासी"ति? अथ खो सा भिक्खुनी भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – "कथञ्हि नाम भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेस्सती"ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेतीति [भेदापेसीति (क०)]? "सच्चं, भगवा"ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०६३. **"या पन भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं वा रुधितं वा अनपलोकेत्वा सङ्घं वा गणं वा पुरिसेन सद्धिं एकेनेका भेदापेय्य वा फालापेय्य वा धोवापेय्य वा आलिम्पापेय्य वा बन्धापेय्य वा मोचापेय्य वा, पाचित्तिय**"न्ति।

१०६४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पसाखं नाम अधोनाभि उब्भजाणुमण्डलं। **जात**न्ति तत्थ जातं। **गण्डो** नाम यो कोचि गण्डो। **रुधितं** नाम यं किञ्चि वणं। **अनपलोकेत्वा**ति अनापुच्छा। **सङ्घो** नाम भिक्खुनिसङ्घो वुच्चति। **गणो** नाम सम्बहुला भिक्खुनियो वुच्चन्ति। **पुरिसो** नाम मनुस्सपुरिसो, न यक्खो, न पेतो, न तिरच्छानगतो, विञ्ञू पटिबलो दूसेतुं। **सद्धि**न्ति एकतो। **एकेनेका**ति पुरिसो चेव होति भिक्खुनी च।

१०६५. "भिन्दा"ति आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। भिन्ने आपत्ति पाचित्तियस्स। "फालेही"ति आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। फालिते आपत्ति पाचित्तियस्स। "धोवा"ति आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। धोविते [धोते (स्या०)] आपत्ति पाचित्तियस्स। "आलिम्पा"ति आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। लित्ते [आलित्ते (स्या०)] आपत्ति पाचित्तियस्स। "बन्धाही"ति आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। बद्धे आपत्ति पाचित्तियस्स। "मोचेही"ति आणापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। मुत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

१०६६. अनापत्ति अपलोकेत्वा भेदापेति वा फालापेति वा धोवापेति वा आलिम्पापेति वा बन्धापेति वा मोचापेति वा, या काचि विञ्ञू दुतियिका [या काचि विञ्ञू दुतिया (स्या०), यो कोचि विञ्ञू दुतियो (क०)] होति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

आरामवग्गो छट्ठो।

७. गब्भिनीवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

१०६७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो गब्भिनिं वुट्ठापेन्ति। सा पिण्डाय चरति। मनुस्सा एवमाहंसु – ''देथाय्याय भिक्खं, गरुभारा [गरुगब्भा (स्या॰)] अय्या''ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो गब्भिनिं वुट्ठापेस्सन्ती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो गब्भिनिं वुट्ठापेस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो गब्भिनिं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो गब्भिनिं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०६८. **''या पन भिक्खुनी गब्भिनिं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०६९. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

गब्भिनी नाम आपन्नसत्ता वुच्चति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

१०७०. गब्भिनिया गब्भिनिसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। गब्भिनिया वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। गब्भिनिया अगब्भिनिसञ्ञा वुट्ठापेति, अनापत्ति। अगब्भिनिया गब्भिनिसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अगब्भिनिया वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अगब्भिनिया अगब्भिनिसञ्ञा, अनापत्ति।

१०७१. अनापत्ति गब्भिनिं अगब्भिनिसञ्ञा वुट्ठापेति, अगब्भिनिं अगब्भिनिसञ्ञा वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

१०७२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

भिक्खुनियो पायन्तिं वुट्ठापेन्ति। सा पिण्डाय चरति। मनुस्सा एवमाहंसु – ‘‘देथाय्याय भिक्खं, सदुतियिका अय्या’’ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो पायन्तिं वुट्ठापेस्सन्ती’’ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो पायन्तिं वुट्ठापेस्सन्ती’’ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो पायन्तिं वुट्ठापेन्तीति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो पायन्तिं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०७३. **‘‘या पन भिक्खुनी पायन्तिं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय**’’न्ति।

१०७४. **या पना**ति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पायन्ती नाम माता वा होति [होतु (क॰)] धाति [धाती (सी॰ स्या॰)] वा।

वुट्ठापेय्याति उपसम्पादेय्य।

‘‘वुट्ठापेस्सामी’’ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

१०७५. पायन्तिया पायन्तिसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। पायन्तिया वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। पायन्तिया अपायन्तिसञ्ञा वुट्ठापेति, अनापत्ति। अपायन्तिया पायन्तिसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अपायन्तिया वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अपायन्तिया अपायन्तिसञ्ञा, अनापत्ति।

१०७६. अनापत्ति पायन्तिं अपायन्तिसञ्ञा वुट्ठापेति, अपायन्तिं अपायन्तिसञ्ञा वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

१०७७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेन्ति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ‘‘कथञ्हि नाम भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सन्ती’’ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेन्ती’’ति? ‘‘सच्चं, भगवा’’ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… विगरहित्वा…पे॰… धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ‘‘अनुजानामि, भिक्खवे,

सिक्खमानाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ताय सिक्खमानाय सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – अहं, अय्ये, इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय सिक्खमाना। सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

१०७८. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय सिक्खमाना सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं सङ्घो इत्थन्नामाय सिक्खमानाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय सिक्खमाना सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय सिक्खमानाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय सिक्खमानाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय सिक्खमानाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

१०७९. सा सिक्खमाना ''एवं वदेही''ति वत्तब्बा – ''पाणातिपाता वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि। अदिन्नादाना वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि। अब्रह्मचरिया वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि। मुसावादा वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि। सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठाना वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि। विकालभोजना वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०८०. **''या पन भिक्खुनी द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०८१. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

द्वे वस्सानीति द्वे संवच्छरानि। **असिक्खितसिक्खा** नाम सिक्खा वा न दिन्ना होति, दिन्ना वा सिक्खा कुपिता। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

१०८२. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

१०८३. अनापत्ति द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

तितियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

१०८४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्ति। भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''एथ, सिक्खमाना, इमं जानाथ, इमं देथ, इमं आहरथ, इमिना अत्थो, इमं कप्पियं करोथा''ति। ता एवमाहंसु – ''न मयं, अय्ये, सिक्खमाना। भिक्खुनियो मय''न्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय वुट्ठानसम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – ''अहं, अय्ये, इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सिक्खमाना सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

१०८५. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सिक्खमाना सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय वुट्ठानसम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सिक्खमाना सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय वुट्ठानसम्मुतिं देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय वुट्ठानसम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सिक्खमानाय वुट्ठानसम्मुति; खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०८६. ''या पन भिक्खुनी द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

१०८७. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

द्वे वस्सानीति द्वे संवच्छरानि। **सिक्खितसिक्खा** नाम छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा। **असम्मता** नाम ञत्तिदुतियेन कम्मेन वुट्ठानसम्मुति न दिन्नाहोति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

१०८८. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

१०८९. अनापत्ति द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सिक्खमानं सङ्घेन सम्मतं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

१०९०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेन्ति। ता अक्खमा होन्ति सीतस्स उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डंसमकसवातातपसरीसपसम्फस्सानं दुरुत्तानं दुरागतानं वचनपथानं। उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अनधिवासकजातिका होन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेस्सन्ति! ऊनद्वादसवस्सा [ऊनद्वादसवस्साहि (क०)], भिक्खवे, गिहिगता अक्खमा होति सीतस्स उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डंसमकसवातातपसरीसपसम्फस्सानं दुरुत्तानं दुरागतानं वचनपथानं। उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अनधिवासकजातिका होति। द्वादसवस्साव [द्वादसवस्सा च (स्या० क०)] खो, भिक्खवे, गिहिगता खमा होति सीतस्स

उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डंसमकसवातातपसरीसपसम्फस्सानं दुरुत्तानं दुरागतानं वचनपथानं। उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अधिवासकजातिका होति। नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०९१. ''या पन भिक्खुनी ऊनद्वादसवस्सं गिहिगतं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

१०९२. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

ऊनद्वादसवस्सा नाम अप्पत्तद्वादसवस्सा। **गिहिगता** नाम पुरिसन्तरगता वुच्चति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

१०९३. ऊनद्वादसवस्साय ऊनद्वादसवस्ससञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ऊनद्वादसवस्साय वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनद्वादसवस्साय परिपुण्णसञ्ञा वुट्ठापेति, अनापत्ति।

परिपुण्णद्वादसवस्साय ऊनद्वादसवस्ससञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपुण्णद्वादसवस्साय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपुण्णद्वादसवस्साय परिपुण्णसञ्ञा, अनापत्ति।

१०९४. अनापत्ति ऊनद्वादसवस्सं परिपुण्णसञ्ञा वुट्ठापेति, परिपुण्णद्वादसवस्सं परिपुण्णसञ्ञा वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

१०९५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्ति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ताय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – अहं, अय्ये, इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि

याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

१०९६. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

सा परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता एवं वदेहीति वत्तब्बा – ''पाणातिपाता वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि...पे०... विकालभोजना वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१०९७. **''या पन भिक्खुनी परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१०९८. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

परिपुण्णद्वादसवस्सा नाम पत्तद्वादसवस्सा। **गिहिगता** नाम पुरिसन्तरगता वुच्चति। **द्वे वस्सानी**ति द्वे संवच्छरानि। **असिक्खितसिक्खा** नाम सिक्खा वा न दिन्ना होति, दिन्ना वा सिक्खा कुपिता। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

१०९९. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

११००. अनापत्ति परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

११०१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्ति। भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''एथ सिक्खमाना, इमं जानाथ, इमं देथ, इमं आहरथ, इमिना अत्थो, इमं कप्पियं करोथा''ति। ता एवमाहंसु – ''न मयं, अय्ये, सिक्खमाना, भिक्खुनियो मय''न्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मत्तं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम भिक्खवे भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ताय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – अहं, अय्ये, इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा, सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो।

११०२. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णद्वादसवस्सा गिहिगता द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिं देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय गिहिगताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११०३. **''या पन भिक्खुनी परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन**

असम्मतं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

११०४. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

परिपुण्णद्वादसवस्सा नाम पत्तद्वादसवस्सा। **गिहिगता** नाम पुरिसन्तरगता वुच्चति। **द्वे वस्सानी**ति द्वे संवच्छरानि। **सिक्खितसिक्खा** नाम छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा। **असम्मता** नाम ञत्तिदुतियेन कम्मेन वुट्ठानसम्मुति न दिन्ना होति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११०५. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

११०६. अनापत्ति परिपुण्णद्वादसवस्सं गिहिगतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन सम्मतं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

११०७. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हाति न अनुग्गण्हापेति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता; न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हिस्सति न अनुग्गण्हापेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हाति न अनुग्गण्हापेतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हिस्सति न अनुग्गण्हापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११०८. ''या पन भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हेय्य न अनुग्गण्हापेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

११०९. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सहजीविनी नाम सद्धिविहारिनी वुच्चति। **वुट्ठापेत्वा**ति उपसम्पादेत्वा। **द्वे वस्सानी**ति द्वे संवच्छरानि।

नेव अनुग्गण्हेय्याति न सयं अनुग्गण्हेय्य उद्देसेन परिपुच्छाय ओवादेन अनुसासनिया।

न अनुग्गण्हापेय्याति न अञ्ञं आणापेय्य ''द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हिस्सामि न अनुग्गण्हापेस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

१११०. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

११११. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धन्ति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता; न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१११२. ''**या पन भिक्खुनी वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

१११३. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

वुट्ठापितन्ति उपसम्पादितं। **पवत्तिनी** नाम उपज्झाया वुच्चति। **द्वे वस्सानी**ति द्वे संवच्छरानि। **नानुबन्धेय्या**ति न सयं उपट्ठहेय्य। द्वे वस्सानि नानुबन्धिस्सामीति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

१११४. अनापत्ति उपज्झाया बाला वा होति अलज्जिनी वा, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

१११५. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेति न वूपकासापेति। सामिको अग्गहेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेस्सति न वूपकासापेस्सति, सामिको अग्गहेसि! सचायं भिक्खुनी पक्कन्ता अस्स, न च सामिको गण्हेय्या''ति... पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेति न वूपकासापेति [...सि (क०)],

सामिको अग्गहेसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेस्सति न वूपकासापेस्सति, सामिको अग्गहेसि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१११६. ''या पन भिक्खुनी सहजीविनिं वुट्ठापेत्वा नेव वूपकासेय्य न वूपकासापेय्य अन्तमसो छप्पञ्चयोजनानिपि, पाचित्तिय''न्ति।

१११७. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सहजीविनी नाम सद्धिविहारिनी वुच्चति। **वुट्ठापेत्वा**ति उपसम्पादेत्वा। **नेव वूपकासेय्या**ति न सयं वूपकासेय्य। **न वूपकासापेय्या**ति न अञ्ञं आणापेय्य। ''नेव वूपकासेस्सामि न वूपकासापेस्सामि अन्तमसो छप्पञ्चयोजनानिपी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

१११८. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा दुतियिकं भिक्खुनिं न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

गब्भिनिवग्गो सत्तमो।

८. कुमारीभूतवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

१११९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेन्ति। ता अक्खमा होन्ति सीतस्स उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डंसमकसवातातपसरीसपसम्फस्सानं दुरुत्तानं दुरागतानं वचनपथानं। उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अनधिवासकजातिका होन्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेस्सन्ति! ऊनवीसतिवस्सा, भिक्खवे, कुमारिभूता अक्खमा होति सीतस्स उण्हस्स...पे॰... पाणहरानं अनधिवासकजातिका होति। वीसतिवस्साव खो, भिक्खवे, कुमारिभूता खमा होति सीतस्स उण्हस्स...पे॰... पाणहरानं अधिवासकजातिका होति। नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११२०. ''या पन भिक्खुनी ऊनवीसतिवस्सं कुमारिभूतं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

११२१. या पनाति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

ऊनवीसतिवस्सा नाम अप्पत्तवीसतिवस्सा। **कुमारिभूता** नाम सामणेरी वुच्चति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११२२. ऊनवीसतिवस्साय ऊनवीसतिवस्ससञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। ऊनवीसतिवस्साय वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति दुक्कटस्स। ऊनवीसतिवस्साय परिपुण्णसञ्ञा वुट्ठापेति, अनापत्ति। परिपुण्णवीसतिवस्साय ऊनवीसतिवस्ससञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपुण्णवीसतिवस्साय वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। परिपुण्णवीसतिवस्साय परिपुण्णसञ्ञा, अनापत्ति।

११२३. अनापत्ति ऊनवीसतिवस्सं परिपुण्णसञ्ञा वुट्ठापेति, परिपुण्णवीसतिवस्सं परिपुण्णसञ्ञा वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

११२४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्ति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता; न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेस्सन्ती''ति... पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, अट्ठारसवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन भिक्खवे दातब्बा। ताय अट्ठारसवस्साय कुमारिभूताय सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – अहं, अय्ये, इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय अट्ठारसवस्सा कुमारिभूता सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

११२५. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय अट्ठारसवस्सा कुमारिभूता सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामाय अट्ठारसवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय अट्ठारसवस्सा कुमारिभूता सङ्घं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय अट्ठारसवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिं

देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय अट्ठारसवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय अट्ठारसवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खासम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

सा अट्ठारसवस्सा कुमारिभूता एवं वदेहीति वत्तब्बा – ''पाणातिपाता वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामि...पे०... विकालभोजना वेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं समादियामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११२६. ''या पन भिक्खुनी परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

११२७. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

परिपुण्णवीसतिवस्सा नाम पत्तवीसतिवस्सा। **कुमारिभूता** नाम सामणेरी वुच्चति। **द्वे वस्सानी**ति द्वे संवच्छरानि। **असिक्खितसिक्खा** नाम सिक्खा वा न दिन्ना होति, दिन्ना वा सिक्खा कुपिता। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११२८. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

११२९. अनापत्ति परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

११३०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्ति।

भिक्खुनियो एवमाहंसु – ''एथ सिक्खमाना, इमं जानाथ, इमं देथ, इमं आहरथ, इमिना अत्थो, इमं कप्पियं करोथा''ति। ता एवमाहंसु – ''न मयं, अय्ये, सिक्खमाना; भिक्खुनियो मय''न्ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... विगरहित्वा...पे॰... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, परिपुण्णवीसतिवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ताय परिपुण्णवीसतिवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – अहं, अय्ये, इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णवीसतिवस्सा कुमारिभूता द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

११३१. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णवीसतिवस्सा कुमारिभूता द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णवीसतिवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय परिपुण्णवीसतिवस्सा कुमारिभूता द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा सङ्घं वुट्ठानसम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णवीसतिवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिं देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय परिपुण्णवीसतिवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय परिपुण्णवीसतिवस्साय कुमारिभूताय द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खाय वुट्ठानसम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११३२. **''या पन भिक्खुनी परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन असम्मतं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

११३३. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

परिपुण्णवीसतिवस्सा नाम पत्तवीसतिवस्सा। **कुमारिभूता** नाम सामणेरी वुच्चति। **द्वे वस्सानी**ति द्वे संवच्छरानि। **सिक्खितसिक्खा** नाम छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा। **असम्मता** नाम ञत्तिदुतियेन कम्मेन वुट्ठानसम्मुति न दिन्ना होति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११३४. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

११३५. अनापत्ति परिपुण्णवीसतिवस्सं कुमारिभूतं द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खं सङ्घेन सम्मतं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

११३६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेन्ति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। सद्धिविहारिनियोपि बाला होन्ति अब्यत्ता; न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११३७. **''या पन भिक्खुनी ऊनद्वादसवस्सा वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११३८. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

ऊनद्वादसवस्सा नाम अप्पत्तद्वादसवस्सा।

वुट्ठापेय्याति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११३९. अनापत्ति परिपुण्णद्वादसवस्सा वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

११४०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेन्ति। ता बाला होन्ति अब्यत्ता; न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। सद्धिविहारिनियोपि बाला होन्ति अब्यत्ता; न जानन्ति कप्पियं वा अकप्पियं वा। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... विगरहित्वा...पे०... धम्मिं कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि – ''अनुजानामि, भिक्खवे, परिपुण्णद्वादसवस्साय भिक्खुनिया वुट्ठापनसम्मुतिं दातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ताय परिपुण्णद्वादसवस्साय भिक्खुनिया सङ्घं उपसङ्कमित्वा एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा वुड्ढानं भिक्खुनीनं पादे वन्दित्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा अञ्जलिं पग्गहेत्वा एवमस्स वचनीयो – अहं, अय्ये, इत्थन्नामा परिपुण्णद्वादसवस्सा भिक्खुनी सङ्घं वुट्ठापनसम्मुतिं याचामी''ति। दुतियम्पि याचितब्बा। ततियम्पि याचितब्बा। सा भिक्खुनी सङ्घेन परिच्छिन्दितब्बा – ''ब्यत्तायं भिक्खुनी लज्जिनी''ति। सचे बाला च होति अलज्जिनी च, न दातब्बा। सचे बाला होति लज्जिनी, न दातब्बा। सचे ब्यत्ता होति अलज्जिनी, न दातब्बा। सचे ब्यत्ता च होति लज्जिनी च, दातब्बा। एवञ्च पन, भिक्खवे, दातब्बा। ब्यत्ताय भिक्खुनिया पटिबलाय सङ्घो ञापेतब्बो –

११४१. ''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा परिपुण्णद्वादसवस्सा भिक्खुनी सङ्घं वुट्ठापनसम्मुतिं याचति। यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय भिक्खुनिया वुट्ठापनसम्मुतिं ददेय्य। एसा ञत्ति।

''सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो। अयं इत्थन्नामा परिपुण्णद्वादसवस्सा भिक्खुनी सङ्घं वुट्ठापनसम्मुतिं याचति। सङ्घो इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय भिक्खुनिया वुट्ठापनसम्मुतिं देति। यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय भिक्खुनिया वुट्ठापनसम्मुतिया दानं, सा तुण्हस्स; यस्सा नक्खमति, सा भासेय्य।

''दिन्ना सङ्घेन इत्थन्नामाय परिपुण्णद्वादसवस्साय भिक्खुनिया वुट्ठापनसम्मुति। खमति सङ्घस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी''ति।

अथ खो भगवा ता भिक्खुनियो अनेकपरियायेन विगरहित्वा दुब्भरताय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११४२. **''या पन भिक्खुनी परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन असम्मता वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११४३. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

परिपुण्णद्वादसवस्सा नाम पत्तद्वादसवस्सा।

असम्मता नाम ञत्तिदुतियेन कम्मेन वुट्ठापनसम्मुति न दिन्ना होति। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११४४. धम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे वेमतिका वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। धम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा वुट्ठापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। अधम्मकम्मे अधम्मकम्मसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स।

११४५. अनापत्ति परिपुण्णद्वादसवस्सा सङ्घेन सम्मता वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

११४६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चण्डकाळी भिक्खुनी भिक्खुनिसङ्घं उपसङ्कमित्वा वुट्ठापनसम्मुतिं याचति। अथ खो भिक्खुनिसङ्घो चण्डकाळिं भिक्खुनिं परिच्छिन्दित्वा – ''अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना''ति, वुट्ठापनसम्मुतिं न अदासि। चण्डकाळी भिक्खुनी 'साधू'ति पटिस्सुणि। तेन खो पन समयेन भिक्खुनिसङ्घो अञ्ञासं भिक्खुनीनं वुट्ठापनसम्मुतिं देति। चण्डकाळी भिक्खुनी उज्झायति खिय्यति विपाचेति – ''अहमेव नून बाला, अहमेव नून अलज्जिनी; यं सङ्घो अञ्ञासं भिक्खुनीनं वुट्ठापनसम्मुतिं देति, मय्हमेव न देती''ति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या चण्डकाळी – 'अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना'ति वुच्चमाना 'साधू'ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, 'चण्डकाळी भिक्खुनी अलं ताव ते अय्ये वुट्ठापितेना'ति वुच्चमाना ''साधू''ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जतीति [आपज्जीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, चण्डकाळी भिक्खुनी – ''अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना''ति वुच्चमाना 'साधू'ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११४७. **''या पन भिक्खुनी – 'अलं ताव ते, अय्ये, वुट्ठापितेना'ति वुच्चमाना 'साधू'ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११४८. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अलं ताव ते अय्ये वुट्ठापितेनाति अलं ताव ते, अय्ये, उपसम्पादितेन। 'साधू'ति पटिस्सुणित्वा पच्छा खीयनधम्मं आपज्जति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

११४९. अनापत्ति पकतिया छन्दा दोसा मोहा भया करोन्तं खिय्यति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

११५०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा सिक्खमाना थुल्लनन्दं भिक्खुनिं उपसङ्कमित्वा उपसम्पदं याचि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तं सिक्खमानं – ''सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा, नेव वुट्ठापेति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोति। अथ खो सा सिक्खमाना भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा सिक्खमानं – 'सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी'ति वत्वा, नेव वुट्ठापेस्सति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सिक्खमानं – ''सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा, नेव वुट्ठापेति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सिक्खमानं – ''सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा, नेव वुट्ठापेस्सति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११५१. **''या पन भिक्खुनी सिक्खमानं – 'सचे मे त्वं, अय्ये, चीवरं दस्ससि, एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी'ति वत्वा, सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव वुट्ठापेय्य न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

११५२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सिक्खमाना नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा।

सचे मे त्वं अय्ये चीवरं दस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामीति एवाहं तं उपसम्पादेस्सामि।

सा पच्छा अनन्तरायिकिनीति असति अन्तराये।

नेव वुट्ठापेय्याति न सयं वुट्ठापेय्य।

न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करेय्याति न अञ्ञं आणापेय्य। ''नेव वुट्ठापेस्सामि न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

११५३. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८. अट्ठमसिक्खापदं

११५४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा सिक्खमाना थुल्लनन्दं भिक्खुनिं उपसङ्कमित्वा उपसम्पदं याचि। थुल्लनन्दा भिक्खुनी तं सिक्खमानं ''सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा, नेव वुट्ठापेति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोति। अथ खो सा सिक्खमाना भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा सिक्खमानं – सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामीति वत्वा, नेव वुट्ठापेस्सति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सिक्खमानं – ''सचे मं त्वं अय्ये द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा, नेव वुट्ठापेति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करोतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी सिक्खमानं – ''सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी''ति वत्वा, नेव वुट्ठापेस्सति न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११५५. **''या पन भिक्खुनी सिक्खमानं – 'सचे मं त्वं अय्ये द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि एवाहं तं वुट्ठापेस्सामी'ति वत्वा, सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव वुट्ठापेय्य न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११५६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सिक्खमाना नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा।

सचे मं त्वं अय्ये द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससीति द्वे संवच्छरानि उपट्ठहिस्ससि।

एवाहं तं वुट्ठापेस्सामीति एवाहं तं उपसम्पादेस्सामि।

सा पच्छा अनन्तरायिकिनीति असति अन्तराये।

नेव वुट्ठापेय्याति न सयं वुट्ठापेय्य।

न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करेय्याति न अञ्ञं आणापेय्य। ''नेव वुट्ठापेस्सामि न वुट्ठापनाय उस्सुक्कं करिस्सामी''ति धुरं निक्खित्तमत्ते आपत्ति पाचित्तियस्स।

११५७. अनापत्ति सति अन्तराये, परियेसित्वा न लभति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमसिक्खापदं निट्ठितं।

९. नवमसिक्खापदं

११५८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं [सोकवस्सं (सी०) सोकावस्सं (स्या०)] चण्डकाळिं सिक्खमानं वुट्ठापेति। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या

थुल्लनन्दा पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं [सोकवस्सं (सी॰) सोकावस्सं (स्या॰)] चण्डकाळिं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं [सोकवस्सं (सी॰) सोकावस्सं (स्या॰)] चण्डकाळिं सिक्खमानं वुट्ठापेतीति [वुट्ठापेसीति (क॰)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं चण्डकाळिं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११५९. **''या पन भिक्खुनी पुरिससंसट्ठं कुमारकसंसट्ठं चण्डिं सोकावासं सिक्खमानं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११६०. **या पना**ति या यादिसा...पे॰... **भिक्खुनी**ति...पे॰... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पुरिसो नाम पत्तवीसतिवस्सो। **कुमारको** नाम अप्पत्तवीसतिवस्सो। **संसट्ठा** नाम अननुलोमिकेन कायिकवाचसिकेन संसट्ठा। **चण्डी** नाम कोधना वुच्चति।

सोकावासा नाम परेसं दुक्खं उप्पादेति, सोकं आविसति। **सिक्खमाना** नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स; गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११६१. अनापत्ति अजानन्ती वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

नवमसिक्खापदं निट्ठितं।

१०. दसमसिक्खापदं

११६२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी मातापितूहिपि सामिकेनपि अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेति। मातापितरोपि सामिकोपि उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा अम्हेहि अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो मातापितूनम्पि सामिकस्सपि उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे॰... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा मातापितूहिपि सामिकेनपि अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सती''ति...पे॰... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी, मातापितूहिपि सामिकेनपि अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेतीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी मातापितूहिपि सामिकेनपि अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११६३. ''**या पन भिक्खुनी मातापितूहि वा सामिकेन वा अननुञ्ञातं सिक्खमानं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

११६४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

मातापितरो नाम जनका वुच्चन्ति। **सामिको** नाम येन परिग्गहिता होति। **अननुञ्ञाता**ति अनापुच्छा। **सिक्खमाना** नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

वुट्ठापेस्सामीति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११६५. अनापत्ति अजानन्ती वुट्ठापेति, अपलोकेत्वा वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दसमसिक्खापदं निट्ठितं।

११. एकादसमसिक्खापदं

११६६. तेन समयेन बुद्धो भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन थुल्लनन्दा भिक्खुनी – ''सिक्खमानं वुट्ठापेस्सामी''ति थेरे भिक्खू सन्निपातेत्वा पहूतं खादनीयं भोजनीयं पस्सित्वा – ''न तावाहं, अय्या, सिक्खमानं वुट्ठापेस्सामी''ति थेरे भिक्खू उय्योजेत्वा देवदत्तं कोकालिकं कटमोदकतिस्सकं खण्डदेविया पुत्तं समुद्ददत्तं सन्निपातेत्वा सिक्खमानं वुट्ठापेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा पारिवासिकछन्ददानेन सिक्खमानं वुट्ठापेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी पारिवासिकछन्ददानेन सिक्खमानं वुट्ठापेतीति [वुट्ठापेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, थुल्लनन्दा भिक्खुनी पारिवासिकछन्ददानेन सिक्खमानं वुट्ठापेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११६७. ''**या पन भिक्खुनी पारिवासिकछन्ददानेन सिक्खमानं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

११६८. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

पारिवासिकछन्ददानेनाति वुट्ठिताय परिसाय। **सिक्खमाना** नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११६९. अनापत्ति अवुट्ठिताय परिसाय वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

एकादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

१२. द्वादसमसिक्खापदं

११७०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेन्ति, उपस्सयो न सम्मति। मनुस्सा [मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा (सी॰)] उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेस्सन्ति, उपस्सयो न सम्मती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११७१. ''**या पन भिक्खुनी अनुवस्सं वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

११७२. या पनाति या यादिसा…पे॰… **भिक्खुनी**ति…पे॰… अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अनुवस्सन्ति अनुसंवच्छरं। **वुट्ठापेय्या**ति उपसम्पादेय्य।

''वुट्ठापेस्सामी''ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११७३. अनापत्ति एकन्तरिकं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

द्वादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

१३. तेरसमसिक्खापदं

११७४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेन्ति। उपस्सयो तथेव न सम्मति। मनुस्सा [मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा (सी॰)] तथेव उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेस्सन्ति! उपस्सयो तथेव न सम्मती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा…पे॰… ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेस्सन्ती''ति…पे॰… सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा…पे॰… कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय…पे॰… एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११७५. **“या पन भिक्खुनी एकं वस्सं द्वे वुट्ठापेय्य, पाचित्तिय”**न्ति।

११७६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

एकं वस्सन्ति एकं संवच्छरं। **द्वे वुट्ठापेय्या**ति द्वे उपसम्पादेय्य।

“द्वे वुट्ठापेस्सामी”ति गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, सीमं वा सम्मन्नति, आपत्ति दुक्कटस्स। ञत्तिया दुक्कटं। द्वीहि कम्मवाचाहि दुक्कटा। कम्मवाचापरियोसाने उपज्झायाय आपत्ति पाचित्तियस्स। गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स।

११७७. अनापत्ति एकन्तरिकं एकं वुट्ठापेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

तेरसमसिक्खापदं निट्ठितं।

कुमारीभूतवग्गो अट्ठमो।

९. छत्तुपाहनवग्गो

१. पठमसिक्खापदं

११७८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो छत्तुपाहनं धारेन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – “कथञ्हि नाम भिक्खुनियो छत्तुपाहनं धारेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो”ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – “कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो छत्तुपाहनं धारेस्सन्ती”ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो छत्तुपाहनं धारेन्तीति? “सच्चं, भगवा”ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो छत्तुपाहनं धारेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

“या पन भिक्खुनी छत्तुपाहनं धारेय्य, पाचित्तिय”न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

११७९. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी गिलाना होति। तस्सा विना छत्तुपाहनं न फासु होति...पे०... भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानाय भिक्खुनिया छत्तुपाहनं। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११८०. **“या पन भिक्खुनी अगिलाना छत्तुपाहनं धारेय्य, पाचित्तिय”**न्ति।

११८१. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अगिलाना नाम यस्सा विना छत्तुपाहनं फासु होति।

गिलाना नाम यस्सा विना छत्तुपाहनं न फासु होति।

छत्तं नाम तीणि छत्तानि – सेतच्छत्तं, किलञ्जच्छत्तं, पण्णच्छत्तं मण्डलबद्धं सलाकबद्धं। **धारेय्या**ति सकिम्पि धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

११८२. अगिलाना अगिलानसञ्ञा छत्तुपाहनं धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलाना वेमतिका छत्तुपाहनं धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलाना गिलानसञ्ञा छत्तुपाहनं धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

छत्तं धारेति न उपाहनं, आपत्ति दुक्कटस्स। उपाहनं धारेति न छत्तं, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना अगिलानसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना गिलानसञ्ञा, अनापत्ति।

११८३. अनापत्ति गिलानाय, आरामे आरामूपचारे धारेति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियसिक्खापदं

११८४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो यानेन यायन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो यानेन यायिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे० ... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो यानेन यायिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो यानेन यायन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो यानेन यायिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी यानेन यायेय्य, पाचित्तिय''न्ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

११८५. तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी गिलाना होति, न सक्कोति पदसा गन्तुं...पे०... भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानाय भिक्खुनिया यानं। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११८६. **''या पन भिक्खुनी अगिलाना यानेन यायेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११८७. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अगिलाना नाम सक्कोति पदसा गन्तुं।

गिलाना नाम न सक्कोति पदसा गन्तुं।

यानं नाम वय्हं रथो सकटं सन्दमानिका सिविका पाटङ्की।

यायेय्याति सकिम्पि यानेन यायति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

११८८. अगिलाना अगिलानसञ्ञा यानेन यायति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलाना वेमतिका यानेन यायति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अगिलाना गिलानसञ्ञा यानेन यायति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

गिलाना अगिलानसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना गिलानसञ्ञा, अनापत्ति।

११८९. अनापत्ति गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

दुतियसिक्खापदं निट्ठितं।

३. ततियसिक्खापदं

११९०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी अञ्ञतरिस्सा इत्थिया कुलूपिका होति। अथ खो सा इत्थी तं भिक्खुनिं एतदवोच – ''हन्दाय्ये, इमं सङ्घाणिं अमुकाय नाम इत्थिया देही''ति। अथ खो सा भिक्खुनी – ''सचाहं पत्तेन आदाय गच्छामि विस्सरो मे भविस्सती''ति पटिमुञ्चित्वा अगमासि। तस्सा रथिकाय सुत्तके छिन्ने विप्पकिरियिंसु। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो सङ्घाणिं धारेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे० ... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी सङ्घाणिं धारेस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी सङ्घाणिं धारेती''ति [धारेसीति (क०)]? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी सङ्घाणिं धारेस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११९१. **''या पन भिक्खुनी सङ्घाणिं धारेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

११९२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सङ्घाणि नाम या काचि कटूपगा।

धारेय्याति सकिम्पि धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

११९३. अनापत्ति आबाधप्पच्चया, कटिसुत्तकं धारेति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

ततियसिक्खापदं निट्ठितं।

४. चतुत्थसिक्खापदं

११९४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो इत्थालङ्कारं धारेन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो इत्थालङ्कारं धारेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो इत्थालङ्कारं धारेस्सन्ती''ति ...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो इत्थालङ्कारं धारेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो इत्थालङ्कारं धारेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११९५. ''**या पन भिक्खुनी इत्थालङ्कारं धारेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

११९६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

इत्थालङ्कारो नाम सीसूपगो गीवूपगो हत्थूपगो पादूपगो कटूपगो। **धारेय्या**ति सकिम्पि धारेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

११९७. अनापत्ति आबाधपच्चया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

चतुत्थसिक्खापदं निट्ठितं।

५. पञ्चमसिक्खापदं

११९८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो गन्धवण्णकेन नहायन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो गन्धवण्णकेन नहायिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो गन्धवण्णकेन नहायिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो गन्धवण्णकेन नहायन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो गन्धवण्णकेन नहायिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

११९९. ''**या पन भिक्खुनी गन्धवण्णकेन नहायेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

१२००. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

गन्धो नाम यो कोचि गन्धो। **वण्णकं** नाम यं किञ्चि वण्णकं। **नहायेय्या**ति नहायति। पयोगे दुक्कटं, नहानपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२०१. अनापत्ति आबाधप्पच्चया, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पञ्चमसिक्खापदं निट्ठितं।

६. छट्ठसिक्खापदं

१२०२. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२०३. **''या पन भिक्खुनी वासितकेन पिञ्ञाकेन नहायेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१२०४. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

वासितकं नाम यं किञ्चि गन्धवासितकं। **पिञ्ञाकं** नाम तिलपिट्ठं वुच्चति। **नहायेय्या**ति नहायति। पयोगे दुक्कटं, नहानपरियोसाने आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२०५. अनापत्ति आबाधप्पच्चया, पकतिपिञ्ञाकेन नहायति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

छट्ठसिक्खापदं निट्ठितं।

७. सत्तमसिक्खापदं

१२०६. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो भिक्खुनिया उम्मद्दापेन्तिपि परिमद्दापेन्तिपि। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो भिक्खुनिया उम्मद्दापेस्सन्तिपि परिमद्दापेस्सन्तिपि सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो भिक्खुनिया उम्मद्दापेस्सन्तिपि परिमद्दापेस्सन्तिपी''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो भिक्खुनिया उम्मद्दापेन्तिपि परिमद्दापेन्तिपीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो भिक्खुनिया उम्मद्दापेस्सन्तिपि परिमद्दापेस्सन्तिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२०७. **“या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया उम्मद्दापेय्य वा परिमद्दापेय्य वा, पाचित्तिय**”न्ति।

१२०८. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुनियाति अञ्ञाय भिक्खुनिया। **उम्मद्दापेय्य वा**ति उम्मद्दापेति [उब्बट्टापेति (सी०)], आपत्ति पाचित्तियस्स। **परिमद्दापेय्य वा**ति सम्बाहापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२०९. अनापत्ति गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

सत्तमसिक्खापदं निट्ठितं।

८-९-१०. अट्ठम-नवम-दसमसिक्खापदं

१२१०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो सिक्खमानाय उम्मद्दापेन्तिपि परिमद्दापेन्तिपि...पे०... सामणेरिया उम्मद्दापेन्तिपि परिमद्दापेन्तिपि...पे०... गिहिनिया उम्मद्दापेन्तिपि परिमद्दापेन्तिपि। मनुस्सा विहारचारिकं आहिण्डन्ता पस्सित्वा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – “कथञ्हि नाम भिक्खुनियो गिहिनिया उम्मद्दापेस्सन्तिपि परिमद्दापेस्सन्तिपि, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो”ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – कथञ्हि नाम भिक्खुनियो गिहिनिया उम्मद्दापेस्सन्तिपि परिमद्दापेस्सन्तिपीति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो गिहिनिया उम्मद्दापेन्तिपि परिमद्दापेन्तिपीति? “सच्चं, भगवा”ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो गिहिनिया उम्मद्दापेस्सन्तिपि परिमद्दापेस्सन्तिपि! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२११. **“या पन भिक्खुनी (सिक्खमानाय...पे०... सामणेरिया...पे०...) गिहिनिया उम्मद्दापेय्य वा परिमद्दापेय्य वा, पाचित्तिय**”न्ति।

१२१२. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

सिक्खमाना नाम द्वे वस्सानि छसु धम्मेसु सिक्खितसिक्खा।

सामणेरी नाम दससिक्खापदिका।

गिहिनी नाम अगारिनी वुच्चति।

उम्मद्दापेय्य वाति उम्मद्दापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

परिमद्दापेय्य वाति सम्बाहापेति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२१३. अनापत्ति गिलानाय [आबाधप्पच्चया (क०)], आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठम नवम दसमसिक्खापदानि निट्ठितानि।

११. एकादसमसिक्खापदं

१२१४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदन्ति। भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२१५. **''या पन भिक्खुनी भिक्खुस्स पुरतो अनापुच्छा आसने निसीदेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१२१६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

भिक्खुस्स पुरतोति उपसम्पन्नस्स पुरतो। **अनापुच्छा**ति अनपलोकेत्वा। **आसने निसीदेय्या**ति अन्तमसो छमायपि निसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२१७. अनापुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा आसने निसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते वेमतिका आसने निसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा आसने निसीदति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आपुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा, अनापत्ति।

१२१८. अनापत्ति आपुच्छा आसने निसीदति, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

एकादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

१२. द्वादसमसिक्खापदं

१२१९. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छन्ति। भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२२०. **''या पन भिक्खुनी अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छेय्य, पाचित्तिय''**न्ति।

१२२१. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अनोकासकतन्ति अनापुच्छा। **भिक्खु**न्ति उपसम्पन्नं। **पञ्हं पुच्छेय्या**ति सुत्तन्ते ओकासं कारापेत्वा विनयं वा अभिधम्मं वा पुच्छति, आपत्ति पाचित्तियस्स। विनये ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा अभिधम्मं वा पुच्छति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अभिधम्मे ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा विनयं वा पुच्छति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२२२. अनापुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा पञ्हं पुच्छति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते वेमतिका पञ्हं पुच्छति, आपत्ति पाचित्तियस्स। अनापुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा पञ्हं पुच्छति, आपत्ति पाचित्तियस्स।

आपुच्छिते अनापुच्छितसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। आपुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा, अनापत्ति।

१२२३. अनापत्ति ओकासं कारापेत्वा पुच्छति, अनोदिस्स ओकासं कारापेत्वा यत्थ कत्थचि पुच्छति, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

द्वादसमसिक्खापदं निट्ठितं।

१३. तेरसमसिक्खापदं

१२२४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा भिक्खुनी असङ्कच्चिका [असङ्कच्छिका (स्या०)] गामं पिण्डाय पाविसि। तस्सा रथिकाय वातमण्डलिका सङ्घाटियो उक्खिपिंसु। मनुस्सा उक्कुट्ठिं अकंसु – ''सुन्दरा अय्याय थनुदरा''ति। सा भिक्खुनी तेहि मनुस्सेहि उप्पण्डियमाना मङ्कु अहोसि। अथ खो सा भिक्खुनी उपस्सयं गन्त्वा भिक्खुनीनं एतमत्थं आरोचेसि। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनी असङ्कच्चिका गामं पविसिस्सती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, भिक्खुनी असङ्कच्चिका गामं पाविसीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनी असङ्कच्चिका गामं पविसिस्सति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२२५. **''या पन भिक्खुनी असङ्कच्चिका** [असङ्कच्छिका (स्या०)] **गामं पविसेय्य, पाचित्तिय**''न्ति।

१२२६. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

असङ्कच्चिकाति विना सङ्कच्चिकं।

सङ्कच्चिकं नाम अधक्खकं उब्भनाभि, तस्स पटिच्छादनत्थाय।

गामं पविसेय्याति परिक्खित्तस्स गामस्स परिक्खेपं अतिक्कामेन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स। अपरिक्खित्तस्स गामस्स उपचारं ओक्कमन्तिया आपत्ति पाचित्तियस्स।

१२२७. अनापत्ति अच्छिन्नचीवरिकाय, नट्ठचीवरिकाय, गिलानाय, अस्सतिया, अजानन्तिया, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

तेरसमसिक्खापदं निट्ठितं।

छत्तुपाहनवग्गो नवमो।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, छसट्ठिसता पाचित्तिया धम्मा। तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

खुद्दकं समत्तं।

भिक्खुनिविभङ्गे पाचित्तियकण्डं निट्ठितं।

५. पाटिदेसनीयकण्डं (भिक्खुनीविभङ्गो)

१. पठमपाटिदेसनीयसिक्खापदं

इमे खो पनाय्यायो अट्ठ पाटिदेसनीया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

१२२८. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! कस्स सम्पन्नं न मनापं, कस्स सादुं न रुच्चती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया, भिक्खुनियो सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जेय्य, पटिदेसेतब्बं ताय भिक्खुनिया – 'गारय्हं, अय्ये, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी'''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१२२९. तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो गिलाना होन्ति। गिलानपुच्छिका भिक्खुनियो गिलाना भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''कच्चि, अय्ये, खमनीयं, कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मयं, अय्ये, सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जाम, तेन नो फासु होति;

इदानि पन ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न विञ्ञापेम, तेन नो न फासु होती''ति...पे०... भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानाय भिक्खुनिया सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२३०. **''या पन भिक्खुनी अगिलाना सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जेय्य, पटिदेसेतब्बं ताय भिक्खुनिया – 'गारय्हं, अय्ये, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं तं पटिदेसेमी'**''ति।

१२३१. **या पना**ति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अगिलाना नाम यस्सा विना सप्पिना फासु होति।

गिलाना नाम यस्सा विना सप्पिना न फासु होति।

सप्पि नाम गोसप्पि वा अजिकासप्पि वा महिंससप्पि वा। येसं मंसं कप्पति तेसं सप्पि।

अगिलाना अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन ''भुञ्जिस्सामी''ति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

१२३२. अगिलाना अगिलानसञ्ञा सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अगिलाना वेमतिका सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अगिलाना गिलानसञ्ञा सप्पिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

गिलाना अगिलानसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना गिलानसञ्ञा, अनापत्ति।

१२३३. अनापत्ति गिलानाय, गिलाना हुत्वा विञ्ञापेत्वा अगिलाना भुञ्जति, गिलानाय सेसकं भुञ्जति, ञातकानं पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

पठमपाटिदेसनीयसिक्खापदं निट्ठितं।

२. दुतियादिपाटिदेसनीयसिक्खापदानि

१२३४. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो तेलं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति...पे०... मधुं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति...पे०... फाणितं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति...पे०... मच्छं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति...पे०... मंसं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति...पे०... खीरं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति...पे०... दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! कस्स सम्पन्नं न मनापं, कस्स सादुं न रुच्चती''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो दधिं

विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''या पन भिक्खुनी दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जेय्य, पटिदेसेतब्बं ताय भिक्खुनिया – 'गारय्हं, अय्ये, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी'''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

१२३५. तेन खो पन समयेन भिक्खुनियो गिलाना होन्ति। गिलानपुच्छिका भिक्खुनियो गिलाना भिक्खुनियो एतदवोचुं – ''कच्चि, अय्ये, खमनीयं, कच्चि यापनीय''न्ति? ''पुब्बे मयं, अय्ये, दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जिम्हा, तेन नो फासु होति, इदानि पन ''भगवता पटिक्खित्त''न्ति कुक्कुच्चायन्ता न विञ्ञापेम, तेन नो न फासु होती''ति...पे०... भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे०... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानाय भिक्खुनिया दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जितुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

१२३६. ''या पन भिक्खुनी अगिलाना (तेलं...पे०... मधुं...पे०... फाणितं...पे०... मच्छं...पे०... मंसं...पे०... खीरं...पे०...) दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जेय्य , पटिदेसेतब्बं ताय भिक्खुनिया – 'गारय्हं, अय्ये, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं, तं पटिदेसेमी'''ति।

१२३७. या पनाति या यादिसा...पे०... **भिक्खुनी**ति...पे०... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनीति।

अगिलाना नाम यस्सा विना दधिना फासु होति।

गिलाना नाम यस्सा विना दधिना न फासु होति।

तेलं नाम तिलतेलं सासपतेलं मधुकतेलं एरण्डतेलं वसातेलं।

मधु नाम मक्खिकामधु। **फाणितं** नाम उच्छुम्हा निब्बत्तं। **मच्छो** नाम ओदको वुच्चति। **मंसं** नाम येसं मंसं कप्पति तेसं मंसं। **खीरं** नाम गोखीरं वा अजिकाखीरं वा महिंसखीरं वा येसं मंसं कप्पति तेसं खीरं। **दधि** नाम तेसञ्ञेव दधि।

अगिलाना अत्तनो अत्थाय विञ्ञापेति, पयोगे दुक्कटं। पटिलाभेन भुञ्जिस्सामीति पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स। अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

१२३८. अगिलाना अगिलानसञ्ञा दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अगिलाना वेमतिका दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स। अगिलाना गिलानसञ्ञा दधिं विञ्ञापेत्वा भुञ्जति, आपत्ति पाटिदेसनीयस्स।

गिलाना अगिलानसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना वेमतिका, आपत्ति दुक्कटस्स। गिलाना गिलानसञ्ञा अनापत्ति।

१२३९. अनापत्ति गिलानाय, गिलाना हुत्वा विञ्ञापेत्वा अगिलाना भुञ्जति, गिलानाय सेसकं भुञ्जति, ञातकानं पवारितानं, अञ्ञस्सत्थाय, अत्तनो धनेन, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति।

अट्ठमपाटिदेसनीयसिक्खापदं निट्ठितं।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, अट्ठ पाटिदेसनीया धम्मा। तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

भिक्खुनिविभङ्गे पाटिदेसनीयकण्डं निट्ठितं।

६. सेखियकण्डं (भिक्खुनीविभङ्गो)

१. परिमण्डलवग्गो

इमे खो पनाय्यायो सेखिया

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

१२४०. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खुनियो पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ती निवासेन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ती निवासेस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा...पे०... ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ती निवासेस्सन्ती''ति...पे०... सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ती निवासेन्तीति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे०... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो पुरतोपि पच्छतोपि ओलम्बेन्ती निवासेस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे०... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''**परिमण्डलं निवासेस्सामीति सिक्खा करणीया**''ति।

परिमण्डलं निवासेतब्बं नाभिमण्डलं जाणुमण्डलं पटिच्छादेन्तिया। या अनादरियं पटिच्च पुरतो वा पच्छतो वा ओलम्बेन्ती निवासेति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तिया, गिलानाय, आपदासु, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति...पे०... (संखित्तं)।

७. पादुकवग्गो

१२४१. तेन समयेन बुद्धो भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन

छब्बग्गिया भिक्खुनियो उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करोन्ति। मनुस्सा उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम भिक्खुनियो उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करिस्सन्ति, सेय्यथापि गिहिनियो कामभोगिनियो''ति! अस्सोसुं खो भिक्खुनियो तेसं मनुस्सानं उज्झायन्तानं खिय्यन्तानं विपाचेन्तानं। या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा, ता उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति – ''कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खुनियो उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करिस्सन्ती''ति! अथ खो भिक्खुनियो भिक्खूनं एतमत्थं आरोचेसुं। भिक्खू [ये ते भिक्खू...पे॰... (?)] भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अथ खो भगवा...पे॰... भिक्खू पटिपुच्छि – ''सच्चं किर, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करोन्ती''ति? ''सच्चं, भगवा''ति। विगरहि बुद्धो भगवा...पे॰... कथञ्हि नाम, भिक्खवे, छब्बग्गिया भिक्खुनियो उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि करिस्सन्ति! नेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानं वा पसादाय...पे॰... एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''न उदके उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

एवञ्चिदं भगवता भिक्खुनीनं सिक्खापदं पञ्ञत्तं होति।

तेन खो पन समयेन गिलाना भिक्खुनियो उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि कातुं कुक्कुच्चायन्ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं...पे॰... अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानाय भिक्खुनिया उदके उच्चारम्पि पस्सावम्पि खेळम्पि कातुं। एवञ्च पन, भिक्खवे, भिक्खुनियो इमं सिक्खापदं उद्दिसन्तु –

''न उदके अगिलाना उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करिस्सामीति सिक्खा करणीया''ति।

न उदके अगिलानाय उच्चारो वा पस्सावो वा खेळो वा कातब्बो। या अनादरियं पटिच्च उदके अगिलाना उच्चारं वा पस्सावं वा खेळं वा करोति, आपत्ति दुक्कटस्स।

अनापत्ति असञ्चिच्च, अस्सतिया, अजानन्तिया, गिलानाय, थले कतो उदकं ओत्थरति, आपदासु, उम्मत्तिकाय, खित्तचित्ताय, वेदनाट्टाय, आदिकम्मिकायाति।

पन्नरसमसिक्खापदं निट्ठितं।

पादुकवग्गो सत्तमो।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, सेखिया धम्मा। तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

सेखियकण्डं निट्ठितं।

७. अधिकरणसमथा (भिक्खुनीविभङ्गो)

इमे खो पनाय्यायो सत्त अधिकरणसमथा

धम्मा उद्देसं आगच्छन्ति।

१२४२. उप्पन्नुप्पन्नानं अधिकरणानं समथाय वूपसमाय सम्मुखाविनयो दातब्बो, सतिविनयो दातब्बो, अमूळ्हविनयो दातब्बो, पटिञ्ञाय कारेतब्बं, येभुय्यसिका, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारकोति।

उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, सत्त अधिकरणसमथा धम्मा। तत्थाय्यायो पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? दुतियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? ततियम्पि पुच्छामि – ''कच्चित्थ परिसुद्धा''? परिसुद्धेत्थाय्यायो, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामीति।

अधिकरणसमथा निट्ठिता।

उद्दिट्ठं खो, अय्यायो, निदानं। उद्दिट्ठा अट्ठ पाराजिका धम्मा। उद्दिट्ठा सत्तरस सङ्घादिसेसा धम्मा। उद्दिट्ठा तिंस निस्सग्गिया पाचित्तिया धम्मा। उद्दिट्ठा छसट्ठिसता पाचित्तिया धम्मा। उद्दिट्ठा अट्ठ पाटिदेसनीया धम्मा। उद्दिट्ठा सेखिया धम्मा। उद्दिट्ठा सत्त अधिकरणसमथा धम्मा। एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं अन्वद्धमासं उद्देसं आगच्छति। तत्थ सब्बाहेव समग्गाहि सम्मोदमानाहि अविवदमानाहि सिक्खितब्बन्ति।

भिक्खुनिविभङ्गो निट्ठितो।

पाचित्तियपाळि निट्ठिता।